कुलपुत्र सुनें

प्रधान संपादक : डॉ. विष्णुदत्त राकेश
संपादक : डॉ. जगदीश विद्यालंकार

गुरुकुल : कल का अंकुर, आज का वट-वृक्ष

"आर्यसमाज का सबसे अच्छा फल गुरुकुल की स्थापना और उसे चलाने में दिखता है। उसका प्रभाव महात्मा मुंशीराम जी की उत्साह बढ़ाने वाली मौजूदगी के कारण है। फिर भी यह सच्ची राष्ट्रीय, स्वतंत्र और स्वाधीन संस्था है। उसे सरकार की सहायता या सहानुभूति जरा भी नहीं मिलती।"

—महात्मा गांधी

•

"मैंने गुरुकुल को देखा तथा यहाँ की कार्य प्रणाली की जानकारी ली। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि यह संस्था अच्छा कार्य कर रही है। इस अवसर पर मैं इस बात पर जोर देना चाहता हूँ कि देश के सांस्कृतिक आदर्शों की रक्षा के साथ-साथ आधुनिक ज्ञान-विज्ञान को भी तरजीह देनी चाहिए क्योंकि आज की दुनिया को इनकी बड़ी जरूरत है। इन्हीं दोनों के समन्वय से हमारा भाग्य सुरक्षित रह सकता है।"

—पंडित जवाहरलाल नेहरू

•

"स्वामी श्रद्धानंद जी की याद आते ही 1919 का दृश्य मेरी आँखों के सामने खड़ा हो जाता है। सरकारी सिपाही फायर करने की तैयारी में हैं। स्वामी जी छाती खोलकर सामने जाते हैं और कहते हैं, 'लो, चलाओ गोलियाँ'। उनकी उस वीरता पर कौन मुग्ध नहीं हो जाता ? मैं चाहता हूँ कि उस वीर संन्यासी का स्मरण हमारे अंदर सदैव वीरता और बलिदान के भावों को भरता रहे।"

—सरदार वल्लभभाई पटेल

कुलपुत्र सुनें !



कुलपुत्र सुनें

प्रधान संपादक
डॉ. विष्णुदत्त राकेश
पी-एच.डी., डी.लिट्.
आचार्य हिंदी विभाग तथा पूर्व अध्यक्ष
मानविकी संकाय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

संपादक
डॉ. जगदीश विद्यालंकार
एम.लिब, पी-एच.डी.
पुस्तकालयाध्यक्ष
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय



श्री स्वामी श्रद्धानंद प्रकाशन केंद्र
गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार

कुलपुत्र सुनें

प्रथम संस्करण : 1999

मूल्य : **300.00**

प्रकाशक

श्री स्वामी श्रद्धानन्द अनुसंधान प्रकाशन केन्द्र
गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार

प्रमुख-वितरक

राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि.
2/38, अंसारी मार्ग
दरियागंज, नई दिल्ली-110002

मुद्रण-व्यवस्था

भूमिका प्रकाशन
मकान नं. 38, गली नं. 2, संत विहार
दरियागंज, नयी दिल्ली-110002

KULPUTRA SUNE
Edited by Dr. Vishnudutt Rakesh; Dr. Jagdish Vidyalankar

दो शब्द

स्वामी दयानंद के विचारों को आत्मसात् कर जिस महापुरुष ने आज से लगभग सौ वर्ष पूर्व गुरुकुल की स्थापना की, उस देव पुरुष का स्मरण करते हुए आज गुरुकुल के कुलपुत्रों के सामने एक ऐतिहासिक महत्त्व का दस्तावेज *'कुलपुत्र सुनें'* नामक प्रस्तुत करते हुए मुझे प्रसन्नता है। इस दस्तावेज में छिपा है गुरुकुल के सौ वर्षों का इतिहास ! इस कृति में निहित है गुरुकुल के कुलपतियों का विचार-मंथन तथा इस आलेख में अंकित हैं गुरुकुल के प्रशासकों की वे स्वर्णिम कल्पनाएँ जो गुरुकुल की विकास-यात्रा के संकल्प-चित्र के रूप में उभरीं। विकास-योजनाओं के क्रियान्वयन का दिया गया संक्षिप्त लेखा-जोखा एक इतिहास तो है ही, इसमें गुरुकुल के तत्कालीन स्वरूप का अंकन भी काल के विभिन्न फलकों से स्थान-स्थान पर दिग्दर्शित होता है। अलग-अलग समय पर अभिव्यक्त विकास की इस यात्रा को दिखलाने का यत्न इस पुस्तक में किया गया है।

महात्मा मुंशीराम ने 'सद्धर्म प्रचारक' के 21 फरवरी, 1912 के अंक में 'वर्तमान भारत की शिक्षा विषयक आवश्यकता' के संदर्भ में एक संपादकीय लेख लिखा। इस लेख के माध्यम से तत्कालीन शिक्षाविदों के सामने उन्होंने आह्वान किया कि हमारी शिक्षा में वैदिक एवं संस्कृत साहित्य के अनुशीलन को सांस्कृतिक विरासत की रक्षा हेतु प्रथम आवश्यकता के रूप में स्वीकार करना चाहिए। उन्होंने जिस दूसरी आवश्यकता पर वल दिया उसके अनुसार शिक्षा का माध्यम मातृभाषा से बढ़कर और कोई भाषा नहीं हो सकती। उनके अनुसार मातृभाषा में शिक्षा मिले बिना मनुष्यत्व उत्पन्न नहीं होता, मनुष्यत्व के प्रधान लक्षण मौलिकता अथवा नई-नई बातें ढूँढ़ निकालने की क्षमता है। उन्होंने जिस तीसरी बात पर शिक्षा का भवन खड़ा किया, वह है क्रियात्मक धर्म को शिक्षा का अंग बनाना। आज हम जिस क्षितिज पर खड़े हैं, वहाँ हमें महात्मा मुंशीराम के आज से छियासी वर्ष पूर्व दिए गए शिक्षा-नीति के इन आधारभूत बिंदुओं को निरंतर जोड़े रखना है। आज भी गुरुकुल शिक्षा की प्रासंगिकता के संदर्भ में स्वामी श्रद्धानंद जी के विचार मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में हमें रास्ता दिखा सकते हैं।

प्रारंभ में गुरुकुल फूँस की झोंपड़ियों में स्थापित था, कालांतर में पुण्यभूमि

के भवनों में पल्लवित हुआ। फिर गुरुकुल स्थानांतरित हुआ आज के परिसर में, गुरुकुल के पुराने भवन, आवासीय संकुल एक यादगार बन गए। आज के परिसर में गुरुकुल के नवीन भवन पुनः एक नए इतिहास के स्रष्टा बने।

इतिहास के ऐसे ही कालक्रम को दिखलाने का प्रयत्न किया गया है इस पुस्तक में, ताकि आने वाली पीढ़ी यह जान सके कि गुरुकुल झंझावातों एवं चुनौतियों के बीच में आज भी चट्टानवत् शिक्षा के दीपदान का तीर्थस्थल है। आज भी शिक्षा के इस पावन केंद्र में पुराने एवं आधुनिक विषयों का सतत प्रवाह कायम है। विकास के बुलंद स्वर आज भी गुरुकुल की माटी में बोल रहे हैं।

कुलपुत्रो, तुम सुनो ! इस माटी के सौ साल के इतिहास में छिपे उन शिखर पुरुषों को, जिन्होंने गुरुकुल को पास से देखा, जिन्होंने सोते, उठते-बैठते गुरुकुल के विकास की योजनाओं को मस्तिष्क के स्तर से उतारकर व्यवहार के धरातल पर परिवर्तित किया। गुरुकुल के इस लेखा-जोखा को संपादित करने का बीड़ा उठाया आचार्य डॉ. विष्णुदत्त जी राकेश ने और सामग्री के संकलन एवं प्रकाशन का दायित्व लिया डॉ. जगदीश विद्यालंकार ने। मैं आशा करता हूँ कि यह पुस्तक गुरुकुल से जुड़ने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक स्थायी धरोहर के रूप में याद रहेगी।

आज हम गुरुकुल स्थापना के सौ वर्ष की दहलीज पर कदम रखने को तैयार हैं। आज समय है हम उन आदर्शों एवं सिद्धांतों का जयघोष करें जिसकी पृष्ठभूमि पर गुरुकुल खड़ा है, इस पर भावी संतति को शिक्षा और दीक्षा से संस्कारित करने का महान् उत्तरदायित्व है। यह तभी संभव है जब गुरुकुल के आचार्य, प्राध्यापक, विद्यार्थी तथा कर्मचारी निष्ठा के साथ इस संकल्प को पूर्ण करने के लिए कमर कसकर खड़े हों। मुझे इसकी आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास भी है।

–(डॉ.) **धर्मपाल**
कुलपति

संपादकीय

गुरुकुल : कल का अंकुर, आज का वट-वृक्ष

उनके हृदय में श्रद्धा की अग्नि धधक रही थी। उन्होंने बाल ब्रह्मचारी यतींद्र कुल तिलक महर्षि दयानंद सरस्वती के श्रीचरणों में बैठकर श्रद्धापूर्वक हविर्दान किया था। अग्निपूत मंत्रों के स्वर उनके अंगारक अधरों पर दहक रहे थे। राष्ट्रीय जीवन में अग्नि का संचार करते हुए उन्होंने 12 अप्रैल, 1917 ई. को मायापुर वाटिका, कनखल में संन्यास आश्रम में प्रवेश करते हुए अग्निधुले काषाय वस्त्र ग्रहण किए थे। श्रद्धामय होने के कारण उन्हें श्रद्धानंद सरस्वती का पावन अभिधान मिला था। आर्यसमाज के तत्कालीन प्रमुख संन्यासी स्वामी सत्यानंद जी महाराज के सान्निध्य में उन्होंने कहा था—'मेरा समूचा जीवन श्रद्धा से प्रेरित और उसी पर आधारित रहा है। इसलिए मैं अपना नाम श्रद्धानंद रखता हूँ। इस नए जीवन में परमपिता प्रभु से बल, शक्ति और आप सबके आशीर्वाद, स्नेह एवं सहयोग की कामना करता हूँ।' गुरुकुल की स्थापना के बाद अपने पुत्र-शिष्यों की सहमति से उन्होंने अपनी संपूर्ण संपत्ति का दान गुरुकुल को कर दिया था। उनकी उज्ज्वल कीर्ति से स्तब्ध होकर जब भी किसी ने उनका विरोध किया, उन्होंने उसका प्रतिकार नहीं किया और जब एक दिन वह अपने प्राणों से प्यारे गुरुकुल को छोड़कर विदा हुए तब भी उनका अग्निव्रत बुझा नहीं, उस अग्निदूत ने मानो कहा—

'मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही
हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए।'

स्वामी श्रद्धानंद ने आर्ष शिक्षा प्रणाली के उद्धार के लिए गुरुकुल की स्थापना की। पौराणिक नगरी में गुरुकुल प्रारंभ में एक अजूबे के रूप में देखा गया, पर धीरे-धीरे उसने अपनी राष्ट्रीय पहचान बना ली। ऋषि दयानंद के निर्वाण के बाद सन् 1891 में कुंभपर्व पर आर्यसमाज के प्रचार के लिए स्वामी जी हरिद्वार आए थे। 19 फरवरी, 1889 को स्वामी जी ने 'सद्धर्म प्रचारक' साप्ताहिक का प्रकाशन किया था। हरिद्वार कुंभ के लिए इसी पत्र में स्वामी जी ने एक अपील निकाली। पंडित लेखराम आर्य 'मुसाफिर' उन दिनों कलकत्ता में थे। आपने स्वामी जी की इस अपील का पुरजोर समर्थन किया। इन दोनों महानुभावों की अपील पर स्वामी आत्मानंद जी, स्वामी

विश्वेश्वरानंद जी, स्वामी पूर्णानंद जी, ब्रह्मचारी नित्यानंद जी तथा महामहोपाध्याय पंडित आर्यमुनि जी हरिद्वार पहुँचे। उस समय आर्यसमाज के शिविर में लेखराम जी सहित इतने चोटी के विद्वानों को एकत्र करने का श्रेय स्वामी जी को जाता है। पौराणिक पंडितों की मंडली में शंका-समाधान सत्र आयोजित कर स्वामी जी ने धूम मचा दी। पंडित लेखराम जी ने ट्रेक्ट लिखकर इस सत्र की स्मृति को सदा-सदा के लिए स्थायी बना दिया। पंडित आर्यमुनि पटियाला के निवासी थे। काशी में रहकर उन्होंने वेद-शास्त्रों का गहन अध्ययन किया था। आर्यसमाज के वही अकेले विद्वान् थे जिन्हें महामहोपाध्याय की उपाधि से विभूषित किया गया था। पंडित विश्वबंधु शास्त्री तथा काशी के विद्वान् महामहोपाध्याय पंडित रामावतार शर्मा से उनका शास्त्रार्थ हुआ था। शर्मा जी का पद्यबद्धकोश 'वाङ्मयार्णव', 'परमार्थदर्शन' तथा 'पाश्चात्यदर्शन' उनके अगाध पांडित्य का निदर्शन करते हैं। ऐसे खंडन रस रसिक से शास्त्रार्थ का लोहा आर्यमुनि ही ले सकते थे। पूज्य पंडित बलदेव जी उपाध्याय ने इस शास्त्रार्थ में स्वामी श्रद्धानंद जी का होना भी बतलाया है। आर्यमुनि जी ने ऋग्वेद के सप्तम मंडल से लेकर नवम मंडल तक का छह खंडों में महर्षि दयानंद की पद्धति पर भाष्य किया था। उपनिषदों में ईशावास्योपनिषद् से लेकर बृहदारण्यक तक दस उपनिषदों का भाष्य किया था। सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, वेदांत तथा मीमांसा का उन्होंने आर्य भाष्य किया था। उपनिषदों के भाष्य म उन्होंने आचार्य शंकर कृत अर्थों का खंडन किया था। रामचरितमानस के अनुकरण पर उन्होंने दयानंद महाकाव्य की रचना की। स्वामी श्रद्धानंद 1920-1921 में उन्हें स्वयं साथ लेकर काशी शास्त्रार्थ के लिए गए थे। कॉलेज-गुरुकुल संघर्ष में भी उन्होंने स्वामी श्रद्धानंद तथा गुरुकुल का ही पक्ष लिया। तात्पर्य यह कि 1891 ई. के कुंभोत्सव पर ही स्वामी जी ने हरिद्वार में गुरुकुल की स्थापना का निश्चय कर लिया था। 8 अप्रैल, 1900 ई. को वैदिक आश्रम गुजराँवाला में गुरुकुल की स्थापना हुई तथा 2 मार्च, 1902 ई. को कांगड़ी ग्राम में गुरुकुल स्थानांतरित हुआ। 19 दिसंबर, 1902 ई. को प्रेस तथा 'सद्धर्म प्रचारक' हरिद्वार ले आए गए।

गुरुकुल के प्रथम आचार्य पंडित गंगादत्त शास्त्री थे। शास्त्री जी बुलंदशहर जिले के बैलोन नामक कस्बे के रहने वाले थे। मथुरा में दंडी स्वामी विरजानंद जी के शिष्य पंडित उदयप्रकाश जी से इन्होंने व्याकरण का अध्ययन किया था। काशी के सुप्रसिद्ध पंडित काशीनाथ पांडेय शास्त्री से इन्होंने दर्शनशास्त्र का अध्ययन किया था। शास्त्री जी ने काशी के पंडित माधवाचार्य जी से व्याकरणशास्त्र, सीताराम शास्त्री द्राविड़ से नव्यन्याय तथा पंडित नित्यानंद शास्त्री से पूर्वमीमांसा का अध्ययन किया था। गंगादत्त शास्त्री काशीनाथ जी के प्रिय शिष्य थे। स्वामी श्रद्धानंद जी के अनुरोध पर काशीनाथ जी काशी छोड़कर गुरुकुल आए। साहित्य दर्पण की विमला टीका के प्रख्यात लेखक साहित्याचार्य पंडित शालिग्राम शास्त्री, हरिश्चंद्र, इंद्र

विद्यावाचस्पति तथा जयचंद्र विद्यालंकार, पंडित नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ, आचार्य पंडित पद्मसिंह शर्मा तथा पंडित वामदेव इनके प्रमुख शिष्य रहे हैं। इन्होंने 'चित्सुखी' तथा 'पंचदशी व्याख्या' का प्रकाशन कराया। इनके पुत्र पंडित रघुनाथ शर्मा ने भर्तृहरि प्रणीत वाक्यपदीय की व्याख्या पाँच खंडों में प्रकाशित कराई। गंगादत्त उपाध्याय तथा पंडित काशीनाथ जी का गुरुकुल ऋणी रहेगा। आर्यसमाज के पुराने पंडितों के निर्माण में इन दोनों महानुभावों का अन्यतम योगदान रहा है। गंगादत्त जी ने दो भागों में अष्टाध्यायी की 'तत्त्व प्रकाशिका' नाम्नी टीका का प्रकाशन कराया। उनका 'आख्यातिक' ग्रंथ 'सद्धर्म प्रचारक' प्रेस कांगड़ी से 1906 ई. में प्रकाशित हुआ था। यह आजन्म ब्रह्मचारी रहे तथा संन्यास लेकर स्वामी शुद्धबोध तीर्थ के रूप में प्रसिद्ध हुए। इनका अंतिम जीवन गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर में व्यतीत हुआ।

गुरुकुल के दूसरे आचार्य स्वयं महात्मा मुंशीराम बने। उनकी शिक्षा प्रबंध में सहायता प्रोफेसर रामदेव जी करते थे। प्रो. रामदेव होशियारपुर जिले के बजवाड़ा स्थान के रहने वाले थे। 1904 ई. में उन्होंने बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की थी। उन्होंने आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब की साप्ताहिक पत्रिका 'आर्य पत्रिका' का उप-संपादन किया था। वह स्वामी जी के विश्वासपात्र थे तथा गुरुकुल कांगड़ी के मुख्य-अध्यापक के रूप में नियुक्त हुए थे। 1907 ई. में पंडित गुरुदत्त द्वारा स्थापित पत्रिका 'वैदिक मैगजीन' का उन्होंने संपादन प्रारंभ किया। लियो तालस्ताय तथा श्री अरविंद से भी उनका परिचय था। उन्होंने गुरुकुल की उन्नति के लिए लाखों रुपए इकट्ठे किए। स्वामी जी के कृतकार्य होने पर वह गुरुकुल के आचार्य बने। 1926 में उन्होंने कन्या गुरुकुल, देहरादून की स्थापना की। 1932 में उन्होंने स्वाधीनता आंदोलन में भाग लिया। वह इतिहास के उच्चकोटि के विद्वान् थे। अंग्रेजी पर उनका असाधारण अधिकार था। उन्होंने कलकत्ता के 'विशाल भारत' में आत्म परिचयात्मक लेखमाला लिखी थी। उनके 'भारतवर्ष का वृहत् इतिहास' तीन खंड, 'पुराणमतपर्यालोचन', 'दिग्विजयी दयानंद', 'वैदिक धर्म एंड यंग इंडिया' तथा 'आर्य और दस्यु' प्रमुख ग्रंथ हैं। 1927 ई. में गुरुकुल की रजत जयंती उनके उद्योग से भव्यता के साथ संपन्न हुई। इस अवसर पर महात्मा गांधी, पंडित मदनमोहन मालवीय, डॉ. राजेंद्र प्रसाद, सेठ जमनालाल बजाज, काशी विश्वविद्यालय के प्रधानाचार्य आचार्य आनंदशंकर बापू भाई ध्रुव तथा इतिहासवेत्ता डॉ. अविनाशचंद्र दास जैसे महापुरुष पधारे। ध्रुव जी प्रख्यात दार्शनिक तथा कुशल प्रशासक शिक्षाविद् थे। ध्रुव जी ने प्रसिद्ध मैथिल विद्वान् पंडित बच्चा झा से न्यायशास्त्र तथा वेदांत का अध्ययन किया था। 'स्याद्वाद मंजरी' तथा दिङ्नाग कृत 'न्याय प्रवेश' का इन्होंने पांडित्यपूर्ण संपादन किया था। मालवीय जी ने उन्हें हिंदू विश्वविद्यालय का आचार्य नियुक्त किया था। ध्रुव जी रामदेव जी के प्रशंसक थे। गुरुकुल कांगड़ी में रामदेव जी के निमंत्रण पर ही ध्रुव जी पधारे थे।

1932 ई. में रामदेव जी गुरुकुल से चले गए। अब पंडित चमूपति, श्री देवराज सेठी तथा पं. देवशर्मा की तीन सदस्यीय समिति गुरुकुल का प्रबंध देखने लगी। कुछ समय बाद इन तीनों में मतभेद उभरकर सामने आ गया। फलतः प्रतिनिधि सभा ने पंडित चमूपति जी को गुरुकुल का आचार्य बना दिया। चमूपति जी वेदों के गंभीर विद्वान् तथा अंग्रेजी, उर्दू, हिंदी, संस्कृत के अच्छे ज्ञाता थे। इनका प्रारंभ में उर्दू शायरी में रुझान रहा। गुरु नानक कृत 'जपुजी साहब' का इन्होंने उर्दू में काव्यानुवाद भी किया। आर्यसमाज में इनका प्रवेश भी आचार्य रामदेवजी के कारण हुआ। गुरुकुल मुलतान के दो वर्ष तक अधिष्ठाता रहने के बाद प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र 'आर्य' का संपादन किया। वह 1927 तथा 1933 में गुरुकुल कांगड़ी के क्रमशः आचार्य तथा मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए। 1935 में त्यागपत्र देकर गुरुकुल से पृथक् हो गए। चमूपति जी ने सामवेद के आग्नेयपर्व की व्याख्या 'जीवन ज्योति' तथा पवमान पर्व की व्याख्या 'सोम सरोवर' नाम से की। 'यास्कयुग की वेदार्थ शैलियाँ' इनकी प्रसिद्ध रचना है। स्वामी वेदानंद तीर्थ के साथ तीन खंडों में 'वेदार्थकोश' गुरुकुल कांगड़ी से प्रकाशित कराया। आर्यसमाज के वैज्ञानिक लेखकों में उनका निबंध 'नीहारिकावाद और उपनिषद्' स्मरण किया जाता है। 'योगेश्वर कृष्ण' तथा 'रंगीला रसूल' जैसी पुस्तकें बहुचर्चित रहीं। रंगीला रसूल को 1924 ई. में अंग्रेज सरकार ने जब्त कर लिया था। इसके प्रकाशक महाशय राजपाल इसी कारण बलिदान हो गए।

1935 में पंडित सत्यव्रत सिद्धांतालंकार मुख्याधिष्ठाता तथा पंडित देव शर्मा गुरुकुल के आचार्य नियुक्त हुए। 1937 में पंडित देव शर्मा ने संन्यास लेकर अरविंदाश्रम, पांडिचेरी, में आत्मसाधना की। संन्यास के बाद पंडित देव शर्मा आचार्य अभयदेव के नाम से प्रसिद्ध हुए। अभयदेव जी का जन्म मुजफ्फरनगर के चरथावल ग्राम में हुआ था। 1919 में गांधी जी की प्रेरणा से स्वाधीनता-आंदोलन में कूद पड़े। 1930 में आपको कारावास मिला। स्वामी श्रद्धानंद ने उन्मुक्त भाव से अपने इस शिष्य के निर्मल चरित्र तथा अगाध पांडित्य की प्रशंसा की है। अभयदेव जी ने श्री अरविंद के 'वेद रहस्य' का हिंदी अनुवाद किया तथा तीन खंडों में 'वैदिक विनय' की रचना की। वेद मंत्रों की इसमें अत्यंत उपयोगी एवं प्रेरक व्याख्या की गई थी। उनकी अन्य रचनाओं में 'ब्राह्मण की गो', 'वैदिक ब्रह्मचर्य गीत' तथा 'तरंगित हृदय' प्रसिद्ध हैं। आचार्य अभयदेव जी के ग्रंथों का सुंदर संपादन डॉ. सुरेश चंद्र त्यागी ने किया है। पंडित सत्यव्रत सिद्धांतालंकार वेद तथा तुलनात्मक धर्म और दर्शन के पंडित थे। उनका जन्म लुधियाना जिले के सबद्दी ग्राम में हुआ था। 1919 में वह स्नातक बने तथा गांधी जी एवं स्वामी जी महाराज की प्रेरणा से हिंदी प्रचार के लिए कोल्हापुर, मैसूर, बंगलौर तथा मद्रास गए। आपको 'समाजशास्त्र के मूलतत्त्व' पुस्तक पर मंगला प्रसाद पारितोषिक मिला। आपकी पत्नी पंडित चंद्रावती लखनपाल

पंडित अमरनाथ झा, कुलपति, इलाहाबाद विश्वविद्यालय की शिष्या थीं। आपको 'शिक्षा मनोविज्ञान' पर मंगला प्रसाद सम्मान मिला था। आपने कैथरिन मेयो की दुर्नाम पुस्तक 'मदर इंडिया' का करारा उत्तर दिया था। आप कन्या गुरुकुल, देहरादून की आचार्या रहीं। पंडित सत्यव्रत तथा श्रीमती चंद्रावती जी को राज्यसभा का सदस्य भी मनोनीत किया गया। पंडित सत्यव्रत जी तथा चंद्रावती जी स्वाधीनता आंदोलन में जेल गए। पंडित सत्यव्रत जी के 'उपनिषद् भाष्य' की भूमिका डॉ. राधाकृष्णन् तथा 'गीता भाष्य' की भूमिका श्री लालबहादुर शास्त्री ने लिखी थी। राष्ट्रपति श्री जैलसिंह ने राष्ट्रपति भवन में उनका सम्मान किया था। श्रीमती इंदिरा गांधी ने उनकी कृति 'वैदिक विचारधारा का वैज्ञानिक आधार' की भूरि-भूरि प्रशंसा की थी। सत्यव्रत जी 1942 में जेल चले गए तब देव शर्मा कुछ काल के लिए आचार्य बने। 1943 में उन्होंने त्यागपत्र दे दिया। तब गुरुकुल के यशस्वी स्नातक पंडित बुद्धदेव विद्यालंकार ने गुरुकुल का आचार्यपद अलंकृत किया।

पंडित बुद्धदेव का जन्म देहरादून के कौलागढ़ में मुद्गल गोत्रीय पंडित रामचंद्र जी के यहाँ हुआ था। इनकी माता पंडित कृपाराम जी की पुत्री थीं। पंडित कृपाराम जी ने ही स्वामी दयानंद को देहरादून बुलाया था। पंडित जी संस्कृत के प्रकांड विद्वान् थे। गुरुकुल के स्नातकों में ऐसा वाग्मी, तार्किक तथा आशुकवित्व संपन्न शास्त्रार्थी दूसरा नहीं हुआ। हैदराबाद सत्याग्रह में आर्यसमाज की मर्यादा की रक्षा के लिए उन्होंने कठोर कारावास भोगा। स्वामी श्रद्धानंद जी ने अन्याय के विरुद्ध स्वयं कई लड़ाइयाँ लड़ीं। उनके सभी शिष्य इस आग से दीक्षित हुए थे। चाहे धौलपुर का सत्याग्रह हो और चाहे कालीकट में दलित जातियों के पक्ष का सत्याग्रह, चाहे रोलेट एक्ट के विरुद्ध आंदोलन हो और चाहे जालियाँवाला बाग के नृशंस नरसंहार के बाद का सेवाकार्य, चाहे गुरु के बाग का सिख सत्याग्रह हो और चाहे मोपला कांड, स्वामी श्रद्धानंद सर्वत्र अन्याय, अनीति, दमन और आतंक के विरुद्ध सीना तानकर खड़े रहे। श्री सत्यदेव विद्यालंकार ने स्वामी जी के संवेदनशील व्यक्तित्व के बारे में ठीक ही लिखा है कि दिल्ली के शाही जामा मसजिद के मेंबर की शोभा बढ़ाने वाले अपनी धार्मिक उदारता तथा मानवतावादी दृष्टि के कारण 10 दिसंबर, 1922 को अमृतसर अकालतख्त से सम्मानित होने वाले पहले आर्य संन्यासी थे। गुरु के बाग सत्याग्रह में हिस्सा लेने पर वह मियाँवाली जेल में रखे गए। छूटने के बाद स्वामी जी ने जेल की कुव्यवस्था पर चोट करते हुए लिखा—'जेल मैनुअल केवल दिखावा है। दूसरी बात स्वदेश के, राष्ट्र के लिए पहली आवश्यकता यह है कि जनता को ब्रह्मचारी बनाकर और उसमें सहनशक्ति फूँककर एक आत्मोन्नत स्वराज्य सेना खड़ी की जाए तब वैयक्तिक गुलामी की जंजीरें काटकर अत्याचार से युद्ध हो सकेगा।'

गुरुकुल ने आत्मोन्नत स्वराज्य सेना खड़ी करने का संकल्प लिया। पंडित बुद्धदेव ने हैदराबाद आर्य सत्याग्रह में सक्रिय भाग लिया। उनकी लेखनी और वाणी,

दोनों ही आग उगलती थीं। उन्होंने 'अथर्ववेद का आंशिक भाष्य', 'शतपथ ब्राह्मण' के प्रथम कांड का भाष्य, 'मरुत्सूक्त', 'सप्तसिंधुसूक्त', 'ऋग्वेदमंडलमणिसूत्र', 'गीता समर्पण भाष्य', 'गोपावर्त', 'कायाकल्प' तथा 'उसकी राह पर' आदि कृतियाँ लिखीं। हैदराबाद सत्याग्रह में गुरुकुल के अन्य स्नातकों ने भी भाग लिया। प्रो. विराज ने जेल-यातना का बड़ा मार्मिक चित्रण किया है—

'सुन संगी बंदी का गाना,
बेचारा चुपचाप गा रहा,
गा भी वह इसलिए पा रहा,
क्योंकि अभी तक नहीं किसी भी क्रूर सिपाही ने है जाना।।
सुनकर खुद आँसू आ जाते,
रोके जरा न रुकने पाते,
मेरा उर भी उसके दुःख में चाह रहा है हिस्सा पाना।।
कभी-कभी दो पद गा लेता,
यह अपनी पीड़ा से देता,
निज को और विधाता को भी कितना हृदय विदारक ताना।।'

सुप्रसिद्ध पत्रकार श्री क्षितीश वेदालंकार ने इन सारे अनुभवों को पुस्तकबद्ध कर दिया है।

स्वाधीनता आंदोलन के दिनों में गुरुकुल क्रांतिकारी गतिविधियों का केंद्र रहा है। 1905 के बाद हरिद्वार के आर्यसमाजियों ने स्वदेशी आंदोलन को बढ़ावा दिया। श्री तिलक की गिरफ्तारी तथा लाला लाजपत राय के विदेश चले जाने पर स्वामी जी ने बड़ी कुशलता के साथ एक ओर राजनीतिक गतिविधियों का मार्गदर्शन किया और दूसरी ओर सरकारी दृष्टि से यह साफ करा दिया कि आर्यसमाज राजद्रोह का अगुआ नहीं है। गुरुकुल के प्राध्यापक तथा प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् श्रीपाद दामोदर सातवलेकर क्रांतिकारियों के हितचिंतक थे। खिलाफत आंदोलन को स्वामी जी ने धर्मयुद्ध कहकर गांधी जी को सक्रिय समर्थन दिया। असहयोग आंदोलन का तो हरिद्वार में प्रमुख केंद्र गुरुकुल कांगड़ी ही था। स्वामी जी ने 19 नवंबर, 1920 की श्रद्धा में इसका समर्थन कर कहा था—'आर्यसमाज में प्रविष्ट होकर हर एक व्यक्ति का धर्म है कि वह वीरता और साहस से समाज-संबंधी और राजनीति-संबंधी सिद्धांतों को माने, कहे और प्रयोग में लाए। उसमें शिथिल होना या पूरा न उतरना दयानंद और आर्यसमाज के नामों का भारी अपमान करना है।' परिणाम यह हुआ कि चरखा प्रचार, मद्यनिषेध तथा विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का काम खुलकर गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने किया। स्वामी श्रद्धानंद, सत्यदेव परिव्राजक तथा इंद्र विद्यावाचस्पति, अभयदेव, दीनदयालु शास्त्री, पूर्णचंद्र विद्यालंकार, सत्यव्रत सिद्धांतालंकार,

आचार्य रामदेव, जयदेव विद्यालंकार तथा गणपति आदि ने सक्रिय भाग लिया। प्रसिद्ध क्रांतिकारी श्री बी.के. दत्त तो अभयदेव जी के निरंतर संपर्क में थे। महाशय कृष्ण, उनके पुत्र श्री वीरेंद्र तथा पृथ्वीसिंह आज़ाद गुरुकुल की स्वामिनी सभा के अध्यक्ष रहे। इन्होंने भी बढ़-चढ़कर राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लिया। गुरुकुल के स्नातक पंडित चंद्रमणि विद्यालंकार ने एक ओर 'निरुक्त' जैसे ग्रंथ की टीका लिखी, दूसरी ओर राजनीतिक धमाकों का जीवन भी व्यतीत किया। नमक आंदोलन में सर्वश्री सर्वमित्र, हरिशंकर तथा सत्यभूषण ने तो अपने प्राणों की आहुति देकर गुरुकुल के स्नातकों का नाम अमर कर दिया। लगभग पचास स्नातक स्वाधीनता के लिए जेलों में बंद रहे। पंडित जयचंद्र विद्यालंकार के शिष्य श्री भगतसिंह, शचींद्रनाथ सान्याल के क्रांतिकारी संगठन को उन्होंने (विद्यालंकार) सक्रिय समर्थन दिया था। श्री सान्याल ने अपनी पुस्तक 'बंदी जीवन' में लिखा है—'इस लोकसंग्रह के कार्य में अध्यापक जयचंद्र जी ही प्रधानरूप में सहायक थे। पंजाब में जिस विप्लव आंदोलन की नींव पड़ी, उसका संपूर्ण श्रेय श्री जयचंद्र जी को ही है। तिलक स्कूल ऑफ पोलिटिक्स के छात्रों से जो मैं परिचित हुआ था, वह जयचंद्र जी की कृपा से। आपकी सहायता से मुझे ऐसे आदमी भी मिले थे, जिन्हें मैं अत्यंत कष्टसाध्य एवं विपदसंकुल स्थानों पर भेज पाया था।' डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार ने 'आर्यसमाज का इतिहास' ग्रंथ में इस शानदार इतिहास को लिखा है। इंद्र जी तथा सत्यकेतु जी के साथ भगतसिंह ने 'अर्जुन दैनिक' में भी संपादन कार्य किया था। जयचंद्र जी तथा सत्यकेतु जी इतिहास के विश्वप्रसिद्ध विद्वान् रहे हैं। सत्यकेतु जी को 1938 में पेरिस से डी.लिट्. की उपाधि मिली थी। वह 1985 से 1988 तक गुरुकुल के कुलपति भी रहे। उन्हें 'मौर्य साम्राज्य का इतिहास' ग्रंथ पर मंगला प्रसाद पारितोषिक प्राप्त हुआ था। पंडित जयचंद्र को हिंदी साहित्य सम्मेलन ने कोटा अधिवेशन का सभापति मनोनीत किया था। उन्होंने नेशनल कॉलेज, लाहौर; बिहार विद्यापीठ, पटना तथा काशी विद्यापीठ में अध्यापन कार्य किया था। वह ऐतिहासिक भूगोल के पंडित थे। 'भारतीय इतिहास की रूपरेखा', 'भारतभूमि और उसके निवासी' तथा 'भारतीय इतिहास की मीमांसा' उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं। 'भारतीय इतिहास की रूपरेखा' पर उन्हें भी मंगला प्रसाद पारितोषिक मिला था।

हिंदी सत्याग्रह तथा गोरक्षा सत्याग्रह में भी गुरुकुल के स्नातकों ने स्वामी श्रद्धानंद के मार्ग का ही अनुसरण किया। आर्य विद्वानों में महाशय कृष्ण, जगदेव सिंह सिद्धांती, आचार्य भगवानदेव, लक्ष्मीचंद्र दीक्षित, स्वामी आत्मानंद जी, भीमसेन विद्यालंकार तथा पंडित रघुवीर सिंह शास्त्री के नाम उल्लेखनीय हैं। श्री रघुवीर सिंह शास्त्री अच्छे वक्ता तथा प्रभावशाली लेखक थे। सर छोटूराम पर लिखी उनकी जीवनी उनके कुशल लेखक होने का परिचय देती है। वह सिद्धांती जी के शिष्य थे। लोकसभा के सदस्य भी रहे। छोटे-छोटे संस्कृत वाक्यों में धाराप्रवाह बोलकर

उन्होंने लोकसभा को चकित कर दिया था। उनकी दूसरी रचना 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का इतिहास' है। वह गुरुकुल के कुलपति भी रहे। डॉ. वारान्निकोव, डॉ. चेलिश्शेव, मोरारजी देसाई, श्रीमती इंदिरा गांधी, डॉ. देवराज, आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर तथा डॉ. फादर कामिल बुल्के जैसे विद्वानों को गुरुकुल बुलाकर उन्होंने अपने कार्यकाल में गुरुकुल की गिरती साख की रक्षा की। वह सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा गठित भाषा स्वातंत्र्य समिति के मंत्री भी रहे थे। ऋषिकेश में आयोजित एक शास्त्रार्थ में कांचीकामकोटिपीठ के शंकराचार्य श्री जयेंद्र सरस्वती ने उन्हें सम्मानित भी किया था। गोरक्षा आंदोलन की प्रेरणा तो पूज्य विनोबा जी ने दी थी, पर आर्यनेता श्री रामगोपाल शालवाले ने इस आंदोलन को ऊँचाई पर पहुँचाया। जैन मुनि ज्ञानचंद, शंकराचार्य श्री निरंजनदेव सरस्वती तथा श्री करपात्री जी महाराज ने इसे निर्णायक धर्मयुद्ध मानकर भागीदारी की। गुरुकुल के दार्शनिक डॉ. जयदेव वेदालंकार भी छात्र के रूप में सम्मिलित हुए थे।

गुरुकुल के आचार्यों की समृद्ध परंपरा में बुद्धदेव जी के बाद आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति का नाम आता है। वह 1943 में आचार्य बने तथा 1968 से 1971 तक कुलपति पद पर समासीन रहे। डॉ. जाकिर हुसैन उनके पांडित्य से इतने अभिभूत थे कि वह उनकी नियुक्ति जामिया मिलिया में करना चाहते थे, पर पंडित जी गुरुकुल के लिए समर्पित थे, अतः कहीं नहीं गए। उन्होंने 1935 से 1943 तक आर्य उपदेशक विद्यालय, लाहौर में कार्य किया तथा सभा के मुखपत्र 'आर्य' का संपादन किया। 'वरुण की नौका', 'वेदोद्यान के चुने हुए फूल', 'वेद का राष्ट्रीयगीत', 'वेदों के राजनीतिक सिद्धांत' तथा 'वेदों की वैज्ञानिकता' उनके प्रमुख ग्रंथ हैं। डॉ. संपूर्णानंद, इंदिरा गांधी तथा डॉ. राजा रमन्ना जैसे वैज्ञानिकों ने उनकी कृतियों का विमोचन किया था।

पंडित रामनाथ वेदालंकार भी गुरुकुल के आचार्य रहे। वह 1976 से 1979 तक दयानंद शोधपीठ, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ के भी अध्यक्ष रहे। 'वेदों की वर्णन शैलियाँ' ग्रंथ पर उन्हें आगरा विश्वविद्यालय से पी-एच.डी. की उपाधि मिली। वह विश्वविद्यालय में वेदोपाध्याय तथा संस्कृत विभागाध्यक्ष भी रहे। आप वेदों के उद्भट विद्वान् हैं। सामवेद का ऋषि दयानंद की पद्धति पर आध्यात्मिक भाष्य किया है। 'वेद मंजरी', 'वेदभाष्यकारों की वेदार्थ प्रक्रियाएँ' तथा 'दयानंद विचारकोश' अन्य प्रमुख रचनाएँ हैं।

पंडित जी के बाद अल्पावधि के लिए डॉ. निरूपण विद्यालंकार तथा डॉ. चंद्रभानु अकिंचन ने भी गुरुकुल का आचार्य पद सुशोभित किया। डॉ. चंद्रभानु अकिंचन डॉ. सूर्यकांत के शिष्य थे। अकिंचन जी ने काशी हिंदू विश्वविद्यालय से कालिदास पर संस्कृत में शोधप्रबंध लिखकर अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान्

डॉ. सूर्यकांत जी के निर्देशन में पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की थी। डॉ. सूर्यकांत ज्वालापुर महाविद्यालय के स्नातक थे तथा 1937 में ऑक्सफोर्ड से डी.लिट्. उपाधि प्राप्त कर लाहौर, दिल्ली, वाराणसी, कुरुक्षेत्र तथा अलीगढ़ विश्वविद्यालयों में प्राध्यापक का कार्य किया था। आपका 'वैदिक कोश' प्रसिद्ध है। अन्य ग्रंथों में 'सामवेद सर्वानुक्रमणी', 'कौथुमगृह्यसूत्र', 'अथर्व तथा गोपथ एवं काठक श्रौतसूत्र' प्रसिद्ध हैं। डॉ. निरूपण 1945 में गुरुकुल के स्नातक बने। आपने 'प्राचीन भारतीय धर्मशास्त्र साहित्य में शूद्रों की स्थिति' ग्रंथ लिखकर आगरा विश्वविद्यालय से पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की। 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' तथा 'मुद्राराक्षस' की टीका लिखी। 'काव्य दीपिका' तथा 'साहित्य दर्पण' का संपादन किया। 'स्वामी श्रद्धानंद : एक विलक्षण व्यक्तित्व' का संपादन आपने डॉ. विनोदचंद्र विद्यालंकार के साथ किया।

इनके बाद गुरुकुल के आचार्य बने प्रो. रामप्रसाद वेदालंकार, प्रो. रामप्रसाद पंडित प्रियव्रत वेदवाचस्पति तथा पंडित रामनाथ वेदालंकार के शिष्य थे। वेदालंकार अत्यंत निश्छल तथा विद्याव्यसनी व्यक्ति थे। आर्यसमाज तथा वेद के प्रचार-प्रसार में संलग्न रहे। गुरुकुल विश्वविद्यालय के आप वेद विभागाध्यक्ष पद पर बरसों कार्य करते रहे। उन्होंने वेदों को लोकप्रिय बनाने की दिशा में कई पुस्तकें लिखीं। वह वेदों की मनोहारी व्याख्या करते थे। 'ईशोपनिषद्', 'नचिकेता के तीन वर', 'वेद सुधा' दो भाग तथा 'पावमानी वरदा देवमाता' अच्छी पुस्तकें हैं।

वेदालंकार के बाद पंडित रामनाथ वेदालंकार के शिष्य तथा संस्कृत विद्वान्, प्रो. वेदप्रकाश शास्त्री गुरुकुल के आचार्य बने। शास्त्री जी धाराप्रवाह अलंकृत संस्कृत बोलते हैं। संस्कृत साहित्यशास्त्र के आकर ग्रंथ उन्हें स्मरण हैं। होशियारपुर इंस्टीट्यूट में वह महामहोपाध्याय पंडित परमेश्वरानंद शास्त्री के शिष्य भी रह चुके हैं। संप्रति विश्वविद्यालय के वह आचार्य हैं और संस्कृत विभाग में प्रोफेसर के पद पर नियुक्त हैं।

गुरुकुल के आचार्यों के समान गुरुकुल के कुलपतियों की भी बड़ी महनीय परंपरा रही है। स्वतंत्रता से पूर्व गुरुकुल के अध्यक्ष मुख्याधिष्ठाता कहलाते थे। स्वामी श्रद्धानंद जी भी मुख्याधिष्ठाता थे। पंडित विश्वंभरनाथ, पंडित सत्यव्रत तथा पंडित इंद्र जी भी मुख्याधिष्ठाता ही कहलाए जाते रहे। पंडित सत्यव्रत जी के उद्योग से जून 1962 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने गुरुकुल को विश्वविद्यालय का दर्जा प्रदान किया। इसके बाद गुरुकुल कांगड़ी की सभी उपाधियाँ भारतीय विश्व विद्यालयों एवं केंद्रीय तथा राज्य सरकारों द्वारा मान्य कर ली गई।

पंडित इंद्र विद्यावाचस्पति गुरुकुल के प्रथम स्नातक ही नहीं, गुरुकुलीयता के उज्ज्वल प्रतीक भी थे। वह 1912 में स्नातक बने थे। वह संस्कृत, हिंदी तथा अंग्रेजी के पंडित थे। वह गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता, उपकुलपति तथा कुलपति पद पर सुशोभित हुए। स्वतंत्रता सेनानी के रूप में वह अनेक बार जेल गए। इंद्र जी ने

तिलक तथा गोखले से प्रत्यक्ष प्रेरणा ग्रहण की थी। वह उग्रवादी पत्रकार थे। 'अर्जुन' के संपादन में उनके पास कार्य करने के लिए भगतसिंह भी आए थे। 1927, 1930 तथा 1932 में वह जेल गए। इंद्र जी तार्किक थे। उन्होंने महामहोपाध्याय पंडित गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी के साथ शास्त्रार्थ भी किया था। दिल्ली उनकी राजनीतिक कर्मस्थली थी। उनकी पत्नी चंद्रावती जी भी तीन बार जेल गई थीं। 1938-'39 में निजामशाही के विरुद्ध हैदराबाद सत्याग्रह का शंखनाद उन्हीं के द्वारा हुआ था। 1952 में उन्हें राज्यसभा का सदस्य बनाया गया। पद्मभूषण पं. बनारसीदास चतुर्वेदी, श्री बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', श्री मैथिलीशरण गुप्त और श्री दिनकर उनके प्रमुख मित्र थे। डॉ. विजयेंद्र स्नातक जी के साथ मिलकर दिल्ली विश्वविद्यालय में उन्होंने अपने पांडित्य के आधार पर गुरुकुल की उपाधियों को मान्यता दिलाई। उनके ग्रंथों में 'आर्यसमाज का इतिहास', 'मेरे पिता', 'भारतेतिहास', 'महर्षि दयानंद जीवन चरित' तथा 'स्वराज्य संग्राम में आर्यसमाज का भाग' प्रमुख हैं। उन्होंने हस्तलिखित पत्र 'सत्यविचारक', (सत्यप्रकाशक) 'सद्धर्म' (साप्ताहिक), 'सद्धर्म प्रचारक दैनिक', 'विजय दैनिक', 'अर्जुन दैनिक', 'वीर अर्जुन दैनिक' तथा 'अर्जुन साप्ताहिक', 'मनोरंजन मासिक', 'नवराष्ट्र दैनिक' तथा 'जनसत्ता दैनिक' का संपादन किया। मनोरंजन मासिक में उनके सहयोगी पद्मश्री चिरंजीत थे जो पाकिस्तान के युद्ध पर 'ढोल की पोल' रेडियो नाटक लिखकर प्रसिद्ध हुए। चिरंजीत हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि हैं। उन्होंने नाटक, कविता, उपन्यास, हास्यकथा तथा बाल साहित्य की रचना की है। उन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध क्रांतिकारी रचनाएँ लिखी थीं। कुछ पंक्तियाँ देखिए–

'आज करेंगे हम निबटारा।।
दैन्य भूख से लाभ उठाकर,
जूठे टुकड़ों से बहलाकर,
बहुत निचोड़ा दानव तूने हिंस्र करों से लहू हमारा।।
हमने निज सत्ता पहचानी,
स्वत्व प्राप्ति की हमने ठानी,
बंदी आज नहीं रख सकती हमको परवशता की कारा।।'

इंद्र जी के बाद पंडित सत्यव्रत सिद्धांतालंकार कुलपति बने। उनकी सेवाओं को देखते हुए गुरुकुल के कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा, कुलपति श्री रामचंद्र शर्मा कुलाधिपति श्री वीरेंद्र तथा आर्य नेता कुलाधिपति श्री सोमनाथ जी मरवाह ने उन्हें 'वैदिक साहित्य, संस्कृति और समाजदर्शन' नाम से अभिनंदन ग्रंथ भेंट किया, जिसका संपादन इन पंक्तियों के लेखक ने किया था। सत्यव्रत जी के बाद श्री महेंद्र प्रताप शास्त्री तथा सत्यकेतु विद्यालंकार में कुलपति पद को लेकर विवाद हुआ।

शास्त्री जी ने गुरुकुल, वृंदावन तथा पंजाब विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त की। कोल्हापुर, देहरादून, लखनऊ तथा बड़ौत में अध्यापन किया। कन्या गुरुकुल, हाथरस आपकी निष्ठा और कर्मठता का प्रतीक है। आपने 'महात्मा नारायण स्वामी अभिनंदन' ग्रंथ तथा 'पंडित गंगा प्रसाद उपाध्याय अभिनंदन' ग्रंथों का संपादन किया था। डॉ. विजयेंद्र स्नातक के संपादन में आपको भव्य अभिनंदन ग्रंथ 1980 में भेंट किया गया। शास्त्री जी तथा सत्यकेतु जी का विवाद शांत होने पर आचार्य प्रियव्रत कुलपति बने। प्रियव्रत जी के बाद रघुवीर सिंह शास्त्री, सत्यकेतु विद्यालंकार, श्री बलभद्र कुमार हूजा, श्री रामचंद्र शर्मा, डॉ. सत्यकाम वर्मा, श्री सुभाष विद्यालंकार, प्रो. रामप्रसाद वेदालंकार तथा डॉ. धर्मपाल आर्य कुलपति बने। इनमें रामचंद्र शर्मा आई.ए.एस. अधिकारी थे। डॉ. सत्यकाम वर्मा गुरुकुल के स्नातक और दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के प्रोफेसर रहे हैं। उन्होंने 'वाक्यपदीय का भाषा तात्त्विक विवेचन' नामक बहुचर्चित ग्रंथ लिखा। उनकी अन्य कृतियों में 'वाक्यपदीय', 'संस्कृत व्याकरण का उद्भव विकास' तथा 'दिनकर और पंत' प्रसिद्ध हैं। श्री सुभाष विद्यालंकार संस्कृत तथा अंग्रेजी के अच्छे ज्ञाता हैं। वह विधिवेत्ता हैं। इनकी कर्मस्थली दिल्ली रही है। इन्होंने 1949 ई. में विद्यालंकार की उपाधि श्री नरहरि विष्णु गाडगिल की सन्निधि में प्राप्त की थी। प्रारंभ में धनौरा मंडी में छापाखाना लगाया तथा 'शिक्षासुधा' नामक पत्रिका का संपादन किया। योग, वेद, पत्रकारिता, राजनीतिशास्त्र तथा अर्थशास्त्र के आप अच्छे लेखक हैं। गुरुकुल में हिंदी पत्रकारिता में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम तथा कंप्यूटर केंद्र आपकी प्रेरणा से चलाए गए। श्री विद्यालंकार दिल्ली प्रशासन, रेडियो, पत्रकारिता तथा सर्वोच्च न्यायालय में वकालत के कार्यों से जुड़े रहे हैं।

गुरुकुल को भारतीय विश्वविद्यालयों के वर्तमान क्षितिज पर खड़ा करने का श्रेय श्री बलभद्र कुमार हूजा, आई.ए.एस. को है। उनके पिता श्री गोवर्धन शास्त्री गुरुकुल में अध्यापक थे। उन्होंने संस्कृत, अंग्रेजी के विद्वान् होते हुए भी भौतिक विज्ञान तथा रसायन विज्ञान पर हिंदी में पुस्तकें लिखीं। दिल्ली से 'प्रह्लाद' नामक साप्ताहिक पत्र निकाला। गुरुकुल से जाने के बाद उन्होंने संस्कृत में एम.ए., एम.ओ.एल. की उपाधियाँ प्राप्त कीं। 1914 में गुरुकुल से आपकी कृति 'वेदों का अनादित्व' प्रकाशित हुई। श्री हूजा 1936-'37 में अर्थशास्त्र के प्रवक्ता रहे। 1938 में पंजाब सिविल सेवा के लिए चुने गए। वह उदयपुर कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति रहे। 1952 में भारतीय प्रशासनिक सेवा में आए। राजस्थान सरकार में आयुक्त रहने के बाद मणिपुर लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष बने। 1975 में गुरुकुल कांगड़ी के कुलपति बने। आपने लोक प्रशासन विषय पर अनेक निबंध लिखे। आप विनोबा जी के आध्यात्मिक शिष्यवत् हैं। महर्षि दयानंद और श्रद्धानंद के परमभक्त हूजा जी ने 'शिक्षा, मूल्य और समाज' कृति में शिक्षा के विभिन्न आयामों पर विचार

किया है। विश्वविद्यालय में विभिन्न विभागों में प्रोफेसर पद का सृजन, नए विषयों का आरंभ तथा विज्ञान और मानविकी के क्षेत्र में 'आर्यभट्ट', 'वैदिक पाथ', 'प्रह्लाद', तथा 'गुरुकुल पत्रिका' का नियमित प्रकाशन उनकी देन है। उनके समय भारतीय विश्वविद्यालय संघ ने गुरुकुल को संबद्धता प्रदान की।

वर्तमान कुलपति डॉ. धर्मपाल ने विश्वविद्यालय में कंप्यूटर तथा प्रबंधन संकायों को खुलवाया। भवनों का निर्माण कराया तथा कन्या गुरुकुल, देहरादून के समान कन्या महाविद्यालय, हरिद्वार की स्थापना की। रामचंद्र शर्मा द्वारा संस्थापित स्वामी श्रद्धानंद अनुसंधान प्रकाशन केंद्र से कई मूल्यवान् ग्रंथों के प्रकाशन में डॉ. धर्मपाल जी का अनुपम योगदान रहा है। वह पहले कुलपति हैं जिन्होंने दीक्षांत अवसरों पर साहित्यिकों को बुलाने का उपक्रम किया। डॉ. ओदोलेन स्मेकल, डॉ. उलित्सोफेरोव तथा डॉ. सुमतींद्र नाडिग को दीक्षांत के लिए बुलाकर उन्होंने स्वस्थ परंपरा डाली है। वह हिंदी-अंग्रेजी के विद्वान् हैं। तुलसी साहित्य पर दिल्ली विश्वविद्यालय के आचार्य एवं अध्यक्ष डॉ. महेंद्र कुमार जी के निर्देशन में पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान रहे हैं। गुरुकुल की प्रगति के लिए निरंतर प्रयत्नशील हैं। कुलाधिपति श्री सूर्यदेवजी तथा परिद्रष्टा न्यायमूर्ति, स्वर्गीय श्री महावीर सिंह जी के भरपूर समर्थन तथा मार्गदर्शन से ही यह सब संपन्न हो सका।

गुरुकुल के पूर्व कुलसचिव डॉ. गंगाराम गर्ग ने भारतीय साहित्य पर अंग्रेजी में प्रामाणिक ग्रंथ लिखे हैं। उनकी कृतियों में ऑक्सफोर्ड प्रेस से प्रकाशित शब्दकोश तथा 'हिंदी एवं संस्कृत लेखक कोश' प्रसिद्ध हैं। डॉ. गर्ग ने पंडित सत्यव्रत, आचार्य प्रियव्रत, डॉ. सत्यकेतु जी तथा श्री हूजा के कार्यकाल में गुरुकुल से विभिन्न रूपों में जुड़कर कार्य किया है। इसी प्रकार गुरुकुल के सहायक मुख्याधिष्ठाता तथा कुल सचिव पद पर कार्यरत पंडित धर्मपाल विद्यालंकार के कर्तृत्व को भी विस्मृत नहीं किया जा सकता। वह स्वामी श्रद्धानंद के अवैतनिक सचिव थे। उन्होंने स्वामी जी की अंतिम काल में बड़ी सेवा की थी। इन दोनों महानुभावों का कार्यकाल प्रशंसनीय रहा है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि गुरुकुल जीता जागता अग्निदूत रहा है जिसके निर्माण और शृंगार में यहाँ के कृती आचार्यों, स्नातकों तथा विद्वानों का भरपूर योगदान रहा है। उसकी शतवार्षिकी मनाने का सौभाग्य हमारी पीढ़ी प्राप्त कर रही हैं, यह गर्व का विषय है। इन सौ वर्षों का लगभग एक-तिहाई भाग इतना शानदार है कि उस पर भारतीय शिक्षा-प्रणाली के उन्नायकों को गर्व हो सकता है और स्वतंत्रता के बाद गुरुकुल निरंतर आधुनिकता की ओर बढ़ता रहा है। उसमें भी वह सब कुछ स्थान पाने लगा है जो अन्य शिक्षण संस्थाओं में होता रहा है या हो रहा है। विश्वविद्यालय का दर्जा मिलने के बाद उन जीवन-मूल्यों का ह्रास भी

हुआ है जिनके उन्नयन के लिए इस विश्वविद्यालय की स्थापना हुई थी। गत पैंतीस वर्षों से इसके उत्थान-ह्रास की कथा का मैं स्वयं साक्षी हूँ। राष्ट्रीय प्रोफेसर तथा सुप्रसिद्ध भाषाशास्त्री डॉ. सुनीति कुमार चाटुर्ज्या तथा कलकत्ता उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति तथा प्रकांड विद्वान् श्री पंतजलि शास्त्री ने इसके जिस भावी रूप की संकल्पना करते हुए विश्वविद्यालय का दर्जा दिए जाने की संस्तुति की थी, क्या वह सम्मूर्तित हो सका है ? विचार का विषय है, विज्ञान तथा तकनीकी एवं व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की आँधी तथा आधुनिकता की अंधी होड़ में आर्ष विषयों के तलस्पर्शी अध्ययन और शोध की दीपशिखा क्या निष्कंप जलती रहेगी, यह भी चिंतनीय है। वेद-वेदांग के प्रामाणिक अध्ययन तथा स्वाधीनता आंदोलन में प्रदत्त योगदान के कारण ही गुरुकुल को विश्वविद्यालय का स्तर प्रदान किया गया था। आशा की जाती है कि इस मूलभूत नीति की रक्षा करते हुए प्राच्यविद्याओं के अध्ययन-अनुसंधान के क्षेत्र को प्रोत्साहन मिलेगा तथा यहाँ के पंडित और प्रशिक्षु मील का पत्थर स्थापित कर सकेंगे जिसकी आर्यसमाज उनसे अपेक्षा करता है।

कुछ नक्श तेरी याद के बाकी हैं अभी तक
दिल बेसर ओ सामां सही वीरां तो नहीं है।

गुरुकुल एक संस्थान ही नहीं, संदेश भी है। यहाँ के ब्रह्मचारियों तथा आचार्यों ने देश की रचनात्मक सेवा की है। राजनीतिक आपाधापी, स्वकेंद्रित व्यक्तित्व परपीड़न, सुख-साधन तथा अकूत दौलत एकत्र करने की होड़ एवं सामाजिक अन्याय तथा शोषण के चलते आम आदमी खोखला हो गया है। युद्धों की निरंतर मार, अस्थिर सरकारें, आतंक तथा अलगाववादी प्रवृत्ति, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में बढ़ती दादागिरी तथा ध्येयहीन शिक्षा और शुद्ध व्यावसायिक जीवनदृष्टि ने समूचे राष्ट्र को आर्थिक असंतुलन, अपसंस्कृति तथा चारित्रिक पतन के गर्त में ढकेल दिया है। काम तथा अर्थ के पिशाच ने पूरे समाज को जकड़ लिया है। पूरे समाज में भ्रष्टाचार को खुला समर्थन मिल रहा है। निर्णीत न होने पर भी एक दूषित मत ही सही जानकी का परित्याग करने वाले राम को लोकनायकों ने भुला दिया है। जनमत दिग्भ्रम में है। लक्ष्य और आदर्शहीन नेतृत्व के प्रति जनता में असंतोष और अविश्वास बढ़ रहा है। जनतंत्र के लिए यह शुभ लक्षण नहीं है। लोकतंत्र की हमने पूजा नहीं, दोहन किया है। आज आवश्यकता है, हमारे नवयुवक तथा नवयुवतियाँ भ्रष्ट पीढ़ी को राष्ट्र के हाशिए से खारिज कर गिरते चारित्रिक मूल्यों की रक्षा करें, उदात्त जीवन पद्धतियों की प्रतिष्ठा करें तथा कमंठता, तेजस्विता, समर्पण, त्याग, देशप्रेम तथा मानवसेवा की भावनाओं को जगाएँ। वे विदेशों से प्रगति की प्रेरणा लें, पर उनके पैर यहाँ की मिट्टी से जुड़े रहें। अधर में खड़े होकर आकाश निचोड़ने की कल्पना करते रहना पागलपन है, खेद है कि अभी तक हमारे शिक्षाशास्त्रियों, धर्माचार्यों तथा राजनेताओं

ने यही किया है। गांधी जी की तरह एक मन, तन, वचन एवं संकल्प में हम एकरस नहीं हो पाए। श्रद्धानंद की तरह हमने कथनी-करनी में संतुलन स्थापित कर राष्ट्रनिर्माण के लिए सर्वस्व होम करने का आदर्श स्थापित नहीं किया। बाहरी दबावों तथा भौतिक सुखों की अंधी स्पर्धा के चलते हम नैतिक तथा वैचारिक धरातल पर परावलंबी और विकलांग होकर घिसरते रहे। अब इस माहौल पर फिजां में बदलाव लाना है। हम अपने ब्रह्मचारियों को इस कृति के माध्यम से गुरुकुल का स्वर्णिम अतीत और कर्मठ वर्तमान दिखाना चाहते हैं। हम चाहते हैं कि वे स्वामी श्रद्धानंद के असिद्ध सपनों को साकार करें। आज़ादी की लड़ाई यहाँ के पूर्व स्नातकों ने लड़ी, आज़ादी मिली, अब समानता के लिए संघर्परत रहते हुए अंधविश्वासों और बुराइयों के विरुद्ध लड़ना है क्योंकि रूढ़िमुक्त भारतीय जीवन पद्धति पर खड़े समानतावादी समाज के निर्माण का लक्ष्य अभी शेष है। यह यात्रा कठिन अवश्य है, पर इसे सुगम बनाना शिक्षकों तथा शिक्षार्थियों का ही कर्तव्य है। आशा है, गुरुकुल के ब्रह्मचारी इस दिशा में अग्रणी भूमिका निभाएँगे।

इस कृति के प्रकाशन में कुलपति जी, कुलाधिपति जी, कुलसचिव जी, आचार्य जी तथा वित्ताधिकारी महोदय ने हर संभव सहायता की, इन सबका हृदय से आभार तथा डॉ. जगदीश विद्यालंकार ने पहले की तरह दौड़धूप कर प्रकाशन का दायित्व सँभाला, इसके लिए भूरिशः साधुवाद। जहाँ तक मेरा प्रश्न है, मैं इतना ही कह सकता हूँ—

'निगार अपना फसाना कहे तो किससे कहे
जो कोई हमज़बाँ मिलता तो गुफ़्तगू करते।।'

—(डॉ.) विष्णुदत्त राकेश
आचार्य, हिंदी विभाग तथा
निदेशक, स्वामी श्रदानंद
अनुसंधान प्रकाशन केंद्र

31-10-98
ईशान, भगवंत पुरम्
कनखल-249408 हरिद्वार

विषय-सूची





खंड-1

(1900-1960)



अध्याय-1

गुरुकुल अरुणोदय से हीरक जयंती तक

❑ पं. धर्मपाल विद्यालंकार
सहायक मुख्याधिष्ठाता

: 1 :

योजना

उन्नीसवीं सदी में भारत के अंधकार पूर्ण अंतरिक्ष में जिन महानुभावों ने जागृति की ज्योति जगाई उनमें ऋषि दयानंद का संदेश बहुत व्यापक था, वे युग प्रवर्तक ऋषि थे, जिन्होंने शिक्षा, राजनीति, समाज-संगठन आदि सब क्षेत्रों में नए विचारों का संदेश दिया। भारत को विदेशी शासन से मुक्त हो स्वराज्य प्राप्त करना चाहिए इस बात को सबसे पहले ऋषि दयानंद ने ही जनता के सम्मुख रखा था। भारत में शासन का क्या रूप हो, समाज का संगठन किस प्रकार से हो और यह देश किस तरह अपने प्राचीन गौरव को प्राप्त कर संसार का शिरोमणि बने, इन सब बातों के संबंध में ऋषि दयानंद ने अपने निश्चित विचार 'सत्यार्थ प्रकाश' आदि ग्रंथों में प्रकट किए। ये विचार न केवल भारत के लिए उपयोगी हैं, अपितु संपूर्ण संसार को अशांति और अव्यवस्था के मार्ग से हटाकर सुख-समृद्धि के पथ पर ले जा सकते हैं। इन्हीं विचारों और आदर्शों को क्रिया में परिणत करने के लिए ऋषि दयानंद ने आर्यसमाज की स्थापना की थी।

अन्य क्षेत्रों के समान शिक्षा के क्षेत्र में आर्यसमाज के विशेष आदर्श हैं। ऋषि दयानंद ने अपने समय में प्रचलित शिक्षा पद्धति में अनेक दोष अनुभव कर प्राचीन आर्ष शिक्षा प्रणाली का प्रतिपादन किया। ऋषि ने उसे गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का नाम दिया। उस समय भारत में शिक्षा की मुख्यतया दो प्रणालियाँ प्रचलित थीं। एक भारत के ब्रिटिश शासकों द्वारा प्रारंभ की गई थी और दूसरी पुरानी परंपरा के अनुसार पंडित मंडली में प्रचलित थी। सरकार द्वारा प्रचलित प्रणाली भारत के राष्ट्रीय तथा धार्मिक आदर्शों के प्रतिकूल थी। उसमें भारत की भाषा, धर्म, सभ्यता, साहित्य तथा

संस्कृति की सर्वथा उपेक्षा की गई थी। पंडित मंडली की शिक्षा पद्धति समय की आवश्यकताओं को पूर्ण नहीं करती थी। उसमें वर्तमान युग के ज्ञान-विज्ञानों को कोई स्थान प्राप्त न था। चरित्र निर्माण के लिए ब्रह्मचर्य, त्याग, तपस्या आदि जिन आदर्शों का पालन आवश्यक है, उनका दोनों प्रणालियों में महत्त्व न था। ऋषि दयानंद ने अनुभव किया कि भारत में प्राचीन गुरुकुल प्रणाली का पुनरुद्धार कर इन दोषों को दूर किया जाना चाहिए। इसीलिए उन्होंने शिक्षा के निम्नलिखित आदर्श और सिद्धांत प्रतिपादित किए–

1. यह राज नियम और जाति नियम होना चाहिए कि आठवें वर्ष से आगे अपने लड़के-लड़कियों को घर में न रखें। पाठशाला में अवश्य भेज देवें, जो नहीं भेजे वह दंडनीय हो।

2. लड़कों और लड़कियों के गुरुकुल पृथक्-पृथक् हों।

3. विद्यार्थी लोग गुरुकुलों में ब्रह्मचर्य का पालन करें। पच्चीस वर्ष पूर्व बालक का और सोलह वर्ष पूर्व कन्या का विवाह न हो सके।

4. गुरुकुल में सबको तुल्य वस्त्र, खान-पान, आसन दिए जावें, चाहे वह राजकुमार व राजकुमारी हों, चाहे दरिद्र के संतान हों। सब के साथ एक जैसा व्यवहार किया जावे।

5. गुरुकुलों में गुरु और शिष्य पिता-पुत्र के समान रहें।

6. विद्या पढ़ने के स्थान, गुरुकुल शहर व ग्रामों से दूर एकांत में हों।

7. शिक्षा में वेदांग तथा सत्य शास्त्रों को प्रमुख स्थान दिया जाए, साथ ही राजविद्या, संगीत, नृत्य, शिल्पविद्या, गणित, ज्योतिष, भूगोल-खगोल, भूगर्भविद्या, यंत्रकला, हस्तक्रिया, चिकित्साशास्त्र आदि का भी यथोचित रूप से अभ्यास कराया जावे।

निस्संदेह ऋषि दयानंद के ये विचार शिक्षा के क्षेत्र में अत्यंत क्रांतिकारी विचार थे। आर्यसमाज के सम्मुख शुरू से ही उन्हें क्रिया में परिणत करने की समस्या उपस्थित थी।

उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में कुछ लोगों के हृदय में यह विचार उत्पन्न हुआ कि ऋषि दयानंद के शिक्षा संबंधी आदेशों के अनुसार गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का पुनरुद्धार करना चाहिए। महात्मा मुंशीराम इस आंदोलन के प्रवर्तक तथा प्रमुख नेता थे। ऋषि दयानंद ने आदर्श शिक्षा का जो मार्ग दिखलाया था, महात्मा मुंशीराम उसके पहले पथिक बने। आज से पैंतीस वर्ष पूर्व गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का पुनरुद्धार एक असंभव कल्पना, एक अक्रियात्मक आदर्श समझा जाता था। महात्मा मुंशीराम के प्रयत्न से यह असंभव कल्पना संभव हो गई और शिक्षा के क्षेत्र में एक नई क्रांति हुई।

गुरुकुल के लिए पहले-पहल आंदोलन सन् 1897 में प्रारंभ हुआ। उन दिनों

महात्मा मुंशीराम जालंधर से 'सद्धर्म प्रचारक' प्रकाशित करते थे। सद्धर्म प्रचारक में उसके लिए प्रबल आंदोलन किया गया 'आर्य पत्रिका' आदि अन्य सामाजिक पत्रों ने इसका पक्षपोषण किया। नवंबर 1898 के आर्य प्रतिनिधि सभा के साधारण अधिवेशन में गुरुकुल खोलने का प्रस्ताव उपस्थित किया गया। वह प्रस्ताव स्वीकृत हो गया।

गुरुकुल को खोलने का प्रस्ताव तो स्वीकृत हो गया, पर धन के बिना गुरुकुल खोलना संभव कैसे था ? धन एकत्रित करने का कार्य भी महात्मा मुंशीराम जी ने अपने ऊपर लिया। उन्होंने प्रतिज्ञा की कि जब तक तीस हज़ार रुपया एकत्रित नहीं कर लेंगे अपने घर में पैर नहीं रखेंगे। आजकल तीस हज़ार रुपए किसी सार्वजनिक कार्य के लिए एकत्रित करना बहुत कठिन नहीं है। पर अब से पचास वर्ष पूर्व जब कि किसी सार्वजनिक कार्य के लिए दान देने का अभ्यास जनता को नहीं था, तीस हज़ार रुपया इकट्ठा करना एक असाधारण बात थी। महात्मा मुंशीराम जी गुरुकुल के लिए धन एकत्रित करने निकल पड़े। आठ महीने लगातार घूमने के बाद तीस हजार रुपए एकत्रित हुए। महात्मा मुंशीराम जी की यह असाधारण सफलता थी, उनके अटल विश्वास और हार्दिक धर्मप्रेम की यह अद्भुत विजय थी। इस सफलता के अभिनंदन स्वरूप लाहौर में उनका शानदार जुलूस निकला। सर्वत्र फूलों के हारों तथा उत्साहपूर्ण जयकारों के साथ उनका स्वागत हुआ।

गुरुकुल के नियम आदि बनाने का कार्य भी महात्मा मुंशीराम जी के सुपुर्द किया गया और 26 दिसंबर, 1900 के प्रतिनिधि सभा के साधारण अधिवेशन में गुरुकुल के प्रथम नियम स्वीकृत किए गए थे। गुजराँवाला के लाला रलाराम उन दिनों आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान थे। उनके हस्ताक्षरों से गुरुकुल की प्रथम नियमावली प्रकाशित हुई। उसमें बीस पृष्ठ की भूमिका थी, जिसमें इन नियमों की व्याख्या की गई है। गुरुकुल के उद्देश्य आदि के संबंध में यह नियमावली सभा की प्रामाणिक घोषणा है। गुरुकुल की स्थापना के समय महात्मा मुंशीराम जी के ही नहीं, अपितु उस समय की आर्य प्रतिनिधि सभा के क्या विचार थे, यह जानने के लिए इस प्रथम नियमावली से बढ़कर और कोई साधन नहीं है। इसमें गुरुकुल की स्थापना के निम्नलिखित आठ कारण बताए गए हैं–

1. वेद आर्यसमाज के प्राण हैं। विशाल संस्कृत साहित्य का मूलस्रोत वेद ही हैं। वेद के अध्ययन के लिए गुरुकुल की आवश्यकता है।

2. संस्कृत का अध्ययन तब तक पूर्ण नहीं हो सकता जब तक अंगों और उपांगों के साथ वेद का अध्ययन न किया जाए। अतः ऐसे शिक्षणालय की आवश्यकता है, जहाँ संस्कृत साहित्य के साथ-साथ वैदिक साहित्य का भी अध्ययन हो।

3. भारत की शिक्षा सच्चे अर्थों में राष्ट्रीय तभी हो सकती है जब यहाँ के

शिक्षणालयों में संस्कृत का अध्ययन हो। ब्रिटिश सरकार ने जो कुछ भी शिक्षा प्रचलित की है, वह भारतीयों को 'अंग्रेज' बना रही है, वह भारतीयों में देशभक्ति का विनाश कर रही है। मुसलिम शासन की अनेक शताब्दियाँ जिन हिंदुओं को अपना दास नहीं बना सकीं, उन्हें दस-बीस वर्षों की अंग्रेजी शिक्षा दास बनाने में समर्थ हो रही है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि हम आर्य जाति के लिए शिक्षा की एक ऐसी योजना तैयार करें जो सच्चे अर्थों में 'राष्ट्रीय' हो; जो आर्य जाति की 'राष्ट्रीय शिक्षा' की आवश्यकता को पूर्ण करें। हमारा यह अभिप्राय नहीं है कि विदेशी भाषा और नए ज्ञान-विज्ञानों को ग्रहण न किया जाए। इनका लाभ उठाना परम आवश्यक है। हमें अंग्रेजी, आधुनिक विज्ञान, पाश्चात्य दर्शन, अर्थशास्त्र और राजनीति का अध्ययन करना ही चाहिए। क्या यूरोपियन लोग विदेशी भाषाओं और प्राच्य विद्याओं को नहीं पढ़ते हैं ? वे पढ़ते हैं, पर अपनी शिक्षा को विदेशी नहीं बना देते। इसी तरह हमें भी विदेशी ज्ञान-विज्ञानों को पढ़ते हुए अपनी राष्ट्रीयता की रक्षा करनी चाहिए। गुरुकुल की स्थापना में यह तीसरा हेतु है।

4. ब्रह्मचर्य शिक्षा का मुख्य आधार है। हमारी संस्थाएँ ऐसी होनी चाहिए जो नगरों के दूषित प्रभावों से दूर हों और जहाँ ब्रह्मचर्य के नियमों का भलीभाँति पालन होता हो।

5. सरकारी यूनिवर्सिटियों में परीक्षा की जो पद्धति प्रचलित है। वह वास्तविक विद्वता के मार्ग में बाधक है। अतः कोई ऐसी संस्था जो सरकारी यूनिवर्सिटियों की परीक्षा भी दिलाना चाहे और वैदिक पांडित्य भी उत्पन्न करना चाहे, कभी सफल नहीं हो सकती। डी.ए.वी. कॉलेज ने यही प्रयत्न किया है और उसे असफलता हुई। गुरुकुल इस शिक्षा पद्धति से दूर रहेगा।

6. शिक्षणालय में शिक्षक को बालक के माता-पिता का स्थान लेना चाहिए। भारत के वर्तमान शिक्षणालयों में शिक्षक लोग माता-पिता का स्थान नहीं लेते। गुरुकुल में इस कमी को दूर किया जाएगा।

7. शिक्षा के लिए कोई फीस नहीं होनी चाहिए।

8. यूरोपियन विद्वानों ने भारतीय इतिहास की जो खोज की है उसमें भारतीय इतिहास के साथ न्याय नहीं हुआ। उसमें जो तिथिक्रम निश्चित किया गया है, वह सर्वथा अशुद्ध है। उसका खंडन करने के लिए भारत के प्राचीन इतिहास तथा पुरातत्त्व का विवेचनात्मक अध्ययन किया जाना चाहिए। यह कार्य भी गुरुकुल जैसे शिक्षणालय से ही पूर्ण किया जा सकता है।

गुरुकुल की स्थापना के हेतुओं पर किसी प्रकार की टीका-टिप्पणी करने की आवश्यकता नहीं है। ये अपने आप में सर्वथा स्पष्ट हैं। ऋषि दयानंद ने शिक्षा संबंधी जो आदर्श अपने ग्रंथों में प्रतिपादित किए थे, उनकी ये समयानुकूल व्याख्या मात्र प्रतीत होते हैं। इनको दृष्टि में रखकर गुरुकुल में पढ़ाने के लिए जो पहली पाठविधि

बनाई गई थी, उसमें सांगोपांग वेद और संस्कृत साहित्य के गंभीर अध्ययन के साथ-साथ अंग्रेजी, गणित, रसायन (Chemistry), भौतिक विज्ञान (Physics), जीव विज्ञान (Biology), वनस्पतिशास्त्र (Botany), भूविज्ञान (Geology), कृषि, आयुर्वेद, पाश्चात्य दर्शन, अर्थशास्त्र आदि के उच्चकोटि के अध्ययन की भी व्यवस्था की गई थी। वस्तुतः गुरुकुल के प्रथम प्रवर्तक आर्य जाति के लिए 'राष्ट्रीय शिक्षा' की योजना तैयार कर रहे थे। उनकी दृष्टि में आदर्श राष्ट्रीय शिक्षा वह थी जिसमें आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के साथ संस्कृत साहित्य और सांगोपांग वेद का अध्ययन होता हो।

महात्मा मुंशीराम जी जब गुरुकुल के लिए धन एकत्रित करते हुए पहले-पहल लाहौर आए, तब उन्होंने सन् 1900 की जनवरी मास में कुछ व्याख्यान गुरुकुल के संबंध में दिए। इन सब व्याख्यानों से गुरुकुल के विषय में बड़ी हलचल मची और पंजाब के शिक्षित समुदाय का ध्यान गुरुकुल की ओर आकृष्ट हुआ था। इन व्याख्यानों में उन्होंने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की निम्नलिखित विशेषताओं को प्रकट किया था–

1. ब्रह्मचर्य का पुनरुद्धार।
2. ब्रह्मचारियों और उनके गुरुओं का पुत्र और पिता के संबंध से रहना।
3. परीक्षा पद्धति के दोषों से मुक्त रहना।
4. शारीरिक उन्नति के लिए विशेषरूप से बल देना।
5. भारत की शिक्षा प्रणाली में संस्कृत तथा मातृभाषा हिंदी को प्रमुख स्थान देना।
6. आधुनिक विज्ञानों तथा अंग्रेजी भाषा को समुचित स्थान देना।
7. शिक्षा के लिए कोई फीस न लेना।
8. प्राचीन भारतीय इतिहास के अन्वेषण तथा शोध का विशेषरूप से प्रबंध करना।

गुरुकुल की स्थापना के समय उनके संस्थापकों के सम्मुख ये विचार थे। इन्हीं को दृष्टि में रखकर गुरुकुल का प्रारंभ किया गया।

गुरुकुल की स्थापना

गुरुकुल कहाँ खुले, इसके संबंध में भी आर्य जनता के सम्मुख अनेक विचार थे। श्री गोविंदपुर के लाला विशनदास ने एक हजार रुपए और लाला मोहनलाल ने भूमि देने का वचन दिया। लूनमियानी के लाला ज्वालासहाय ने अपनी एक भूमि पेश की। परंतु महात्मा मुंशीराम गुरुकुल को गंगा के तट पर स्थापित करना चाहते थे। उनकी आँखों में वेद का यह मंत्र सदैव विद्यमान रहता था–

उपह्वरे गिरीणां संगमे च नदीनां धिया विप्रोऽजायत।

(यजुर्वेद, 26/15)

वे कहीं नदियों का संगम और पर्वतों की उपत्यका चाहते थे। उनकी दृष्टि रह-रह कर हिमालय के दामन में गंगा के तट पर जाती थी। महात्मा जी कई बार वहाँ गए और निराश लौटे। लाला रलाराम और उनके साथी पंजाब से बाहर जाने को उद्यत न थे। अंत में जब मुंशी अमनसिंह ने अपना कांगड़ी ग्राम, जो हरिद्वार के सामने गंगा के पूर्वीय तट पर स्थित था, गुरुकुल के लिए प्रतिनिधि सभा को प्रदान कर दिया, तो इस समस्या का हल हुआ। मुंशी अमनसिंह नजीबाबाद, जिला बिजनौर के निवासी थे। आप बड़े त्यागी, धर्मपरायण और सत्यनिष्ठ रईस थे। उनकी कुल संपत्ति कांगड़ी ग्राम थी, जिसका क्षेत्र एक हज़ार चार सौ बीघा है। इस भूमि को गुरुकुल के लिए देकर उन्होंने जो दान दिया, उसकी जितनी प्रशंसा की जावे कम है। गुरुकुल के लिए कांगड़ी की यह भूमि एक आदर्श स्थान था। हिमालय की उपत्यका में गंगा के तट पर सघन रमणीक वनों से घिरे हुए इस प्रदेश से बढ़कर गुरुकुल के लिए कौन सा स्थान हो सकता था। अतः यहीं पर गुरुकुल खोलने का निश्चय किया गया, पर यह स्थान तो सन् 1901 के अंत में गुरुकुल के लिए मिला। इससे पूर्व ही 16 मई सन् 1900 को गुजराँवाला में गुरुकुल की स्थापना कर दी गई थी। गुजराँवाला में सामयिक रूप से वैदिक पाठशाला तो पहले विद्यमान थी, उसके साथ ही गुरुकुल की पहली श्रेणी भी पृथक् रूप से खोल दी गई। भक्त आनंदस्वरूप की वाटिका में पाँच कमरों का निर्माण कर उससे आश्रम का काम लिया गया। महात्मा मुंशीराम जी ने अपने दोनों पुत्र गुरुकुल में प्रविष्ट कराए। उनके अतिरिक्त अन्य अनेक प्रतिष्ठित कुलों के बीस बालक इस गुरुकुल में प्रविष्ट हुए। वैदिक पाठशाला में पं. गंगादत्त संस्कृत अध्यापक का कार्य करते थे। उन्हें पाठशाला से बदलकर गुरुकुल का मुख्याध्यापक नियत किया गया। उनके साथ पं. विष्णुमित्र, महाशय भक्तराम तथा मा. सुंदरसिंह अध्यापक नियत हुए। दो वर्ष तक गुरुकुल गुजराँवाला में ही रहा।

इस बीच में कांगड़ी की भूमि गुरुकुल के लिए मिल चुकी थी। कांगड़ी ग्राम के दक्षिण में गंगा के तट पर घने जंगल को साफ कर कुछ छप्पर बनाए गए थे। 4 मार्च, 1902 को गुरुकुल गुजराँवाला से कांगड़ी ले आया गया। कुछ दिन बाद 22, 23 तथा 24 मार्च को गुरुकुल का प्रारंभ उत्सव मनाया गया। प्रारंभ से ही जनता को गुरुकुल से इतना प्रेम था कि विना किसी विशेष नोटिस के पाँच सौ नर-नारी उत्सव में सम्मिलित हुए और तीस हजार रुपए नकद इकट्ठा हुआ। धीरे-धीरे गुरुकुल के वार्षिकोत्सव का महत्त्व बढ़ता गया। कुछ ही वर्षों में यह आर्यसमाज का सबसे बड़ा मेला हो गया, और इसमें न केवल पंजाब से, अपितु सारे भारत से हज़ारों की

संख्या में नर-नारी सम्मिलित होने लगे और उत्सव के व्याख्यानों, सम्मेलनों, उपदेशों और परिषदों द्वारा अपने ज्ञान तथा धर्म की पिपासा को शांत करने लगे।

गुरुकुल में प्रविष्ट होने वाले ब्रह्मचारियों की संख्या निरंतर बढ़ती रही। गुजराँवाला से कुल चौंतीस ब्रह्मचारी शुरू में कांगड़ी में आए थे। पाँचवें साल के अंत में ब्रह्मचारियों की संख्या बढ़कर एक सौ सत्तासी हो गई। पहले लोगों का विचार था कि कौन माता-पिता अपने गोद के लालों को अपने से पृथक् किसी जंगल में चौदह वर्ष के लिए पढ़ने को भेजेगा, पर अनुभव ने इस आशंका को निर्मूल कर दिया। प्रतिवर्ष सैकड़ों प्रार्थना पत्र अपने बालकों को गुरुकुल में दाखिल कराने के लिए आने लगे। सबको प्रविष्ट करना संभव नहीं था, क्योंकि रुपए की कमी थी और ब्रह्मचारियों के निवास के लिए प्रबंध पर्याप्त नहीं था। ब्रह्मचारियों का प्रवेश चुनाव द्वारा होता था और बहुत से माता-पिताओं को निराश होकर गुरुकुल से लौटना पड़ता था।

: 2 :

विकास

आंतरिक प्रबंध और व्यवस्था की दृष्टि से भी गुरुकुल निरंतर उन्नति कर रहा था। धीरे-धीरे फूँस की झोंपड़ियों का स्थान ईंट की इमारतें ले रही थीं। चार वर्ष के अंदर-अंदर पच्चीस हजार रुपए की लागत से बाईस पढ़ने के कमरे और ब्रह्मचारियों के निवास के लिए पृथक् आश्रम बना लिया गया था। इसके अतिरिक्त भोजन भंडार, हस्पताल, यज्ञशाला, धर्मशाला और अध्यापकों के निवास के लिए भी मकान बन गए थे। दो कुएँ भी तैयार हो गए थे। पर गुरुकुल के संचालक इतने से संतुष्ट नहीं थे। वे पाँच लाख की लागत से छह सौ विद्यार्थियों के निवास तथा पढ़ने योग्य पक्की सुंदर इमारत बनवाने का स्वप्न देख रहे थे। पटियाला स्टेट के मुख्य इंजीनियर लाला गंगाराम से उन्होंने उत्कृष्ट इमारत का नक्शा तैयार कराया था और उसके लिए भी अपील की थी। सन् 1907 में महात्मा मुंशीराम जी ने लिखा था कि गुरुकुल के लिए पक्की इमारतों का निर्माण परमावश्यक है। इसी के अनुसार सन् 1908 में कॉलेज की पक्की शानदार इमारत बननी आरंभ हो गई थी।

गुरुकुल के पहले आचार्य पं. गंगादत्त जी थे। महात्मा मुंशीराम जी उस समय मुख्याधिष्ठाता थे। पं. गंगादत्त जी व्याकरण के प्रकांड पंडित थे। उनके साथ पं. काशीनाथ शास्त्री, पं. भीमसेन शर्मा, पं. दौलतराम शास्त्री, पं. पद्मसिंह, पं. विष्णु मित्र आदि अनेक विद्वान् काम करते थे। अंग्रेजी तथा गणित आदि पढ़ाने का कार्य मा. गोवर्धन बी.ए., मा. विनायक साठे आदि द्वारा होता था। भोजन भंडार का प्रबंध जालंधर के लाला शालिगराम के हाथ में था। लाला जी गुरुकुल के अनन्य भक्त

थे। उन्होंने अपना तन-मन-धन गुरुकुल के लिए अर्पित कर रखा था। इन महानुभावों के सहयोग से गुरुकुल दिन दुगनी रात चौगुनी उन्नति करता रहा।

1902 में गुरुकुल कांगड़ी में आ गया था। 1906 तक उसमें सात श्रेणियाँ हो चुकी थीं। अब गुरुकुल में उच्च पढ़ाइयों की समस्या उपस्थित हुई। इसके पूर्व केवल छः श्रेणियाँ ही थीं, जिसमें प्रधानतया संस्कृत साहित्य और व्याकरण की तथा सामान्यतया अंग्रेजी तथा प्रारंभिक विषयों की शिक्षा दी जाती थी। अब उच्च कक्षाओं के खुलने पर यह प्रश्न उपस्थित हुआ कि विज्ञान, गणित आदि आधुनिक विषयों की क्या व्यवस्था की जाए। इसी समय मा. रामदेव जी गुरुकुल में कार्य करने आए, वे एक ट्रेंड ग्रेजुएट थे और जालंधर स्कूल के सफल हेडमास्टर रहे थे। उनका विचार था कि आधुनिक विज्ञान शिक्षा का आवश्यक अंग है और गुरुकुल में उसकी यथोचित व्यवस्था होनी चाहिए। साथ ही वे शिक्षा संबंधी नियंत्रण के पक्षपाती थे। गुरुकुल अपनी प्रारंभिक दशा को पार कर रहा था। अब वे चाहते थे कि यहाँ पढ़ाई का नियमित समय विभाग बने और सब कार्य व्यवस्थित रूप में हों। यह स्वाभाविक भी था, क्योंकि शुरू से ही गुरुकुल को एक पुराने ढंग की पाठशाला बनाना अभिप्रेत नहीं था। गुरुकुल की प्रारंभिक स्कीम में आधुनिक ज्ञान-विज्ञान को यथोचित स्थान दिया गया था। इस प्रवृत्ति के विपक्ष में आचार्य गंगादत्त जी का मौलिक मतभेद था जो नीति से संबंध रखता था। परिणाम यह हुआ की उन्होंने गुरुकुल से त्यागपत्र दे दिया और कुछ समय बाद ज्वालापुर के निकट एक पृथक् गुरुकुल की स्थापना की। यह गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

आचार्य गंगादत्त जी के बाद महात्मा मुंशीराम ही गुरुकुल के आचार्य नियत हुए। शिक्षा विषयक प्रबंध में इनकी सहायता मा. रामदेव जी करते थे जो उस समय मुख्याध्यापक के पद पर नियुक्त थे।

महाविद्यालय का प्रारंभ

सन् 1907 में गुरुकुल में महाविद्यालय कॉलेज विभाग का प्रारंभ हुआ था। तीन विद्यार्थी नौ साल तक विद्यालय विभाग में रहकर अधिकारी परीक्षा उत्तीर्ण कर महाविद्यालय में आए। महाविद्यालय विभाग के शुरू होने पर गुरुकुल में अनेक उच्चकोटि के विद्वान् अध्यापन के लिए नियुक्त किए गए। गुरुकुल के महाविद्यालय विभाग के इन प्रारंभिक शिक्षकों का नाम देना यहाँ अनुचित न होगा।

1. महात्मा मुंशीराम जी—आचार्य।
2. आचार्य रामदेव जी बी.ए., एम.आर.ए.एस.—उपाचार्य तथा उपाध्याय पाश्चात्य दर्शन।
3. पं. काशीनाथ शास्त्री—उपाध्याय प्राच्यदर्शन।

4. पं. शिवशंकर काव्यतीर्थ—उपाध्याय वेद।
5. श्री बाल कृष्ण एम.ए.—उपाध्याय इतिहास, अर्थशास्त्र।
6. श्री विनायक गणेश साठे एम.ए.—उपाध्याय रसायनशास्त्र।
7. श्री महेशचरणसिंह एम.एस.सी.—उपाध्याय वनस्पतिशास्त्र।
8. श्री घनश्यामसिंह गुप्त बी.ए., एल.बी.—उपाध्याय विज्ञान।
9. श्री सेवाराम एम.ए.—उपाध्याय आंग्ल भाषा।
10. श्री लक्ष्मीनारायण बी.ए.—उपाध्याय आंग्ल भाषा।
11. श्री लक्ष्मणदास बी.ए.—उपाध्याय गणित।

महाविद्यालय खुलने के साथ ही आचार्य रामदेव जी उपाचार्य के पद पर नियत हो गए थे और उनके स्थान पर मुख्याध्यापक मा. गोवर्धन बी.ए. बने थे। शिक्षा के क्षेत्र में इस समय गुरुकुल बड़ी तत्परता से कार्य कर रहा था। गुरुकुल में सब विषयों की शिक्षा मातृभाषा हिंदी के माध्यम द्वारा दी जाती थी। विज्ञान, गणित, पाश्चात्य दर्शन आदि विषय भी हिंदी में ही पढ़ाए जाते थे। जब महाविद्यालय विभाग खुला तो उसमें भी हिंदी को ही माध्यम रखा गया। उस समय हिंदी में उच्च शिक्षा देना एक असंभव बात समझी जाती थी। गुरुकुल ने इसे कार्यरूप में परिणत करके दिखा दिया। उस समय आधुनिक विज्ञानों की पुस्तकें हिंदी में बिलकुल न थीं। गुरुकुल के उपाध्यायों ने पहले-पहल इस क्षेत्र में काम किया और गुरुकुल से अनेक उच्चकोटि के ग्रंथ प्रकाशित हुए। प्रो. महेशचरणसिंह की 'हिंदी कैमिस्ट्री', प्रो. साठे का 'विकासवाद', श्रीयुत गोवर्धन की 'भौतिकी' और 'रसायन', प्रो. रामशरणदास सक्सेना का 'गुणात्मक विश्लेषण', प्रो. सिन्हा का 'वनस्पतिशास्त्र', प्रो. प्राणनाथ का 'अर्थशास्त्र', 'राष्ट्रीय आय-व्यय शास्त्र' और 'राजनीतिशास्त्र', प्रो. बालकृष्ण का 'अर्थशास्त्र' और 'राजनीतिशास्त्र' और प्रो. सुधाकर का 'मनोविज्ञान' हिंदी में अपने-अपने विषय के पहले ग्रंथ हैं। यह इतना महत्त्वपूर्ण कार्य गुरुकुल द्वारा किया गया। हिंदी में वैज्ञानिक ग्रंथों की रचना ही गुरुकुल द्वारा प्रारंभ हुई। इन वैज्ञानिक ग्रंथों के अतिरिक्त अन्य भी बहुत से उच्चकोटि के ग्रंथ गुरुकुल द्वारा प्रकाशित हुए। प्रो. रामदेव ने भारतीय इतिहास के संबंध में मौलिक अनुसंधान कर अपना प्रसिद्ध 'भारतवर्ष का इतिहास' प्रकाशित किया। महात्मा मुंशीराम जी ने विविध धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन कर पारसी आदि अनेक धर्मों पर मौलिक ग्रंथ लिखे। गुरुकुल की साहित्य परिषद् ने दो दर्जन से अधिक ग्रंथ प्रकाशित किए। ये सभी ग्रंथ किन्हीं नए विषयों पर निबंध के रूप में थे। साहित्य परिषद् की ओर से गुरुकुल के वार्षिकोत्सव पर सरस्वती सम्मेलन किए जाते थे, जिन में विविध विषयों पर मौलिक निबंध पढ़े जाते थे। उस समय के शिक्षित समुदाय में इन निबंधों की बड़ी धूम थी। गुरुकुल ने छोटे बालकों के लिए पाठ्यपुस्तकें तैयार करने के लिए भी बड़ा काम किया। संस्कृत की पहली रीडरें गुरुकुल ने ही प्रकाशित कीं। सब श्रेणियों के लिए

हिंदी, संस्कृत, विज्ञान आदि की बहुत सी पाठ्यपुस्तकें गुरुकुल में तैयार हुईं। बाहर के भी अनेक शिक्षणालयों ने इनको अपनाया।

सन् 1907 में 'वैदिक मैगज़ीन' का भी पुनरुद्धार किया गया। इस पत्रिका के संस्थापक पंडित गुरुदत्त थे। उनके देहांत के साथ-साथ इस पत्रिका का भी अंत हो गया था। वैदिक मैगज़ीन अंग्रेजी में निकलती थी। पाश्चात्य संसार को वैदिक धर्म का संदेश सुनाने तथा आर्यसमाज के दृष्टिकोण से प्राच्य विद्याओं का अनुशीलन करने के लिए इस पत्रिका का बड़ा उपयोग था। अब उसका पुनर्जीवन किया गया और मा. रामदेव जी उसके संपादक बने। सन् 1907 से 1932 तक पच्चीस वर्ष निरंतर यह पत्रिका गुरुकुल से प्रकाशित होती रही। शिक्षक समाज में इस पत्रिका को बड़ी आदर की दृष्टि से देखा जाता था।

'सद्धर्म प्रचारक' पहले जालंधर से प्रकाशित होता था। महात्मा मुंशीराम जी का 'सद्धर्म प्रचारक' प्रेस भी जालंधर में ही था। 1908 में उसे गुरुकुल में लाया गया। तब से 'सद्धर्म प्रचारक' नियत रूप से गुरुकुल से ही प्रकाशित होने लगा। गुरुकुल का प्रचार करने में इस पत्र से बड़ी सहायता मिली। सद्धर्म प्रचारक पत्र और 'सद्धर्म प्रचारक प्रेस' गुरुकुल को साहित्यिक जीवन का एक महत्त्वपूर्ण केंद्र बनाने में अत्यंत सफल हुए।

फलनिष्पत्ति

1912 में गुरुकुल से दो ब्रह्मचारी हरिश्चंद्र और इंद्र अपनी शिक्षा पूर्ण कर स्नातक हुए। वार्षिकोत्संव के अवसर पर बड़े समारोह के साथ इनका दीक्षांत संस्कार हुआ। गुरुकुल का यह वार्षिकोत्सव अद्वितीय था। जनता के उत्साह की कोई सीमा न थी। नव स्नातकों के दीक्षांत संस्कार का दृश्य आज भी एक अद्भुत आकर्षण रखता है। सन् 1912 में आज से चौबीस वर्ष पूर्व गुरुकुल क़ा जब पहला दीक्षांत संस्कार हुआ तब उसका कितना प्रभाव जनता पर हुआ होगा इसकी कल्पना सहज में ही की जा सकती है।

: 3 :

विश्वविद्यालय की स्थापना

गुरुकुल और ब्रिटिश सरकार

गुरुकुल निरंतर लोकप्रिय होता जा रहा था। जनता गुरुकुल में आकर सतयुग का दृश्य देखती थी। शहरों के कोलाहल से दूर, गंगा पार, हिमालय की उपत्यका में यह तपोवन स्थापित था। चारों ओर सघन वन थे। यहाँ तीन सौ के लगभग

ब्रह्मचारी अपने गुरुवर्ग के साथ ब्रह्मचर्य और विद्या की साधना में तत्पर थे। यहाँ अमीर-ग़रीब ऊँच-नीच का कोई भेद न था। गौड़ ब्राह्मण और अछूत मेघ के पुत्र एक साथ रहते थे, एक साथ भोजन करते थे। सबके एक-से वस्त्र, एक-सा खानपान और एक-सा रहन-सहन था। सब एक-दूसरे को भाई-भाई समझते थे। यदि किसी के पिता अपने ब्रह्मचारी के लिए कोई मिष्टान्न लाते तो वह सब को बाँटकर उसे खाता था। ऋषि दयानंद ने शिक्षा के संबंध में जो आदर्श रखे थे, वे यहाँ मूर्त रूप से दृष्टिगोचर होते थे। यही कारण था कि गुरुकुल में एक विशेष आकर्षण था, एक अद्‌भुत जादू था। जो भी गुरुकुल में आता वह वहाँ के जीवन से प्रभावित हुए बिना न रहता।

केवल भारतीय जनता ही नहीं, अनेक विदेशियों को भी गुरुकुल ने अपनी ओर आकृष्ट किया। शिक्षा के क्षेत्र में गुरुकुल एक नई क्रांति था। इसे देखने के लिए बहुत से विदेशी विद्वान् गुरुकुल पधारने लगे। अमेरिका के प्रसिद्ध शिक्षा विशारद श्रीयुत मायरन फेल्प्स सन् 1928 में गुरुकुल आए। उन्होंने कई महीने गुरुकुल में रहकर इसके प्रत्येक विभाग का सूक्ष्मता के साथ निरीक्षण किया। गुरुकुल में रहकर जो कुछ देखा उसके संबंध में एक विस्तृत लेखमाला उन्होंने इलाहाबाद के प्रसिद्ध ऐंग्लो-इंडियन पत्र 'पायोनियर' में लिखी। इस लेखमाला से बहुत से शिक्षाविशारदों का ध्यान गुरुकुल की ओर आकृष्ट हुआ और गुरुकुल में विदेशी यात्रियों की संख्या निरंतर बढ़ने लगी। कुछ समय बाद श्रीयुत सी.एफ. एंड्रूज़ अपने मित्र श्रीयुत पियर्सन के साथ आकर गुरुकुल में रहे। गुरुकुल के जीवन तथा शिक्षा का उन पर बड़ा प्रभाव पड़ा। उन्होंने भी गुरुकुल के संबंध में अनेक लेख लिखे। परिणाम यह हुआ कि गुरुकुल भारत से बाहर यूरोप और अमेरिका में भी प्रसिद्ध हो गया। इन देशों से जो यात्री भारत आते वे गुरुकुल देखे बिना वापस न लौटते। ब्रिटिश ट्रेड यूनियन आंदोलन के प्रसिद्ध नेता श्रीयुत सिडनी वैब गुरुकुल आए और इस संस्था को देखकर अत्यंत प्रभावित हुए। सन् 1914 में लेबर पार्टी के प्रसिद्ध नेता और ग्रेट ब्रिटेन के भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री रैम्जे मैक्डानल्ड गुरुकुल पधारे। उन्होंने गुरुकुल के संबंध में एक लेख में लिखा–'मैकाले के बाद भारत में शिक्षा के क्षेत्र में जो सबसे महत्त्वपूर्ण और मौलिक प्रयत्न हुआ, वह गुरुकुल है।'

यह असंभव था कि ब्रिटिश शासकों की दृष्टि गुरुकुल की ओर आकृष्ट न होती। श्रीयुत रैम्जे मैक्डानल्ड के शब्दों में सरकारी ऑफीसरों के लिए गुरुकुल एक पहेली है। गुरुकुल के शिक्षक वर्ग में एक भी अंग्रेज नहीं है। यहाँ शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी नहीं है। पंजाब यूनिवर्सिटी में अंग्रेजी साहित्य पढ़ने के लिए जो पुस्तकें प्रयोग में आ सकती हैं, गुरुकुल उन्हें अपनी पाठ्यपुस्तकें नहीं बनाता। यहाँ एक भी विद्यार्थी सरकारी यूनिवर्सिटियों की परीक्षा देने नहीं जाता। गुरुकुल अपनी पृथक्

उपाधि 'डिग्री' प्रदान करता है। सचमुच यह सरकार की भारी अवज्ञा है। यह स्वाभाविक है कि घबड़ाए हुए सरकारी ऑफीसर के मुख से पहली बात इसके लिए यही निकली कि यह 'राजद्रोही' है।

निस्संदेह पहले-पहल सरकार ने गुरुकुल को राजद्रोही संस्था समझा। सरकारी यूनिवर्सिटियों से सर्वथा स्वतंत्र सच्ची राष्ट्रीय शिक्षा के लिए किया गया वह अद्‌भुत प्रयत्न था। गुरुकुल राजद्रोही है, सरकार का यह विचार तब तक दूर नहीं हुआ, जब तक संयुक्त प्रांत के लेफ्टिनेंट गवर्नर श्रीयुत सर जेम्स मेस्टन इस संस्था को अपनी आँखों से नहीं देख गए। श्रीयुत सर जेम्स मेस्टन गुरुकुल में चार बार आए, उनकी गुरुकुल यात्रा का उद्देश्य यही था कि वे स्वयं गुरुकुल का अवलोकन कर इस बात का निर्णय करें कि सरकारी ऑफीसरों में गुरुकुल के राजद्रोही होने का जो विचार फैला हुआ है, वह कहाँ तक ठीक है। 6 मार्च, 1913 को श्रीयुत् सर जेम्स मेस्टन पहली बार आए। अभिनंदन पत्र का उत्तर देते हुए अपने भाषण में उन्होंने कहा—"न केवल संयुक्त प्रांत, अपितु संपूर्ण भारत में शिक्षा के क्षेत्र में जो परीक्षण किए गए हैं, गुरुकुल उसमें सबसे अधिक मौलिक और महत्त्वपूर्ण है।"

सरकारी काग़जात में गुरुकुल को एक शाश्वत भयंकर और अज्ञात खतरे का मूल बताया जाता रहा था। इसका सबसे उत्तम जवाब सर जेम्स मेस्टन ने दिया। गुरुकुल को देखकर वे इतने प्रभावित हुए कि अपनी दूसरी यात्रा में (19 फरवरी, 1914) उन्होंने गुरुकुल के संबंध में यह सम्मति दी—

"This is my idea of an ideal university."

दो वर्ष के बाद भारत के वायसराय तथा गवर्नर जनरल लार्ड चेम्सफोर्ड भी गुरुकुल पधारे और इस अद्वितीय संस्था का अवलोकन कर अत्यंत प्रभावित हुए, ब्रह्मचारियों के स्वस्थ और सुदृढ़ शरीरों की वायसराय महोदय ने बहुत प्रशंसा की और इस संस्था के संबंध में अपनी हितैषिता को प्रकट किया।

भारतीय सरकार के इन उच्च राजकर्मचारियों का स्वागत करते हुए भी गुरुकुल ने अपनी विशेषता को नहीं छोड़ा। गुरुकुल आर्य जाति की एकमात्र राष्ट्रीय संस्था है उसे किसी भी दशा में भारतीयता और राष्ट्रीयता को नहीं छोड़ना चाहिए। यही कारण है कि वायसराय महोदय का अभिनंदन संस्कृत के श्लोकों द्वारा किया गया। उनके भोजन के लिए तुलसी की चाय, फल, पकौड़े और भारतीय मिठाइयों का आयोजन किया गया। गुरुकुल में जो भी विदेशी यात्री आते थे वे ब्रह्मचारियों के साथ भोजन भंडार में आसन पर बैठकर भारतीय ढंग से भोजन करते थे। गुरुकुल आकर उन्हें गुरुकुलीय बनना होता था। गुरुकुल की कुछ अपनी विशेषताएँ हैं गुरुकुल वैदिक धर्म, भारतीय सभ्यता और आर्य संस्कृति के पुनरुज्जीवन के लिए खोला गया है। बड़े-से-बड़े राजपदाधिकारी के लिए गुरुकुल ने अपनी राष्ट्रीय संस्कृति

का परित्याग नहीं किया।

गुरुकुल राजद्रोही न था। गुरुकुल को राजद्रोही समझना सरकार की भूल थी। पर इसमें भी संदेह नहीं, कि गुरुकुल भारत के राष्ट्रीय पुनरुज्जीवन और राजद्रोह को एक ही बात नहीं समझता था। यही कारण है कि जब कभी धर्म, जाति व देश के लिए किसी सेवा या त्याग की आवश्यकता हुई, गुरुकुल सबसे आगे रहा। 1907 के व्यापक दुर्भिक्ष, 1908 के दक्षिण हैदराबाद के जल विप्लव और 1911 के गुजरात दुर्भिक्ष के अवसर पर गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने अपने भोजन में कमी करके पीड़ितों की सहायता के लिए दान दिया। दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के साथ दासों का-सा व्यवहार होता था। इसके विरुद्ध महात्मा गांधी के नेतृत्व में सत्याग्रह संग्राम प्रारंभ किया गया। भारत में श्रीयुत गोखले ने इस सत्याग्रह संग्राम के लिए सहायता की अपील की। गुरुकुल के विद्यार्थियों ने अपना घी-दूध छोड़कर और मज़दूरी करके इस फंड में सहायता की। उन दिनों हरिद्वार के ऊपर गंगा का एक बड़ा बाँध बाँधा जा रहा था, जो दूधिया बंध के नाम से प्रसिद्ध है। गुरुकुल के विद्यार्थी वहाँ साधारण मजदूरों की तरह टोकरी ढोकर मजदूरी प्राप्त करते थे और उसे दक्षिणी अफ्रीका के सत्याग्रहियों के लिए भेजते थे। इस प्रकार गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने मजदूरी द्वारा काम करके और अपने घी-दूध में कमी करके जो धन बचाया उससे एक हजार पाँच सौ रुपए दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह के लिए प्रदान किया। महात्मा गांधी गुरुकुल के ब्रह्मचारियों की इस भावना और त्याग से बड़े प्रभावित हुए। यही कारण है कि जब महात्मा गांधी अपने सत्याग्रह आश्रम के विद्यार्थियों के साथ भारत आए तो अहमदाबाद में पृथक् आश्रम खुलने तक अपने विद्यार्थियों के लिए सर्वोत्तम स्थान उन्होंने गुरुकुल को ही समझा और उनके विद्यार्थी कई मास तक गुरुकुल में रहे। गुरुकुल के विद्यार्थी राष्ट्रीय पुनरुज्जीवन और सेवा के जिस वातावरण में रहते थे, उसमें इस भावना का उत्पन्न होना स्वाभाविक ही था।

: 4 :

विस्तार

गुरुकुल की ख्याति खूब बढ़ती जाती थी। शिक्षा के क्षेत्र में गुरुकुल एक नई क्रांति के रूप में था। जनता में इसका आकर्षण निरंतर बढ़ रहा था। यही कारण है कि गुरुकुल स्थापित होने के कुछ ही वर्षों बाद इसकी शाखाएँ पंजाब के भिन्न-भिन्न स्थानों पर खुलनी प्रारंभ हो गईं। गुरुकुल-शिक्षा की माँग बहुत अधिक थी। एक गुरुकुल कांगड़ी इस माँग को पूरा करने में असमर्थ था, इसीलिए अन्य स्थानों पर शाखा-गुरुकुल खुलने प्रारंभ हुए। सबसे पहली शाखा मुलतान में खुली। मुलतान शहर से तीन मील़ की दूरी पर ताराकुंड के समीप एक रमणीय स्थान पर यह गुरुकुल

स्थापित है। इसकी स्थापना 23 फरवरी सन् 1909 को हुई थी। तब से गुरुकुल निरंतर उन्नति करता गया और धीरे-धीरे इसमें दस श्रेणियाँ हो गईं। गुरुकुल कांगड़ी की अधिकारी परीक्षा पास करके इसके विद्यार्थी उच्च शिक्षा के लिए गुरुकुल कांगड़ी महाविद्यालय में प्रविष्ट होने लगे।

मुलतान के दो वर्ष बाद गुरुकुल की दूसरी शाखा कुरुक्षेत्र में खुली। सन् 1910 में थानेश्वर शहर के सुप्रसिद्ध रईस लाला ज्योतिप्रसाद जी के मन में यह शुभ विचार उत्पन्न हुआ कि वे भी गुरुकुल कांगड़ी की शाखा अपने यहाँ खुलवाएँ। इन्होंने अपने विचार महात्मा मुंशीराम जी के सामने रखे। लाला ज्योतिप्रसाद ने प्रारंभ में दस हजार रुपया नगद और एक हजार अड़तालीस बीघा भूमि गुरुकुल के लिए अर्पण की। सन् 1911 में थानेश्वर के समीप महाभारत काल की प्रसिद्ध युद्धभूमि कुरुक्षेत्र में गुरुकुल की स्थापना हो गई। गुरुकुल की आधारशिला रखते हुए महात्मा मुंशीराम जी ने अपने भाषण में कहा था–"आज से पाँच हजार वर्ष पूर्व इसी कुरुक्षेत्र भूमि में आर्यावर्त के विनाश का बीज बोया गया था। आज इसी भूमि में आर्यावर्त की उन्नति के लिए यह बीज बोया गया है।"

सन् 1912 में देहली के सुप्रसिद्ध सेठ रघुमल जी ने एक लाख रुपया इस निमित्त दिया कि इससे देहली के समीप गुरुकुल की एक शाखा खोली जाए। इसके फलस्वरूप देहली से दस मील की दूरी पर 'गुरुकुल इंद्रप्रस्थ' की स्थापना हुई।

सन् 1915 में हरियाणा प्रांत में श्री चौधरी पीरूसिंह जी आदि उत्साही सज्जनों द्वारा जिला रोहतक के मटिंडू ग्राम के समीप यमुना की एक छोटी नहर के किनारे अत्यंत रमणीक स्थान पर गुरुकुल की एक और शाखा खोली गई, जो 'गुरुकुल मटिंडू' के नाम से प्रसिद्ध है। कुछ समय बाद सूपा (गुजरात) में तथा हरियाणा के भैंसवाल, झज्झर आदि स्थानों पर भी शाखा गुरुकुल खुले।

इस प्रकार गुरुकुल रूपी वृक्ष निरंतर फलता-फूलता जा रहा था। सन् 1902 में जिस गुरुकुल का बीजारोपण किया गया था वह पंद्रह वर्ष के थोड़े से समय में ही एक ऐसे विशाल वृक्ष के रूप में परिवर्तित हो गया था, जिसकी छाया के नीचे सैकड़ों विद्यार्थी विद्याभ्यास कर रहे थे। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली निरंतर लोकप्रिय होती जाती थी। गुरुकुल कांगड़ी और उसकी शाखाओं के अतिरिक्त अन्य गुरुकुल भी खुलने लगे।

महात्मा मुंशीराम जी गुरुकुल की स्थापना के समय से ही उसके प्रधान संचालक रहे। गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब द्वारा हुई थी। संयुक्त प्रांत, बिहार, बंबई आदि अन्य प्रांतों में भी आर्य प्रतिनिधि सभाएँ विद्यमान थीं। इन्होंने भी गुरुकुल खोलना प्रारंभ किया। संयुक्त प्रांत की प्रतिनिधि सभा ने वृंदावन में गुरुकुल स्थापित किया। बिहार और बंगाल की प्रतिनिधि सभा ने वैद्यनाथ धाम में गुरुकुल खोला। मध्य प्रदेश में होशंगाबाद में गुरुकुल की स्थापना

की गई। इसी प्रकार शांताकुंज, हरपुरजान, बेट सोहनी आदि कितने ही स्थानों पर नए-नए गुरुकुल खुले।

गुरुकुल प्रणाली को केवल आर्यसमाज ने ही नहीं अपनाया, अपितु सनातनी, जैन आदि अन्य धर्मावलंबियों ने भी ऋषि दयानंद के शिक्षा संबंधी आदर्शों को स्वीकार कर गुरुकुल के ढंग के शिक्षणालय खोलने शुरू किए। जैनियों ने गुजराँवाला, पंचकुला आदि अनेक स्थानों पर गुरुकुल खोले। सनातनी विचार के लोगों ने हरिद्वार में 'ऋषिकुल' की स्थापना की। इसी तरह की संस्थाएँ अन्य अनेक स्थानों पर भी स्थापित की गईं। बीसवीं सदी का प्रथम चतुर्थांश गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की विजय का काल था। ब्रिटिश शासकों द्वारा प्रचारित की गई शिक्षा प्रणाली से असंतुष्ट देशसेवक लोग जिन नए स्वतंत्र शिक्षणालयों को खोलने का उद्योग करते थे, उनमें ऋषि दयानंद के शिक्षा संबंधी मंतव्यों को सम्मुख रखा जाता था। उस युग में राष्ट्रीय शिक्षा की केवल एक ही कल्पना जनता के सन्मुख थी, वह थी गुरुकुल शिक्षा प्रणाली। इसमें संदेह नहीं कि आर्यसमाज और गुरुकुल की यह भारी विजय थी।

सन् 1912 में गुरुकुल की शिक्षा समाप्त करके दो स्नातक विद्यालंकार की उपाधि से विभूषित किए गए। इस प्रकार गुरुकुल ने विश्वविद्यालय का रूप धारण किया।

मुंशीराम से श्रद्धानंद

महात्मा मुंशीराम जी गुरुकुल की स्थापना के समय से ही उसके प्रधान संचालक रहे। महात्मा जी जालंधर के निवासी थे। वे वहाँ के सफल व समृद्ध वकील थे, पर उनकी प्रतिभा व शक्ति केवल वकालत तक ही सीमित न थी। इन्हें आर्यसमाज से असाधारण प्रेम था। ऋषि दयानंद के उपदेशों से प्रभावित होकर उन्होंने अपना जीवन आर्यसमाज को अर्पण करने का निश्चय कर लिया था। जालंधर आर्यसमाज के वे ही प्राण थे, पर उनकी अपूर्व प्रतिभा और कार्य शक्ति जालंधर के संकुचित क्षेत्र तक सीमित नहीं रह सकती थी। कुछ ही वर्षों में वे पंजाब भर के सबसे बड़े आर्य नेता हो गए। आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब ने उन्हें अपना प्रधान निर्वाचित किया। महात्मा मुंशीराम जी न केवल कुशल प्रबंधक थे, वह साथ ही प्रभावशाली प्रचारक भी थे। अछूतोद्धार, शुद्धि, समाज संगठन आदि विविध क्षेत्रों में उन्होंने अद्‌भुत योग्यता व कार्यक्षमता प्रदर्शित की और कुछ ही समय में उनका यश भारत के कोने-कोने में व्याप्त हो गया।

आर्यसमाज का कार्य करते हुए महात्मा मुंशीराम जी का ध्यान ऋषि दयानंद के शिक्षा संबंधी सिद्धांतों की तरफ आकृष्ट हुआ। उन्होंने अनुभव किया कि देश में प्रचलित शिक्षा प्रणाली दूषित है। देश का उद्धार तभी हो सकता है, जब बच्चों

को ब्रह्मचर्य, तपस्या व सादगी के वातावरण में रखकर शिक्षा दी जाए। ऋषि दयानंद की गुरुकुल की कल्पना को पूर्ण रूप देने का उन्होंने संकल्प किया। गुरुकुल की स्थापना का मुख्य श्रेय उन्हीं को प्राप्त है। उन्होंने अपना तन-मन-धन, और सर्वस्व गुरुकुल के लिए अर्पण किया। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली पर उन्हें अटल विश्वास था, इसीलिए जहाँ उन्होंने अपने दोनों पुत्र गुरुकुल को अर्पित किए, वहाँ साथ ही संपत्ति भी गुरुकुल को दान कर दी। उनके पास जो कोठी, प्रेस तथा अन्य संपत्ति थी वह गुरुकुल को अर्पण कर दी। महात्मा जी का यह 'सर्वमेध यज्ञ' वस्तुतः अद्वितीय था। गुरुकुल के स्थापना काल से सन् 1917 तक निरंतर पंद्रह वर्ष महात्मा मुंशीराम जी गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता रहे। इस बीच में गुरुकुल ने जो उन्नति की, उसकी कथा हम ऊपर लिख चुके हैं।

पंद्रह वर्ष तक गुरुकुल का संचालन कर सन् 1917 से महात्मा मुंशीराम जी ने संन्यासाश्रम में प्रवेश किया। वैदिक आश्रम की मर्यादा अनुसार महात्मा जी के लिए संन्यास लेना आवश्यक था। गुरुकुल निवास महात्मा जी का वानप्रस्थ आश्रम था। सन् 1917 के बाद उन्होंने संन्यास धारण किया और 'मुंशीराम से श्रद्धानंद' हो गए। संन्यासी होकर महात्मा जी अधिक विस्तृत क्षेत्र में प्रविष्ट हुए और गुरुकुल के निवासियों ने भरे हृदय से अपने कुलपिता को बिदा दी।

सन् 1917 में महात्मा मुंशीराम जी के बिदा होते समय गुरुकुल की क्या दशा थी, इस पर संक्षिप्त रूप से प्रकाश डालना उपयोगी है। सन् 1917 में गुरुकुल कांगड़ी में विद्यार्थियों की कुल संख्या तीन सौ चालीस थी, जिनमें से दो सौ छिहत्तर विद्यालय विभाग में और चौंसठ महाविद्यालय विभाग में शिक्षा प्राप्त करते थे। महाविद्यालय विभाग में वेद दर्शन, संस्कृत साहित्य और आंग्ल भाषा का पढ़ना प्रत्येक विद्यार्थी के लिए अनिवार्य था। इसके अतिरिक्त विस्तृत वैदिक साहित्य, आर्यसिद्धांत, रसायन, इतिहास, अर्थशास्त्र, पाश्चात्य दर्शन, कृषि और गणित ये साथ ऐच्छिक विषय थे जिनमें से कोई एक विषय विद्यार्थियों को लेना होता था। जो विद्यार्थी विस्तृत वैदिक साहित्य को ऐच्छिक विषय के रूप में ले, उसे स्नातक होने पर 'वेदालंकार' की, आर्यसिद्धांत लेने वाले को 'सिद्धांतालंकार' की और शेष को 'विद्यालंकार' की उपाधि दी जाती थी। महाविद्यालय विभाग में इन विविध विषयों को पढ़ाने के लिए पाँच अध्यापक नियत थे। मुख्याध्यापक के पद पर गुरुकुल के स्नातक पं. यज्ञदत्त विद्यालंकार नियत थे जो बड़ी योग्यता से विद्यालय विभाग का संचालन करते थे। ब्रह्मचारियों की चिकित्सा के लिए गुरुकुल का अपना हॉस्पिटल था। उसके मुख्य चिकित्सक डॉ. सुखदेव जी थे। डॉ. सुखदेव जी बड़ी ही लगन और सेवावृत्ति के चिकित्सक थे। उनका सारा समय ब्रह्मचारियों के स्वास्थ्य की उन्नति में लगता था। गुरुकुल का आंतरिक प्रबंध लाला नंदलाल जी के हाथ में था। लाला जी अत्यंत योग्य प्रबंधकर्ता थे। वे सहायक मुख्याधिष्ठाता के पद पर नियत थे और

गुरुकुल के आंतरिक प्रबंध को व्यवस्थित करने के लिए बहुत प्रयत्नशील थे। गुरुकुल कार्यालय लाला मुरारी लाल जी के हाथ में था जो दिन-रात एक कर गुरुकुल की सेवा में तत्पर रहते थे। आश्रम के अध्यक्ष मा. सुखराम जी थे जो अपना जीवन गुरुकुल के लिए अर्पण कर त्याग का अनुपम आदर्श विद्यार्थियों के सम्मुख रख रहे थे। अभिप्राय यह है कि महात्मा मुंशीराम जी के गुरुकुल से विदा होने के समय गुरुकुल ऐसी अवस्था में पहुँच चुका था जब उसका प्रत्येक विभाग अत्यंत योग्य हाथों में था और सब लोग मिलकर गुरुकुल की उन्नति के लिए तत्पर थे।

: 5 :

आगे प्रगति

सन् 1917 में महात्मा मुंशीराम जी संन्यास लेकर गुरुकुल से विदा हुए थे। उनके बाद आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान लाला रामकृष्ण जी गुरुकुल मुख्याधिष्ठाता नियत हुए। वे जालंधर में रहकर ही गुरुकुल का प्रबंध करते थे और उनके प्रतिनिधि रूप में प्रो. सुधाकर जी गुरुकुल में रहकर कार्य करते थे। आचार्य का काम प्रो. रामदेव जी को दिया गया। प्रो. रामदेव जी सन् 1905 में गुरुकुल में आए थे, और कुछ वर्ष मुख्याध्यापक का कार्य करने के अनंतर जब गुरुकुल में महाविद्यालय खुला, तो उपाचार्य के पद पर नियत हुए थे। गुरुकुल में कार्य करते हुए उन्हें ग्यारह वर्ष हो चुके थे और यहाँ का उन्हें अच्छा अनुभव था। इस समय सभा के प्रधान, पंडित विश्वंभरनाथ जी बने जो बहुत समय से उपप्रधान का कार्य करते रहे थे। गुरुकुल का यह प्रबंध 1920 तक रहा। इस बीच भी गुरुकुल की निरंतर उन्नति हुई। सन् 1919 में लुधियाना ज़िले के रायकोट नामक स्थान पर गुरुकुल की एक शाखा खोली गई। इसके संस्थापक श्री स्वामी गंगागिरी जी महाराज हैं। 'गुरुकुल रायकोट' की आधारशिला श्री स्वामी श्रद्धानंद जी महाराज द्वारा रखी गई थी।

आंतरिक दृष्टि से भी इस काल में गुरुकुल की अच्छी उन्नति हुई। सन् 1918 में गुरुकुल में राष्ट्र प्रतिनिधि सभा 'मौक पार्लियामेंट' का सूत्रपात हुआ। इस सभा में ब्रह्मचारियों के मंत्रिमंडल 'केबिनेट' द्वारा किसी गंभीर विषय पर मसौदा पेश किया जाता है और उस पर बाकायदा पार्लियामेंटरी ढंग से वाद-विवाद होता है। सन् 1918 से बराबर राष्ट्र प्रतिनिधि सभा के अधिवेशन प्रतिवर्ष होते रहे और इन अधिवेशनों में अनेक बार देश के नेता भी सम्मिलित हो चुके हैं।

इसी काल में कलकत्ता यूनिवर्सिटी कमीशन के प्रधान डॉ. सैडलर, सर आशुतोष मुकर्जी के साथ गुरुकुल पधारे। गुरुकुल का अवलोकन करके वे बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने अपने एक पत्र में गुरुकुल के संबंध में विचार प्रकट किए

थे–"मैं समझता हूँ कि जिस शिक्षा विधि में मातृभाषा को प्रथम और सबसे प्रमुख स्थान दिया जावे, वहीं यह संभव है कि मन का स्वतंत्र विकास होकर मानसिक वृत्तियों तथा भावों पर प्रभुत्व प्राप्त हो सके। मेरी हार्दिक इच्छा है कि गुरुकुल का विकास राज्य द्वारा स्वीकृत एक स्वतंत्र विश्वविद्यालय के रूप में हो सके।"

डॉ. सैडलर के अतिरिक्त भूतपूर्व भारत सचिव मिस्टर मांटेग्यू महोदय के प्राइवेट सेक्रेटरी श्रीयुत किश और राइट आनरेबल श्री श्रीनिवास शास्त्री महोदय गुरुकुल आए। श्रीयुत किश ने गुरुकुल के संबंध में लिखा था–'प्रबंध के साधनों की पूर्णता, कार्यकर्ताओं के विश्वास और ब्रह्मचारियों की प्रत्यक्ष प्रसन्नता ने मुझ पर इतना प्रभाव डाला है कि मैं उसका इन थोड़ी सी पंक्तियों में वर्णन नहीं कर सकता।'

श्री श्रीनिवास शास्त्री ने अपने एक भाषण में ये विचार प्रकट किए थे–"शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी रहे या भारतीय भाषाएँ, इस प्रश्न पर बहुत वाद-विवाद है। मेरा अपना विचार यह रहा है कि विद्यालय विभाग में शिक्षा का माध्यम भारतीय भाषाएँ ही रहनी चाहिएँ, परंतु महाविद्यालय विभाग की पढ़ाई अंग्रेजी के माध्यम द्वारा होनी चाहिए। परंतु अब गुरुकुल को देखकर मैं अपने इस विचार से परे हट रहा हूँ।"

यह सचमुच गौरव की बात है कि गुरुकुल ने श्री श्रीनिवास शास्त्री जी जैसे गंभीर विचारक को भी अपने मंतव्यों पर पुनः विचार करने के लिए बाधित किया।

सन्यासी होने के बाद स्वामी श्रद्धानंद जी ने आर्यसमाज का एक प्रामाणिक इतिहास लिखने का विचार किया। इस कार्य को वे गुरुकुल कुरुक्षेत्र में बैठकर करना चाहते थे। पर प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामकृष्ण जी और गुरुकुल के आचार्य श्री रामदेव जी के आग्रह तथा अंतरंग सभा की प्रार्थना पर स्वामीजी ने गुरुकुल कांगड़ी में ही बैठकर इतिहास लिखने का निश्चय किया। इतिहास के लिए स्वामी जी ने बहुत सी सामग्री एकत्रित की, पर इस बीच में गढ़वाल प्रांत में भयंकर दुर्भिक्ष पड़ा। यह प्रदेश गुरुकुल के समीप ही था, अतः संभव नहीं था कि गुरुकुलवासी इसकी उपेक्षा कर सकें। स्वामी श्रद्धानंद जी ने दुर्भिक्ष निवारण के लिए एक अपील समाचार पत्रों में प्रकाशित की और स्वयं गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के साथ गढ़वाल प्रस्थान किया। स्वामी जी की अपील पर सत्तर हजार के लगभग रुपया एकत्रित हुआ था। गुरुकुल के विद्यार्थियों को जनता की क्रियात्मक सेवा करने का यह बहुत उत्तम अवसर मिला था। उन्होंने इसका पूर्ण उपयोग किया और 1918 की ग्रीष्म ऋतु में गढ़वाल में खूब काम किया।

पर स्वामी जी बहुत देर तक गुरुकुल में नहीं रह सके। सन् 1919 में भारत

में रौलेट एक्ट के विरुद्ध आंदोलन शुरू हुआ। महात्मा गांधी ने सत्याग्रह की घोषणा की। अनेक स्थानों पर सरकार और जनता का संघर्ष हुआ। अमृतसर में जलियाँवाला बाग का हत्याकांड इसी समय हुआ। स्वामी जी भी इस आंदोलन में सम्मिलित हुए। सितंबर सन् 1919 में जब कांग्रेस का अधिवेशन अमृतसर में हुआ तो स्वामी जी उसकी स्वागत समिति के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। यह समय देश में तीव्र राजनीतिक आंदोलन का था। सर्वत्र भारत में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध भावना प्रबल हो रही थी। ऐसी स्थिति में लोग राष्ट्रीय शिक्षा की आवश्यकता को भलीभाँति अनुभव करने लगे थे और गुरुकुल का महत्त्व जनता की दृष्टि में बढ़ रहा था। ऐसे समय में गुरुकुल को एक अत्यंत प्रभावशाली नेता की आवश्यकता थी। विस्तृत राजनीतिक क्षेत्र में पदार्पण करने के बाद भी स्वामी जी को गुरुकुल के हित की सदा चिंता रहती थी। तब गुरुकुल प्रेमी बार-बार स्वामी जी से फिर गुरुकुल सँभालने का अनुरोध करने लगे, तो फरवरी 1920 में स्वामी जी फिर गुरुकुल लौट आए और पहले की तरह मुख्याधिष्ठाता तथा आचार्य, दोनों पदों का चार्ज ले लिया।

विश्वविद्यालय की नई व्यवस्था

गुरुकुल के इतिहास में सन् 1921 का बड़ा महत्त्व है। गुरुकुल का स्वरूप क्या हो, इस विषय में प्रतिनिधि सभा के नेताओं में देर से मतभेद चला आता था। गुरुकुल का विकास एक स्वतंत्र विश्वविद्यालय के रूप में हो रहा था। उसके संस्थापकों ने भारत में प्रचलित शिक्षा को दूषित समझकर ऋषि दयानंद के शिक्षा संबंधी आदर्शों को क्रिया में परिणत करने के लिए गुरुकुल की स्थापना की थी, पर कई लोगों का यह विचार था कि गुरुकुल केवल एक धार्मिक विद्यालय 'डिविनिटी कॉलेज' है। सामान्य शिक्षा देना गुरुकुल का काम नहीं है। अब सन् 1921 में इस वाद-विवाद और मतभेद का अंत कर गुरुकुल के स्वरूप को सर्वसम्मत रूप से निर्णीत करने का प्रयत्न किया गया और इसी के अनुसार 22 मार्च, 1921 को आर्य प्रतिनिधि सभा ने गुरुकुल के संबंध में निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकृत किया–

1. शिक्षा संबंधी क्षमता को बढ़ाने के लिए आवश्यकता होती है कि वर्तमान गुरुकुल को ऐसे विश्वविद्यालय के रूप में परिणत किया जाए, जिसमें भिन्न-भिन्न विषयों में शिक्षा दी जा सके। इसलिए निश्चय हुआ कि इस विश्वविद्यालय के साथ निम्नलिखित महाविद्यालय संबंधित होंगे–

(क) वेद महाविद्यालय

(ख) साधारण महाविद्यालय

(ग) आयुर्वेद महाविद्यालय

(घ) कृषि महाविद्यालय

2. सं. (क), (ख) का गुरुकुल में पहले से परस्पर संबंध अधिक रहा है, अब वह उचित परिवर्तन के पश्चात् कांगड़ी में पृथक्-पृथक् चलाए जावें। उनका वार्षिक व्यय विद्यालय के ऊपर लगभग बराबर हुआ करे। अब तक का एकत्रित धन व संपत्ति या जो आगे को प्राप्त हो, इन्हीं के अर्पित रहे। जिसका नाम गुरुकुल धन होगा। सिवाय उसके जो किसी विशेष कार्य के लिए प्राप्त हो।

3. सं. (ग) (घ) (ङ) महाविद्यालय उनके संबंधी उचित धन प्राप्त होने पर तब प्रारंभ किए जाएँगे, जब यह सभा संचित धन और स्थानादि का विचार करके आज्ञा दे।

4. सब विद्यालय जो सभा की ओर से या सभा की आज्ञानुसार गुरुकुलों के नाम खोले हुए हों या खोले जाएँ सं. (ख) महाविद्यालय से संबंधित हों।

5. (ग) (घ) (ङ) महाविद्यालय कांगड़ी से बाहर खोले जाएँ और उनमें गुरुकुल विद्यालय और अन्य विद्यालयों के छात्र अंतरंग सभा के बनाए नियमानुसार प्रविष्ट होंगे।

6. आयुर्वेदिक और कृषि महाविद्यालयों के पृथक्-पृथक् खुलने तक इन विषयों की जो पढ़ाई अब होती है, वह केवल विशेष विषय के रूप में ही साधारण महाविद्यालय में ही होती रहेगी, परंतु आवश्यक विषयों में इन विद्यार्थियों की योग्यता न्यून न हो और उन्हें कोई पृथक् प्रमाण पत्र नहीं दिया जाएगा और इन विषयों पर वही धन व्यय होगा जो इनके लिए प्राप्त हो। गुरुकुल धन से जो वार्षिक व्यय अब होता है, वह दस वर्ष में 10 प्रतिशत के हिसाब से कम करके बंद किया जाएगा।

7. इन सबकी पाठविधि और नियम अंतरंग सभा बनाएगी।

8. इस विश्वविद्यालय के प्रबंध के लिए एक विद्या सभा बनाई जावे। इसके बनाने तक अंतरंग सभा कार्य करेगी।

गुरुकुल का क्या उद्देश्य है ? गुरुकुल का क्या स्वरूप है ? क्या गुरुकुल केवल धार्मिक विद्यालय है ? आदि सभी विषयों का निर्णय आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिवेशन में स्वीकृत हुए। इस प्रस्ताव से स्पष्ट हो जाता है कि गुरुकुल एक विश्वविद्यालय है, जिनमें भिन्न-भिन्न विषयों की शिक्षा दी जाती है और शिक्षा संबंधी क्षमता को बढ़ाने के लिए सदा प्रयत्न किया जाता है। साथ ही इस प्रस्ताव में यह भी निश्चय किया गया है कि गुरुकुल का संचालन करने के लिए एक पृथक् विद्या सभा का निर्माण किया जाए। यह निर्णय आगे चलकर किस प्रकार कार्य में परिणत हुआ, इस पर यथा स्थान प्रकाश डालेंगे।

स्वामी श्रद्धानंद जी फरवरी 1920 से अक्तूबर 1921 तक लगभग डेढ़ वर्ष गुरुकुल में रहे। इस काल में अनेक नवीन बातें गुरुकुल में शुरू हुईं। 'सद्धर्म प्रचारक' के बंद हो जाने के बाद गुरुकुल का कोई मुखपत्र नहीं था। अब 'श्रद्धा'

नामक नए साप्ताहिक पत्र का प्रारंभ किया गया। श्रद्धा के संपादक स्वामी जी महाराज स्वयं थे। न केवल आर्यजगत् में, अपितु बाहर भी 'श्रद्धा' की खूब प्रसिद्धि हुई। गुरुकुल को लोकप्रिय बनाने में इस पत्र से बड़ी सहायता मिली। वेद संबंधी अन्वेषण का कार्य गुरुकुल में प्रारंभ करने का विचार तो बहुत दिनों से था। पर उसे क्रिया में परिणम नहीं किया जा सका था। अब सन् 1920 में गुरुकुल में बाकायदा 'अनुसंधान विभाग' खोल दिया गया। एक योग्य स्नातक को वैदिक कोश तैयार करने को नियत किया गया और श्री पंडित देव शर्मा जी वैदिक खोज के लिए विशेष रूप से रखे गए थे। यह भी यत्न किया गया कि विविध गुरुकुलों को एक सूत्र में बाँधा जाए। गुरुकुल वृंदावन के कार्यकर्ताओं से इस विषय में बातचीत भी प्रारंभ हुई।

पर स्वामी जी देर तक गुरुकुल में न रह सके। इस समय देश में प्रवल असहयोग आंदोलन प्रारंभ हो रहा था। महात्मा गांधी ने छः मास में स्वराज्य प्राप्त करने का प्रोग्राम देश के सम्मुख रखा था। सारे देश में एक नई जागृति, नई चेतना उत्पन्न हो रही थी। यद्यपि स्वामी जी के महात्मा गांधी से अनेक विषयों में मतभेद थे, पर इस जागृति के काल में वह स्वराज्य आंदोलन से अपने को पृथक् नहीं रख सके। प्रधान रामकृष्ण जी को एक पत्र में उन्होंने लिखा था—'इस समय में मेरी सम्मति में 'असहयोग' की व्यवस्था के क्रियात्मक प्रचार पर ही मातृभूमि का भविष्य निर्भर है। यदि आंदोलन अकृतकार्य हुआ और महात्मा गांधी को सहायता न मिली, तो देश की स्वतंत्रता का प्रश्न पचास वर्ष पीछे जा पड़ेगा। यह जाति के जीवन-मरण का प्रश्न हो गया है, इसलिए मैं इस काम में शीघ्र ही लग जाऊँगा।'

असहयोग आंदोलन में कार्य करने की हार्दिक प्रेरणा ही थी जो स्वामी श्रद्धानंद जी को गुरुकुल से बाहर ले गई। यदि स्वामी जी कुछ समय तक और गुरुकुल के कर्णधार रहते तो अपने अनेक प्रसिद्ध स्वप्नों को पूर्ण कर सकते थे। स्वामी जी गुरुकुल में आयुर्वेदिक, कृषि और व्यवसाय महाविद्यालय स्थापित करना चाहते थे। आयुर्वेद और कृषि की श्रेणियाँ तो खोल भी दी गई थीं। इनमें से आयुर्वेद की श्रेणी इस समय एक पृथक् महाविद्यालय के रूप में परिवर्तित भी हो चुकी है पर कृषि और व्यवसाय के महाविद्यालय अब तक गुरुकुल में नहीं खुल सके थे। स्वामी जी ने 'श्रद्धा' के पृष्ठों में बार-बार अपनी यह इच्छा प्रकट की थी कि गुरुकुल में व्यवसाय महाविद्यालय (Industrial College) शीघ्र खुल जाना चाहिए। कला भवन के लिए वह बार-बार अपील कर चुके थे। अपने बलिदान से दो-ढाई मास पूर्व स्वामी जी ने 'माई स्पेशल अपील' शीर्षक से एक लेख अपने अंग्रेजी साप्ताहिक पत्र 'लिबरेटर' में लिखा था। इसमें उन्होंने शिल्प व व्यवसाय महाविद्यालय के लिए धन की विशेष रूप से अपील की थी।

: 6 :

बाढ़ और पुनर्निर्माण

पं. विश्वंभरनाथ जी

1921 में स्वामी श्रद्धानंद जी के चले जाने पर पं. विश्वंभरनाथ जी गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता नियत हुए। पंडित जी आर्यसमाज के पुराने कार्यकर्ता थे। गुरुकुल की स्थापना के समय से ही आप गुरुकुल की स्वामिनी सभा के सदस्य थे और अनेक बार कोषाध्यक्ष तथा उपप्रधान के पद पर नियुक्त हो चुके थे। महात्मा मुंशीराम जी के संन्यास लेने पर दो वर्ष के लिए वे सभा के प्रधान भी रहे। पंडित जी सभा के ठोस कार्यकर्ता थे और महात्मा मुंशीराम जी को इन पर दृढ़ विश्वास था। जिस समय महात्मा जी संन्यास लेने लगे, तो पंडित जी को गुरुकुल में आकर कार्य सँभालने के लिए प्रेरित करते हुए उन्होंने लिखा था कि 'उस उद्देश्य की पूर्ति के लिए जो मेरे और तुम्हारे लिए इतना प्रिय रहा. तुम्हें साहसपूर्वक बाहर निकल आना चाहिए।' अब 1921 में पंडित जी ने गुरुकुल का कार्य सँभाला। आर्यसमाज के वीतराग संन्यासी स्वामी सत्यानंद जी आचार्य नियत हुए और शिक्षा संबंधी कार्य उपाचार्य के रूप में प्रो. रामदेव जी के हाथ में रहा। 1924 में स्वामी सत्यानंद जी के त्यागपत्र दे देने पर प्रो. रामदेव जी आचार्य बने और उपाचार्य का काम पं. विश्वनाथ जी विद्यालंकार के हाथ में आया।

पं. विश्वंभरनाथ जी 1921 से 1927 तक गुरुकुल में मुख्याधिष्ठाता रहे। यह काल गुरुकुल के इतिहास में बड़ा घटनापूर्ण है। आंतरिक प्रबंध और व्यवस्था की दृष्टि से इस समय में गुरुकुल की बहुत उन्नति हुई। पं. विश्वंभरनाथ जी आर्थिक प्रबंध में बहुत दक्ष थे। उन्होंने गुरुकुल के बजट को नए ढंग से व्यवस्थित किया और गुरुकुल के व्यय को ब्रह्मचारियों के भरण-पोषण और शिक्षा—इन दो विभागों में नियमित रूप से विभक्त कर दिया और यह नियम बना दिया कि एक का धन दूसरे विभाग में व्यय न हो। भरण-पोषण के लिए केवल वह रुपया व्यय हो जो संरक्षकों से फीस द्वारा या छात्रवृत्ति की आमदनी से प्राप्त होता है। शिक्षा के लिए व्यय, दान तथा उपाध्यायं वृत्तियों से सूद का धन ही हो। साथ ही खर्च को कम करने के लिए और गुरुकुल की आय तथा व्यय को बराबर करने के लिए बहुत उद्योग किया गया।

गुरुकुल को बाकायदा विश्वविद्यालय के रूप में परिवर्तित करने का प्रस्ताव सन् 1921 में पास किया जा चुका था। अब सन् 1923 में शिक्षा विषयक प्रबंध के लिए पृथक् शिक्षा पटल (Board of Education) की स्थापना की गई। शिक्षा पटल में गुरुकुल के अध्यापकों के अतिरिक्त तीन अन्य तत्त्वों का समावेश

किया गया—

1. अंतरंग सभा के प्रतिनिधि,

2. स्नातक मंडल के प्रतिनिधि,

3. बाहर के विद्वान्।

शिक्षा पटल का निर्माण निम्नलिखित प्रकार से करने की व्यवस्था की गई।

1 आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रधान।

1 गुरुकुल कांगड़ी का मुख्याधिष्ठाता।

1 गुरुकुल कांगड़ी के प्रत्येक महाविद्यालय का अध्यक्ष।

1 गुरुकुल कांगड़ी का आचार्य।

6 अंतरंग सभा द्वारा निर्वाचित महानुभाव जिनमें से न्यून-से-न्यून तीन सज्जन शिक्षा कला में प्रवीण होंगे।

3 संबंधित महाविद्यालयों के उपाध्यायों की ओर से निर्वाचित प्रतिनिधि।

1 दयानंद सेवासदन के सदस्यों और गुरुकुल के स्थिर सेवकों का निर्वाचित प्रतिनिधि।

2 गुरुकुल के स्नातकों की ओर से निर्वाचित प्रतिनिधि।

गुरुकुल विश्वविद्यालय का मुख्याधिष्ठाता पदाधिकार से शिक्षा पटल का प्रधान और प्रस्तोता मंत्री होता है। कार्यारंभ के लिए सात की उपस्थिति आवश्यक है। शिक्षा पटल के बन जाने से गुरुकुल में शिक्षा विषयक क्षमता बढ़ाने में बहुत सहायता मिली। पटल ने पहले मंत्री (प्रस्तोता) गुरुकुल के सुयोग्य स्नातक पं. महानंद जी सिद्धांतालंकार नियत किए गए।

कन्या गुरुकुल व अन्य नए शाखा गुरुकुल

इस काल में गुरुकुल की अनेक नई शाखाएँ खुलीं। 1923 में दीवाली के दिन देहली नगर के दरियागंज मुहल्ले में एक बड़ी कोठी किराए पर लेकर कन्या गुरुकुल की स्थापना की गई। 1921 में स्वामी श्रद्धानंद जी ने गुरुकुल कांगड़ी की वार्षिकोत्सव के अवसर पर यह घोषणा की थी कि दिल्ली निवासी सेठ रघुमल जी कन्या गुरुकुल के लिए एक लाख रुपया दान देने को उद्यत हैं। सेठ रघुमल जी गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के अनन्य भक्त थे। इससे पूर्व 1912 में वे दिल्ली के समीप गुरुकुल की शाखा खोलने के लिए एक लाख का दान दे चुके थे। अब उन्होंने ही कन्या गुरुकुल की स्थापना के लिए भी आर्य प्रतिनिधि सभा को प्रोत्साहित किया। गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना के समय से ही कन्याओं के लिए पृथक् गुरुकुल को खोलने का विचार आता था। महात्मा मुंशीराम जी देर से इसके लिए आंदोलन कर रहे थे। सद्धर्म प्रचारक में उन्होंने अनेक बार आर्य जनता का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया था। इसीलिए गुरुकुल कांगड़ी की नियमावली में यह टिप्पणी देर से प्रकाशित हो रही

थी, कि साधन जुट जाने पर कन्याओं की शिक्षा के लिए भी पृथक् गुरुकुल की स्थापना कर दी जाएगी। अब सेठ रघुमल जी के दान से सन् 1923 में इस विचार को क्रिया में परिणत होने का अवसर मिला।

चार साल तक कन्या गुरुकुल दिल्ली में रहा। पहली पाँच श्रेणियाँ वहाँ शुरू में ही खोल दी गई थीं। धीरे-धीरे आठ श्रेणियों का विद्यालय विभाग और तीन उच्च कक्षाओं का महाविद्यालय विभाग भी स्थापित किया गया।

पर दिल्ली नगर में कन्या गुरुकुल के लिए उपयुक्त स्थान नहीं मिला। अतः चार वर्ष बाद उसे देहरादून ले जाया गया। प्रारंभ में दो कोठियाँ किराए पर लेकर इस संस्था को वहाँ स्थापित किया गया, पर कोठियों के कमरे गुरुकुल के लिए पर्याप्त नहीं थे। इसलिए टीन के शेड बनवाकर उससे काम चलाया गया। 1930 में देहरादून में राजपुर रोड पर दो बड़ी कोठियाँ कन्या गुरुकुल के लिए क्रय कर ली गईं। इन कोठियों के साथ जमीन पर्याप्त थी। धीरे-धीरे इनमें नई इमारत बनाई गईं। इस समय देहरादून में कन्या गुरुकुल की भूसंपत्ति कई लाख कीमत की है और यह संस्था बहुत उन्नति कर चुकी है।

गुजरात प्रांत के निवासियों की चिरकाल से इच्छा थी कि गुरुकुल कांगड़ी की एक शाखा उनके प्रांत में भी खोली जावे। श्री पं. ईश्वरदत्त विद्यालंकार, श्री दयाल जी लल्लू भाई और श्री झीणा भाई देवा भाई के अनथक परिश्रम से सन् 1923 में गुरुकुल के लिए पच्चीस हजार रुपए नकद जमा हुए और गुजरात में गुरुकुल सभा का निर्माण हुआ। सूरत जिले की बादौली तहसील में पूर्णा नदी के सुरम्य तट पर 18 फरवरी सन् 1924 को गुरुकुल की एक शाखा स्थापित की गई। सूपा ग्राम के निकट होने के कारण इसका नाम 'गुरुकुल सूपा' रखा गया। गुरुकुल की आधारशिला श्री स्वामी श्रद्धानंद जी महाराज के करकमलों द्वारा रखी गई थी। गुरुकुल सूपा की उन्नति बड़ी तेजी से हुई। अब इसमें दस श्रेणियाँ हैं और प्रतिवर्ष इसके विद्यार्थी गुरुकुल कांगड़ी की अधिकारी परीक्षा पास कर महाविद्यालय विभाग में प्रविष्ट होते हैं।

1924 में ही हरियाणा प्रांत में झज्झर नामक स्थान पर गुरुकुल की एक शाखा स्थापित हुई। इसकी स्थापना में महाशय विश्वंभरनाथ जी, स्वामी परमानंद जी और स्वामी ब्रह्मनंद जी ने बड़ा पुरुषार्थ किया।

सन् 1924 में गुरुकुल कांगड़ी की एक शाखा भटिंडा में खुली। इसकी भी आधारशिला श्री स्वामी श्रद्धानंद जी द्वारा रखी गई।

इस प्रकार गुरुकुल की चार नई शाखाएँ 1923-24 में स्थापित हुईं। गुरुकुल के विस्तार की दृष्टि से ये वर्ष बड़े महत्त्व के हैं।

सन् 1924 में जहाँ गुरुकुल का इतना विस्तार हुआ, वहाँ गुरुकुल पर सबसे बड़ी विपत्ति भी आई। गुरुकुल गंगा के तट पर स्थित था। सितंबर 1924 में

असाधारण वर्षा के कारण गंगा में भयंकर बाढ़ आई और गुरुकुल की बहुत इमारतें नष्ट हो गईं। उन दिनों गुरुकुल में बड़ी छुट्टियाँ थीं। विद्यार्थी प्रायः बाहर गए हुए थे, जो व्यक्ति वहाँ थे उनकी बड़ी कठिनाई से रक्षा हुई। इमारतों का एक लाख से ऊपर का नुकसान हुआ। इस भयंकर बाढ़ के कारण गुरुकुल के स्थान परिवर्तन का प्रश्न बहुत महत्त्वपूर्ण हो गया। प्रतिनिधि सभा में इस विषय में अनेक पक्ष थे। कुछ लोग गुरुकुल को पंजाब में ले जाना चाहते थे। कइयों का मत दिल्ली के समीप गुरुकुल बनाने का था। अनेक महानुभाव कांगड़ी ग्राम के समीप ही दूसरी जगह पर गुरुकुल की नई इमारत बनाना चाहते थे पर विश्वंभरनाथ जी का पक्ष गंगा के पश्चिमी तट पर सुरक्षित स्थान पर गुरुकुल रखने का था। पंडित जी का पक्ष बहुमत से पास हो गया और गंगा की नहर के साथ गुरुकुल के लिए नई भूमि खरीदी गई। अब तक इस नई भूमि पर पंद्रह लाख से ऊपर की लागत की इमारतें बन चुकी हैं और अनेक इमारतें अभी अवशिष्ट हैं।

1925 में गुरुकुल में 'व्रताभ्यास' की परिपार्टी डाली गई। इसका उद्देश्य यह है कि ब्रह्मचारी अपने वैयक्तिक और सामाजिक कर्तव्यों को दंड के भय से नहीं, किंतु उनकी उपयोगिता और महत्त्व समझकर पूरा करें। प्रत्येक ब्रह्मचारी के पास एक व्रताभ्यास पंजिका रहती है, जिसमें प्रतिदिन वह स्वयं लिखता है कि किन-किन नियमों का उसने पालन किया, किन-किन का नहीं किया। जिन नियमों का पालन न किया हो उनके संबंध में कारण देना होता है। मास के अंत में इस पंजिका के आधार पर अंक भी दिए जाते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में गुरुकुल का यह मौलिक परीक्षण है। अखिल एशियाटिक शिक्षापरिषद् में इस पद्धति को बहुत पसंद किया गया और इसे सर्वत्र प्रारंभ करने की सिफारिश भी की गई।

: 7 :

रजत जयंती

1927 में गुरुकुल को स्थापित हुए पूरे पच्चीस वर्ष हो गए थे। अतः इस वर्ष का वार्षिकोत्सव रजत जयंती (सिलवर जुबली) के रूप में बड़ी धूमधाम के साथ मनाया गया। इसमें पचास हजार से अधिक यात्री विविध प्रांतों से सम्मिलित हुए। इनमें महात्मा गांधी, पं. मदनमोहन मालवीय, श्रीनिवास आयंगर, बाबू राजेंद्र प्रसाद, सेठ जमनालाल बजाज, डॉ. मुंजे और श्री शंकरलाल बैंकर के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इनके अतिरिक्त प्रिंसीपल ध्रुव, साधुवर वास्वानी, डॉ. अविनाशचंद्र दास जी, श्रीयुत पीयूषकांति घोष आदि अनेक प्रसिद्ध लेखक भी जयंती महोत्सव में पधारे थे। आर्यसमाज के तो प्रायः सभी नेता, संन्यासी और विद्वान् इस अवसर पर उपस्थित थे। गुरुकुल के पच्चीस सालों के उत्सव में यह पहला ही उत्सव था,

जब इस संस्था के संस्थापक श्री स्वामी श्रद्धानंद जी महाराज उपस्थित नहीं थे। जयंती महोत्सव के लगभग तीन मास पूर्व 23 सितंबर, 1926 को दिल्ली में उनका बलिदान हुआ था। इस बलिदान के कारण जयंती महोत्सव के आनंदपूर्ण समारोह में एक गंभीर वेदना-सी मिली हुई थी। जयंती महोत्सव बड़ी सफलता के साथ संपन्न हुआ। उस अवसर पर एक लाख तिरपन हजार रुपए नकद प्राप्त हुए और एक लाख तीस हजार रुपए की प्रतिज्ञाएँ हुईं। इन प्रतिज्ञाओं का प्रायः सारा धन पीछे से प्राप्त हो गया था।

जयंती को सफलता के साथ पूर्ण करवाकर श्री पंडित विश्वंभरनाथ जी गुरुकुल से विदा हो गए। पंडित जी का यह सिद्धांत था कि किसी व्यक्ति को एक संस्था में पांच वर्ष से अधिक संचालक रूप में नहीं रहना चाहिए। इसके अनुसार उन्होंने त्यागपत्र दे दिया और श्री आचार्य रामदेव जी उनके स्थान पर मुख्याधिष्ठाता नियत हुए।

आचार्य रामदेव जी

आचार्य रामदेव जी सन् 1905 में गुरुकुल आए थे। उन्होंने गुरुकुल का कार्य अंग्रेजी के अध्यापक के रूप में प्रारंभ किया था। पर वे लगन के पक्के थे और गुरुकुल के लिए रात-दिन एक कर कार्य करने में उन्हें आनंद आता था। इसी का परिणाम यह हुआ कि गुरुकुल के संचालन में उनका हाथ निरंतर बढ़ता ही गया। वे अध्यापक से मुख्याध्यापक, फिर उपाचार्य, फिर आचार्य और अब 1927 में मुख्याधिष्ठाता के पद पर अधिष्ठित हुए। इन बाईस वर्षों में वे शिक्षा-विषयक प्रबंध के प्रायः कर्ता-धर्ता ही रहे। यही नहीं, गुरुकुल के संचालन में भी उनका प्रमुख भाग रहा। धन एकत्रित करने में वे महात्मा मुंशीराम जी के दाएँ हाथ थे। उनके व्याख्यानों की समाज में धूम थी। उनमें एक प्रकार की अद्भुत शक्ति थी, जो अटल विश्वास, त्याग और लगन से मनुष्य में विकसित होती है।

सन् 1927 से 1933 तक आचार्य रामदेव जी गुरुकुल में मुख्याधिष्ठाता रहे। इस काल में गुरुकुल की नई इमारत के लिए धन एकत्रित किया गया। आचार्य रामदेव जी के प्रयत्न से लाखों रुपया गुरुकुल को दान में मिला। नई भूमि का क्रय कर उस पर इमारतें बननी शुरू हुईं। सन् 1930 में गुरुकुल अपनी पुरानी भूमि को सदा के लिए नमस्कार कर नए स्थान पर आ गया। गंगा के तटवाली उस पुरानी भूमि का कुलवासियों के हृदय में एक विशेष आकर्षण था। उस स्थान पर तपस्वी मुंशीराम ने अपने तप को सिद्ध किया था। भरे हृदयों से कुलवासियों ने उस स्थान का परित्याग किया और एक वृहद् यज्ञ के साथ नवीन भूमि में निवास का आरंभ हुआ।

बीस लाख के लगभग मूल्य की इमारतों को तैयार करने के लिए धन एकत्रित करना साधारण बात न थी। आचार्य रामदेव जी ने इसके लिए अनथक परिश्रम किया उन्हीं के प्रभाव व श्रम का यह परिणाम था कि आर्य जनता ने गुरुकुल की नई इमारतों के लिए दिल खोलकर दान दिया। गुरुकुल के अध्यापकों व अन्य गुरुकुल प्रेमियों ने भी धन एकत्रित करने में आचार्य जी को सहयोग दिया। इसी प्रकार अन्य अनेक महानुभावों ने भी अत्यंत उदारतापूर्वक इस समय गुरुकुल की नई इमारतों के लिए दान दिया। उन्हीं प्रयत्नों से भयंकर जल-प्रवाह बाढ़ द्वारा हुआ नुकसान पूरा हो सका।

सत्याग्रह आंदोलन और गुरुकुल

सन् 1930 में महात्मा गांधी के नेतृत्व में सत्याग्रह संग्राम का प्रारंभ हुआ। सारे भारत में एक आग-सी धधक उठी। हजारों की संख्या में देशभक्त लोग सत्याग्रह आंदोलन में कैद होने लगे। सरकारी स्कूल और कॉलेज तक इसके प्रभाव से न बच सके। इस दशा में यह कैसे संभव था कि गुरुकुल पर इस देशव्यापी आंदोलन का प्रभाव न होता। गुरुकुल एक राष्ट्रीय संस्था है। जब कभी देश, जाति व धर्म के लिए त्याग की आवश्यकता हुई, गुरुकुल कभी पीछे नहीं रहा। 1930 का सत्याग्रह संग्राम नवयुवकों को त्याग और तपस्या के लिए आह्वान कर रहा था। गुरुकुल के विद्यार्थी ऐसे समय में शांत नहीं रह सके। उन दिनों ब्रह्मचारी सर्वमित्र चौदहवीं श्रेणी में पढ़ते थे। वह एक अत्यंत होनहार विद्यार्थी थे। इनके नेतृत्व में गुरुकुल के विद्यार्थियों ने देश के प्रति अपने कर्तव्यपालन का निश्चय किया। गुरुकुल के अधिकारी इसके लिए अनुमति नहीं दे सकते थे, क्योंकि गुरुकुल का एक संस्था के रूप में सत्याग्रह संग्राम में भाग लेना संभव नहीं था। अतः अधिकारियों से अनुमति प्राप्त न होने पर भी विद्यार्थियों ने स्वराज्य संग्राम में भाग लिया और विवश होकर कुछ महीनों के लिए गुरुकुल के लिए महाविद्यालय विभाग में अवकाश करना पड़ा। बहुत से विद्यार्थी और उपाध्याय भी कैद हो गए और ब्रह्मचारी सर्वमित्र तथा उनके साथी ब्रह्मचारी सत्यभूषण देहातों में काम करते हुए बीमार पड़े और स्वर्ग सिधारे। विपत्तियों और प्रचंड महामारी की परवाह न कर जिस ढंग से इन ब्रह्मचारियों ने अपने प्राणों को मातृभूमि के लिए स्वाहा किया, उसे हम बलिदान कहें तो अनुचित न होगा।

कुछ मास के असाधारण अवकाश के बाद गुरुकुल तो खुल गया, परंतु अनेक विद्यार्थी सत्याग्रह संग्राम में लगे रहे। सत्याग्रह के स्थगित होने पर ये फिर गुरुकुल में प्रविष्ट हुए और अपनी पढ़ाई को पूर्ण किया।

प्रबंध समिति

सन् 1932 में आचार्य रामदेव जी भी सत्याग्रह में कार्य करने के लिए गुरुकुल से चले गए। उनके बाद प्रतिनिधि सभा ने किन्हीं एक महानुभाव को गुरुकुल का मुख्याधिष्ठाता नियत नहीं किया, अपितु गुरुकुल का प्रबंध एक समिति के सुपुर्द किया। श्रीयुत देवराज जी सेठी उन दिनों गुरुकुल के सहायक मुख्याधिष्ठाता थे। उन्हें उप-समिति का मंत्री बनाया गया। उनके अतिरिक्त श्री पं. चमूपति जी एम.ए. और श्री पं. देव शर्मा जी विद्यालंकार इसमें और रखे गए। उप-समिति का प्रधान पद श्री चमूपति जी को दिया गया। एक मुख्याधिष्ठाता के सथान पर तीन महानुभावों की उप-समिति नियत करना गुरुकुल के इतिहास में एक नया परीक्षण था। यह सफल न हो सका। कारण यह था कि समिति के तीनों सदस्यों के विचार एक सदृश नहीं थे। उनमें मतभेद था। इस समस्या का अंत तब हुआ जब श्री पं. देव शर्मा जी और श्री देवराज जी सेठी त्यागपत्र देकर विस्तृत क्षेत्र में सेवा के लिए बाहर चले गए। अब पं. चमूपति जी मुख्याधिष्ठाता और आचार्य, दोनों पदों का कार्य करने लगे। आचार्य रामदेव जी के जाने पर गुरुकुल के कार्य का संचालन करने के लिए जो उप-समिति बनी थी, वह पूरा एक वर्ष भी कार्य न कर सकी और 1934 के अंतिम दिनों में गुरुकुल का संचालन भार पं. चमूपति जी के पास आ गया।

श्री पं. चमूपति जी आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् और प्रचारक थे। उनका गुरुकुल से संबंध बहुत पुराना था। अब से लगभग बीस वर्ष पूर्व वे गुरुकुल मुलतान के मुख्याधिष्ठाता बने थे और उस गुरुकुल का संचालन करने में उन्हें बड़ी सफलता मिली थी। आचार्य रामदेव जी उनके गुणों पर मुग्ध होकर उन्हें लाहौर ले आए थे। और उन्हें दयानंद सेवासदन का आजीवन सदस्य बनाने के लिए तैयार किया था। अनेक वर्षों तक पंडित जी ने लाहौर में 'आर्य' पत्र का संपादन किया। वक्ता और लेखक के रूप में आर्यसमाज में उनकी खूब ख्याति हुई। पहले वे आर्यसिद्धांत के प्रोफेसर नियत होकर आए और 'वैदिक मैगज़ीन' के संपादन में भी आचार्य रामदेव जी की सहायता करते रहे। रामदेव जी के जेल जाने पर गुरुकुल के संचालन का कार्य उनके सुपुर्द किया गया और उन्होंने योग्यता से इस कार्य को निभाया।

इन वर्षों में भी गुरुकुल की खूब उन्नति हुई। हिंदू यूनिवर्सिटी, काशी में प्रतिवर्ष हिंदी और संस्कृत में वाद-विवाद होते हैं। इनमें विविध यूनिवर्सिटियों के प्रतिनिधि सम्मिलित होकर किसी पूर्व निश्चित विषय पर वाद-विवाद करते हैं। सर्वोत्तम वक्ताओं को पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं और जिस शिक्षणालय के विद्यार्थी सबसे अधिक अंक प्राप्त करते हैं उन्हें विजयोपहार प्रदान किया जाता है। सन् 1931 से 1934 तक गुरुकुल के विद्यार्थी इन अंतर्विश्वविद्यालय वाद-विवादों में सम्मिलित

हुए और निरंतर विजयी रहे। केवल बनारस में ही नहीं, अपितु मेरठ, दिल्ली आदि कई शिक्षा केंद्रों में इस प्रकार के वाद-विवादों में गुरुकुल के विद्यार्थी 'विजयोपहार' जीतकर लाए।

सन् 1931 में गुरुकुल अधिक सर्वप्रिय बनाने के साधनों की सिफारिश करने के लिए महात्मा नारायण स्वामी जी की अध्यक्षता में एक कमीशन आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा नियुक्त हुआ। दो वर्ष तक परिश्रम कर इस कमीशन ने एक रिपोर्ट तैयार की।

: 8 :

विद्या सभा की स्थापना

सन् 1935 से गुरुकुल के प्रबंध के संबंध में बहुत से महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए, गुरुकुल के लिए पृथक् विद्या सभा स्थापित करने का विचार बहुत पुराना है। महात्मा मुंशीराम जी ने इसके लिए सन् 1910 से ही आंदोलन प्रारंभ कर दिया था। 1921 में जिस प्रस्ताव द्वारा प्रतिनिधि सभा ने गुरुकुल को एक विश्वविद्यालय के रूप में परिवर्तित किया उसमें ही यह भी सिद्धांत रूप में स्वीकृत कर लिया कि गुरुकुल के लिए विद्या सभा का पृथक् रूप से निर्माण होना चाहिए। 1924 में विद्या सभा के संगठन का खाका तैयार हुआ और प्रतिनिधि सभा में यह स्वीकृत हो गया। पर कुछ कारणों से उसे क्रिया में परिणत नहीं किया जा सका। 1935 में विद्या सभा की स्थापना के लिए फिर प्रबल आंदोलन हुआ। आर्य प्रतिनिधि सभा का कार्यक्षेत्र इतना विस्तृत हो गया था कि एक कार्यकारिणी समिति (अंतरंग सभा) सब विषयों पर यथोचित ध्यान नहीं दे सकती थी। साथ ही गुरुकुल अब एक अच्छे बड़े विश्वविद्यालय के रूप में विकसित हो गया था। उसके लिए एक ऐसी सभा की आवश्यकता थी जिसका मुख्य कार्य गुरुकुल का ही संचालन हो। स्नातक मंडल ने इसके लिए बड़ा प्रबल आंदोलन किया। सन् 1935 आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए नए निर्वाचन का साल था। इसका लाभ उठाकर विद्या सभा के पक्षपाती लोग बड़ी संख्या में प्रतिनिधि निर्वाचित होकर आए। परिणाम यह हुआ कि 1935 के प्रतिनिधि सभा के अधिवेशन में गुरुकुल के लिए पृथक् विद्या सभा स्थापित कर ली गई। गुरुकुल के इतिहास में यह बात बहुत महत्त्व की हुई।

विद्या सभा की रचना निम्नलिखित प्रकार से करने की व्यवस्था की गई—

1. विद्या सभा के कुल सदस्यों की संख्या सत्ताईस हो।
2. इन सत्ताईस सदस्यों में से न्यून-से-न्यून अठारह आर्य प्रतिनिधि सभा के सभासद् हों
3. आर्य प्रतिनिधि सभा के निम्नलिखित पदाधिकारी अपने पद के कारण

विद्या सभा के सदस्य हों।

(क) आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान

(ख) आर्य प्रतिनिधि सभा के तीनों उप-प्रधान

(ग) आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री

(घ) आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष

4. इन छः पदाधिकारियों के अतिरिक्त कम-से-कम बारह व्यक्ति आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब द्वारा विद्या सभा के लिए निर्वाचित किए जावें। इन सदस्यों को निर्वाचित करते हुए यह ध्यान रखा जावे कि ये सदस्य विद्या आदि विशेष गुणों में संपन्न हों।

5. साथ ही गुरुकुल के निम्नलिखित पदाधिकारी भी अपने पद के कारण विद्या सभा के सदस्य हों

(क) गुरुकुल कांगड़ी का मुख्याधिष्ठाता

(ख) गुरुकुल कांगड़ी का आचार्य

(ग) कन्या गुरुकुल का मुख्याधिष्ठाता

(घ) कन्या गुरुकुल की आचार्या

6. इनके अतिरिक्त शेष पाँच सदस्यों की नियुक्ति निम्नलिखित प्रकार से की जाए—

(क) गुरुकुल के विद्यार्थी व विद्यार्थिनियों के संरक्षकों में से एक।

(ख) गुरुकुल के स्नातकों व स्नातिकाओं में से तीन, जिनमें एक अवश्य स्नातिका हो।

(ग) गुरुकुल के उपाध्याय वर्ग में से एक।

विद्या सभा के सदस्य केवल वही बन सकें, जिन्हें गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से वास्तविक प्रेम हो और जो स्वयं अपने बालकों व बालिकाओं को गुरुकुल में पढ़ाने के लिए उद्यत होकर गुरुकुल प्रेम का साक्षात् प्रमाण देने को उद्यत हों।

विद्या सभा के बन जाने से गुरुकुल का प्रबंध व संचालन आर्य प्रतिनिधि सभा के 'वेद प्रचार विभाग' से पृथक् हो गया। इससे गुरुकुल की समस्याओं पर अधिक ध्यान दे सकना व इस संस्था की उन्नति के लिए प्रयत्न कर सकना अधिक संभव हो गया।

परिवर्तन

1935 के अप्रैल मास में पं. चमूपति जी ने गुरुकुल से त्यागपत्र दे दिया था। नव निर्मित विद्या सभा ने उनके स्थान पर पं. सत्यव्रत सिद्धांतालंकार को मुख्याधिष्ठाता और पं. देव शर्मा विद्यालंकार को आचार्य पद पर नियत किया। पं. सत्यव्रत जी गुरुकुल के सुयोग्य स्नातक हैं और सन् 1923 से गुरुकुल में कार्य कर रहे थे। अनेक

वर्षों तक वे गुरुकुल के प्रस्तोता (रजिस्ट्रार) रहे थे। अतः शिक्षा विषयक प्रबंध में उनका देर से हाथ था। अच्छे वक्ता और लेखक होने के कारण न केवल आर्य सामाजिक क्षेत्र में, अपितु बाहर भी उनकी अच्छी ख्याति थी। पं. देवशर्मा जी भी गुरुकुल के स्नातक हैं और सन् 1921 से कार्यकर्ता के रूप में भी गुरुकुल से उनका संबंध था। अनेक बार पहले भी वे उपाचार्य व 'सामायिक आचार्य' का कार्य कर चुके थे। सादगी और देशसेवा के लिए उनकी प्रसिद्धि थी। सदाचार और तपस्या के लिए महात्मा गांधी भी उनकी प्रतिष्ठा करते थे।

पं. सत्यव्रत जी ने गुरुकुल की उन्नति के लिए विशेष उद्योग किया। चंदा करके धन एकत्र करना कितना कठिन है, इस बात का उन्हें अच्छी तरह अनुभव था। वे इस प्रयत्न में थे कि आर्थिक दृष्टि से गुरुकुल को स्वावलंबी बनाया जाए, और खर्च चलाने के लिए केवल चंदे पर आश्रित रहने की आवश्यकता न रहे। उन्होंने यह विचार किया कि यदि गुरुकुल में व्यवसाय विभाग को भलीभाँति उन्नत किया जाए तो इतनी आमदनी की जा सकती है कि गुरुकुल बहुत कुछ आत्मनिर्भर हो जाए। गुरुकुल में आयुर्वेदिक फार्मेसी कई सालों से स्थापित थी। साथ ही पुस्तक प्रकाशन विभाग और प्रेस भी विद्यामान थे। रसायन विज्ञान के प्रो. श्री फकीरचंद त्रेहन को व्यावसायिक रसायन का क्रियात्मक अनुभव था और वे स्याही, फिनाइल आदि तैयार करने के लिए सदा उत्सुक रहते थे। पं. सत्यव्रत जी ने यह अनुभव किया कि यदि इन विभागों का भलीभाँति ध्यान देकर उन्हें उन्नत किया जाए तो गुरुकुल आर्थिक चिंताओं से मुक्त हो सकता है। इसलिए उन्होंने 'व्यवसाय पटल' का संगठन किया और स्वयं आयुर्वेदिक फार्मेसी आदि के विकास में विशेष दिलचस्पी लेनी शुरू की। परिणाम यह हुआ कि गुरुकुल के इस विभाग ने बहुत उन्नति की और कुछ ही समय में गुरुकुल को अच्छी धनराशि प्राप्त होने लगी।

प्रो. फकीरचंद जी की अध्यक्षता में व्यावसायिक 'रसायन विज्ञान' की पृथक् रूप से स्थापना की गई। इस विभाग द्वारा सब प्रकार की स्याहियाँ, साबुन और फिनाइल तैयार किए जाने लगे। जनता ने इसका उत्साहपूर्वक स्वागत किया। अनेक म्यूनिसिपैलिटियों, बैंकों व व्यापारिक संस्थाओं ने इन वस्तुओं की अपनी आवश्यकताओं को गुरुकुल से पूरा करना शुरू किया। परिणाम यह हुआ कि कुछ ही वर्षों में यह विभाग भी आमदनी का अच्छा साधन बन गया।

प्रेस की उन्नति और पुस्तकों के प्रकाशन पर भी इस समय विशेष ध्यान दिया गया। जब शुरू-शुरू में गुरुकुल में महाविद्यालय विभाग की स्थापना हुई थी तो अनेक प्रोफेसरों ने हिंदी में उच्चकोटि के ग्रंथ लिखे थे। इनका प्रकाशन भी गुरुकुल की ओर से हुआ था। प्रो. साठे जी, प्रो. महेशचरण सिन्हा व प्रो. गोवर्धन जी आदि के इन ग्रंथों का उल्लेख पहले किया जा चुका है। बाद में भी गुरुकुल के अनेक प्रोफेसरों ने हिंदी ग्रंथ लिखे, पर इनका प्रकाशन गुरुकुल की ओर से

नहीं हुआ। इस समय अनेक उच्चकोटि के ग्रंथ गुरुकुल द्वारा प्रकाशित किए गए। जिनमें विशेष रूप से उल्लेखनीय पं. चंद्रगुप्त विद्यालंकार द्वारा लिखित 'वृहत्तर भारत' है। भारतीय सभ्यता व संस्कृति किस प्रकार भारत से बाहर विदेशों में फैली, उत्तर भारत के महत्त्वाकांक्षी राजपुत्रों ने किस प्रकार सुदूर पूर्व, उत्तर-पश्चिमी एशिया में अपने नए उपनिवेश स्थापित किए इस सब का वृत्तांत बड़े सुंदर रूप में इस ग्रंथ में दिया गया है।

कुछ समय पूर्व 'गुरुकुल स्वाध्याय मंजरी' नाम से एक ग्रंथमाला का प्रारंभ किया गया था, जिसमें वैदिक स्वाध्याय संबंधी एक पुस्तक प्रतिवर्ष प्रकाशित करने की व्यवस्था की गई है। अब तक सन् 1960 तक इस मंजरी में अठारह पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। 'श्रद्धानंद स्मारक निधि' के सदस्यों को ये पुस्तकें भेंट रूप में दी जाती हैं। इस निधि को भलीभाँति संगठित करते हुए इस समय यह प्रयत्न किया गया कि गुरुकुल आर्थिक दृष्टि से निश्चिंत हो सके और उसे ऐसे दानियों का सहयोग प्राप्त हो जाए जो प्रतिनिधि कम-से-कम दस रुपया गुरुकुल को दान देते रहें।

गुरुकुल की नई भूमि में अब तक बहुत सी इमारतें तैयार हो चुकी थी। पं. सत्यव्रत जी ने यह व्यवस्था भी विशेष रूप से की कि गुरुकुल भूमि सुंदर व रमणीक हो। उन्होंने सड़कों के दोनों ओर छाया-वृक्ष लगवाने, आम आदि फलों की वाटिकाएँ लगवाने और फव्वारों व पार्कों द्वारा गुरुकुल को सुशोभित करने को बहुत महत्त्व व बल दिया। इस कार्य नीति का यह परिणाम हुआ कि आज हरिद्वार के क्षेत्र में गुरुकुल सबसे सुंदर व रमणीक स्थान है। इसकी शोभा मन को आकृष्ट करने वाली है।

इस समय आचार्य के पद पर पं. देव शर्मा कार्य कर रहे थे। पंडित जी के त्याग और तपस्यामय जीवन का ब्रह्मचारियों पर बहुत प्रभाव रहा उनके उदाहरण को सन्मुख रखकर अनेक विद्यार्थी देश और धर्म की सेवा के लिए तत्पर हुए। 'व्रताभ्यास' की पद्धति का गुरुकुल में सूत्रपात सन् 1925 में हो चुका था। पं. देव शर्मा जी ने मानसिक शिक्षा की अपेक्षा 'व्रत-शिक्षा' को अधिक महत्त्व देकर विशेष बल दिया। वे इस बात में विश्वास रखते थे कि सदाचार, संयम और ब्रह्मचर्य का जीवन अक्षराभ्यास मात्र वाली शिक्षा की अपेक्षा अधिक आवश्यक व उपयोगी है। उनके प्रयत्न से गुरुकुल में सदाचार के वातावरण को विकसित करने में बहुत सहायता मिली।

दो वर्ष आचार्य के रूप में कार्य करके पं. देव शर्मा जी गुरुकुल से चले गए। उन्होंने संन्यास ग्रहण कर लिया और स्वामी अभयदेव बन गये। उनके बाद पं. सत्यव्रत जी ने मुख्याधिष्ठाता पद के साथ-साथ आचार्य पद भी ग्रहण किया। एक वर्ष बाद स्वामी अभयदेव जी पुनः गुरुकुल लौट आए और आचार्य पद को सँभाल लिया।

गुरुकुल के प्रबंध की नई व्यवस्था

स्वास्थ्य खराब रहने के कारण पं. सत्यव्रत जी ने सन् 1942 ई. में मुख्याधिष्ठाता पद से त्यागपत्र दे दिया। विद्या सभा के सन्मुख यह प्रश्न था कि उनके स्थान की किस महानुभाव द्वारा पूर्ति की जाए। अब तक गुरुकुल के प्रबंध, नियंत्रण व संचालन के लिए दो प्रधान अधिकारी नियत होते थे मुख्याधिष्ठाता और आचार्य, पर अब विद्या सभा ने एक नई व्यवस्था का सूत्रपात किया। जो इस प्रकार थी–

सभा की ओर से गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की शिक्षा तथा उसके अन्य समस्त प्रबंध के निरीक्षण, नियंत्रण तथा निर्देशन के लिए एक मुख्याधिष्ठाता हो जिसकी नियुक्ति विद्या सभा द्वारा की जाए।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में शिक्षा तथा ब्रह्मचारियों के पालन-पोषण, रहन-सहन, आचार-व्यवहार के नियंत्रण तथा गुरुकुल के शिक्षक वर्ग और ब्रह्मचारियों संबंधी अंतरीय रीति-नीति व व्यवस्था के लिए एक आचार्य हो जिसकी नियुक्ति विद्या सभा द्वारा की जावे। गुरुकुल विश्वविद्यालय से संबंधित समस्त शाखाओं और गुरुकुलों की शिक्षा का निरीक्षण तथा निर्देशन भी आचार्य के अधीन रहे।

आचार्य के सुपुर्द जो काम दिए गए हैं उनके अतिरिक्त गुरुकुल जायदाद, व्यवसाय तथा अन्य प्रबंध आदि के लिए आवश्यकतानुसार एक या एक से अधिक प्रबंध नियत किए जाएँ जो मुख्याधिष्ठाता के आधीन कार्य करें।

इस व्यवस्था के अनुसार पं. इंद्र विद्यावाचस्पति को मुख्याधिष्ठाता नियत किया गया। आचार्य के पद पर स्वामी अभयदेव जी रहे। पं. इंद्र जी गुरुकुल में अधिक समय तक नहीं रह सकते थे और नई योजना के अनुसार शिक्षा प्रबंध आदि का प्रधान अधिकारी भी आचार्य को बना दिया गया था, अतः स्वामी अभयदेव जी के हाथों में अब गुरुकुल का संचालन क्रियात्मक रूप से आ गया। पर इस नई स्थिति में स्वामी अभयदेव जी ने देर तक कार्य नहीं किया। नवंबर 1942 में उन्होंने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया और पं. बुद्धदेव जी विद्यालंकार गुरुकुल के नए आचार्य नियुक्त हुए। गुरुकुल को उन्नति के मार्ग पर अग्रसर करने की उनमें उत्कट आकांक्षा थी, पर अनेक कारणों से मई 1943 में उन्होंने आचार्य पद से त्यागपत्र दे दिया और उनके स्थान पर पं. प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति को आचार्य नियुक्त किया गया।

प्रबंध संबंधी नवीन व्यवस्था के कायम होने के समय से ही मुख्याधिष्ठाता का कार्य श्री पं. इंद्र विद्यावाचस्पति के अधीन संपन्न होता है। गुरुकुल के कार्य की वृद्धि और उसके विकास के कारण प्रबंध कार्य के अधिक विस्तार हो जाने से श्री मुख्याधिष्ठाता जी की सहायतार्थ अप्रैल 1953 ई. में श्री पं. धर्मपाल विद्यालंकार को सहायक मुख्याधिष्ठाता पद पर नियुक्त किया गया जो इस समय कार्य कर रहे हैं।

अगस्त 1943 ई. से वर्तमान समय तक पं. प्रियव्रत जी गुरुकुल के आचार्य पद पर कार्य करते रहे हैं। पं. प्रियव्रत जी वेदों के गंभीर विद्वान् हैं। अनेक वर्षों तक उन्होंने आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब के अधीन वेद प्रचार का कार्य किया है, कुछ वर्षों तक उपदेशक विद्यालय के आचार्य भी रहे हैं, उत्कृष्ट वक्ता हैं और चरित्र बल भी उनमें बहुत है इसलिए परस्पर सहयोग से गुरुकुल का कार्य संतोषजनक रीति से चल रहा है और यह विश्वविद्यालय उन्नति के मार्ग पर निरंतर अग्रसर हो रहा है।

: 9 :

स्वतंत्र भारत में गुरुकुल

15 अगस्त, 1947 को भारत ब्रिटिश शासन से मुक्त हुआ। ऋषि दयानंद ने स्वराज्य का जो आदर्श जनता के सन्मुख रखा था, अंत में उसे प्राप्त करने में भारतीय सफल हुए। गुरुकुल का विकास एक स्वतंत्र शिक्षणालय के रूप में हुआ था। इसके संचालक विदेशी सरकार से किसी प्रकार का संबंध नहीं रखना चाहते थे। जिन आदर्शों को सन्मुख रखकर गुरुकुल की स्थापना की गई थी वे विदेशी सरकार के नियंत्रण में इस संस्था को रखकर पूरे नहीं किए जा सकते थे। अतः यह सर्वथा उचित था कि गुरुकुल सरकार से व उसके द्वारा संचालित विश्वविद्यालयों से किसी भी प्रकार का संबंध न रखे।

पर स्वराज्य प्राप्ति के बाद परिस्थिति बदल गई। अब भारत की सरकार भारतीयों के हाथ में आ गई। अतः इस बात की आवश्यकता नहीं रही कि सरकार से किसी प्रकार का संपर्क न रखा जावे। इसलिए 1947 में गुरुकुल की ओर से यह उद्योग प्रारंभ हुआ कि इस राष्ट्रीय विश्वविद्यालय द्वारा दी गई विविध उपाधियों को भारतीय व प्रांतीय सरकारें स्वीकृत करें व अन्य विश्वविद्यालय भी यहाँ की डिग्रियों को स्वीकृत कर इसे अपने समकक्ष मान लें। इस कार्य में गुरुकुल को पूरी सफलता मिली। यह सर्वथा उचित भी था क्योंकि यहाँ शिक्षा का स्तर ब्रिटिश युग के सरकारी विश्वविद्यालयों के मुकाबले में किसी भी प्रकार कम न था।

15 मार्च, 1948 को हिमाचल प्रदेश की सरकार ने गुरुकुल की उपाधियों को इस प्रकार स्वीकृत किया–

विद्याधिकारी–हाई स्कूल या मैट्रिकुलेट के बराबर।

अलंकार–बी.ए. के बराबर।

वाचस्पति–एम.ए. के बराबर।

24 मई, 1948 को बिहार की प्रांतीय सरकार ने भी 1947 तक जिन व्यक्तियों ने गुरुकुल विश्वविद्यालय से विविध डिग्रियाँ प्राप्त कीं, उनकी अधिकारी डिग्री को

मैट्रिकुलेशन के, अलंकार डिग्री को बी.ए. के और वाचस्पति डिग्री को एम.ए. के बराबर स्वीकृत किया।

5 जुलाई, 1948 को उत्तर प्रदेश व संयुक्त प्रांत की सरकार ने गुरुकुल की अलंकार डिग्री को बी.ए. के बराबर स्वीकृत कर लिया।

6 मई, 1949 को भारत की केंद्रीय सरकार ने सामयिक रूप से गुरुकुल के स्नातकों को सरकारी विश्वविद्यालय के ग्रेजुएट के समकक्ष मान लिया।

13 अक्तूबर, 1949 को पंजाब की सरकार ने भी गुरुकुल विश्वविद्यालय की अलंकार डिग्री को बी.ए. के बराबर स्वीकृत कर लिया है।

15 दिसंबर, 1949 को बंबई प्रांत की सरकार ने गुरुकुल की अलंकार डिग्री को बी.ए. के बराबर मान लिया है।

अब भारत की विविध सरकारें गुरुकुल के अलंकार उपाधि से विभूषित स्नातकों को अपनी विविध नौकरियों के लिए वही अवसर देने को उद्यत हैं जो सरकारी विश्वविद्यालय के ग्रेजुएटों को प्राप्त है। यह गुरुकुल की भारी विजय है।

अनेक विश्वविद्यालयों ने भी गुरुकुल की डिग्री को अपनी डिग्री के समकक्ष मानना स्वीकार किया। आगरा यूनिवर्सिटी ने 26 जुलाई, 1948 को एक प्रस्ताव द्वारा यह स्वीकार किया कि गुरुकुल की अलंकार परीक्षोत्तीर्ण विद्यार्थी बी.ए. परीक्षा उत्तीर्ण किए बिना ही संस्कृत, हिंदी, पाश्चात्य दर्शन, अर्थशास्त्र और राजनीति विषयों में एम.ए. परीक्षा में बैठ सकते हैं। यही बात हिंदू विश्वविद्यालय, काशी ने संस्कृत और हिंदी विषयों के लिए स्वीकार की। अन्य विविध यूनिवर्सिटियाँ भी इस प्रश्न पर विचार कर रही हैं। इसमें संदेह नहीं कि अब वह समय आ गया है, जब गुरुकुल को शिक्षा के क्षेत्र में अपना समुचित स्थान प्राप्त हो जावेगा।

गुरुकुल और विदेशी विश्वविद्यालय

भारत में विदेशी सरकार होने के कारण यहाँ की ब्रिटिश सरकार ने और सरकार द्वारा स्थापित व स्वीकृत विश्वविद्यालयों ने गुरुकुल की डिग्री को स्वीकृत नहीं किया था। ब्रिटिश साम्राज्य में विद्यमान विदेशी विश्वविद्यालय भी यहाँ की डिग्री को मान नहीं देते थे। पर ब्रिटिश साम्राज्य के बाहर फ्रांस, जर्मनी, आस्ट्रिया, इटली आदि देशों के विश्वविद्यालयों ने गुरुकुल को यथोचित मान दिया और यहाँ की डिग्री को स्वीकृत किया। गुरुकुल के अनेकों स्नातक उच्च शिक्षा के लिए विदेशों में गए। वहाँ उन्हें सीधा डॉक्टरेट परीक्षा के लिए दाखिल कर लिया गया। पेरिस, बर्लिन आदि के विश्वविद्यालय ब्रिटिश साम्राज्य में विद्यमान किसी भी विश्वविद्यालय की अपेक्षा अधिक विशाल व सम्माननीय शिक्षाकेंद्र हैं। विद्वता के अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में उनका स्थान किसी भी प्रकार ऑक्सफोर्ड, कैंब्रिज, लंदन आदि ब्रिटिश विश्वविद्यालयों से कम नहीं है। उन्होंने गुरुकुल के स्नातकों का स्वागत किया और अनेक स्नातक

उनसे उच्चतम डिग्रियाँ लेकर भारत लौटे। इन स्नातकों के नाम निम्नलिखित हैं–

1. डॉ. प्राणनाथ विद्यालंकार–इन्होंने विएना यूनिवर्सिटी से पी-एच.डी. की परीक्षा उत्तीर्ण की।
2. डॉ. ईश्वरदत्त विद्यालंकार–म्यूनिख यूनिवर्सिटी से पी-एच.डी. किया।
3. श्री विनायक राव विद्यालंकार ने इंगलैंड से बार-एट-लॉ पदवी प्राप्त की।
4. डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार–इन्होंने पेरिस यूनिवर्सिटी से डी.लिट्. की डिग्री ससम्मान प्राप्त की।
5. डॉ. धीरेंद्र विद्यालंकार–इन्होंने म्यूनिख से पी-एच.डी. की डिग्री प्राप्त की।
6. डॉ. सुरेशचंद्र विद्यालंकार–इन्होंने पेरिस यूनिवर्सिटी से डी.लिट्. की डिग्री प्राप्त की।
7. डॉ. बलराम आयुर्वेदालंकार–इन्होंने म्यूनिख यूनिवर्सिटी से एम.डी. की डिग्री प्राप्त की।
8. डॉ. नारायणदत्त आयुर्वेदालंकार–इन्होंने म्यूनिख यूनिवर्सिटी से एम.डी. की डिग्री प्राप्त की।
9. डॉ. धर्मानंद आयुर्वेदालंकार–इन्होंने रोम और म्यूनिख यूनिवर्सिटी से एम. डी. की डिग्रियाँ प्राप्त कीं।
10. श्री नरदेव विद्यालंकार ने म्यूनिख से फोटोग्राफी में डिप्लोमा प्राप्त किया।
11. श्री राजेश्वर आयुर्वेदालंकार ने म्यूनिख से एम.डी. की उपाधि प्राप्त की।

प्रसन्नता की बात है कि अब भारत के स्वतंत्र हो जाने पर भारत की विविध सरकारों तथा अनेक विश्वविद्यालयों ने भी गुरुकुल की उपाधियों को स्वीकार कर लिया है।

देश का विभाजन और गुरुकुल

अगस्त 1947 में भारत को दो भागों में विभक्त करके पाकिस्तान के पृथक् राज्य का निर्माण किया गया। पाकिस्तान का निर्माण धर्म के आधार पर हुआ था। मुसलिम लीग चाहती थी कि मुसलमानों का अपना पृथक् राज्य हो जिसमें शासन मुसलिम धर्म के अनुसार रहे। इसके लिए बहुत से मुसलमान नेता यह भी चाहते थे कि पाकिस्तान में हिंदू व सिख न रहें। परिणाम यह हुआ कि पश्चिमी पंजाब, सिंध, सीमा प्रांत और बलोचिस्तान से लाखों की संख्या में हिंदुओं को भारत आना पड़ा। इस समय जो हिंदू व सिख पश्चिमी पाकिस्तान से भारत आए, उनकी संख्या साठ लाख के लगभग है। इसके अतिरिक्त लाखों हिंदू व सिख धर्मांध मुसलमानों द्वारा कत्ल किए गए। संपत्ति का जो नाश इस समय हुआ, उसका तो अंदाज कर सकना भी संभव नहीं है।

पश्चिमी पाकिस्तान में सैकड़ों आर्यसमाजें थीं। इस प्रदेश में आर्य प्रतिनिधि

सभा, पंजाब की करोड़ों की संपत्ति थी। वह सब पाकिस्तान में ही रह गई। गुरुकुल कांगड़ी की भी बहुत सी संपत्ति इस प्रदेश में थी जिनमें से मुख्य निम्नलिखित हैं–

1. शीश महल की भूमि, लाहौर में, मूल्य	16,10,000 रु.
2. नौलखा भूमि, लाहौर में, मूल्य	4,10,000 रु.
3. शुजाबाद	5,000 रु.
कुल	20,25,000 रु.

इस भूसंपत्ति में आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब व गुरुकुल का रुपया सम्मिलित रूप से लगा हुआ था। बीस लाख से अधिक संपत्ति में आधे के लगभग रुपया गुरुकुल का था। भारत के विभाजन से गुरुकुल को दस लाख रुपए से अधिक की क्षति उठानी पड़ी।

इसके अतिरिक्त गुरुकुल की एक महत्त्वपूर्ण शाखा पश्चिमी पाकिस्तान के क्षेत्र में थी। मुलतान गुरुकुल बहुत संपन्न तथा समृद्ध दशा में था। इस गुरुकुल के पास कुल मिलाकर दो सौ छियासठ बीघा भूमि थी और इमारत की कीमत भी लाख से ऊपर थी।

: 10 :

वर्तमान काल

स्वर्ण जयंती महोत्सव

महामान्य राष्ट्रपति का आगमन

गुरुकुल का स्वर्ण जयंती महोत्सव ता. 28 फरवरी, 1, 2, 3, 4, 5 और 6 मार्च सन् 1950, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि और रविवार को समारोह से मनाया गया। सहस्रों नर-नारी सम्मिलित हुए। उत्सव उपस्थिति तथा धन आदि की प्रत्येक दृष्टि से सफल रहा। दीक्षांत भाषण स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति श्री डॉ. राजेंद्र प्रसाद जी ने दिया था। इस महोत्सव पर आए हुए प्रतिष्ठित नेताओं में उत्तर प्रदेश के अन्नमंत्री श्री चंद्रभानु जी गुप्त, भारत सरकार के मंत्री श्री नरहरिविष्णु गाडगिल, मध्य प्रांतीय विधानसभा के अध्यक्ष श्री घनश्यामसिंह गुप्त तथा राजाधिराज श्री उम्मेदसिंह जी शाहपुराधीश के नाम उल्लेखनीय हैं। इसके अतिरिक्त श्री पं. रामनारायण जी मिश्र, श्री स्वामी मोहनानंद जी, श्री पं. सूर्यकांत जी, श्री पं. जयदेव जी वेदभाष्यकार, रायबहादुर दीवान बद्रीदास जी, श्री पं. ठाकुरदत्त जी शर्मा, श्री म. कृष्ण जी, श्री पं. नरदेव जी शास्त्री, श्री डॉ. मंगलदेव जी शास्त्री. श्री स्वामी सत्यानंद जी,

श्री स्वामी अभेदानंद जी, श्री स्वामी आत्मानंद जी महाराज, श्री वासुदेवशरण जी अग्रवाल, श्री राजगुरु धुरेंद्र जी शास्त्री, श्री पं. बुद्धदेव जी, श्री पं. सत्यव्रत जी, कुँवर चांदकरण जी शारदा आदि महानुभावों ने भी इस स्वर्ण जयंती महोत्सव में भाग लिया। इस वर्ष कुल दान तीन लाख बावन हजार सात सौ तेईस रुपए सुनाया गया। एक लाख रुपए की दान की राष्ट्रपति ने भारत सरकार की ओर से घोषणा की और बासठ हजार रुपए उत्तर प्रदेश की ओर से सहायता प्राप्त हुई तथा पच्चीस हजार सेठ रखुमल जी चैरिटी ट्रस्ट, कलकत्ता से मिले। और भी अनेक राशियाँ प्राप्त हुई थीं। अनेक सम्मेलन हुए और उनमें प्रत्येक सफल रहा।

सरकार से अनुदान

अंग्रेजी राज्यकाल में गुरुकुल की सर्वसम्मत नीति यह रही कि न कोई सरकार से संबंध रखा जाए और न किसी प्रकार की सहायता ली जाए। इस नीति का इतनी कठोरता से पालन किया कि स्वयं वायसराय द्वारा गुरुकुल को आर्थिक सहायता पेश किए जाने पर भी उसे अस्वीकार कर दिया गया। स्वाधीनता प्राप्त होने पर परिस्थिति में परिवर्तन आ गया। यह समझकर कि राष्ट्रीय सरकार से आर्थिक सहायता लेने में कोई हर्ज नहीं है, उस समय के राष्ट्रीय महासभा के अध्यक्ष डॉ. राजेंद्र प्रसाद जी के परामर्श से केंद्रीय सरकार के शिक्षामंत्री को इस आशय का पत्र लिखा गया कि गुरुकुल विश्वविद्यालय एक प्रमुख राष्ट्रीय संस्था है इस कारण उसे राष्ट्रीय सरकार से आर्थिक सहायता प्राप्त होनी चाहिए। उत्तर में शिक्षा मंत्रालय ने पच्चीस हजार रुपए की राशि अनावर्तक अनुदान (अनरेकरिंग ग्रांट) के रूप में देना स्वीकार किया। उस राशि को गुरुकुल के गौरव के प्रतिकूल समझकर अस्वीकार कर दिया गया। विशेष बात यह थी कि अस्वीकृति का पत्र शिक्षा मंत्री को स्वयं डॉ. राजेंद्र प्रसाद जी ने लिखा। 1950 में डॉ. राजेंद्र प्रसाद राष्ट्रपति चुने गए। राष्ट्रपति बनने के पश्चात् उन्होंने जो पहला सार्वजनिक भाषण दिया। वह गुरुकुल का दीक्षांत भाषण था। भाषण के अंत में राष्ट्रपति जी ने गुरुकुल के लिए एक लाख रुपए के अनुदान की घोषणा की। उसके पश्चात् केंद्रीय सरकार और उत्तर प्रदेश सरकार से अनुदान के रूप में विविध राशियाँ प्राप्त होती रही हैं, उनमें से कुछ अनावर्तक राशियाँ हैं और कुछ आवर्तक राशियाँ। गत वर्ष एक लाख रुपए की एक अनावर्तक राशि केंद्रीय सरकार से विज्ञान भवन के लिए प्राप्त हुई थी जिससे विज्ञान भवन लगभग तैयार हो गया है। इसके पश्चात् पैंसठ हजार की राशि विज्ञान के उपकरणों व अन्य सामान के लिए और पचास हजार की राशि पुस्तकालय भवन के विकास के लिए प्राप्त हुई है। आवर्तक राशियों में से केंद्रीय सरकार से प्राप्त होने वाली सबसे बड़ी राशि है। गत वर्ष शिक्षा अनुदान के रूप में अस्सी हजार प्राप्त हुए थे, इस वर्ष नब्बे हजार प्राप्त होने की आशा है। उत्तर प्रदेश से आयुर्वेद महाविद्यालय

और संग्रहालय को अब तक जो आवर्तक अनुदान तथा अनावर्तक अनुदान प्राप्त हुए हैं। उनका योग तीन लाख बाईस हजार चार सौ पच्चीस रुपए है। संवत् 2014 में छियासी हजार आठ सौ पच्चीस रुपए प्राप्त हुआ।

अनुदान के संबंध में यह बात बतला देना अत्यंत आवश्यक है कि इनमें से किसी भी अनुदान के साथ सिवाय इसके कोई शर्त नहीं लगी हुई है कि यह राशि उसी काम में व्यय की जाए जिसके लिए दी गई है। वे सब कार्य जिनके लिए सहायता प्राप्त हुई है, गुरुकुल के अपने शिक्षा क्रम के भाग है। अनुदान का व्यय किस तरह हुआ, इसकी जाँच करने के लिए सरकारी निरीक्षक आता है और उन्हें देखकर चला जाता है। इसके अतिरिक्त न कोई शर्त है, न कोई अवबंध। जैसा गुरुकुल विश्वविद्यालय आप लोग चला रहे हैं, उसी को मान्यता प्राप्त है और उसी को अनुदान मिलते हैं।

वेद महाविद्यालय

वेद-वेदांगों की पढ़ाई को मुख्यता देने के कारण यह गुरुकुल का मौलिक महाविद्यालय ही था, ज्यों-ज्यों विषयों की विभिन्नता और कार्य का विस्तार बढ़ता गया, महाविद्यालयों की संख्या बढ़ती गई। अन्य शाखा-प्रशाखाओं के बन जाने पर भी मुख्यता वेद महाविद्यालय की ही रही जो अब तक भी विद्यमान है। गुरुकुल के आचार्य वेद महाविद्यालय के अध्यक्ष हैं। अधिकतर छात्रवृत्तियाँ वेद महाविद्यालय के छात्रों को दी जाती है। उसकी यही विशेषता है कि उसकी पाठ-विधि में वैदिक तथा अर्वाचीन संस्कृत साहित्य तथा संसार के धर्मों के अनुशीलन पर अधिक बल दिया जाता है।

गुरुकुल महाविद्यालय

इस महाविद्यालय में प्राचीन तथा अर्वाचीन भारतीय साहित्य के साथ-साथ इतिहास, राजनीति, विज्ञान आदि विषयों की विशेष शिक्षा की व्यवस्था है। इतिहास में भारतीय इतिहास पर अधिक जोर दिया जाता है, विज्ञान में एफ.एस-सी. के स्तर की पढ़ाई होती है। इतिहास की शिक्षा से सबद्ध और उसके पूरक के रूप में एक संग्रहालय है जिसके अध्यक्ष इतिहास के उपध्याय हरिदत्त वेदालंकार एम.ए. हैं। भविष्य की योजनाओं में एक यह भी है कि भारतीय राजनीति पर विशेष ध्यान रखते हुए राजनीति की ऊँची शिक्षा की व्यवस्था की जाए।

इस महाविद्यालय के अध्यक्ष पं. सुखदेव विद्यावाचस्पति हैं।

आयुर्वेद महाविद्यालय

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के अंतर्गत आयुर्वेद महाविद्यालय की स्थापना सन्

1922 में हुई थी। गुरुकुल के इस नवीन भूमि में स्थानांतरित होने पर अन्य विभागों के समान इस महाविद्यालय की मुख्य इमारत भी यहाँ इस नवीन भूमि में बनाई गई थी और गत स्वर्ण जयंती तक आयुर्वेद महाविद्यालय में अध्ययन कक्षाओं के अतिरिक्त निदान प्रयोगशाला, शवच्छेद भवन, शल्य क्रिया भवन, प्रकृतिविज्ञान संग्रहालय, एक्स रे भवन तथा अंतरंग आतुरालय के रोगीगृहों का निर्माण हो चुका था।

उसके बाद से अब तक विगत नौ वर्षों में आयुर्वेद महाविद्यालय का और अधिक विकास हुआ है। इस अवधि में यहाँ निम्नलिखित विभागों तथा इमारतों की वृद्धि हुई है।

बिड़ला नेत्र आतुरालय—यह गुरुकुल के प्रेमी और विख्यात दानी श्री जुगल किशोर जी बिड़ला द्वारा बनवाया हुआ दस रोगी शय्याओं से युक्त रोगीगृह है, जिसमें नेत्र रोगियों के उपचार, निवास और भोजनादि की सब व्यवस्था की जाती है।

मातृमंदिर—यह गुरुकुल के यशस्वी, कर्मठ और तपस्वी स्नातक श्री पंडित सत्यपाल जी सिद्धांतालंकार अफ्रीका प्रवासी के द्वारा भेजी गई धनराशि से उनकी इच्छानुसार महिलाओं के निमित्त बनवाया गया है। इसमें प्रसव कार्य के लिए डिलीवरी बैड आदि की व्यवस्था है।

जीवविज्ञान प्रयोगशाला—यह उत्तर प्रदेशीय सरकार तथा गुरुकुल से प्रदत्त धन द्वारा लगभग उन्नीस सहस्र की राशि से बनाई गई है। इसमें जीवविज्ञान के क्रियात्मक शिक्षण के लिए दर्जनों माइक्रोस्कोप आदि यंत्रों और उपकरणों की व्यवस्था है।

धन्वंतरि सभा भवन—यह नवीन भवन भी उत्तर प्रदेशीय सरकार के और गुरुकुल के सम्मिलित धन द्वारा लगभग अठारह सहस्र की धनराशि से बना है। इसमें आयुर्वेद महाविद्यालय की प्रातःकालीन प्रार्थना के अतिरिक्त उपयोगी व्याख्यानों का आयोजन होता है और समय पर सभाएँ-उत्सव आदि भी किए जाते हैं। इस इमारत के साथ 'अध्यक्ष भवन' तथा 'लेखककक्ष' भी नए बनाए गए हैं।

द्रव्यविज्ञान संग्रहालय—यह छोटा सा संग्रहालय सर्वथा नवीन उद्योग है। स्थानाभाव के कारण इसे अभी तक एक छोटे से स्थान में ही स्थापित किया जा सका है, परंतु इसमें सुरक्षित हरी वनस्पतियाँ, शुष्क मूल-कंद, त्वचा, काष्ठ, फल, बीज, निर्यास, प्राणिज, द्रव्य, धातु, उदधातु, रत्न, उपरत्न, क्षार, लवण आदि के अतिरिक्त दुर्लभ वनस्पतियों के बहुमूल्य रंगीन चित्र तथा बहुसंख्यक फोटोग्राफ संकलित हैं। यह छात्रों और अध्यापकों के लिए भी विशेष उपयोगी हैं।

इसके अतिरिक्त इन आठ-दस वर्षों से यहाँ पंचकर्म भवन का कार्य भी आरंभ हो चुका है। छात्रों के शिक्षण के लिए 'श्रद्धानंद चिकित्सालय शाखा नं. 2' में भी इस महाविद्यालय के उपाध्यायों के निरीक्षण में चिकित्सा कार्य संपन्न होता है अर्थात्

श्रद्धानंद चिकित्सालय का विस्तार होकर उसकी अब दो डिस्पेंसरियाँ हो गई हैं।

इस प्रकार स्वर्ण जयंती से हीरक जयंती तक की अवधि में गुरुकुल आयुर्वेद महाविद्यालय का भी पर्याप्त विकास हुआ है।

कृषि विद्यालय

गुरुकुल के संस्थापकों के मन में पहले से ही यह भाव था कि भारत जैसे कृषि प्रधान देश में समृद्धि के लिए कृषि तथा गौशाला आदि विषयक शिक्षा गुरुकुल में प्रचलित की जाए। इसलिए आधुनिक अन्य विषयों के साथ कांगड़ी की गुरुकुल भूमि में एग्रीकल्चर की शिक्षा के लिए प्रो. महेशचरण सिन्हा एम.एस-सी. के अधीन कार्य प्रारंभ किया गया।

22 मार्च, 1921 को आर्य प्रतिनिधि सभा ने कृषि को ऐच्छिक रूप में महाविद्यालय के पाठ्यक्रम में सम्मिलित कर दिया जो सन् 1924 की बाढ़ के कारण गुरुकुल के नवीन भूमि में आ जाने के कारण बंद हो गया।

कृषि गौशाला की प्राचीन परंपरा को स्थापित करने के लिए नवीन गुरुकुल भूमि में बावन हजार रुपए की लागत से गौशाला भवन का निर्माण किया गया। और उसमें साहीवाल नस्ल की गौवें मँगवाई गईं। सात हजार रु. की लागत से ट्यूबवैल का निर्माण किया गया। संप्रति गुरुकुल में चार सौ बीघा भूमि कृषि के लिए उपलब्ध है। इस भूमि के अतिरिक्त तीन सौ बीघा भूमि पुराने गुरुकुल की भूमि में भी कृषि के लिए है।

1947 में भारतीय स्वतंत्रता के पश्चात् पंचवर्षीय योजना के आधीन कृषि श्रम से उपेक्षा को हटाकर सम्मान उत्पन्न करने के लिए विशेष प्रयत्न किया जा रहा है।

इन सब बातों का ध्यान रखकर विद्या सभा ने 16 सितंबर, 1951 ई. को गुरुकुल में कृषि विद्यालय खोलने का निश्चय किया। इस कार्य में उत्तर प्रदेश सरकार के उपमंत्री श्री जगनप्रसाद जी रावत ने विशेष रुचि ली और जुलाई सन् 1955 ई. में भारत सरकार के कृषिमंत्री पंजाबराव देशमुख के करकमलों द्वारा कृषि विद्यालय का उद्‌घाटन किया गया।

कृषि विद्यालय में उत्तर प्रदेशीय सरकार द्वारा स्वीकृत और नियत 'डिप्लोमा कोर्स' की शिक्षा दी जाती है। संप्रति दो श्रेणियों की पाठविधि है। विचार यह है कि इसको विकसित करके 'कृषि महाविद्यालय' के रूप में उन्नत किया जावे। एतदर्थ गवर्नमेंट से पत्र-व्यवहार चल रहा है और यह भी आवश्यक है कि उपयुक्त साधन उपकरण, आश्रम विद्यालय भवन आदि की व्यवस्था की जावे।

कृषि विद्यालय की प्रबंध व्यवस्था एक समिति द्वारा संचालित होती है।

ग्राम प्रशिक्षण केंद्र

सन् 1956 ई. में कृषि विद्यालय के साथ ही गुरुकुल में उत्तर प्रदेशीय सरकार ने अपनी द्वितीय पंचवर्षीय योजना के आधीन ग्राम प्रशिक्षण केंद्र (ट्रेनिंग-एक्सटेंश्न प्रोजेक्ट) को भी गुरुकुल में स्थापित कर दिया है। इस विभाग में विद्यार्थियों का चुनाव उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा किया जाता है। अस्सी हजार रुपया वार्षिक का संपूर्ण व्यय उत्तर प्रदेश की सरकार करती है।

संप्रति इस विभाग में एक सौ दस विद्यार्थी हैं। स्टाफ में एक प्रिंसिपल, छह प्रोफेसर, चार लेखक, दो चौकीदार, एक मैकेनिक, एक कारपेंटर, एक लोहार, एक माली, एक लैब असिस्टेंट, एक दफतरी, एक ड्राइवर आदि दिए हुए हैं, जिनका तीन सौ रुपए मासिक व्यय गवर्नमेंट द्वारा किया जाता है।

इस केंद्र के प्रत्येक विद्यार्थी को तीस रुपए सरकार द्वारा मासिक छात्रवृत्ति दी जाती है।

उत्तर प्रदेशीय सरकार की ओर से श्री देवकीनंदन जी वैष्णव बी.एस-सी., ए.जी., यू.पी.ए.एस. को जो भारतीय एवं विदेशी शिक्षण संस्थाओं में शिक्षा प्राप्त किए हुए हैं तथा जिनको अनेक वर्षों का व्यावहारिक अनुभव है, दोनों विभागों के निरीक्षण एवं संचालन के लिए प्रिंसिपल नियुक्त किया गया है। उनकी देख-रेख में उनके योग्य सहायक प्रोफेसरों द्वारा कृषि, बागवानी तथा फल उद्योग, पशुपालन तथा पशु सेवा चिकित्सा, कृषि इंजीनियरिंग, सहकारिता, समाज शिक्षा प्रसार एवं प्रशिक्षण, जन स्वास्थ्य निर्माण कार्य तथा पंचायत आदि का प्रशिक्षण कार्य संपन्न हो रहा है।

इस कार्य को उन्नत करने के लिए अधिक व उचित स्थान, पुस्तकालय, सूचनालय, सांस्कृतिक स्थल, पशु चिकित्सालय, लेक्चर तथा स्टाफरूम तथा कृषि उपकरणों से आदि के लिए पृथक् स्थानों की व्यवस्था हो रही है।

विज्ञान महाविद्यालय

पं. जवाहरलाल नेहरू द्वारा उद्घाटन

गुरुकुल कांगड़ी की प्रारंभिक योजना के मंतव्यों के अनुसार विज्ञान की विशिष्ट शिक्षा देने के लिए विद्या सभा ने 16 दिसंबर, 1951 के अधिवेशन में निश्चय किया कि गुरुकुल में विज्ञान की उत्कृष्ट शिक्षा देने के लिए विज्ञान महाविद्यालय की नींव डाली जाए, तदनुसार विद्याधिकारी परीक्षोतीर्ण छात्रों के लिए विज्ञान की श्रेणियाँ जारी कर दी गई, जिनमें उत्तर प्रदेश के इंटरमीडिएट द्वारा निर्धारित एफ.एस-सी. की पढ़ाई होने लगी। इन श्रेणियों में अन्य विश्वविद्यालयों के मैट्रिक परीक्षोतीर्ण छात्र भी प्रविष्ट हो सकते हैं।

विज्ञान महाविद्यालय की पहली और दूसरी श्रेणियाँ आरंभ करने के साथ ही

यह निश्चय कर लिया गया था कि दो साल पश्चात् अगली दो श्रेणियों की भी पढ़ाई की व्यवस्था की जाए। अगली दो श्रेणियों का स्तर बी.एस-सी. के समान था। इसका यह भी निश्चय किया गया कि जब तक यूनिवर्सिटी ग्रांट्स कमीशन द्वारा गुरुकुल कांगड़ी को यूनिवर्सिटी नहीं माना जाता तब तक बी.एस-सी. श्रेणियों को आगरा यूनिवर्सिटी ही से संबद्ध कर दिया जाए। विज्ञान की ऊँची शिक्षा देने के लिए यह आवश्यक था कि उसके लिए अलग भवन बनाया जाता। प्रयत्न करके केंद्रीय सरकार से एक लाख रुपए का अनुदान विज्ञान भवन के लिए प्राप्त किया गया। जब भवन तैयार हो गया तब उसके उद्घाटन के लिए भारत के प्रधानमंत्री श्री पंडित जवाहरलाल नेहरू से प्रार्थना की गई कि वे गुरुकुल आकर अपने हाथ से उद्घाटन करने की कृपा करें। उन्होंने स्वीकार कर लिया। 1 अगस्त, 1957 को वे गुरुकुल में पधारे। यज्ञ के पश्चात् उन्होंने विज्ञान भवन का उद्घाटन किया। बी.एस-सी. क्लास चल रही हैं। अभी तक केवल फिजिक्स (भौतिक), कैमिस्ट्री (रसायन) की ही उच्च शिक्षा दी जाती है। आशा है अगले वर्ष से बायोलौजी (प्राणीशास्त्र) और बॉटनी (वनस्पतिशास्त्र) की शिक्षा भी बी.एस-सी. तक आरंभ हो जाएगी।

: 11 :

अन्य विभाग

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी

गुरुकुल में आयुर्वेद की शिक्षा का संचालन संवत् 1976 से प्रारंभ हो गया था और विद्यार्थियों को आयुर्वेद का व्यावहारिक ज्ञान देने के लिए शास्त्रोक्त ओषधियों का निर्माण प्रारंभ हो गया था। सन् 1930 ई. में भारत सरकार द्वारा एक ड्रग इंक्वायरी कमेटी बनाई गई थी, जिसकी सिफारिशों के अनुसार 1940-'45 में ड्रग एक्ट भी बनाए गए थे। और इन्हीं दिनों गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी का विस्तार भी हुआ। गुरुकुल की ओषधियाँ प्रामाणिकता तथा शुद्धता के कारण अधिक जनप्रिय होने लगीं और देश में शास्त्रोक्त ओषधियों की माँग बढ़ने लगी।

फार्मेसी में गुरुकुल का लगभग छह लाख से ऊपर धन लगा हुआ है और फार्मेसी के बढ़ते हुए कार्यों के कारण अब फार्मेसी की नवीन विशाल इमारत का दो लाख रुपए के मूल्य की कनखल-ज्वालापुर रोड पर निर्माण हो गया है और आधुनिक ढंग की नवीन-नवीन मशीनों द्वारा कार्य होने लगा है। फार्मेसी के लाभ के धन के बटवारे के संबंध में विद्या सभा ने 21 जुलाई, '40 को निश्चय किया कि सोलह हजार रुपए तक की आय का 60 प्रतिशत भाग गुरुकुल आयुर्वेद महाविद्यालय को दिया जाए और 40 प्रतिशत गुरुकुल महानिधि को, परंतु इस आय

में से कम-से-कम आठ हजार रुपया प्रतिवर्ष गुरुकुल महाविद्यालय को अवश्य दिया जाए। (ख) बीस हजार रुपयों तक की आय की दशा में यह राशि गुरुकुल आयुर्वेद महाविद्यालय तथा गुरुकुल महानिधि को आधी-आधी बाँट दी जाए। (ग) आय का अनुपात बढ़ने की दशा में आयुर्वेद महाविद्यालय को पिछले अनुपात द्वारा प्राप्त अधिकतम राशि किसी भी दशा में घटाई नहीं जाएगी। चौबीस हजार रुपयों से अधिक आय होने की दशा में उस अधिक राशि के विभाजन पर विद्या सभा पुनः विचार करेगी।

गुरुकुल फार्मेसी तथा रसायन विभाग के कार्य संचालन के लिए स्वामिनी सभा ने एक व्यवसाय पटल की स्थापना की जिसकी देख-रेख में गुरुकुल के व्यवसाय संबंधी कार्यों का संचालन होने लगा। उसका एक व्यवसायाध्यक्ष नियत किया गया जो मुख्याधिष्ठाता के निर्देशानुसार प्रबंध का कार्य करता था। श्री दीनदयालु जी शास्त्री चौदह वर्ष छह मास तक व्यवसायाध्यक्ष का कार्य बड़ी सफलता से करते रहे। उनके सन् 1959 में उत्तर प्रदेश की सरकार के उपशिक्षा मंत्री नियत हो जाने के पश्चात् श्री अर्जुनदेव विद्यालंकार व्यवसायाध्यक्ष नियत हुए।

कार्य की मात्रा बहुत अधिक बढ़ जाने से विद्या सभा ने यह आवश्यक समझा कि प्रबंध व्यवस्था को और भी दृढ़ किया जाए। अपने 31 दिसंबर, 1955 के अधिवेशन में दिल्ली के प्रसिद्ध उद्योगपति तथा व्यापारी श्री ला. हंसराज गुप्त को गुरुकुल उद्योग शिक्षा पटल का व्यवस्थापक नियत किया। इस समय प्रबंध की व्यवस्था यह है कि गुरुकुल की स्वामिनी सभा का गुरुकुलीय उपप्रधान व्यवसाय पटल का निज अधिकार से प्रधान होता है। तदनंतर मुख्याधिष्ठाता के सारे प्रबंध का मुख्य अधिकारी होने के कारण व्यवसाय शिक्षा विभाग का आंतरिक सब प्रबंध व्यवस्थापक के निर्देशानुसार व्यवसायाध्यक्ष के हाथ में है।

उद्योग शिक्षा विभाग ने कितनी उन्नति की है इसका अनुमान अंत में परिशिष्ट संख्या 2 में दिए आँकड़ों से विदित हो जाएगा।

वैदिक अनुसंधान विभाग

वैदिक अनुसंधान विभाग का कार्य श्री भगवद्दत्त वेदालंकार, एम.ए. करते हैं। यह आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब के द्वारा प्रदत्त धन से संचालित है। संवत् 2011 में 'अयास्य' ऋषि पर एक खोजपूर्ण निबंध लिखा गया है। उपनिषदों व ब्राह्मण ग्रंथों की परिभाषाओं और कथानकों का स्पष्टीकरण तथा वेद के रुद्र देवता, बृहस्पति देवता अश्विनौ व कण्व पर हस्तलेख तैयार किया गया है। वैदिक ऋषि नृषत कण्व, मेघातिथि, अयास्य पर लेखादि संगृहीत किए गए।

संवत् 2012 में वैदिक आधार पर सामान्य ऋषि का स्वरूप, उसकी शक्ति, ऋषित्व की प्राप्ति आदि विषयों पर ऋषि भूमिका का स्वरूप लिखा गया। अग्नि,

इंद्र, सोम, अश्विनौ आदि देवताओं से ऋषि के संबंध में प्रकाश डाला गया।

संवत् 2013 में विद्वान् कार्यकर्ता ने वेद के निम्नलिखित विषयों पर कार्य किया—

1. वेदों के ऋषि—पूर्व पक्ष के विविध पक्षों का निरुपण, आपौरुषेय पक्ष ऋषि अग्नि, ऋषि इंद्र, ऋषि सोम।
2. पुरुपार्थ, चतुष्टय अर्थात् धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष का साधक वेद।
3. सामाजिक जीवन में धर्म का स्थान।

श्रद्धानंद प्रतिष्ठान-कोश निर्माण

संवत् 2011 में श्री पं. इंद्र विद्यावाचस्पति जी मुख्याधिष्ठाता की योजना पर हिंदी भाषा के कोश निर्माण का कार्य प्रारंभ हुआ। यह विभाग इतिहास उपाध्याय श्री प्रो. हरिदत्त जी के निरीक्षण में कार्य कर रहा है। कोश के प्रमुख कार्यकर्ता श्री धर्मदेव जी विद्यामार्तंड इस कोश का संपादन करते हैं। और पं. शंकरदेव जी विद्यालंकार, एम.ए. भी उनकी सहायता के लिए विशेष रूप से नियुक्त किए गए थे। इस कोश में पचास हजार समानार्थक शब्दों के संग्रह करने की योजना है। संवत् 2011 में 5 हजार शब्द तथा संवत् 2015 में विज्ञान, गणित, खनिज, कृषि, दर्शन, भूगोल, इतिहास आदि के पंद्रह हजार प्रामाणिक शब्दों का संकलन किया जा चुका था।

संवत् 2016 तक हिंदी कोश के लिए चालीस हजार शब्दों का संकलन किया जा चुका था। विभिन्न विज्ञान के शब्दों का इस वर्ष विशेष संग्रह किया है। जिन्हें यथास्थान कोश में स्थान दिया जाएगा। इस कोश की यह मुख्य विशेपता है कि अंग्रेजी शब्दों के समानार्थक संस्कृत तथा हिंदी शब्दों का और अनेक स्थानों पर बंगला, गुजराती, मराठी, कन्नड़, तेलुगु, मलयालम आदि प्रादेशिक भाषाओं में विद्यमान उत्तम संस्कृत तत्सम-तद्भव शब्दों का भी निर्देश किया जा रहा है। अंग्रेजी के पर्यायवाची समझे जाने वाले शब्दों के सूक्ष्म भेदों के अनुसार उचित समानार्थक संस्कृत और हिंदी शब्दों का संकलन किया जा रहा है। एतद्विषयक लेख-माला कोश संपादक महोदय की ओर से गुरुकुल पत्रिका में मुद्रित कराई जा रही है। कोश के नमूने के तौर पर लगभग चालीस पृष्ठ की एक पुस्तिका छपवाई गई है जिसका भारत के प्रसिद्ध विद्वानों में वितरण किया गया है, ताकि उनके परामर्शों से लाभ उठाया जा सके। इस पुस्तिका की भूमिका मान्य कुलपति श्री पं. इंद्र विद्यावाचस्पति जी ने लिखी है और श्री डॉ. अविनाशचंद्र बोस, श्री पी.के. गोडे, प्रिंसिपल महेंद्रप्रताप शास्त्री, आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री आदि विद्वानों की सम्मतियाँ भी उसमें प्रकाशित की गई हैं। आर्थिक कारणों से कुछ समय के लिए कोश निर्माण का कार्य स्थगित करना पड़ा है। आशा है कि शीघ्र ही फिर आरंभ हो जाएगा।

अतिथि भवन

प्राचीनकाल के आश्रमों के समान गुरुकुल में प्रारंभ से ही अतिथियों के आदर-सत्कार और निवास की प्रथा प्रचलित हो गई थी। अतिथि दो प्रकार के होते थे। एक तो गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के संरक्षक, दूसरे दर्शनार्थी। इन दोनों श्रेणियों के लिए अलग-अलग निवास, भोजन आदि की व्यवस्था रहती थी। पुण्यभूमि (गुरुकुल की पुरानी भूमि) में परिवारगृहों में एक सर्वमान्य धर्मशाला के अतिरिक्त दिल्ली के एक दानी महोदय की ओर से एक पक्की धर्मशाला भी बन गई थी, जो अपने देश के अथवा विदेश के आए हुए विशेष अतिथियों के ठहरने के काम में आती थी। अमरीका के मि. फेल्प्स, इंगलेंड के मिस्टर एंड्रूज, मिस्टर मैक्डोनल्ड, मिस्टर नेवनसन आदि प्रसिद्ध पुरुषों के अतिरिक्त अन्य अनेक दर्शक और शिक्षार्थी विदेशी महानुभाव भी गुरुकुल के आतिथ्य का अनुभव करते थे।

अब 1924 ई. में बाढ़ के कारण पुरानी भूमि छोड़ देनी पड़ी और नई भूमि में सब कुछ नए सिरे से बनाना पड़ा, तब पुरानी अतिथि सेवा की व्यवस्थाएँ टूट गईं। धीरे-धीरे नई भूमि में भी दानियों की सहायता से धर्मशालाओं का निर्माण हो गया। जिनमें अतिथियों के रहने का सुविधा हो जाती थी, परंतु विशेष अतिथियों के लिए आतिथ्य का कोई उचित प्रबंध नहीं था। यह सोचकर गुरुकुल के अधिकारियों ने विद्या सभा से एक अच्छा अतिथि भवन बनाने की स्वीकृति प्राप्त कर ली और उसके लिए अनेक प्रयत्न करके लगभग बाईस हजार रुपया प्राप्त किया। परिवारगृहों के बाहर एक छोटी सी वाटिका के मध्य में वह अतिथि भवन बहुत शोभायमान होता है। देश और विदेश के दर्जनों प्रतिष्ठित अतिथि भी उसमें निवास करके गुरुकुल को अतिथि सत्कार करने का अवसर दे चुके हैं। हमारे अतिथि भवन में आए हुए अतिथियों की सूची में डॉ. राधाकृष्णन, पं. जवाहरलाल नेहरू, श्री अनंतशयनम आयंगर, श्री के.एम. मुंशी आदि अनेक महानुभावों के नाम हैं। अमेरिका की फोर्ड फाउंडेशन के सदस्य, रूस के सांस्कृतिक प्रतिनिधि श्री कोदिनोव भी गुरुकुल के अतिथि भवन में निवास कर चुके हैं। आजकल जापान के समृद्ध परिवार के कोकीनागा नाम के छात्र उसमें रहकर हिंदी और संस्कृत की शिक्षा पा रहे हैं। इस प्रकार जहाँ नया अतिथि भवन देश के बाह्य वातावरण से गुरुकुल का संपर्क स्थापित करने का सुंदर साधन बन गया है वहाँ उसने अन्य देशों से गुरुकुल के संबंधों को जोड़ने में भी सहायता की है।

शारीरिक व्यायाम तथा क्रीड़ा

गुरुकुल कांगड़ी में ब्रह्मचारियों की शारीरिक योग्यता को बढ़ाने का प्रारंभ से यत्न किया जाता रहा है। जब अभी बालक झोंपड़ियों में रहते थे तभी से डंड, बैठक,

कुश्ती, कबड्डी आदि दैनिक व्यायाम तथा खेलों का क्रम जारी हो गया था। शारीरिक व्यायाम प्रत्येक छात्र के लिए अनिवार्य था। सन् 1904 में ही क्रिकेट और कुछ समय बाद फुटबॉल को भी व्यायाम के कार्यक्रम में सम्मिलित कर लिया गया। दो वर्ष पश्चात् गतका, फरी तथा लाठी प्रहार आदि के अच्छे शिक्षक मिल जाने पर उनकी भी व्यवस्था की गई। धनुष-वाण और घुड़सवारी शारीरिक शिक्षण के आवश्यक भाग बना दिए गए।

सन् 1908 के लगभग हॉकी की क्रीड़ा भी व्यायाम में सम्मिलित हो गई। धीरे-धीरे उसमें गुरुकुल के छात्रों ने इतनी कुशलता प्राप्त की कि उन्होंने कई ऑल इंडिया हॉकी टूर्नामेंटों में विजयी होकर ट्राफियाँ जीतीं।

उन्हीं दिनों में देश में प्रो. राममूर्ति के प्राणायाम और शारीरिक शक्ति के शारीरिक प्रयोगों की धूम मच गई थी। ब्रह्मचारियों ने भी उन सब प्रयोगों का अभ्यास आरंभ कर दिया। जिन्हें दिखाकर प्रोफेसर राममूर्ति सरकस का आयोजन किया करते थे।

छाती पर पत्थर तोड़ना, वहुत से आदमियों से भरी गाड़ी छाती पर से निकालना, चलती मोटर को कमर में रस्सा बाँधकर रोक देना इत्यादि प्रदर्शनों का अभ्यास करके कई ब्रह्मचारियों ने लोगों को चकित कर दिया। गुरुकुल के कई स्नातक और छात्र इस समय भी धनुष-वाण और बल प्रयोग के प्रदर्शनों को सफलता पूर्वक कर सकते हैं। श्रद्धानंद सप्ताह के अवसर पर गुरुकुल कांगड़ी में एक 'अखिल भारतीय श्रद्धानंद हॉकी टूर्नमिंट' होता है जो गुरुकुल के क्रीड़ा प्रेम का प्रमाण है। शिक्षा का यह सर्वसम्मत सिद्धांत है कि पुस्तक विद्या के साथ-साथ शारीरिक उन्नति की ओर भी ध्यान देना आवश्यक है। गुरुकुल में उसकी कभी उपेक्षा नहीं की गई।

सैनिक शिक्षा

स्वतंत्र देश के नवयुवकों के लिए सैनिक शिक्षा को प्राप्त करना अत्यंत आवश्यक समझा जाता है, ताकि देश के संकटकाल में वे रक्षा के लिए सर्वथा तैयार रहें। इस विचार से सन् 1956 में विद्यालय में ए.सी.सी. तथा महाविद्यालय में एन.सी.सी. का शिक्षण प्रारंभ कर दिया गया था। प्रोफेसर हरगोपालसिंह जी, एम.ए., जो कि विधिपूर्वक एन.सी.सी. के शिक्षक की शिक्षा प्राप्त करके द्वितीय लेफ्टिनेंट का पद प्राप्त कर चुके हैं, निरीक्षक नियुक्त किए गए। प्रतिवर्ष यह विभाग उन्नति करता गया। भिन्न-भिन्न केंद्रों में जो शिविर लगते गए उनमें गुरुकुल के केडिटों ने भी भाग लिया। 1957 के नवंबर मास में एन.सी.सी. का ट्रेनिंग कैंप लच्छीवाला में लगा था। कैडिट्स को लच्छीवाला के वीहड़ जंगलों में हमला करने तथा बचने की क्रियाओं का अभ्यास कराया गया। इसी वर्ष रानीखेत में भी कैंप हुआ जिसमें गुरुकुल के सैनिक छात्रों ने सफल भाग लिया। स्वतंत्रता दिवस प्रतिवर्ष सैनिक प्रशिक्षण केंद्र

की ओर से समारोह के साथ मनाया जाता है। 1958 ई. में गुरुकुल कांगड़ी के एन. सी.सी. के छात्रों ने तीन शिविरों में और उत्तर प्रदेश की रैली में भाग लिया। लच्छीवाला के कैंप में प्रशिक्षण के बाद जो परीक्षा हुई उसमें गुरुकुल के छात्रों ने बहुत सम्मान और कई पदक प्राप्त किए। कैडिट दयानंद के शारीरिक व्यायामों के प्रदर्शन से सब अधिकारी प्रसन्न हुए।

गुरुकुल के प्रशिक्षण कार्य से संतुष्ट होकर उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से एन.सी.सी. के भवन निर्माण के लिए सात हजार एक सौ रुपए का अनुदान प्राप्त हुआ है। गुरुकुल ने अपनी ओर से आठ हजार रुपए व्यय करके उस भवन को पूरा करा दिया है। इस प्रकार गुरुकुल का एन.सी.सी. विभाग बहुत शीघ्र पहले दर्जे के केंद्रों में आ जाएगा।

गुरुकुल पत्रिका

गुरुकुल पत्रिका को प्रकाशित होते बारह वर्ष हो गए हैं। इसमें सांस्कृतिक, धार्मिक और शिक्षा संबंधी लेखों के अतिरिक्त गुरुकुल विश्वविद्यालय की महीने भर की वृत्तियों का भी विवरण दिया जाता है। इसकी व्यवस्था उपकुलपति के आधीन है और इसके वर्तमान संपादक पं. धर्मदेव विद्यामार्तंड हैं। उससे पूर्व इसका संपादन श्री रामेशवेदी और पं. शंकरदेव विद्यालंकार किया करते थे। जिन विद्वानों के लेख इस पत्रिका में समय-समय पर निकलते रहे हैं उनमें से कुछ के नाम यह हैं—

आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री एम.ए.,पं. आत्मानंद विद्यालंकार, डॉ. इंद्रसेन एम.ए., पी-एच.डी., डॉ. शारदारानी साहित्य-रत्न एम.ए., श्री समसुद्दीन एम.ए., पं. कर्णवीर साहित्य चक्रवर्ती, कविरत्न डॉ. हरिशंकर शर्मा, डॉ. सूर्यदेव एम.ए., पं. वंशीधर विद्यामार्तंड, आदि कवि अपनी कविताओं से पत्रिका को अलंकृत करते रहते हैं। यह पत्रिका जहाँ एक ओर 'गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का आदर्श' के प्रचार और व्याख्या का साधन है, वहाँ वह गुरुकुल में पढ़नेवाले छात्रों के साथ उनके संरक्षकों के संपर्क को भी जीवित रखती है। गुरुकुल की स्वर्ण जयंती के अवसर पर इसका जो विशेषांक निकला था उसमें गुरुकुल का लगभग पूरा इतिहास और विवरण आ गया था। संचालकों की इच्छा है कि गुरुकुल पत्रिका को और भी अधिक उन्नत करके सर्वसाधारण तथा विद्वानों के लिए अधिक उपयोगी बनाया जाए।

: 12 :

संस्कृत सेवा

गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना सन् 1900 में जिन पवित्र और उदात्त उद्देश्यों से हुई थी उनमें वेदादि सत्य शास्त्रों की शिक्षा और संस्कृत विद्या का प्रचार भी था, जिसकी

उस समय के विद्यालयों में नितांत उपेक्षा थी। गुरुकुल ने अपनी समस्त शाखाओं में संस्कृत शिक्षा को सब विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य कर दिया और इसकी उच्चतम शिक्षा का प्रबंध किया। इसका परिणाम यह हुआ कि यहाँ के विद्याधिकारी परीक्षोत्तीर्ण विद्यार्थियों की संस्कृत की योग्यता बाहर के शास्त्री परीक्षोत्तीर्ण छात्र से भी अधिक रही। यहाँ के जो स्नातक विद्यालंकार, सिद्धांतालंकार, वेदालंकार इत्यादि उपाधि लेकर निकले उनमें से बहुतों की वेद, वैदिक साहित्य, संस्कृत साहित्य, दर्शनशास्त्र इत्यादि की योग्यता बाहर की आचार्य इत्यादि संस्कृत की उच्च परीक्षाओं में उत्तीर्ण व्यक्तियों से कम नहीं, बल्कि विषय और ज्ञान की विशालता की दृष्टि से अधिक ही रही। यदि ऐसा कहा जाए तो इसमें कोई अत्युक्ति न होगी। गुरुकुल विश्वविद्यालय ने न केवल संस्कृत के विद्वान्, अपितु संस्कृत में धाराप्रवाह भाषण करने वाले, ग्रंथ निर्माण करने वाले और उत्कृष्ट कविता करने वाले कवि भी अच्छी संख्या में उत्पन्न किए।

संस्कृत ग्रंथ निर्माण

गुरुकुल का ध्यान संस्कृत के उत्तम ग्रंथों के निर्माण की ओर स्थापना काल से ही रहा। प्रारंभिक कक्षाओं से लेकर महाविद्यालय की उच्च कक्षाओं तक के लिए व्याकरण, साहित्य, दर्शन, धर्मशास्त्र तथा वेद व्याख्या विषयक ग्रंथ गुरुकुल के आचार्य तथा उपाध्याय वर्ग की ओर से बड़ी संख्या में लिखित और प्रकाशित किए गए। इस बात को अनुभव करते हुए कि संस्कृत साहित्य के अनेक ग्रंथ जो विशारद, शास्त्री, आचार्य, काव्य तीर्थ आदि परीक्षाओं में पाठ्यपुस्तक के रूप में पढ़ाए जाते हैं, उनमें अनेक अश्लील, कामोत्तेजक स्थल हैं जो ब्रह्मचर्य की दृष्टि से अत्यंत हानिकारक हैं, गुरुकुल ने इन पुस्तकों के संशोधित संस्करण प्रकाशित किए जिससे इन काव्य-नाटकादि के उत्तम भागों से छात्र लाभ उठा सकें।

व्याकरण के ग्रंथ

प्राचीन व्याकरण में सबसे प्रमुख स्थान पाणिनिमुनि कृत अष्टाध्यायी और पतंजलिमुनि कृत महाभाष्य का है। गुरुकुल के प्रथम आचार्य पं. गंगादत्त जी व्याकरण के धुरंधर विद्वान् थे। उन्होंने 'पाणिनीयाष्टकम्' इस नाम से दो भागों में अष्टाध्यायी के संपूर्ण सूत्रों की व्याख्या में अद्भुत ग्रंथ लिखा जो गुरुकुल की ओर से प्रकाशित किया गया। यह ग्रंथ अत्यधिक उपयोगी है। इस के दो भागों का मूल्य आजकल चौदह रुपए अर्थात् सात रुपए प्रति भाग है।

अष्टाध्यायी मूल को भी गुरुकुल की ओर से प्रकाशित किया गया और संधि विषय, नामिक, आख्यातिक, स्त्रैणताद्धित आदि उसके भागों को पृथक् संस्कृत टीका तथा टिप्पणियों सहित प्रकाशित किया गया। जिनसे सब विद्यार्थी लाभ उठा सकते

हैं। पं. धर्मदेव जी वेदवाचस्पति द्वारा लिखित सरल शब्द रूपावली भी प्रकाशित की गई। महाभाष्य के पस्पशान्हिक, अंगाधिकार आदि अनेक प्रकरणों को पृथक् प्रकाशित किया गया। गुरुकुल के व्याकरण विषयक ये प्रकाशन छात्रों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुए हैं।

संस्कृत की प्रारंभिक पुस्तकें

गुरुकुल ने संस्कृत पाठशालाओं में साधारणतया प्रचलित पाठ्यपुस्तकों को अनेक अंशों में पर्याप्त उपयोगी तथा शैली की दृष्टि से उत्तम न पाकर अपनी ओर से सुयोग्य पंडितों द्वारा पुस्तकें तैयार कराईं जिनमें निम्न विशेष उल्लेख योग्य हैं—

1. गुरुकुल के प्रथम सुयोग्य स्नातक, संस्थापक महात्मा मुंशीराम जी के ज्येष्ठ पुत्र श्री हरिश्चंद्र जी विद्यालंकार कृत संस्कृत प्रवेशिका प्रथम भाग जिसके सोलह संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। इससे इसकी उपयोगिता और लोकप्रियता का अनुमान किया जा सकता है।
2. संस्कृत प्रवेशिका—2 यह भाग श्री आचार्य प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति कृत।
3. बालनीति कथामाला—जिसमें हितोपदेश पंचतंत्र आदि में से नीति विषयक अनेक कथाओं को सरल भाषा में संकलित किया गया।
4. हितोपदेश का संशोधित गुरुकुलीय संस्करण।
5. पंचतंत्र का संशोधित गुरुकुलीय संस्करण दो भागों में।
6. संस्कृतालंकार।
7. काव्य लतिका—इसमें रघुवंश, भट्टिकाव्य आदि से कुछ उत्तम भागों को संगृहीत किया गया। यह छात्रों के लिए बड़ा उपयोगी ग्रंथ है।
8. संस्कृत साहित्य पाठावली।
9. आर्य सूक्ति सुधा।
10. नीतिशतक (भर्तृहरि कृत) का संशोधित संस्करण।
11. कविराज श्री जगन्नाथ कृत 'अन्योक्ति शतकम्' का संशोधित संस्करण।
12. साहित्य पुष्पांजलि—गुरुकुल के ब्रह्मचारियों तथा स्नातकों द्वारा निर्मित गीतियों का संग्रह।

उच्च कक्षाओं के लिए संस्कृत ग्रंथ

साहित्यसुधा संग्रह के तीन भाग

यह संग्रह वेद, उपनिषद्, रघुवंश, कुमारसंभव, कादंबरी, हर्षचरित, वासवदत्ता, अभिज्ञानशाकुंतलम्, प्रबोधचंद्रोदय, उत्तर रामचरित, मुद्राराक्षस, अनर्घराघव इत्यादि प्रसिद्ध संस्कृत ग्रंथों से साहित्याचार्य पं. वागीश्वर जी विद्यालंकार और पं. भवानीप्रसाद

जी ने किया जो विद्यार्थियों के लिए अत्यधिक उपयोगी हैं। इसके द्वारा विद्यार्थी प्राचीन और मध्यकालीन कवियों तथा लेखकों की रचनाओं के अच्छे उपयोगी भागों का बड़ी अच्छी तरह से रसास्वादन कर सकते हैं। श्री विश्वनाथ जी कृत साहित्यदर्पण संस्कृत का सुप्रसिद्ध ग्रंथ है। गुरुकुल की ओर से उसका संशोधित संस्करण प्रकाशित किया गया जिससे सब छात्र भलीभाँति लाभ उठा सकते हैं। गुरुकुल के आचार्य महात्मा मुंशीराम जी ने स्वयं सुप्रसिद्ध मनुस्मृति का एक संशोधित संक्षिप्त संस्करण (जिसमें से प्रक्षिप्त श्लोक पृथक् कर दिए गए) 'वेदानुकूल संक्षिप्त मनुस्मृतिः' के नाम से गुरुकुल की ओर से प्रकाशित कराया जिससे मनुस्मृति का शुद्ध रूप में विद्यार्थी अच्छा परिचय प्राप्त कर सकें। इसी प्रकार अन्य भी संस्कृत साहित्य विषयक कुछ ग्रंथ और गुरुकुलीय साहित्य परिषद् की ओर से उत्तम संस्कृत निबंध प्रकाशित किए गए।

योग दर्शन

'योग दर्शन की भोजवृत्ति' भी गुरुकुल विश्वविद्यालय की ओर से प्रकाशित की गई जो एक अत्यंत उपयोगी ग्रंथ है।

वेद और उपनिषद् विषयक साहित्य

वेद ईश्वरीय ज्ञान है जो धर्म और विज्ञान के मूल हैं। वेदों की अनिवार्य शिक्षा का गुरुकुल में सब ब्रह्मचारियों के लिए बिना किसी प्रकार के भेदभाव के प्रबंध किया गया। वेदों की शिक्षाओं को विद्वान् मंडली और सर्वसाधारण तक पहुँचाने के लिए गुरुकुल की ओर से 'स्वाध्याय मंजरी' के नाम से पुस्तकें प्रकाशित होती रही हैं। जिनमें से विशेष उल्लेख योग्य निम्नलिखित हैं–

1. वैदिक विनय–3 खंड–आचार्य देव शर्मा जी विद्यालंकार (स्वामी अभयदेव जी) कृत।
2. वरुण की नौका–2 भाग–आचार्य प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति कृत।
3. वेदोद्यान के चुने हुए फूल–आचार्य प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति कृत।
4. वेद का राष्ट्रीय गीत–आचार्य प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति कृत।
5. मेरा धर्म–आचार्य प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति कृत।
6. वैदिक कर्तव्यशास्त्र–श्री पं. धर्मदेव जी विद्यामार्तंड कृत।
7. वेदों का यथार्थ स्वरूप–श्री पं. धर्मदेव जी विद्यामार्तंड कृत।
8. वैदिक ब्रह्मचर्य–आचार्य अभयदेव जी कृत।
9. ब्राह्मण की गौ–आचार्य अभयदेव जी कृत।
10. वैदिक आध्यात्म विद्या–श्री पं. भगवद्दत्त जी वेदालंकार कृत।
11. वैदिक स्वप्न विज्ञान–श्री पं. भगवद्दत्त जी वेदालंकार कृत।

12. आत्म समर्पण—श्री पं. भगवद्दत्त जी वेदालंकार कृत।
13. वैदिक सूक्तियाँ—श्री पं. रामनाथ जी वेदालंकार कृत।
14. वेदगीतांजलि—श्री पं. वेदव्रत जी वेदालंकार आदि द्वारा संकलित।
15. सोम सरोवर—श्री पं. चमूपति जी एम.ए. कृत।
16. संध्या रहस्य—श्री पं. विश्वनाथ जी विद्यालंकार कृत।
17. संध्या सुमन—श्री पं. नित्यानंद जी वेदालंकार कृत।
18. ईशोपनिषद् भाष्य—श्री पं. इंद्र जी विद्यावाचस्पति कृत। इत्यादि।

इन पुस्तकों में वेदों के अनेक सूक्तों अथवा अध्यायों तथा विविध विषयों की अत्युत्तम व्याख्या की गई है जो विद्वानों और सर्वसाधारण सबके लिए उपयोगी है। इस प्रकार वेदों और उपनिषदों की शिक्षाओं को लोकप्रिय बनाने के लिए गुरुकुल का यह कार्य अत्यधिक अभिनंदनीय है।

संस्कृत सभा तथा पत्रिका

इनके अतिरिक्त संस्कृत भाषण के अभ्यास के लिए भी गुरुकुल में संस्कृतोत्साहिनी, देव गोष्ठी इत्यादि सभाओं का आयोजन सदा किया जाता रहा जिसकी ओर से कवि सम्मेलन, संस्कृत साहित्य सम्मेलन आदि विविध सम्मेलनों का आयोजन होता रहा। इसका परिणाम यह हुआ कि गुरुकुल ने बहुत संख्या में संस्कृत भाषा के धुरंधर धाराप्रवाही वक्ता उत्पन्न किए। संस्कृत की 'उषा' नाम की पत्रिका भी गुरुकुल की ओर से कई वर्षों तक निकलती रही।

इस प्रकार संस्कृत के प्रचार विषयक गुरुकुल के कार्य का संक्षेप से दिग्दर्शन कराया गया है।

: 13 :

सिंहावलोकन

गुरुकुल की स्थापना एक ऊँचे आदर्श को लेकर हुई थी। बीसवीं शताब्दी के सर्वोच्च सुधारक महर्षि दयानंद ने अपने ग्रंथों में जिस शिक्षा प्रणाली का प्रतिपादन किया था, वह भारत की प्राचीन परंपरा पर आश्रित थी। महर्षि के निर्वाण के पश्चात् उनके शिष्यों ने उनकी बताई शिक्षा प्रणाली को मूर्त रूप देने के लिए डी.ए.वी. संस्था के रूप में जो प्रयत्न किया उससे आर्य जनता पूरी तरह संतुष्ट न हुई। तब महात्मा मुंशीराम जी (स्वामी श्रद्धानंद जी) और उनके कुछ साथियों ने प्राचीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को पुनर्जीवित करने के लिए गुरुकुल की स्थापना का प्रस्ताव आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब के सामने रखा।

गुरुकुल की स्थापना के लिए दो वस्तुएँ अनिवार्य रूप से आवश्यक थीं। एक,

पर्याप्त धनराशि और दूसरी, संस्था के लिए स्थान। 'जो बोले सो कुंडा खोले' की लोकोक्ति के अनुसार यह दोनों कार्य महात्मा मुंशीराम जी के सुपुर्द किए गए। सभा ने गुरुकुल के संचालन के लिए उस समय तीस हजार रुपए की मात्रा पर्याप्त समझी। महात्माजी ने लगभग नौ मास तक सारे देश का भ्रमण करके निश्चित राशि से कुछ अधिक राशि एकत्र कर दी। यह उन्नीसवीं सदी के अंतिम दिनों की बात है उस समय किसी सार्वजनिक काम के लिए तीस हजार की राशि एकत्रित करना अत्यंत कठिन ही नहीं, असंभव-सा समझा जाता था। वह कार्य हो गया तब उचित स्थान की तलाश हुई। उस समय प्रभु की उस प्रेरणा शक्ति का चमत्कार हुआ जो प्रत्येक शुभ कार्य की पूर्ति के लिए हुआ करता है। नजीबाबाद के धर्मपरायण मुंशी अमनसिंह जी के मन में प्रेरणा हुई और उन्होंने हरिद्वार के सामने, गंगा के पूर्वी तट पर बसा हुआ अपना कांगड़ी नाम का ग्राम अपनी सारी भूमि के साथ गुरुकुल के लिए दे दिया।

उधर गंगा तट पर गुरुकुल के लिए भूमि साफ होने लगी और छप्पर छाए जाने लगे और इधर पंजाब के गुजराँवाला नगर में पहले से बनी हुई वैदिक पाठशाला के कुछ छात्रों को लेकर गुरुकुल की स्थापना कर दी गई। गुरुकुल का यह बीजारोपण सन् 1900 ई. में हुआ।

संस्कृत लोकोक्ति है—'स्वल्पारंभाः क्षेमकराः' जो कार्य छोटे रूप में प्रारंभ किए जाते हैं, वह अंत में कल्याणकारी होते हैं, क्योंकि उनकी पूर्ति के लिए जो प्रयत्न और स्वार्थ त्याग किया जाता है, वह उनके भविष्य को बहुत उज्ज्वल और शानदार बना देता है। दो वर्ष तक गुरुकुल की श्रेणियाँ गुजराँवाला में चलती रहीं। 1902 के प्रारंभ में गंगा तट पर प्रारंभिक श्रेणियों के योग्य छप्पर बन जाने पर लगभग दो दर्जन बालकों को लेकर महात्मा मुंशीराम जी और आचार्य पं. गंगादत्त जी कांगड़ी की भूमि में पहुँच गए। इस प्रकार गुरुकुल का पौधा गुजराँवाला की ऊसर भूमि से उठाकर कांगड़ी की उपजाऊ भूमि में रोपा गया।

कांगड़ी की उपजाऊ भूमि में आकर गुरुकुल का अंकुर वृद्धि पाने लगा और धीरे-धीरे बढ़ता हुआ वृक्ष रूप में परिणत हो गया। 1900 में जो शिक्षणालय प्रारंभिक श्रेणी से आरंभ हुआ था। वह नई भूमि में विद्यालय के रूप में आकर 1908 में महाविद्यालय में और 1912 में विश्वविद्यालय के रूप में परिणित हो गया। उस समय तक आश्रम, विद्यालय, महाविद्यालय, चिकित्सालय आदि के लिए आवश्यक भवन तैयार हो चुके थे। पुस्तकालय तथा रसायनशाला आदि शिक्षा के लिए उपयोगी शालाएँ तैयार हो चुकी थीं। गुरुकुल की स्वाधीन स्थिति और उत्कृष्ट शिक्षा प्रणाली से आकृष्ट होकर देश-विदेश के अनेक विद्वान् तथा नेता गुरुकुल में आकर उसकी प्रणाली का अनुशीलन करते थे। गुरुकुल का आकर्षण इतना बढ़ा कि भारत के वायसराय और गवर्नर, अमेरिका, इंगलैंड के पत्रकार तथा राजनीतिक दलों के नेता

वास्तविक भारत को समझने के लिए गुरुकुल को देखना आवश्यक समझकर वहाँ आते और कई दिनों तक ठहरते।

गुरुकुल की इस निरंतर उन्नति पर दैव का एक आकस्मिक वज्रपात हुआ। सन् 1924 में गंगा में जो भयंकर बाढ़ आई उसने एक प्रकार से गुरुकुल में खंड-प्रलय मचा दी। आश्रम, भोजन भंडार, चिकित्सालय, वस्तु भंडार, प्रेस, आदि की सब इमारतें सर्वथा नष्ट हो गईं। विज्ञान का समान टूट-फूट गया या बह गया। पुस्तकालय को भयानक क्षति पहुँची। इस प्रकार बाईस वर्षों के घोर परिश्रम, दृढ़ प्रयत्न और तपश्चर्या से बनाया हुआ उद्यान दैव के प्रकोप से उजड़ गया। आघात तो बड़ा भारी था, परंतु गुरुकुल के संचालकों ने हिम्मत नहीं हारी। गंगा के पूर्वी तट पर संकट का अनुभव करके पश्चिमी तट पर नहर के किनारे नई भूमि खरीदी गई और फिर से भवनों का निर्माण किया गया। इस पुनर्निर्माण के पहले पर्व का श्रेय गुरुकुल के उस समय के आचार्य श्री प्रो. रामदेव जी को है। कुछ ही वर्षों के परिश्रम से गुरुकुल की वर्तमान भूमि पर फिर वही उद्यान लहलहाता दिखाई देने लगा जिसे दुर्दैव ने कुछ वर्ष पूर्व उजाड़ दिया था। इस प्रकार गुरुकुल के जीवन का दूसरा अध्याय आरंभ हुआ।

जीवन के व्यतीत साठ वर्षों में जल विप्लव की दैवी आपत्ति के अतिरिक्त अन्य अनेक मनुष्य कृत आपत्तियाँ भी आईं। उनमें से मुख्य वह आपत्ति थी जो गुरुकुल की राष्ट्रीय प्रवृत्तियों के कारण सरकारी दमन के रूप में प्रकट होती रही। गुरुकुल की प्रवृत्ति राष्ट्रीयता की ओर अवश्य थी, परंतु उसने संस्था रूप में राष्ट्रीय आंदोलन में कभी भाग नहीं लिया। यह सदा शिक्षण संस्था ही बनी रही इस कारण सरकारी कोप के बादल आए और कुछ समय बाद ठहरकर उड़ गए।

संस्थाओं में बाह्य तथा आंतरिक संघर्षों का होना बिलकुल स्वाभाविक है। जहाँ दस आदमी भी रहेंगे, परस्पर मतभेद होंगे। फिर जहाँ सार्वजनिक क्षेत्र में एक नवीन आदर्श को सम्मुख रख बहुत से महानुभाव काम कर रहे हों, यह कैसे संभव है कि परस्पर मतभेद व संघर्ष न हों। इन संघर्षों का भी उपयोग है। जब तक आदर्श सिद्धांत और क्रिया-विधि के संबंध में लोगों में मतभेद न हों और उनकी क्रिया-प्रतिक्रिया से समन्वयन हो, उन्नति असंभव है। गुरुकुल के विषय में भी विविध महानुभावों में बहुत से मतभेद रहे, अनेक बार संघर्ष हुए; पर इसमें संदेह नहीं कि सबका लक्ष्य गुरुकुल की उन्नति रहा। इसी का परिणाम है कि गुरुकुल आज इस उन्नत दशा को पहुँच सका है।

जिन महानुभावों के प्रयत्न से गुरुकुल अपनी वर्तमान दशा को पहुँचा है, उन सबका उल्लेख करना असंभव था। हमने केवल उन महानुभावों का नाम दिया है, जो प्रमुख रूप से जनता के सामने रहे, पर उनके अतिरिक्त कितने ही महानुभाव हैं जिन्होंने गुरुकुल के लिए अपना तन-मन-धन और सब कुछ अर्पण कर दिया।

मुंशी रामसिंह जी गुरुकुल खुलने के कुछ वर्ष बाद यहाँ आए, उनके पास जो धन-संपत्ति थी सब गुरुकुल के लिए दान कर दी और भोजन मात्र पर गुरुकुल की सेवा प्रारंभ की। उन्होंने कोई चालीस वर्ष तक गुरुकुल की सेवा की। लाला बीरबल जी, लाला चिरंजीलाल जी पटवारी ने भंडारी के रूप में और गुरु रामजीलाल जी ने गोशालाध्यक्ष के रूप में गुरुकुल की जो सेवा की उसे कौन आँखों से ओझल कर सकता है। लाला लब्भूराम जी नैय्यड़ ने गुरुकुल के लिए धन एकत्रित करने में जो कार्य किया, वस्तुतः अद्भुत है। यदि उन जैसे दस महानुभाव और निकल आवें तो गुरुकुल आर्थिक चिंता से सदा के लिए मुक्त हो जावे। भाई टेकचंद नागिया ने पचास हजार रुपया दान देकर गुरुकुल की इमारत निधि को जहाँ बड़ी सहायता पहुँचाई, वहाँ प्रतिवर्ष एक विद्यार्थी सर्वथा मुफ्त खाने-पीने का व्यय भी न लेकर दाखिल करने की व्यवस्था की, उसे रघुमल के बाद गुरुकुल के दानियों में भाई जी का ही सर्वोच्च स्थान है। ला. नंदलाल, श्रीयुत ज्ञानचंद महता, डिप्टी रघुवरदयाल, पं. महानंद सिद्धांतालंकार, श्री देवराज जी सेठी, पं. दीनदयालु जी शास्त्री और पं. वागीश्वर जी आदि महानुभाव ने गुरुकुल के आंतरिक प्रबंध को सँभालने में बड़ा भारी कार्य किया। गुरुकुल के कार्यालय को उन्नत करने, सुव्यवस्थित रूप में लाने, और उसके जन्मदाता ला. नंद लाल जी थे। उसे उन्नत करने का श्रेय. ला. मुरारी लाल जी और पं. अमरनाथ जी सप्रू को है। हम कहाँ तक नाम लिखें। गुरुकुल कार्यकर्ताओं की दृष्टि से बड़ा सौभाग्यशाली रहा है उसके प्रत्येक अंग पर किसी-न-किसी स्वार्थत्यागी कर्मचारी के अनथक परिश्रम और लगन की छाप है।

गुरुकुल को स्थापित हुए आज साठ वर्ष हो चुके हैं। चौंतीस विद्यार्थियों की छोटी सी पाठशाला से शुरू होकर अव वह एक विश्वविद्यालय बन चुका है, जिसमें एक हजार के लगभग विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। उसके अंतर्गत चार महाविद्यालय और दस विद्यालय हैं। गुरुकुल की उन्नति सचमुच आश्चर्यजनक है। सरकार से न केवल किसी प्रकार की सहायता न लेकर, अपितु सरकारी शिक्षा से किसी प्रकार का संबंध न रख राष्ट्रीय शिक्षणालय के रूप में गुरुकुल कांगड़ी को जितनी सफलता मिली है, उतनी अन्य किसी संस्था को नहीं मिली। गुरुकुल की स्थापना आर्यसमाज ने की थी। आर्यसमाज के शिक्षा के क्षेत्र में जो विशेष आदर्श और सिद्धांत हैं उन्हें क्रिया में परिणत कर गुरुकुल ने बड़ा भारी कार्य किया है। वैदिक धर्म भारतीय सभ्यता और आर्य संस्कृति के रंग में रँगे हुए उच्च शिक्षित नागरिक उत्पन्न कर गुरुकुल ने जहाँ आर्यसमाज की बड़ी सेवा की है वहाँ सच्ची राष्ट्रीय शिक्षा का विचार भी देश के सम्मुख रखा है।

गुरुकुल स्थापित करने में आर्य प्रतिनिधि सभा का एक मुख्य उद्देश्य वैदिक साहित्य का अनुशीलन तथा वैदिक धर्म का पुनरुज्जीवन था। इसके लिए जो कार्य गुरुकुल ने किया है, वह ध्यान देने योग्य है। प्रारंभ में गुरुकुल में इन विषयों को

पढ़ाने के लिए जब अध्यापकों की आवश्यकता हुई तो सनातनी पंडित रखे गए। श्री गुरु काशीनाथ जी, पं. सूर्यदेव शर्मा और पं. योगेंद्रनाथ भट्टाचार्य जी गुरुकुल में सबसे पहले वेद-वेदांग के अध्यापक थे। ये लोग कट्टर सनातनी थे और गुरुकुल में रहते हुए भी मूर्तिपूजा करते थे। ढूँढ़ने से भी आर्यसमाज में कोई भी ऐसा पंडित उस समय में नहीं मिलता था, जो वेद, ब्राह्मण ग्रंथ व दर्शनों का उच्चकोटि का अध्यापन करा सके। कुछ दिनों के लिए पं. शिवशंकर काव्यतीर्थ गुरुकुल में रहे, पर भयंकर रोग से पीड़ित होने के कारण वे देर तक न टिक सके। पर गुरुकुल की स्थापना से मिली प्रेरणा और उसके अपने प्रयत्न से आज वेद-वेदांग के पंडितों की कमी नहीं रही है। आज न केवल गुरुकुल कांगड़ी में, अपितु बहुत सी आर्य संस्थाओं में भी इन विषयों के पढ़ाने का कार्य गुरुकुल के स्नातक कर रहे हैं। पं. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर गुरुकुल के स्नातक नहीं हैं, पर उन्होंने प्रायः संपूर्ण वैदिक ज्ञान गुरुकुल में रहकर प्राप्त किया है। गुरुकुल के स्नातकों में पं. जयदेव जी विद्यालंकार ने चारों वेदों का भाष्य कर आर्यसमाज की महान् सेवा की है, उसे कौन भूल सकता है।

गुरुकुल के वेदोपाध्याय पं. विश्वनाथ विद्यालंकार आर्यसमाज के बहुत गंभीर वैदिक विद्वान् हैं। वेदों का जितना विस्तृत और विवेचनात्मक अध्ययन उन्होंने किया है उतना और शायद किसी ने न किया हो। पं. देव शर्मा विद्यालंकार की 'वैदिक विनय' जिसने पढ़ी है उसने उसकी मुक्त कंठ से प्रशंसा की। पं. इंद्र विद्यावाचस्पति, पं. चंद्रमणि विद्यालंकार, पं. धर्मदेव जी विद्यामार्तंड, पं. भगवद्दत्त जी वेदालंकार, पं. देवराज जी आदि कितने ही स्नातकों की वेद विषयक पुस्तकें आर्यसमाज के सम्मुख आ चुकी हैं। अनेक स्नातक वेद विषयक ग्रंथ लिखने में व्यस्त हैं। गुरुकुल का प्रत्येक विद्यार्थी लगभग दो हजार मंत्र गुरुकुल में पढ़ लेता है। इससे उनमें वेदों को समझने की अच्छी योग्यता उत्पन्न हो जाती है। जो विद्यार्थी वेद महाविद्यालय में पढ़ते हैं, उनकी वैदिक योग्यता तो और भी हो जाती है। आधुनिक ज्ञान-विज्ञानों तथा नवीन विवेचनात्मक शैली से परिचित होने के कारण गुरुकुल के स्नातक वैदिक अनुसंधान का कार्य बड़ी उत्तमता के साथ कर सकते हैं।

आर्यसमाज के प्रचार के लिए भी गुरुकुल के स्नातकों ने बहुत कार्य किया है। प्रतिनिधि सभा के अनेक प्रसिद्ध उपदेशक गुरुकुल के स्नातक रहे हैं। पं. बुद्धदेव जी, पं. प्रियव्रत जी, पं. यशपाल जी आदि स्नातक प्रचार कार्य जिस सफलता के साथ करते रहे हैं उससे पंजाब के आर्यबंधु भलीभाँति परिचित हैं। दक्षिण भारत में वैदिक धर्म का संदेश पं. धर्मदेव जी, पं. केशवदेव जी, पं. देवेश्वर जी आदि स्नातक ही ले गए हैं। दक्षिण अफ्रीका, फीजी आदि विदेशों में पं. सत्यपाल जी, पं. ईश्वरदत्त जी, पं. अमीचंद जी आदि कितने ही स्नातक वैदिक धर्म का प्रचार कर चुके हैं और कर रहे हैं। राष्ट्रभाषा हिंदी की जो सेवा गुरुकुल के स्नातकों ने की है उसकी सर्वत्र

प्रशंसा हुई है। इतिहास, अर्थशास्त्र, राजनीति आदि विविध विषयों पर गुरुकुल के स्नातकों ने मौलिक ग्रंथ लिखे हैं। गुरुकुल के दो स्नातकों को हिंदी साहित्य की ओर से बारह सौ रुपए का मंगला प्रसाद पारितोषिक भी प्राप्त हो चुका है। पं. सत्यकेतु विद्यालंकार ने 'मौर्य साम्राज्य का इतिहास' पर और पं. जयचंद्र जी विद्यालंकार ने 'भारतीय इतिहास की रूप रेखा' पर यह पुरस्कार प्राप्त किया है। पंडित सत्यव्रत: जी को उपनिषदों के अनुवाद पर पुष्कल पुरस्कार प्राप्त हुआ। डॉ. प्राणनाथ विद्यालंकार के ग्रंथ हिंदी जगत् में अच्छी ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। श्री हरिदत्त जी वेदालंकार ने 'हिंदू परिवार का इतिहास' तथा 'हिंदू विवाह का विकास' नामक दो पुस्तकें लिखी हैं, जिन पर बंगाल हिंदी मंडल द्वारा बारह-बारह सौ के दो पारितोषिक मिले हैं। पं. चंद्रगुप्त वेदालंकार का 'वृहत्तर भारत' ग्रंथ अपने विषय का अनुपम व प्रामाणिक ग्रंथ है। पं. चंद्रमणि विद्यालंकार ने निरुक्त का जो विस्तृत भाष्य किया है, उसकी भारत भर के विद्वानों ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। निरुक्त पर संभवतः वह सबसे उत्तम ग्रंथ है। पं. चंद्रगुप्त विद्यालंकार हिंदी के प्रतिष्ठित साहित्यिक हैं। उनकी रचनाएँ बहुत उच्चकोटि की मानी जाती हैं। पंडित वागीश्वर जी, पं. वंशीधर विद्यालंकार, पं. निरंजनदेव और पं. सत्यपाल 'उन्मुख' अच्छे कवि हैं और हिंदी के कवि समाज में अच्छी स्थिति रखते हैं। आयुर्वेद संबंधी ग्रंथों को लिखने में श्री जयदेव विद्यालंकार, श्री विद्याधर विद्यालंकार, श्री अत्रिदेव विद्यालंकार और श्री रमेश वेदी आयुर्वेदालंकार ने अच्छी ख्याति प्राप्त की है। इसके अतिरिक्त अन्य भी बहुत से स्नातकों ने हिंदी साहित्यिक क्षेत्र में बहुमूल्य सेवा की है। गुरुकुल के कम-से-कम 25 फीसदी स्नातक अच्छे लेखक हैं और अपने लेखों व ग्रंथों द्वारा हिंदी साहित्य की सेवा कर रहे हैं।

संस्कृत साहित्य के निर्माण कार्य में भी स्नातकों को यश मिला है। पं. धर्मदेव विद्यामार्तंड तथा पं. जनमेजय विद्यालंकार संस्कृत कविताओं पर सरकार से पुरस्कृत हुए हैं।

पत्र संपादन के क्षेत्र में भी गुरुकुल के स्नातकों ने अच्छी ख्याति प्राप्त की है। सर्व श्री इंद्र विद्यावाचस्पति, सत्यदेव विद्यालंकार, रामगोपाल विद्यालंकार, भीमसेन विद्यालंकार, चंद्रगुप्त विद्यालंकार, अवनींद्र कुमार विद्यालंकार, कृष्णचंद्र विद्यालंकार, सत्यकाम विद्यालंकार, पंडित वेदव्रत विद्यालंकार, परम विद्यालंकार, क्षितीश विद्यालंकार, सतीश विद्यालंकार, कृष्णचंद्र मेहता विद्यालंकार, शिवकुमार विद्यालंकार, अशोक कुमार विद्यालंकार, आनंद विद्यालंकार, ब्रह्मदत्त विद्यालंकार आदि कितने ही स्नातक विविध समाचार पत्रों के संपादन कार्य में प्रसिद्धि प्राप्त कर चुके हैं। अभिप्राय यह है कि हिंदी के सभी साहित्यिक क्षेत्रों में स्नातक लोग सफलता प्राप्त कर रहे हैं।

राष्ट्रीय सेवा

राष्ट्रसेवा के क्षेत्र में भी गुरुकुल ने प्रशंसनीय भाग लिया है। 1919 ई. से आरंभ होकर 1947 ई. तक राष्ट्र ने जो सत्याग्रह का सफल संग्राम किया उसमें गुरुकुल के छात्र तथा उपाध्याय पर्याप्त भाग लेते रहे। स्वराज्य प्राप्ति के पश्चात् जब स्वनामधन्य सरदार वल्लभभाई पटेल की प्रेरणा से गुरुकुल की उपाधियों को सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त हो गई और उसके स्नातकों को राजनीतिक क्षेत्र में कार्य करने का खुला अवसर मिला, तब से अनेक स्नातक शासन से संबंध रखने वाले तथा उनके अतिरिक्त अन्य ऊंचे पदों पर प्रतिष्ठित होकर सफलता प्राप्त कर चुके हैं और अब भी कर रहे हैं। श्री विनायकराव विद्यालंकार, श्री अमरनाथ विद्यालंकार, श्री दीनदयालु शास्त्री आदि स्नातक ऊँचे राजकीय पदों पर कार्य कर रहे हैं और अनेक स्नातक धारासभाओं के सदस्य चुने जाकर राष्ट्रीय सेवा कर रहे हैं।

भावी योजनाएँ

यह तो हुआ गुरुकुल का साठ वर्षों का सिंहावलोकन। अब हम उसके भविष्य की ओर दृष्टि डालते हैं तो हमें बहुत विस्तृत क्षेत्र दिखाई देता है। सबसे पहला काम तो यह है कि इस समय जो गुरुकुल विश्वविद्यालय का ढाँचा तैयार हुआ है, उसे पूर्णता तक पहुँचाया जाए। प्रत्येक विभाग में उन्नति की गुंजाइश है। विद्यालय की शिशु श्रेणियों की व्यवस्था बड़ी श्रेणियों से अलग करना आवश्यक है, ताकि उन्हें माता की गोद-सा विश्राम मिल सके। शेष श्रेणियों का प्रबंध तथा शिक्षा को उन्नत करके गुरुकुल विद्यालय को अन्य गुरुकुलों तथा स्कूलों के लिए आदर्श बनाने का यत्न होना चाहिए। वेद, कला, विज्ञान, तथा कृषि के महाविद्यालयों की शिक्षा को उन्नत करना चाहिए। वे शिक्षार्थियों के लिए आकर्षण के केंद्र बन जाएँ। भवन बहुत बन चुके हैं, अब भी बन रहे हैं और आगे भी बनते रहेंगे, परंतु वास्तविक कर्तव्य यह है कि गुरुकुल के मूल सिद्धांतों की रक्षा करते हुए शिक्षा के स्तर को तथा उपयोगिता को अधिकाधिक बढ़ाया जाए। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए ऊँची योग्यतावाले गुरुओं का संग्रह आवश्यक है। हमें उसका भी प्रयत्न जारी रखना चाहिए।

एक विभाग खुलना शेष है। गुरुकुल की प्रारंभिक नियमावली में उसकी चर्चा थी। विद्या सभा ने 1943 में शिक्षा की जो योजना स्वीकार की थी उसमें शिल्प तथा उद्योग शिक्षा को भी स्थान दिया था। गुरुकुल के संस्थापक श्री स्वामी श्रद्धानंद जी ने पुरानी भूमि में कला भवन की स्थापना करके शिल्प शिक्षा का आरंभ भी कर दिया था। परंतु बाढ़ से इमारतों के साथ कला भवन भी बह गया। नई भूमि में अभी तक शिल्प की शिक्षा आरंभ करने के लिए कोई पग नहीं उठाया जा सका। आशा है कि अवसर अनुकूल होने पर विद्या सभा की स्वीकृति से गुरुकुल के

कार्यकर्ता कुछ समय पश्चात् शिल्प शिक्षा की भी व्यवस्था कर सकेंगे।

: 14 :

परिशिष्ट–1

स्नातकों की प्रांतवार सूची

क्रम सं.	प्रांत	स्नातक संख्या
1.	मध्यभारत	12
2.	बंगाल	6
3.	उड़ीसा	1
4.	आंध्र	4
5.	मद्रास	2
6.	मैसूर	2
7.	बंबई	93
8.	राजस्थान	29
9.	सौराष्ट्र	10
10.	हिमाचल प्रदेश	2
11.	पंजाब	136
12.	दिल्ली	102
13.	बिहार	23
14.	उत्तर प्रदेश	232
15.	स्याम	1
16.	अमेरिका	3
17.	अफ्रीका	17
18.	नेपाल	1
19.	फ्रेंच इंडिया	1
कुल स्नातक संख्या संवत् 2015 के अंत तक		677

: 15 :

परिशिष्ट–2

गुरुकुल के आय-व्यय का तुलनात्मक विवरण

संवत्	आय	व्यय
1970	1,00,544.00	1,22,590.00
1980	1,48,708.00	1,40,023.00
1990	1,50,179.00	1,49,550.00
2000	2,29,237.00	2,42,994.00
2010	5,15,184.00	4,54,594.00
2016 कार्तिक तक	2,94,601.00	3,00,745.00

फार्मेसी के लाभ का तुलनात्मक विवरण

संवत्	
1991	26651.86
2001	47799.21
2011	77116.54

: 16 :

परिशिष्ट-3

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

प्राध्यापक तथा अध्यापक

2016 (1960)

वेद महाविद्यालय

1. श्री पं. प्रियव्रत जी वेदावाचस्पति–आचार्य
2. श्री सुखदेव जी विद्यावाचस्पति, दर्शन भूषण–अध्यक्ष
3. श्री हरिदत्त जी वेदालंकार, एम.ए.
4. श्री रामनाथ जी वेदालंकार, एम.ए.–प्रस्तोता

5. श्री गंगाराम जी गर्ग एम.ए.
6. श्री धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति, एम.ए.
7. श्री हरगोपालसिंह जी एम.ए. (मनोविज्ञान)

आयुर्वेद महाविद्यालय

1. श्री निरंजनदेव जी आयुर्वेदालंकार—अध्यक्ष
2. श्री बेलीराम जी एम.बी.बी.एस.
3. श्री अनंतानंद जी आयुर्वेदालंकार
4. श्रीरामराज जी आयुर्वेदाचार्य, व्याकरणाचार्य, एम.ए.
5. श्री चंपत स्वरूप जी एम.एस-सी., एल-एल.बी.
6. श्री आनंद मोहन जी एम.बी.बी.एस.
8. रामनाथ जी आयुर्वेदाचार्य, आयुर्वेद वाचस्पति
9. श्री क्रांति कृष्ण जी आयुर्वेदालंकार
10. श्री सत्यपाल आयुर्वेदालंकार
11. श्री सत्यदेव जी विद्यालंकार, आयुर्वेद भूषण
12. श्री दिनेश कुमार जी बी.एस-सी.
13. श्री महेशचंद्र जी आयुर्वेदालंकार, ए.एम.बी.एस.
14. श्री मदनगोपाल जी आयुर्वेदालंकार, एम.ए.बी.एस.

विज्ञान महाविद्यालय

1. श्री फकीरचंद जी एम.एस-सी.—अध्यक्ष
2. श्री सुरेशचंद्र जी एम.एस-सी. (गणित)
3. श्री भूदेव जी एम.एस-सी. (फिजिक्स)
4. श्री ओ.पी. सिन्हा एम.एस-सी. (कैमिस्ट्री)
5. श्री सुरेश कुमार जी विद्यालंकार, एम.ए.
6. श्री वेद प्रकाश जी, एम.एस-सी. (मैथमैटिक्स)
7. श्री विष्णुदत्त जी, एम.ए. (इंगलिश)
8. श्री हंसराज जी बी.ए., एफ.एस-सी.
9. श्री ठाकुर सिंह जी बी.एस-सी.

माध्यमिक शिक्षा

1. श्री दयालु जी एम.ए., ए.टी.सी.—मुख्याध्यापक
2. श्री विष्णुदत्त जी विद्यालंकार, एम.ए.
3. श्री राजेंद्र कुमार जी वेदालंकार, एम.ए

4. श्री वासुदेव जी विद्यालंकार
5. श्री नृसिंहदेवजी शास्त्री, सर्वदर्शनाचार्य
6. श्री कृष्णराव जी वेदालंकार
7. श्री नंदकुमार जी बी.एस-सी.
8. श्री शिवस्वरूप जी बी.ए.बी.टी.
9. श्री झलसिंह जी बी.ए.बी.टी.
10. श्री आनंद प्रकाश जी बी.ए.बी.टी.

प्रारंभिक विद्यालय

11. श्री चंद्रकेतु जी आयुर्वेदशास्त्री
12. श्री प्रकाशचंद्र जी वेदालंकार
13. श्री मोखासिंह जी
14. श्री पुरुषोत्तमदेव जी आयुर्वेदालंकार
15. श्री रत्नाकर जी शास्त्री, साहित्यरत्न
16. श्री ओम्प्रकाश जी
17. श्री महीधर जी शास्त्री, साहित्यरत्न

कृषि विद्यालय

1. श्री देवकीनंदन वैष्णव बी.एस-सी.ए.जी., यू.पी.ए.एस.–अध्यक्ष
2. श्री देवदत्त तोमर एल.ए.जी.–संयुक्त अध्यक्ष
3. श्री बिहारीलाल जी बी.एस.सी.ए.जी.
4. श्री सुरेशचंद्र जी एम.ए., बी.एस-सी.
5. श्री नन्हेंसिंह जी बी-एस.सी.ए.जी
6. श्री जसवीर सिंह जी बी.एस-सी.ए.जी.
7. श्री विक्रम सिंह मैट्रिक ए.जी. डिप्लोमा
8. श्री विजयपाल मैट्रिक ए.जी. डिप्लोमा

: 17 :

परिशिष्ट–4

पुरातत्त्व संग्रहालय (म्यूजियम)

श्री हरिदत्त जी वेदालंकार इतिहास उपाध्याय के आधीन यह कार्य चल रहा है। इसमें भारतवर्ष के अत्यंत प्राचीन सिक्के संगृहीत है। प्राचीन भारत में प्रचलित विविध

प्रदेशीय स्त्री-पुरुषों की वेशभूषा तथा आभूषण आदि के चार्टों द्वारा समय-समय के चित्र हैं। जिनमें मथुरा संग्रहालय की कुषाण कालीन मूर्तियों के आधार पर प्रथम तथा द्वितीय शताब्दी ई. में प्रचलित कंठाभरण, ग्रैवेयक कंठश्री, एकावली, गुच्छक, हार आदि आभूषण प्रदर्शित किए गए हैं। भारत सरकार के मानवशास्त्र विभाग द्वारा कलकत्ता में बनाए हुए भारत की प्रमुख जातियों के विभिन्न प्रकार के सिरों की प्रतिकृति मँगवाकर रखी गई हैं। यतः जौनसारी, नागा, आवोर ओंगी, गुजराती, मालवीय, संथाल, उड़िया, बंगाली, कडर, मराठा, ऐंडेमन आदि निवासियों की प्रतिकृति हैं।

वनस्पतियाँ–वनस्पतियों के लिए नए शोकेस बनवाए गए, जिनमें अशोक, कुरवक, जपा, चंपा, यूथिका, प्रियाल, आम्र, मावी, कुटज, जाति, कंपिल, कुंद के पुष्प आदि कालिदास के ग्रंथों में पाए जाने वाले संस्कृत श्लोकों के साथ दिखाए गए हैं।

उत्तराखंड की झाँकी–इस प्रदर्शन कक्ष में एक घूमनेवाले अष्टभुज शोकेस में बद्रीनाथ, केदारनाथ, ऋषिकेश आदि स्थानों के धार्मिक महत्त्वपूर्ण चित्रों की झाँकी दिखलाई गई है।

इस वर्ष संग्रहालय में पचास नई भारत की प्राचीनतम आहत मुद्राओं की तथा कुमारपाल के एक सोने के सिक्के की वृद्धि हुई। अड़तीस प्राचीन मुद्राओं की अनुकृतियाँ तैयार कराई गईं। मुद्राओं को सुरक्षित रखने के लिए गोदरेज की अलमारी मँगवाई गई। राजस्थानी शैली के आठ नए प्राचीन रंगीन चित्र उपलब्ध किए गए। इक्कीस नई पाषाण मूर्तियाँ संग्रहालय में आईं। तीस मृण्मयी नई मूर्तियाँ संग्रहालय में उपलब्ध की गईं जिनसे प्राचीन भारत की वेशभूषा, आमोद-प्रमोद, केश-विन्यास, आदि का परिचय प्राप्त होता है। तीन ऐसे रंगीन चार्ट बनाए गए जिनमें प्राचीन संस्कृत साहित्य विशेषतया कालिदास के ग्रंथों में वर्णित पक्षियों के रंगीन चित्र हैं इनसे राजहंस, चक्रवाक आदि पक्षियों के यथार्थ रूप का ज्ञान हो जाता है। इनके हिंदी-अंग्रेजी नाम भी लिख दिए गए हैं। इस वर्ष भी गत वर्ष की भाँति प्राचीन भारत की वेशभूषा से संबंधित आठ नए चार्ट तैयार करवाए गए और चित्र उपलब्ध किए गए।

यूनेस्को द्वारा निर्धारित तिथियों में अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय सप्ताह बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इसका विशेष कार्यक्रम ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न विषयों पर अधिकारी विद्वानों द्वारा चित्रों की सहायता से करवाए जाने वाले विशेष व्याख्यान थे। इन व्याख्यानों में विद्यार्थियों तथा जनता ने बड़े उत्साह से भाग लिया और इससे संग्रहालय द्वारा लोक शिक्षण और ज्ञान प्रसार का कार्य भलीभाँति संपन्न हुआ। श्री स्वामी श्रद्धानंद जन्म शताब्दी समारोह (अप्रैल 1954) के उपलक्ष्य में एक सप्ताह तक श्रद्धानंद जन्म शताब्दी प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसमें स्वामी जी द्वारा

रचित पुस्तकों, संपादित समाचार पत्रों, उनके हस्तलिखित पत्रों और उनकी जीवनी से संबंध रखने वाले चित्रों आदि का प्रदर्शन किया गया।

प्राचीन मूर्तियों को समुचित रूप से रखने के लिए तीस फीट लंबा, पंद्रह फीट चौड़ा टीन की छत का एक भवन तैयार किया गया है। संग्रहालय को देखने के लिए बावन हजार दो सौ दर्शक पधारे। इस वर्ष दर्शकों में श्री मदनमोहन जी नागर, श्री कृष्णदत्त जी वाजपेयी और चिंतामणि द्वारकानाथ देशमुख के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। डॉ. राधाकृष्णन उपराष्ट्रपति; श्री मदनमोहन नागर, संग्रहालय संचालक, उत्तर प्रदेश; श्री गणेश सखाराम महाजन, कुलपति, दिल्ली विश्वविद्यालय; श्री विश्वेश्वरप्रसाद, प्राध्यापक, दिल्ली विश्वविद्यालय आदि प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने इसका अवलोकन किया।

गुरुकुल संग्रहालय–गुरुकुल कांगड़ी–(हरिद्वार)

[भारत सरकार द्वारा 1959 में प्रकाशित 'डारेक्टरी ऑफ म्यूजियम्ज इन इंडिया' में छपे अंग्रेजी विवरण का हिंदी अनुवाद]

इतिहास–इस संग्रहालय को आरंभ करने का श्रेय अमरहुतात्मा श्री स्वामी श्रद्धानंद जी को है। 1907-8 में इसकी स्थापना इस दृष्टि से की गई थी कि यह विद्यार्थियों के अध्ययन में सहायक हो सके तथा विविध विषयों के संबंध में छात्रों में तथा साधारण जनता में अनुराग उत्पन्न कर सके। स्वामी जी की यात्राओं से उनके भारतीय और विदेशी मित्रों की सहायता से इस संग्रहालय की वस्तुओं में वृद्धि होने लगी। इसके आरंभिक संग्रह में प्रथम विश्वयुद्ध में मद्रास के तट पर जर्मन युद्धपोत एमडन द्वारा की गई गोलाबारी के कुछ अंश थे। इसी समय श्री एफ.टी. ब्रुक्स तथा श्री सी.एफ. एंड्रूज ने समुद्री वस्तुओं के नमूने भेंट किए तथा 1911 में उपाध्याय श्री महेशचरण जी सिन्हा के निरीक्षण में विद्यार्थियों ने टेलीफोन के मॉडल तैयार किए। 1924 में गंगा की भीषण बाढ़ में संग्रहालय की सब वस्तुएँ नष्ट हो गईं। इसके बाद आयुर्वेद महाविद्यालय में आयुर्वेद एवं चिकित्साशास्त्र से संबंध रखने वाली वस्तुओं का संग्रह किया जाने लगा। तदनंतर इसमें जीवशास्त्रीय वस्तुओं को एकत्र किया गया। 1945 में संग्रहालय का पुनः संगठन किया गया, ऐतिहासिक वस्तुओं के संग्रह की ओर ध्यान दिया जाने लगा तथा मार्च 1950 में गुरुकुल की स्वर्ण जयंती के अवसर पर वेद मंदिर में वर्तमान संग्रहालय का उद्घाटन किया गया। श्री पं. इंद्र जी विद्यावाचस्पति की प्रबल प्रेरणा से इसके विकास में बड़ा सहयोग मिला डॉ. शिवनाथराय जी के अनथक उद्योग और भगीरथ परिश्रम से तथा इसके अध्यक्ष श्री हरिदत्त वेदालंकार के प्रयत्न से इसकी श्री वृद्धि हुई।

इसमें पुरातत्त्वीय, वैज्ञानिक और उद्योग विभाग हैं।

पुरातत्त्व विभाग–इसमें इस प्रदेश में संग्रहालय द्वारा उपलब्ध की गई मूर्तियाँ

हैं, उनमें चतुर्मुख ब्रह्मा, समुद्रमंथन का फलक, बुद्ध की अभिलेखांकित प्रतिमा उल्लेखनीय हैं, ये मूर्तियाँ गुप्तकाल से मध्यकाल तक की हैं। मोहनजोदड़ों की खुदाई से निकली वस्तुओं का एक छोटा सा संग्रह है। विभिन्न युगों की मृण मूर्तियों को भी संगृहीत किया गया है। यहाँ आहत, (Punchmarked), हिंद-यूनानी (Indogreek) गणीयों (Tribal), कुषाण, गुप्त, मध्यकालीन और मुगल मुद्राओं का तथा देशी राज्यों के तथा विदेशों के सिक्कों और नोटों का संग्रह है। काँगड़ा शैली के चित्र तथा उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ में बने कनखल के भित्ति चित्रों की प्रतिचित्रों की प्रतिकृतियाँ भी संगृहीत हैं।

अशोक के कालसी अभिलेख, समुद्रगुप्त के प्रयाग स्तंभ लेख आदि महत्त्वपूर्ण शिलालेखों की प्रतिकृतियाँ भी यहाँ प्रदर्शित की गई हैं। सौ से अधिक चार्टों की सहायता से तीसरी शताब्दी ई.पू. से अब तक भारतीय लिपियों के विकास को भलीभाँति दिखाया गया है।

यहाँ इस प्रदेश में मिले कुछ प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथ भी हैं। इनमें ताड़पत्र पर लिखे ग्रंथ और काश्मीरी कागज पर लिखा एक सचित्र भागवतपुराण भी है।

इसके एक विभाग में पर्वतीय प्रदेशों—विशेषकर गढ़वाल और जौनसार बाबर के प्रदेशों के लोक जीवन को प्रदर्शित करने वाली वस्तुओं का संग्रह है।

वैज्ञानिक विभाग—इसमें जीवशास्त्र, भूगर्भशास्त्र, कृषिशास्त्र, शरीर विकृति विज्ञान, शरीर रचनाशास्त्र, शरीर क्रियाशास्त्र तथा द्रव्यगुणशास्त्र से संबंध रखने वाली वस्तुओं का संग्रह है। इसके सर्पशास्त्रीय विभाग में अठारह फीट लंबे अजगर से सात इंच के लंबे छोटे साँप तक प्रायः सभी प्रकार के भारतीय सर्पों को दिखाया गया है।

उद्योग-धंधों के विभाग—इसमें स्थानीय उद्योग-धंधों की वस्तुओं के साथ काश्मीरी कला, कारीगरी के कुछ नमूने हैं। इस शिक्षा विभाग में उपयोगी चार्टों, चित्रों तथा विशेष रूप से तैयार किए गए मानचित्रों की सहायता से राजनीतिक अधिकारों, कर्तव्यों, आर्थिक और सामाजिक तथ्यों के संबंध में बहुमूल्य सूचनाएँ दी गई हैं।

शिक्षा संबंधी कार्य--संग्रहालय गुरुकुल विश्वविद्यालय के पुस्तकालय का उपयोग करता है और संग्रहालयशास्त्र तथा पुरातत्त्व विज्ञान पर इसके पास थोड़ी सी अपनी पुस्तकें भी हैं। संग्रहालयाध्यक्ष निकटवर्ती विद्यालयों तथा महाविद्यालयों के छात्रों को संग्रहालय में आमंत्रित करता है। कभी-कभी इसमें विशेष प्रदर्शनियों की व्यवस्था की जाती है। दूसरे संग्रहालयों के प्रकाशनों के साथ यह संग्रहालय अपने प्रकाशनों का विनिमय करता है। इसमें प्रदर्शित वस्तुओं का स्वरूप बताने वाले केवल मुख्य रूप से हिंदी में हैं। पारिभाषिक शब्दावली वाले लेबल अंग्रेजी में हैं। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के तथा हरिद्वार की अन्य शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थी संग्रहालय में पूरी दिलचस्पी लेते हैं। गरमियों तथा दुर्गापूजा की छुट्टियों में अन्य

विश्वविद्यालयों तथा महाविद्यालयों के विद्यार्थी इस संग्रहालय को देखने के लिए अनेक बड़ी पार्टियाँ बनाकर आते रहते हैं।

प्रकाशन–(क) वार्षिक विवरण (ख) डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल द्वारा लिखित समुद्रमंथन का एक दृश्य (ग) डॉ. यज्ञदत्त शर्मा द्वारा लिखित आरंभिक भारतीय पुरातत्त्व की समस्याएँ।

खुलने का समय–संग्रहालय सप्ताह के सभी दिनों में खुला रहता है। सर्दियों में खुलने का समय 8 बजे प्रातः से 12 बजे तक तथा मध्यान्ह में 1 बजे से 5 बजे तक है। गरमियों में यह समय सवेरे 7 बजे से 12 बजे तक तथा शाम को 4 बजे से 7 बजे तक है।

इसमें कोई प्रवेश शुल्क नहीं हैं।

प्रबंधकारिणी सभा–संग्रहालय का प्रशासन गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय एक संग्रहालय समिति द्वारा करता है।

कार्यकर्ता मंडल–अध्यक्ष श्री हरिदत्त वेदालंकार एम.ए. (पुरातत्त्व विभाग), श्री चंपत स्वरूप गुप्त एम.एस-सी. (प्राणिशास्त्रीय विभाग), संग्रहालय सहायक, लेखक और चपरासी।

इसका वार्षिक बजट सोलह हजार रुपए का है।

अन्य टिप्पणियाँ–संग्रहालय एक ऐसे शहर में अवस्थित है, जो भारत का एक प्रसिद्ध तीर्थ है। यहाँ पावन पर्वों के तथा कुंभमेलों के अवसरों पर हज़ारों व्यक्ति आते हैं। संग्रहालय में आने वाले दर्शकों की दैनिक संख्या की औसत दो सौ छिहत्तर तथा वर्ष में एक लाख के लगभग है। दर्शक शीत ऋतु की अपेक्षा ग्रीष्म ऋतु में अधिक संख्या में आते हैं। यहाँ कुंभमेले के अवसर पर तथा अन्य पर्वों पर सबसे अधिक यात्री आते हैं। संग्रहालय का भवन बहुत अच्छा बना हुआ है, प्रकाश तथा वायु की उत्तम व्यवस्था होने से यह वस्तुओं के प्रदर्शन के लिए बड़ा उपयोगी है, किंतु वस्तुओं के संग्रह में वृद्धि होने से प्रदर्शन के स्थान की बहुत कमी हैं। वस्तुओं को सुरक्षित रूप से रखने के लिए भी जगह नहीं है। संग्रहालय की वस्तुओं के फोटोग्राफ दाम देकर प्राप्त किए जा सकते हैं। संग्रह के प्रधान स्रोत ये हैं–आसपास के प्रदेशों का निरीक्षण, खुदाई, विनिमय, दान तथा अत्यल्प मात्रा में वस्तुओं का क्रय करना। यह संग्रहालय अन्य संग्रहालयों के साथ प्रकाशनों का विनिमय करने के लिए सहर्ष उद्यत है। यह भारत के संग्रहालय सम्मेलन का संस्था के रूप में सदस्य है। अपने सीमित साधनों के साथ संग्रहालय ने पांडुवाला तथा झीवरहेड़ी का पुरातत्त्व की दृष्टि से सूक्ष्म निरीक्षण किया है, किंतु इस विषय में अभी बहुत कार्य किया जाना शेष है। संग्रहालय में भारत की प्रमुख नस्लों के जाति शास्त्रीय नमूने हैं। इसने कनखल के भित्तिचित्रों को सुरक्षित रखने की दृष्टि से इसके सादे फोटे लिये हैं। और अब इसका विचार उनके रंगीन चित्र लेने का भी है। वित्त की व्यवस्था होने

पर हिमालय और उत्तराखंड के पशु-पक्षियों और वनस्पतियों के संग्रह करने का विचार है। प्राकृतिक विज्ञान विभाग के साथ एक छोटा सा वानस्पतिक उद्यान भी है।

: 18 :

परिशिष्ट–5

गुरुकुल की संपत्ति

2016 के आय-व्यय के विवरण के अनुसार

1. भूमि तथा शाला विनियोग	892013	—
2. विविध व्यवसाय	708490	792428
3. ऋण अगाऊ	74685	86128
4. महानिधि से व्यय	–	388404
5. चलित खाते	19983	17821
6. जमानतें	34293	34293
7. सभा धरोहर	180878	174296
8. हस्तगत माल	173929	138164
योग	2084271	1631534
9. क. दान तथा महानिधि से भूमि विनियोग	–	384787
ख. दान तथा महानिधि से भवन विनियोग	1100366	1763753
ग. पुस्तकालय की पुस्तकें व उपकरण	370996	364350
योग	1471362	2512890
सर्वयोग	3555633	4144424

: 19 :

परिशिष्ट 6

कृषि विद्यालय का प्रगति विवरण

(अध्यक्ष कृषि विद्यालय द्वारा)

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सबसे बड़ी समस्या देश में गरीबी, अज्ञानता तथा रोगों

को दूर करने की उपस्थित हो गई है। हमारी सरकार का तथा प्रत्येक विचारशील व्यक्ति का ध्यान इस ओर है कि किस प्रकार हमारा जीवन स्तर ऊँचा हो और सारे देश में खुशहाली फैले। राष्ट्रीय सरकार ने उपरोक्त लक्ष्य प्राप्त करने के लिए पंचवर्षीय योजनाओं का आयोजन किया। इस वर्ष हम द्वितीय पंचवर्षीय योजना के चौथे वर्ष में चल रहे हैं। इन योजनाओं के अनुसार हमारी आमदनी प्रतिवर्ष 5-6 प्रतिशत बढ़नी चाहिए। यों तो देश की आमदनी बढ़ाने के लिए उद्योग-धंधे, व्यापार, आयात, निर्यात आदि अन्य बहुत से उपाय हैं, परंतु भारत के लिए एक कृषि प्रधान देश होने के कारण यह बहुत आवश्यक है कि कृषि में विशेष उन्नति की जाए, जिससे इस व्यवसाय में लगी हुई 80 प्रतिशत से अधिक जनता लाभ प्राप्त करे। इसके लिए यह आवश्यक है कि वैज्ञानिक कृषि की शिक्षा का अधिक-से-अधिक प्रसार हो।

इसको ध्यान में रखते हुए जुलाई 1955 में गुरुकुल कांगड़ी में कृषि विद्यालय की स्थापना की गई। यों तो सन् 1902 में स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानंद जी ने जब हरिद्वार से पाँच मील दूर गंगा के तट पर कांगड़ी ग्राम में गुरुकुल कांगड़ी शिक्षा केंद्र की स्थापना की थी, उस समय ही उनके ध्यान में यह बात आ गई थी और गुरुकुल की शिक्षा में और विषयों के समान कृषि विषय भी था। किंतु यह लक्ष्य जुलाई 1955 से पहले पूर्ण न हो सका।

गुरुकुल में कृषि की उच्च-से-उच्च शिक्षा देने का लक्ष्य सन्मुख रखा गया है, परंतु अभी कृषि एवं प्रसार डिप्लोमा और प्रसार की कक्षाएँ खोलने से ही कार्य प्रारंभ किया गया है। इसके लिए गुरुकुल के पास इस समय पर्याप्त साधन उपलब्ध हैं। लगभग एक सौ पचास एकड़ कृषि भूमि तथा बीस एकड़ बाग व नर्सरी हैं तथा आधुनिक ढंग की सुंदर गौशाला भी है। इसके अतिरिक्त लगभग साठ एकड़ भूमि पुराने गुरुकुल (पुण्यभूमि) में भी है। कृषि, अभियंत्रिकी, पशुपालन, पशु चिकित्सा, ग्रामीण अर्थशास्त्र, सहकारिता, ग्रामीण उद्योग-धंधे, प्रारंभिक विज्ञान, पंचायत, प्रसार, ग्राम स्वच्छता तथा जनस्वास्थ्य आदि विषयों की शिक्षा डिप्लोमा कोर्स के अंतर्गत दी जाती है। प्रत्येक विद्यार्थी को फार्म पर 1/20 एकड़ भूमि कृषि की क्रियात्मक शिक्षा के लिए दी जाती हैं। उपरोक्त सभी विषयों की क्रियात्मक शिक्षा के लिए वर्कशाप, पशुशाला, उद्यान, नर्सरी आदि का उचित प्रबंध है। विद्यालय का अपना भवन है, तथा प्रत्येक विभाग के लिए अलग-अलग स्थान नियत है। संग्रहालय, पुस्तकालय तथा वाचनालय का पूरा प्रबंध है। इसके अतिरिक्त गुरुकुल विश्वविद्यालय के विस्तृत साधन भी सदैव विद्यार्थियों की उन्नति के लिए उपलब्ध हैं।

राज्य सरकार के मंत्रीगण तथा अधिकारी कृषि विद्यालय के खुल जाने के पश्चात् जब यहाँ समय-समय पर पधारे तो वे यहाँ के विस्तृत फार्म, उद्यान, गौशाला

आदि देखकर बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने यहाँ के सुंदर, शांत तथा प्रेरणापूर्ण वातावरण को देश के चतुर्मुखी-विकास के लिए नवयुवकों को ट्रेनिंग देने हेतु अत्यंत उपयुक्त पाया। इस प्रकार जनवरी 1956 में ग्राम सेवक शिक्षा केंद्र कृषि विद्यालय के साथ-साथ राज्य सरकार की ओर से प्रारंभ हुआ है।

इस समय यहाँ एक ब्लॉक भी खुल गया है, जिसके अंतर्गत लगभग एक सौ ग्राम हैं। प्रशिक्षार्थियों को प्रशिक्षण काल में तथा उसकी समाप्ति पर ग्राम सेवा संबंधित व्यावहारिक शिक्षा का अवसर प्राप्त होता है।

गुरुकुल तथा राज्य के घनिष्ठ सहयोग एवं आत्मीय मेल से एक आह्लादक वातावरण का जन्म हुआ है और हम लोग क्रमशः रचनात्मक कार्य, नव-निर्माण एवं लाभप्रद प्रशिक्षण की ओर अग्रसर हो रहे हैं।

: 20 :

गुरुकुल के संबंध में लोकमत

श्री महात्मा गांधी का आशीर्वाद

1927 में रजत जयंती के अवसर पर आशीर्वाद देते हुए महात्मा गांधी ने निम्न शब्द कहे—

"आज तो मेरे मन में ऐसा प्रतीत होता है कि साधु वास्वानी के जैसे मैं भी प्रणाम करके बैठ जाऊँ। पर यों तो हर किसी की नकल नहीं कर सकता। अनुकरण भी स्वाभाविक होना चाहिए। इससे मुझे जो कहना है, वह कह ही दूँगा।

"स्वामी जी का देहांत तो तब होगा, जब हम उनकी सच्ची देह को मिटाने की कोशिश करेंगे, अगर्चे कि सच्ची बात तो यह है कि हमारी कोशिश से भी उनकी देह का नाश होने को नहीं है—जब तक यह गुरुकुल कायम है; जब तक एक भी स्नातक गुरुकुल की सेवा करता है तब तक स्वामी जी जीते हैं। स्वामी जी का शरीर किसी दिन गिरने को था ही। पर स्वामी जी का सबसे बड़ा काम गुरुकुल है, उन्होंने अपनी सारी शक्ति इसमें लगा दी थी, इसे पैदा करने में उन्होंने अधिक-से-अधिक तपश्चर्या की थी। तुमने सत्य की प्रतिज्ञा ली है। अगर तुम अपने वचन का पालन करोगे तो किसी की हिम्मत नहीं कि वह गुरुकुल को मिटा देवे।

"पर गुरुकुल को चिरस्थायी रखने के लिए उस वीरता की, ब्रह्मचर्य और क्षमा की जरूरत है, जो हमने उनके जीवन में देखी। वीरता का लक्षण क्षमा और ब्रह्मचर्य और वीर्य का संयम है। वीरता और वीर्य की रक्षा से तुम देश और धर्म की पूरी-पूरी रक्षा कर सकोगे। मैं जानता हूँ कि यह काम मुश्किल है। तुम्हारे यहाँ के बहुत से

विद्यार्थियों के पत्र मेरे पास पड़े हुए हैं कोई मेरी स्तुति करते हैं तो कोई गाली देते हैं। स्तुति तो नाकाम चीज है। उसका असर मेरे ऊपर नहीं होता। परंतु जब विद्यार्थी चिढ़कर गाली देते हैं तो मुझे चिंता होती है क्योंकि क्रोध से वीर्य का नाश होता है। स्वामी जी के सामने मैंने ब्रह्मचर्य की अपनी व्याख्या रखी थी और वे मेरे साथ सम्मत थे। किसी स्त्री का मलिन स्पर्श न करने में ही ब्रह्मचर्य नहीं होता। हाँ, ब्रह्मचर्य वहाँ से शुरू जरूर होता है। पर क्षमा की पराकाष्ठा ब्रह्मचर्य का लक्षण है। पिछले साल स्वामी जी जब टंकारा से पीछे लौटते समय मुझसे मिलने गए थे तो उन्होंने मुझे कहा कि 'हिंदू धर्म की रक्षा नीति से ही संभव है।' अगर तुम वैदिक आचार और विचार की रक्षा करना चाहते हो तो तुम यह बात याद रखो कि तुम्हें पग-पग पर रुपए मिल जाएँगे, मगर ब्रह्मचर्य का नीति का पाया यहाँ पर न होगा तो तुम्हारा गुरुकुल मिट्टी में मिल जाएगा। इस भूमि के तो आत्मा नहीं है। इसकी आत्मा तुम्हीं हो। अगर तुम आत्मबल खो दोगे और 'उदरनिमित्तं बहुकृतवेशः' जैसे बन जाओगे तो तुम्हारी सारी शिक्षा बेकार हो जाएगी।

"मैं आज तुम्हारे आगे चरखा और खादी की बात करने नहीं आया हूँ। तुम्हारा पहला काम ब्रह्मचर्य और वीरता का—क्षमा का है। उसे भूल जाओगे तो स्वामी जी का काम कायम नहीं रहेगा। अब्दुलरशीद की गोली से स्वामी जी का क्या हुआ ! वे तो उस गोली से ही अमर हुए।

"स्वामी जी का दूसरा काम अछूतोद्धार था। जिन शब्दों में मालवीय जी ने खादी की वकालत की, मैं नहीं कर सकता। पर इतना जरूर कहूँगा कि अगर हम हमेशा गरीबों और अछूतों की फिक्र रखेंगे तो खादी से अलग नहीं रह सकते। अगर किसी अमली काम में वीर्य की रक्षा का उपयोग करना हो तो खादी से बढ़कर दूसरा कोई काम नहीं है। खादी के कार्य के साथ मैं स्वामी जी का नाम नहीं जोड़ना चाहता, क्योंकि यह उनका मुख्य काम नहीं था। पर तुम स्नातक विदेशी कपड़े से अपना शरीर सजाने का विचार न करोगे, पर अपने गरीबों और अछूतों की रक्षा के लिए केवल खादी ही धारण करोगे।

"ईश्वर तुम सबके ब्रह्मचर्य का, सत्य और तुम्हारी प्रतिज्ञाओं की रक्षा करें, और स्वामी जी का हर एक काम परमात्मा चालू रखे।"

गांधी जी की अपील

दीक्षांत-संस्कार के दिन सायंकाल अपील हुई। आचार्य रामदेव जी के अपील के बाद महात्मा गांधी भाषण देने के लिए उठे। उन्होंने कहा--"आर्यसमाज की मैं टीका करता हूँ, पर स्तुति भी करता हूँ। और जो हार्दिक स्तुति करता है, उसे टीका करने का अधिकार होता है। मैं मानता हूँ कि ब्रिटिश राज्य स्थापित होने के बाद शिक्षितों का जनता के साथ आध्यात्मिक संबंध नहीं रहा और उस संबंध का पुनरुद्धार करने

वाला आर्यसमाज है।

"आज जो दृश्य यहाँ दिखलाई पड़ता है, वैसे दृश्य भाग्य से ही कहीं दूसरी जगह देखने में आते हैं। मैं आपका कुछ अनुकरण करता हूँ, पर मुझे बालटियों में पैसे नहीं मिलते। मैं तो रुमालों में पैसा इकट्ठा करता हूँ। मुझे तो पैसा मिलता है, और आपको रुपए मिलते हैं। सभी-के-सभी पंजाबी कुछ धनिक नहीं हैं। आप में भी गरीब लोग तो हैं ही, पर आपका दिल उदार है। मैं आर्यसमाज की टीका करता हूँ, आपको झगड़ालू कहता हूँ। पर आज आपका काम करने आया हूँ। उदार पंजाबियों को कहता हूँ कि जो दो पैसा दे चुके हैं, वे फिर से देवें, क्योंकि मैं यह स्वीकार करना चाहता हूँ कि गुरुकुल की मार्फत हिंदुस्तान की सेवा हो रही है। मैं ऐसा नहीं मानता कि आपकी टीका करते हुए मैं आपका त्याग न समझता होऊँगा। आप में त्याग तो भरा हुआ है ही, पर इस त्याग पर संतुष्ट न हो जाओ। जो त्याग आगे दिखलाना है, उसके मुकाबले में, यह त्याग कुछ भी नहीं है, पर आपके त्याग की स्तुति करता हूँ, क्योंकि आपके बराबर दूसरे में त्याग शक्ति नहीं है। काम तो वही है जो त्यागवृत्ति से किया जाए। बाकी तो स्वच्छंद हैं।

आपकी स्तुति करता हूँ। तो इससे संतुष्ट न हो जाना। आपने दिया तो इससे यह न समझना कि पूरा दे दिया। दान का अर्थ ही है कि अधिक-से-अधिक दिया जाए। जिस संस्था के लिए स्वामी श्रद्धानंद जी के सर्वस्व का त्याग था, उसके लिए जितना दे सको, दो। और कुछ परिणाम न भी निकले तो भी गुरुकुल ने संस्कृत के अभ्यास को स्थान दिया है, यह क्या कुछ छोटी बात है ? जब किसी पंजाबी को मैं देवनागरी पढ़ते देखता हूँ तो अटकल करता हूँ कि वह गुरुकुल का पढ़ा होगा। दोष किस संस्था में नहीं होते ? पर दोषों के होते हुए भी गुरुकुल संस्था की सेवा बहुत बड़ी है! इस गुरुकुल की आप सेवा करो और इसे जीवंत रखो। स्वामी श्रद्धानंद का कहना है कि इस संस्था के लिए उन्होंने ब्रह्मचर्य और तपश्चर्या के दो दान दिए थे। आप कहो कि इस संस्था को जीती रखने के लिए हमसे जितना हो सकेगा हम दान करेंगे।"

Mr. Ramsay Mscdonald

Once the Premier of England; sojourned in the Gurukula for some time and expressed the following opinion about the institution:-

'Gurukula is the most monentous thing in Indian Education that has been done since Macualay sat down to put his opinions into minute in 1835. Every one here in India is unhappy regarding results of that minute but no one, so far as I have yet seen, save the founders of the Gurukula has translated his unhappiness into a new experiment.'

Mr. Myran H. Phelps

The well-know American educationist, contributed a series of articles to the Anglo-Indian paper, the 'Pioneer of Allahabad' on the basis of his impressions regarding the Gurukula, formed during his three months stay in it. The following is an extract from one of his articles—

'I can not conceive of any institution which could make a stronger appeal to Hindu sentiment regardless of all sectarian feeling, it brings back and makes living best period of Indian life, It reverences and realises the loftiest ideals of Hindu thought. It promises, indeed gives a trustworthy assurance of restoring to the people of India. Their ancient virtues No man can live for a time in the atmosphere of this institution without feeling full confidence that the men who receive its training will be of genuine worth and integrity, whose work in the world is certain to advance the welfare of their countrymen and of mankind. My observations long ago convinced me that in training of that sort which this institution is per-eminently qualified to give, lies for the present the only hope, so far as the human pre-science can determine, for the development in Indian of that manly and elevated character which alone can achieve a future for the country, commensurate with its glorious past.'

डॉ. राजेंद्र प्रसाद

राष्ट्रपति, भारतीय गणराज्य

"हमारी आज की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सर्वोत्तम शिक्षा प्रणाली का क्या रूप हो, इस संबंध में अभी तक निश्चयपूर्वक कुछ कहना संभव नहीं है। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली भारतीय शिक्षा पद्धति पर आधारित है, किंतु आधुनिक शिक्षा विज्ञान से भी यह प्रणाली प्रभावित हुई है। सार्वजनिक शिक्षा के क्षेत्र में जो भी परीक्षण हमारे देश में अभी तक हुए हैं उनमें गुरुकुल शिक्षा संस्थाओं का महत्त्वपूर्ण स्थान है।"

डॉ. राधाकृष्णन्

राष्ट्रपति, भारतीय गणराज्य

"स्वतंत्रता से पूर्व सन् 1942 में मैं यहाँ आया था। उन दिनों यह संस्था उन कुछ एक संस्थाओं में से एक थी जिसने प्रकाश को उस समय भी स्थिर रखा जबकि चारों ओर अंधकार था। आज वह प्रकाश पूर्व से भी अधिक प्रकाशित हो रहा है। कई एक सिद्धांतों का जिन को शिक्षण संस्थाएँ अब अंगीकार कर रही हैं, सर्वप्रथम निर्माण इसी गुरुकुल में हुआ था। आप एक ऐसा विश्वविद्यालय बनाना चाहते थे जहाँ पर छात्र निवास करते हों। और भीड़-भाड़ से भी पृथक् रहें। आप इस देश

की प्राचीन संस्कृति से प्रोत्साहन प्राप्त करने में विश्वास रखते हैं और आपने शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा को स्वीकार किया। यह वे सिद्धांत हैं जिनको आज के शिक्षाविज्ञ व्यवहार में लाना चाहते हैं।"

पं. जवाहरलाल नेहरू

प्रधानमंत्री, भारतीय गणराज्य

"कुछ मास पूर्व मैं इस संस्था में गया था और वहाँ की कार्य प्रणाली के विषय में कुछ जानकारी प्राप्त की थी, मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि संस्था अच्छे ढंग से कार्य कर रही है। मैंने उस अवसर पर भाषण देते हुए इस बात पर बल दिया था कि देश के सांस्कृतिक आदर्श के साथ-साथ विज्ञान की प्रगति पर भी समान रूप से बल देने की आवश्यकता है जो कि आज के युग में अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। एकमात्र इन दोनों के समन्वय से ही हम लक्ष्य का निर्माण कर सकते हैं।"

डॉ. जाकिर हुसैन

राष्ट्रपति, भारतीय गणराज्य

"राष्ट्रीय शिक्षा के सब काम करने वालों पर गुरुकुल कांगड़ी का बड़ा अहसान है। जब लोग आगे बढ़ने में झिझकते थे उस समय इसने रास्ता दिखाया।"

श्री अनंतशयनम आयंगर

स्पीकर, लोकसभा

"यह अत्यंत संतोषजनक है कि गुरुकुल विश्वविद्यालय शिक्षा के वैदिक आदर्शों में आस्था रखता है और मानवता की निःस्वार्थ सेवा को प्रोत्साहित करता है।

जब मैं इस स्थान के चारों ओर देखता हूँ तब मैं प्रकृति के उस सुकोमल और श्रेष्ठ प्रभाव से जो कि इस देश के विचारों और संस्कृति पर पड़ता है, प्रभावित होता हूँ। गुरुकुल पद्धति इसलिए प्रशंसा के योग्य है कि यह वह पद्धति है जो कि बालकों के चरित्र निर्माण पर सबसे अधिक बल देती है। वह शहरों के कॉलेजों तथा शिक्षण संस्थाओं से भिन्न हैं जो समाज के दूषित वातावरण में से फँसे हुए हैं। छात्रों के मस्तिष्क को उन्नत करने के लिए गुरुकुल के पास पर्याप्त सामग्री है।"

श्री डॉ. संपूर्णानंद

मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

"गुरुकुल उन महान् और श्रेष्ठ संस्थाओं में से है जिनका जन्म और पालन आर्य समाज द्वारा इस देश में हुआ है। यद्यपि कई संस्थाएँ इस देश में इन्हीं लाइनों पर

काम कर रही हैं, परंतु मैं समझता हूँ कि यह गुरुकुल उन सबमें अधिक पुराना है, और हम सब ही इस प्रयोग को बड़े चाव के साथ देखते रहते हैं।

गुरुकुल के अंदर आप पुराने और नए प्रयोगों का मिश्रण कर रहे हैं। और इस युग की वर्तमान परिस्थिति में प्राचीन ढंग से इस गुरुकुल का संचालन कर रहे हैं। आप यहाँ केवल हिंदी में ही ऊँची शिक्षा देने का यत्न नहीं करते, परंतु आप इस बात का भी यत्न करते हैं कि आप के यहाँ छात्र उस प्रकार से निवास करें जिस प्रकार पुराने गुरुकुलों में निवास किया करते थे।''

डॉ. अमरनाथ झा

कुलपति, इलाहाबाद विश्वविद्यालय

''गुरुकुल भारतवर्ष के पुराने विश्वविद्यालयों के स्तर पर आधारित है। गुरुकुल ने अपने जन्म काल से ही शिक्षा का माध्यम हिंदी रखा है।''

डॉ. चिंतामणि द्वारकानाथ देशमुख

''प्राचीन गुरुकुल प्रणाली को पुनर्जीवित करने का स्वर्ण स्वप्न महर्षि दयानंद सरस्वती ने देखा था। स्वतंत्रता के आगमन के साथ-साथ गुरुकुल ने भारत के शिक्षा जगत् में बड़े सन्मान का स्थान प्राप्त कर लिया है।''

श्री कन्हैयालाल मानिकलाल मुंशी

राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

''गुरुकुल वह वस्तु देता है जो अन्य विश्वविद्यालयों से शायद ही प्राप्त हो सके, अर्थात् भारत और उसकी संस्कृति में विश्वास।''

भारतकोकिला श्रीमती सरोजिनी नायडू

''स्वामी श्रद्धानंद भारत के वीरकाल की एक दिव्य विभूति थे। अपनी भव्य मूर्ति और ऊँचे व्यक्तित्व के द्वारा वह अपने साथियों में देवता की तरह रहा करते थे। वह अपने जीवन की शहादत की अंतिम घड़ियों तक साहस और कर्मयोग की अनुपम मूर्ति रहे। मानव समाज की सेवा के संबंध में उनके उच्च भावों का मैं बहुत आदर करती हूँ।''

काका कालेलकर

''कल्याणमार्ग के पथिक स्वामी श्रद्धानंदजी की सेवा अपनी दृष्टि से अपूर्व है। राष्ट्रीय शिक्षण, धर्म, जागृति, समाजसेवा आदि अनेक क्षेत्रों में उन्होंने भारतवर्ष को एक नया ही रास्ता दिखाया है। जिस दिन उन्होंने अपने प्रिय पुत्रों को लेकर गुरुकुल

की स्थापना के संकल्प से गंगा के तट पर निवास किया, वह दिन भारतवर्ष के वर्तमान इतिहास में महत्त्व का था।''

राष्ट्रकवि डॉ. रामधारीसिंह 'दिनकर'

''गुरुकुल में भारतीय संस्कृति का वह अंश पूर्णरूप से जीवित और चैतन्य है जो मिटना नहीं जानता और जो भारत की भारतीयता का सच्चा प्रमाण है। भारतीय नवोत्थान को आगे बढ़ाने के लिए इस गुरुकुल की स्थापना की गई थी। उस उद्देश्य को गुरुकुल आज भी प्रगति दे रहा है।''

अध्याय-2

गुरुकुल के समर्पित कार्यकर्ता

❑ पं. इंद्र विद्यावाचस्पति
कुलपति एवं मुख्याधिष्ठाता

आचार्य रामदेव जी

गुरुकुल के इतिहास में आचार्य रामदेव जी का निराला स्थान है। वे गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के अनन्य भक्त थे। गुरुकुल के संस्थापक श्री स्वामी श्रद्धानंद जी महाराज के संन्यास ग्रहण करने के पश्चात् गुरुकुल के संचालन की सारी जिम्मेवारी उन्हीं पर आ पड़ी थी। स्वामी जी जब तक गुरुकुल के आचार्य रहे उस समय भी आचार्य रामदेव जी स्वामी जी का दाहिना हाथ थे। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का जितना प्रचार अपनी वाणी और लेखनी द्वारा आचार्य रामदेव जी ने किया है, उतना स्वामी जी के बाद और किसी ने नहीं किया। आचार्य जी धन संग्रह करने की कला में बहुत ही कुशल थे। गुरुकुल के लिए जितना धन वे लाए हैं उतना और कोई नहीं लाया। गुरुकुल पहले गंगा के पूर्वी किनारे पर कांगड़ी ग्राम की भूमि में था। 1924 की बाढ़ में वहाँ की प्रायः सब इमारतें ढह गई थीं और भूमि निवास के अयोग्य बन गई थी। तदनंतर गुरुकुल को गंगा के पश्चिमी ओर वर्तमान भूमि में लाया गया। यहाँ की छह-सात सौ बीघे भूमि खरीदने और उस पर खड़ी भव्य इमारतों में से अधिकांश के बनाने में जो लाखों रुपया लगा है, प्रायः सबका सब आचार्य रामदेव जी द्वारा एकत्र किया हुआ था।

आचार्य रामदेव जी सन् 1905 में गुरुकुल में कार्य करने आए थे। आप के आने से पहले गुरुकुल में संस्कृत शिक्षा पर अधिक बल दिया जाता था, आधुनिक विषयों की पढ़ाई बहुत कम होती थी। उस समय आचार्य रामदेव जी मास्टर रामदेव जी कहलाते थे। मास्टर जी ने गुरुकुल की पाठ प्रणाली में आधुनिक विषयों का प्रवेश कराया और पाठन समय को अंतरों की व्यवस्था में बाँधा। इस प्रकार अब गुरुकुल की शिक्षा प्रणाली में जो नवीन और प्राचीन विषयों का संबंध है वह रामदेव जी के ही प्रयत्नों का फल है। प्रारंभ में आप विद्यालय के मुख्याध्यापक (हेड मास्टर) के रूप में कार्य करते रहे। आगे चलकर जब महाविद्यालय विभाग खुला तो आप

को उस विभाग की शिक्षा के प्रबंध का भार सौंपा गया और आप गुरुकुल के उपाचार्य नियत हुए। आप की योग्यता की गुरुकुल में धाक थी। आप समय-समय पर अंग्रेज़ी, इतिहास, धर्मशास्त्र, राजनीतिशास्त्र आदि विषयों का अध्यापन भी किया करते थे। सन् 1917 में जब महात्मा मुंशीराम जी संन्यास लेकर गुरुकुल से चले गए तो श्री रामदेव जी गुरुकुल के आचार्य बने। आपके आचार्यत्व में ही सन् 1923 में गुरुकुल में आयुर्वेद महाविद्यालय, साधारण महाविद्यालय और वेद महाविद्यालयों की पृथक्-पृथक् स्थापना हुई और गुरुकुल ने विश्वविद्यालय का रूप धारण किया।

आप जहाँ पाश्चात्य विद्याओं के प्रकांड पंडित थे वहाँ आपको प्राचीन आर्य सभ्यता, संस्कृत भाषा, वैदिक साहित्य और वैदिक धर्म से भी अगाध प्रेम था। इसीलिए गुरुकुल के पाठ्यक्रम में आधुनिक विषयों का समावेश करने पर भी आपने कभी संस्कृत के विषयों का मानदंड कम नहीं होने दिया।

केवल गुरुकुल कांगड़ी ही नहीं, देहरादून का कन्या गुरुकुल भी आप के ही कर्तृत्व का फल है। आप अपने जीवन के अंतिम वर्षों में मुख्याधिष्ठाता के रूप में उस संस्था के सर्वोच्च अधिकारी थे। और उससे पहले गुरुकुल और कन्या गुरुकुल, दोनों के ही कई वर्ष तक मुख्याधिष्ठाता रहे थे। इस प्रकार एक साथ दो-दो बड़ी संस्थाएँ चलाने का सामर्थ्य वे रखते थे।

आप सच्चे ब्राह्मण थे। धन का लोभ आपको छू तक नहीं गया था। आप जालंधर के एक हाई स्कूल में मुख्याध्यापक के पद पर कार्य कर रहे थे। वहाँ से आपको जींद रियासत के हाई स्कूल में दो सौ चालीस रुपए मासिक पर मुख्याध्यापक के पद पर कार्य करने के लिए बुलावा गया। उधर महात्मा मुंशीराम जी से आपका परिचय हो गया। महात्मा जी के कहने से आप केवल चालीस रुपए मासिक पर गुरुकुल में काम करने के लिए चले आए।

एक बार आप को कोल्हापुर महाराज की ओर से सात सौ पचास रुपए मासिक पर कोल्हापुर कॉलेज का प्रिंसीपल बनने के लिए कहा गया था। आपको उन दिनों गुरुकुल में केवल डेढ़ सौ रुपए मिल रहे थे। आपने यह कहकर कोल्हापुर महाराज को इनकार कर दिया कि मैंने अपना जीवन आर्यसमाज को दान दे रखा है, मैं अब किसी और संस्था में काम नहीं कर सकता।

प्रबंध के कामों में ग्रंथ लिखने का समय निकालना बहुत संभव नहीं होता। फिर भी आप अपने अध्ययन के अनुरूप ग्रंथ लिख सके। तीन भागों में 'भारतवर्ष का इतिहास', 'पुराणमत पर्यालोचन' आदि बहुत उपयोगी ग्रंथ आप लिख गए हैं।

गुरुकुल से 'वैदिक मैगज़ीन' नामक अंग्रेज़ी का मासिक पत्र निकलता था। उसका संपादन भी आचार्य जी ही करते थे। इस पत्र के द्वारा आपने अंग्रेज़ी जानने वाली जनता में गुरुकुल और आर्यसमाज का बड़ा प्रचार किया है। आपमें जितनी क्रियाशक्ति थी उतनी क्रियाशक्ति बहुत कम लोगों में होती है। महात्मा गांधी जी

तक ने उनकी क्रियाशक्ति को अनुभव किया था।

आचार्य जी का जन्म 31 जुलाई, 1881 में पंजाब के होशियारपुर जिले के बैजवाड़ा नगर में हुआ था और 9 दिसंबर, 1939 में कन्या गुरुकुल, देहरादून में आपका देहावसान हुआ।

पं. विश्वंभरनाथ जी

पंडित जी का जन्म 2 अक्तूबर सन् 1878 में गुरुदासपुर ज़िले में हुआ था। अपने बाल्यकाल में उनको स्वामी श्रद्धानंद जी (उस समय महात्मा मुंशीराम जी) और पं. गुरुदत्त जी आदि महापुरुषों की संगति मिली थी। इन महापुरुषों की संगति से आपको आर्यसमाज और ऋषि दयानंद के लिए अगाध प्रेम उत्पन्न हो गया और उन्होंने जीवन भर आर्यसमाज की यथाशक्ति सेवा करने का निश्चय कर लिया। जब वे अपने यौवनकाल में गुरुदासपुर नगर में वकालत किया करते थे तब भी आर्यसमाज के लिए अधिक-से-अधिक समय देने का प्रयत्न करते थे और आर्य प्रतिनिधि सभा के बहुत से कामों को सँभाले हुए थे। महात्मा मुंशीराम जी के संन्यास लेने के कुछ साल पश्चात् जब प्रतिनिधि सभा ने आपको गुरुकुल का मुख्याधिष्ठाता नियत किया तो आपने गुरुकुल की सेवा करते हुए गुरुकुल या प्रतिनिधि सभा से कुछ भी लेना स्वीकार नहीं किया और सर्वथा अवैतनिक रूप में गुरुकुल की सेवा करते रहे। आपने गुरुकुल के आंतरिक प्रबंध और आर्थिक व्यवस्था में अनेक सुधार किए थे। गुरुकुल की पच्चीस वर्षीय रजत जयंती आपके मुख्याधिष्ठातातृत्व में ही हुई थी।

छः-सात साल गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता रहने के बाद जब आपने उस पद को छोड़ने का निश्चय किया तो एक दिन चुपचाप गुरुकुल से चले गए। गुरुकुल में किसी को आपने इस निश्चय का पता भी नहीं दिया, ताकि कहीं ब्रह्मचारी और दूसरे कार्यकर्ता अभिनंदन पत्र आदि देने का झंझट न करने लग जाएँ।

गुरुकुल से जाने के बाद पंडित जी गुरुकुल की स्वामिनी सभा आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब के अनेक वर्षों तक उपप्रधान एवं कार्यकर्ता प्रधान रहे थे। कुछ समय तक आप उक्त सभा के प्रधान भी रहे थे। पंडित जी उन व्यक्तियों में से थे जो प्रसिद्धि से परे भागते हैं और पीछे रहकर मौन रूप से जनता की निःस्वार्थ सेवा किया करते हैं। आप प्लेटफार्म और प्रेस से सदा परे रहते थे। इसलिए उनके परिचय का क्षेत्र उतना बड़ा नहीं था जितना प्रसिद्धि के उन दोनों साधनों का आश्रय लेनेवाले नेताओं का हुआ करता है। परंतु जो लोग उनके निकट संपर्क में रहे हैं, वे जानते हैं कि पंडित जी कितने श्रेष्ठ और महान् व्यक्ति थे। उनमें जो उच्चता और श्रेष्ठता थी वह बहुत कम लोगों में पाई जाती है। जो जितना ही उनके निकट संपर्क में रहता था वह उतना ही उनके गुणों की महत्ता से प्रभावित होता था। अपने इन गुणों

के कारण ही वे पिछले लगभग पच्चीस से तीस वर्षों से पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के वास्तविक संचालक और सूत्रधार रहे हैं। पिछले कुछ वर्षों से तो उनकी पंजाब प्रतिनिधि सभा में जो स्थिति थी उसे देखते हुए बिना किसी प्रतिवाद के भय से कहा जा सकता है कि पंडित जी और प्रतिनिधि सभा परस्पर पर्यायवाची हो गए थे। खेद है कि 2 अप्रैल, 1949 को अचानक हृदय की गति रुक जाने से आपका दिल्ली में देहांत हो गया।

प्रो. बालकृष्ण एम.ए.

प्रो. बालकृष्ण ने एम.ए. की परीक्षा में सफलता प्राप्त करते ही गुरुकुल की सेवा का प्रण ले लिया था। वह पंजाब यूनिवर्सिटी से अर्थशास्त्र की एम.ए. परीक्षा में आदर सहित उत्तीर्ण हुए थे। उनका परिवार आर्यसमाजी था। उनके अपने विचार भी वैदिक थे। गुरुकुल में आकर दो-तीन वर्ष तक अर्थशास्त्र के उपाध्याय का कार्य करने के अनंतर ही उन्हें कुछ समय के लिए मुख्याधिष्ठाता और आचार्य के सम्मिलित पद पर आरूढ़ होने का अवसर मिल गया। क्या उपाध्याय की हैसियत से और क्या मुख्याधिष्ठाता या आचार्य की हैसियत से प्रो. बालकृष्ण जी ने जो भी कार्य किए, उनसे उनकी चमकदार योग्यता और कार्य कुशलता झलकती थी। लगभग दो-तीन वर्षों तक वे गुरुकुल में कार्य करके उनकी विद्या प्राप्ति की लालसा उन्हें इंग्लैंड खींच ले गई, जहाँ से वह पी-एच.डी. की डिग्री प्राप्त करके भारत लौटे और जीवन के शेष भाग में कोल्हापुर के राजाराम कॉलिज के प्रिंसिपल रहे। वह हिंदी और अंग्रेजी के अच्छे वक्ता और लेखक थे। उन्होंने धार्मिक, आर्थिक और ऐतिहासिक विषयों पर कई उत्तमोत्तम ग्रंथ लिखे हैं। मध्ययुग के गुरुकुल सेवकों में उनका विशेष स्थान है।

प्रो. सेवाराम फेरवानी

प्रो. सेवाराम फेरवानी एम.ए.ई. उन व्यक्तियों में से थे जिन्हें असाधारण प्रतिभाशाली अथवा जीनियस नाम से निर्दिष्ट किया जा सकता है। वह लगभग दस वर्ष तक गुरुकुल कांगड़ी में अंग्रेजी के उपाध्याय रहे, परंतु केवल पढ़ाने का कार्य तो उनके लिए सर्वथा गौण था। उनके अंदर जीवन को प्रेरणा देने की अद्भुत शक्ति थी। उनमें से आशा और उत्साह के फव्वारे-से फूटते रहते थे। विद्यार्थी उनसे पढ़ने में अपूर्व आनंद का अनुभव करते थे। वे आश्रम और विद्यालय में आकर्षण का केंद्र बने रहते थे। विद्वान् तो थे ही, विद्या के प्रचारक भी थे। विद्या प्रचार का उन्हें पादरियों और भिक्षुओं जैसा उत्साह था। जिस दिन वह गुरुकुल की सेवा को छोड़ कर बंबई विश्वविद्यालय के मुख्य पुस्तकालय निरीक्षक बनकर गए उस दिन यहाँ के छात्रों और अध्यापकों पर मातम-सा छा गया था। हरेक ने यही कहा कि "काश कि प्रो. सेवाराम जी गुरुकुल में ही रह सकते।"

सरदार रघुवरदयाल

सरदार साहब पुराने आर्यसमाजी एवं स्वामी जी के भक्त थे। आप आचार्य रामदेव जी के समय में गुरुकुल में आए और पाँच वर्ष तक यहाँ पर मुख्याधिष्ठाता का कार्य करते थे। आप रियासत ढर्रे के ऑफीसर थे, पर शीघ्र ही गुरुकुल के रंग में रँग गए। हिंदी लिखने-पढ़ने का अभ्यास भी कम ही था। उसको भी आपने कुछ दिनों में ही प्रयत्न से सिद्ध कर लिया। जब तक गुरुकुल में रहे उसी लगन और उसी शान से काम करते रहे। पेंशन काफी मिलती थी, अतः गुरुकुल से तो कुछ लेते ही न थे, बल्कि उत्सव पर कुछ दे ही दिया करते। आचार्य रामदेव जी की बिदाई के साथ आप भी बिदा हो गए। यहाँ से जाकर अपने जन्मस्थान कसवा गंगोह में आपने धर्मार्थ औषधालय खोल दिया। जब तक जिए नगरी की सेवाएँ करते ही रहे।

लाला नंदलाल जी

लाला नंदलाल जी पंजाब के प्रसिद्ध आर्यसमाजी थे और उस प्रांत के प्रसिद्ध इंजीनियर सर गंगाराम जी के यहाँ कार्य करते थे। जब इंजीनियर साहब इस सदी के प्रारंभिक वर्षों में पटियाला गए तो लाला जी यहाँ भी उनके दफ्तर के मुखिया रहे। पटियाला रियासत ने आर्यसमाजियों पर जो आफत ढाई थी उसमें लाला नंदलाल जी रियासत सें निर्वासित किए गए। तब महात्मा मुंशीराम जी उनको गुरुकुल में ले आए और गुरुकुल का समस्त प्रबंध उन्हें सौंप दिया। लाला जी पाँच-छः साल यहाँ रहे। कुछ समय तक तो अवैतनिक ही थे और कुछ काल तक सभा के आग्रह पर साधारण निर्वाहार्थ लिया। इस आदमी ने यहाँ वे काम किए कि आज तक उनकी दंत-कथाएँ सुनी जाती हैं। अंत में सर गंगाराम जी उन्हें ले गए और अपनी ठेके की भूमियों में मिंटगुमरी जिले में प्रबंधक बना दिया।

पुराने गुरुकुल प्रेमियों का कहना है आज गुरुकुल का कार्यालय लगभग सवा दो सौ छपे हुए फार्मों पर कार्य कर रहा है जो कुछ भी सौंदर्य इसमें है उसका समस्त श्रेय श्री नंदलाल जी को ही है। भारत सरकार द्वारा निश्चित और अनुभूत फार्मों को गुरुकुल के साँचे में ढाल देना आपके ही दिमाग का कार्य था। आज लाला जी की बुद्धि ही गुरुकुल कार्यालय में कार्य करती हुई दिखाई दे रही है।

श्री देवराज जी सेठी

सहायक मुख्याधिष्ठाता के तौर गुरुकुल में दो महानुभावों ने विशेष नाम पाया है। एक लाला नंदलाल और दूसरे प्रो. देवराज सेठी।

आप लाहौर गवर्नमेंट कॉलेज, लाहौर में एम.ए. में पढ़ रहे थे कि महात्मा गांधी जी ने असहयोग का आंदोलन शुरू किया। सेठी जी में देशभक्ति की भावना थी,

एम.ए. की पढ़ाई बीच में ही छोड़ करके गुरुकुल आ पहुँचे और यहाँ अर्थशास्त्र के प्रोफेसर बन गए और गुरुकुल में रहते हुए ही आपने अर्थशास्त्र में एम.ए. किया।

चार वर्ष बाद आचार्य रामदेव जी ने उनको सहायक मुख्याधिष्ठाता बना दिया। सत्यनिष्ठा, स्फूर्ति, अनथक परिश्रम, निष्काम-भाव से सेवा, न आप दम लेना और न औरों को दम लेने देना, यह सेठी जी की विशेषता थी। कर्तव्य को पूरी मेहनत, सत्यनिष्ठा और कुशलता से करते रहे।

सेठी जी की मेज़ पर सदा एक पुस्तक पड़ी रहती थी, जो छावनियों में अंग्रेज़ कैसा प्रबंध करते हैं इस विषय पर थी। उनकी सदा इच्छा रहती थी कि जैसी सुंदर व्यवस्था और सफाई छावनियों में रहती है वैसी ही गुरुकुल में भी रहे। अपने आप निहायत सादगी से रहते थे। एक छोटे से कमरे में उनका सब सामान बड़े सुघराई से रखा होता था।

देश की सीधी सेवा या गुरुकुल के द्वारा सेवा इन दो भावों में उनके अंदर कशमकश रहा करती थी। अंततः दस साल गुरुकुल की सेवा के बाद वह राजनीति के मैदान में कूदे और अनेक बार जेल गए। आजकल आप पंजाब असेंबली के ख्याति प्राप्त सदस्य हैं।

स्वर्गीय राजाधिराज श्री सर नाहरसिंह जी

स्वर्गीय राजाधिराज सर नाहरसिंह जी की बाल्यावस्था से ही धर्म की तरफ विशेष रुचि थी। दैवयोग से आप को महर्षि स्वामी दयानंद जी महाराज के दर्शन करने का सौभाग्य चित्तौड़ में प्राप्त हुआ। वहीं पर श्री स्वामी जी महाराज जी से धार्मिक विषय पर बातचीत हुई। इस वार्तालाप से आप बहुत प्रभावित हुए और आपने स्वामी जी महाराज को शाहपुरा आने के लिए निमंत्रित किया।

स्वामी जी महाराज 8 मार्च सन् 1883 को शाहपुरा पधारे और यहाँ दो मास तक रहे। श्री स्वामी जी महाराज ने शाहपुराधीश को वेदों का महत्त्व बतलाते हुए मनुस्मृति, योग दर्शन तथा वैशेषिक दर्शन के कुछ भाग का अध्ययन कराया।

ऋषि की शिक्षा का आप पर इतना भारी प्रभाव पड़ा कि आप आर्य नरेशों में अपने को महर्षि दयानंद का शिष्य घोषित करने में गौरव समझते थे। महर्षि द्वारा स्थापित परोपकारिणी सभा में आप आजीवन पदाधिकारी रहे। कभी प्रधान, कभी उपप्रधान और कभी मंत्री।

आपने आर्य समाज की विशेष रूप से सहायता की। जैसे अजमेर में दस हजार रुपए की लागत का बाग आर्यसमाज, अजमेर को भेंट कर दिया। ऋषि दयानंद की जन्मशताब्दी के अवसर पर आप स्वयं मथुरा पधारे और समारोह में योग दिया। गुरुकुल कांगड़ी में यज्ञशाला बनवाने के लिए पंद्रह हजार रुपए दान में दिए। नई भूमि में गुरुकुल का शिलान्यास भी आप ही ने किया।

राजाधिराज जी का इकसठ वर्ष राज्य करने के पश्चात् सतहत्तर वर्ष की आयु में 24 जून, 1932 को स्वर्गवास हुआ। प्रातःकाल श्री नाहरसिंह जी के बाद उनके सुपुत्र राजाधिराज श्री उम्मेदसिंह जी शाहपुरा की गद्दी पर बैठे। आप भी अपने पिता की तरह धर्मपरायण और ऋषि दयानंद के भक्त हैं। आपने धर्मानुसार अपने पुत्र राजाधिराज सुदर्शनदेव जी को सन् 1947 में शासन भार सँभाल दिया और स्वयं वानप्रस्थ जीवन व्यतीत करने लगे। राजस्थान के राजाओं में यह सौभाग्य हमारे शाहपुरा नरेश को ही प्राप्त है कि उन्होंने देशभक्ति को ध्यान में रखते हुए सर्वप्रथम अपनी रियासत की बागडोर भारत सरकार को सौंप दी और राजस्थान में शामिल होना स्वीकार किया।

श्री विश्वनाथ जी विद्यालंकार

आप सन् 1914 में गुरुकुल से विद्यालंकार की उपाधि लेकर स्नातक हुए थे। श्री स्वामी श्रद्धानंद जी महाराज की प्रेरणा से आप गुरुकुल की सेवा करने लगे। गुरुकुल के महाविद्यालय विभाग में अनेक वर्षों तक आप वैदिक साहित्य के उपाध्याय रहे।

आचार्य रामदेवजी धनसंग्रह, गुरुकुल प्रचार आदि कार्यों के लिए अधिकतर गुरुकुल से बाहर ही रहते थे। उनकी अनुपस्थिति में आचार्य का गुरूत्तर कार्य भी आप ही को करना होता था। आप रसायनशास्त्र के भी विद्वान् हैं। समय-समय पर आप इस विषय को भी पढ़ाते रहे हैं। वैदिक साहित्य के तो आप प्रकांड पंडित हैं। आपने इस विषयक अनेक पुस्तकें भी लिखी हैं, जिनमें 'वैदिक जीवन', 'वैदिक पशुयज्ञ मीमांसा', 'संध्या-रहस्य', 'वैदिक गृहस्थाश्रम' आदि उल्लेखनीय हैं। आपके व्याख्यान भी हृदयग्राही होते हैं।

सन् 1941 में आपने गुरुकुल से पदत्याग किया। उसके पश्चात् आप लाहौर में रहकर अपने निजी कार्य करते हुए साथ में वैदिक अनुसंधान का कार्य भी करते रहे। इस समय आप देहरादून में निवास करते हैं।

श्री डॉक्टर राधाकृष्ण जी

आप पंजाब यूनिवर्सिटी के बी.एस-सी. और एम.बी.बी.एस. ऑनर्स हैं। संवत् 1979 में गुरुकुल आयुर्वेदिक महाविद्यालय के प्रथम अध्यक्ष नियत होकर आए। इस पद के साथ मुख्य चिकित्सक की उपाधि भी सम्मिलित है। आप दो-तीन वर्ष पश्चात् दयानंद सेवासदन के आजीवन सदस्य हो गए। जिससे आपका वेतन एक सौ पचास रुपए से सौ रुपए हो गया। सेवासदन के नियमानुसार आप अठारह वर्ष की पूर्ण सेवा कर संवत् 1997 में पचास रुपए पेंशन पर रिटायर्ड हो गए।

सेवाकाल में आपने कनखल में चिकित्सालय खोलकर ख्याति प्राप्त की और इसका लाभ दो हजार आठ सौ नवास्सी रुपए गुरुकुल को दिया। अपनी माता जी

की स्मृति में एक हजार रुपए दान देकर डॉक्टर जी ने एक कमरा कन्या गुरुकुल में भी बनवाया है।

पंडित विष्णुमित्र जी

श्री पं. विष्णुमित्र जी गहों, जिला जालंधर के रहने वाले हैं। उन्होंने अठारह वर्ष की आयु में वैदिक पाठशाला (उपदेशक क्लास जो कि प्रतिनिधि सभा की तरफ से श्री स्वामी श्रद्धानंद जी (महात्मा मुंशीराम जी) के निरीक्षण में जालंधर में चल रही थी) पढ़ना आरंभ किया था। एक वर्ष बाद वही पाठशाला सभा के प्रधान लाला रलाराम जी के निरीक्षण में गुजराँवाला चली गई वहाँ भी ये स्वयं पढ़ते रहे और छोटी श्रेणियों को पढ़ाते रहे। सन् 1900 में सभा की आज्ञा से शहर से बाहर एक कोठी किराए पर लेकर जब गुजराँवाला में गुरुकुल की स्थापना हुई तब पंडित जी उसके मुख्याध्यापक नियुक्त हुए। दो वर्ष बाद 1902 को श्री चौ. अमनसिंह जी के सारा कांगड़ी ग्राम देने पर और वहाँ कुछ फूँस के छप्पर तैयार हो जाने पर छब्बीस ब्रह्मचारियों के साथ आप गुरुकुल कांगड़ी पहुँचे। लगभग सात वर्ष तक आप गुरुकुल कांगड़ी में पढ़ाते रहे। सन् 1909 में जब मुलतान में शाखा खोली गई तो पंडित जी को वहाँ का मुख्याधिष्ठाता तथा मुख्याध्यापक बनाकर भेजा गया। दो वर्ष वहाँ का कार्य करके वे फिर दुबारा गुरुकुल कांगड़ी आ गए। सन् 1912 में गुरुकुल कुरुक्षेत्र की शाखा खुलने पर आप को वहाँ का मुख्याधिष्ठाता तथा मुख्याध्यापक बनाकर भेजा गया। वहाँ पर पंद्रह-सोलह वर्ष काम करने के बाद फिर वे गुरुकुल कांगड़ी आ गए। इन पचास वर्षों में चार-पाँच वर्षों के अतिरिक्त पंडित जी का शेष समस्त जीवन गुरुकुल में ही बीता है। इस समय दो वर्षों से वे कन्या गुरुकुल, देहरादून में आठवीं श्रेणी से लेकर बारहवीं श्रेणी की कन्याओं को व्याकरण, साहित्य तथा धर्मशिक्षा पढ़ा रहे हैं।

पंडित अमरनाथ जी सप्रू

पं. अमरनाथ सप्रू गुरुकुल के अनन्य भक्त और पुराने सेवक हैं। उनमें कई परस्पर विरोधी गुणों का मेल है। वे कागजी शासन के साथ-साथ कवि-हृदय के मालिक हैं। वे दफ्तर के कीड़े भी हैं और भावुकता के नमूने भी। लगभग ग्यारह वर्ष हुए, पंद्रह-सोलह वर्षों तक गुरुकुल की अनथक सेवा करके वह गुरुकुल भूमि में ही विश्राम कर रहे थे। निरंतर विश्राम से हरेक मशीन को जंग लग जाता है। सप्रू जी के शरीर को इतने दीर्घ विश्राम से जंग लग रहा था। इतने में गुरुकुल की स्वर्ण जयंती की घोषणा हो गई। बस, फिर क्या था ? सप्रू जी मानो सोए हुए जाग उठे। मेरा कहना तो निमित्त बात ही था, जयंती का बहाना मिलते ही सप्रू जी चारपाई से उठकर खड़े हो गए। चार दिन पहले जो अपनी जीवन यात्रा की समाप्ति पर

पहुँचे हुए प्रतीत होते थे. वह स्वर्ण जयंती कार्यालय के नाम को निरीक्षक और वस्तुतः सर्वेसर्वा बनते ही जवान हो उठे। अब न चेहरे पर लंबे-लंबे बाल दिखाई देते हैं, न कपड़ों पर पुरानेपन की झलक है। अब पाँव का घाव और आँखों की निर्बलता, जिनकी रात-दिन चिंता हुआ करती थी, न जाने कहाँ पर लोप हो गई। चाल में पुरानी तेजी और आवाज़ में कड़क आ गई है, वस्तुतः सप्रू जी का पुनर्जन्म हो गया है।

स्वामी अभयदेव जी

कई वर्षों तक जो गुरुकुल के आचार्यपद को सुशोभित करते रहे हैं तथा 'वैदिक-विनय' आदि पुस्तकों के लेखक के रूप में जिनकी कीर्ति आर्यजगत् में प्रख्यात है उन श्री अभयदेव जी का परिचय देने की विशेष आवश्यकता नहीं है। पर आज अपनी स्वर्ण जयंती के अवसर पर जब गुरुकुल अपने प्राचीन कार्यकर्ताओं का गौरवपूर्वक स्मरण कर रहा है तो आपको कैसे भुलाया जा सकता है। आपका पहला नाम देव शर्मा है। आपका जन्म 2 जुलाई सन् 1896 को हुआ था। सात वर्ष की आयु में आप गुरुकुल में प्रविष्ट हुए और सन् 1919 में विद्यालंकार की उपाधि लेकर स्नातक हुए। विद्यार्थी अवस्था से ही आपकी योग की ओर रुचि थी। स्नातक होने के पश्चात् कुछ समय आपने योगियों की खोज में व्यतीत किया था। 1921 में आपने अपने पैतृक स्थान चरथावल में असहयोग आंदोलन का अच्छा कार्य किया। उसके बाद स्वामी श्रद्धानंद जी आपको गुरुकुल ले आए और आपको वेद पढ़ाने तथा वैदिक अनुसंधान का कार्य दिया। आप उपाचार्य तो थे ही, बाद को श्री आचार्य रामदेव जी के एक वर्ष के लिए धन संग्रहार्थ अफ्रीका चले जाने पर स्थानापन्न आचार्य भी रहे। आप की योग की धुन बराबर जारी थी।

1930 के राष्ट्रीय आंदोलन के सिलसिले में आप जेल गए थे। जेल से मुक्त होने के पश्चात् आप को स्थायी रूप से आचार्य पद पर नियुक्त किया गया। उसके बाद आप कई वर्ष तक इस उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य का संचालन करते रहे। सन् 1938 में 13 अप्रैल को वैशाखी के दिन आपने संन्यासाश्रम की दीक्षा ली और आपका नाम देव शर्मा से अभयदेव हुआ। सन् 1942 के अगस्त मास में आप आचार्यत्व से त्यागपत्र देकर गुरुकुल से पृथक् हो गए। परंतु गुरुकुल से आपका मानसिक संबंध उसके बाद भी बना रहा है।

गुरुकुल में स्वेच्छा से आप निर्वाह मात्र पच्चीस रुपए ही लेते रहे और संन्यासाश्रम में दीक्षित होने के पश्चात् तो आपने गुरुकुल से वह भी लेना छोड़ दिया था। आपकी कई बहुमूल्य पुस्तकें गुरुकुल से प्रकाशित हुई हैं; वे पुस्तकें हैं 'ब्राह्मण की गौ', 'वैदिक-विनय' (तीन भागों में) और 'वैदिक ब्रह्मचर्य-गीत'। वैदिक-विनय के तो कई संस्करण निकल चुके हैं और कई भाषाओं में इसका अनुवाद भी हो

चुका है। 'तरंगित हृदय', 'वैदिक उपदेशमाला' और 'वैदिक यज्ञसंस्था' (यज्ञ का स्वरूप) नामक अन्य पुस्तकें भी आपने लिखी हैं।

श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त

आर्य जनता में ऐसा कौन होगा जो श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त के नाम से परिचित न हो। आप गुरुकुल विश्वविद्यालय के साइंस के उपाध्याय रहे हैं। आपने जिस लगन तथा प्रेम से इस गुरुकुल की सेवा की है, वह अकथनीय है। आपकी कार्य परायणता तथा लगन से उसी समय सबको यह प्रतीत होता था कि आप भविष्य में उज्ज्वल नक्षत्र बनेंगे और यह कल्पना अक्षरशः सत्य निकली। आप सी.पी. बरार प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा तथा अंतर्राष्ट्रीय आर्य सार्वदेशिक सभा के सभापति रहे। आर्य जनता आपसे बहुत कुछ आशा रखती है। आप अच्छे लेखक हैं। आपने कई सुंदर पुस्तकों की रचना की है, जिनमें 'भारत शिक्षा आदर्श' तथा 'वैदिक आदर्श विवाह की व्याख्या' प्रमुख हैं। हैदराबाद सत्याग्रह में भी आपने पूरा भाग लिया। आपने सी. पी. में जनसमुदाय के लाभार्थ कई संस्थाएँ खोलकर उन्हें सुचारु रूप से चलाया है। आप केंद्रीय धारासभा तथा प्रांतीय धारासभा के कई बार सदस्य रहे हैं। आजकल आप प्रांतीय धारासभा के प्रधान हैं। आर्य जाति गुप्त जी से बहुत कुछ आशा रखती है। सत्य तो यह है कि आर्यजगत् में ऐसे त्याग और उत्साह से कार्य करने वालों की संख्या अधिक नहीं है। भगवान से हमारी यह प्रार्थना है कि बहुत समय तक आप हमारे पथदर्शक बने रहें।

प्रो. श्री ताराचंद्र गाजरा

लगभग पच्चीस वर्ष की बात है जब मेरा प्रथम परिचय प्रो. ताराचंद्र जी से समाजमंदिर करांची में हुआ। इसके पश्चात् तो हम एक-दूसरे से बहुधा मिलते रहे। यही नहीं मुझे इनके साथ दो बार एक ही विद्यालय में कार्य करने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ। अखिल भारतीय आर्य सम्मेलन जो करांची में सन् 1928 में हुआ उसमें मुझे भी एक विभाग का कार्य सौंपा गया और श्री गाजरा जी के साथ कई मास रात-दिन कार्य करने का अवसर मिला। उस समय मैंने इनकी लगन और आर्यसिद्धांतों में अटूट प्रेम देखा। आप गुरुकुल विश्वविद्यालय में कुछ वर्ष इतिहास के उपाध्याय रहे, बाद को सिंध में चले गए क्योंकि वहाँ आपने अपने कार्य के लिए विस्तृत क्षेत्र पाया और सत्य तो यह है कि सिंध में आर्यसमाज के प्रचार तथा विधर्मियों को शुद्ध करने का श्रेय आपको ही है। आपने अंग्रेजी में महर्षि दयानंद जी का एक सुंदर जीवनचरित्र और आर्य धर्म पर कई छोटी-छोटी पुस्तकें लिखी हैं।

आप जिस सरकारी नौकरी में थे यदि चाहते तो उसके द्वारा कई सौ की पेंशन

लेकर आराम से जीवन बिता सकते, किंतु देश, जाति और धर्म के प्रेमियों का मार्ग सदा दूसरा ही रहा है। वह जीवन तप और त्याग चाहता है।

प्रो. विनायक गणेश साठे

प्रो. विनायक गणेश साठे गुरुकुल में केवल साठे जी के नाम से मशहूर थे। छोटा कद, शरीर का गोल-मटोल दृढ़ संगठन–यह उनका स्पष्ट महाराष्ट्रीय हुलिया था। सदा हँसते रहते थे। बहुत ही मिलनसार और नरम स्वभाव के सज्जन थे। साइंस और गणित के अच्छे विद्वान् थे। उन्हें किसी ने कभी उदास या नाराज़ नहीं देखा। बड़े-से-बड़े कठिनाई के समय में भी शांत और हँसमुख बने रहते थे। ब्रह्मचारियों और शिक्षक वर्ग से उनका बहुत मीठा बंधुओं का-सा संबंध था। वह रहन-सहन में अत्यंत सादे और गुरुकुल प्रेमी थे। आज कल साठे जी बंबई में रहते हैं। लगभग पच्चीस वर्ष बाद हरिद्वार यात्रा को आए और गुरुकुल में भी पहुँचे। अब भी वही पुराने हँसमुख और भोले साठे जी हैं और गुरुकुल को रात-दिन याद करते रहते हैं।

लाला केदारनाथ थापर

आप पोस्ट मास्टर जनरल पंजाब, लाहौर के दफ़्तर में हेड क्लर्क थे। गुरुकुल के प्रारंभिक जीवन में श्री पूज्य महात्मा मुंशीराम जी को एक दफ़्तरी अफ़सर की आवश्यकता प्रतीत हुई तो आपने लाला जी को संकेत किया। लाला जी झट दो वर्ष का दीर्घ अवकाश (फरलो) लेकर उपस्थित हो गए। गुरुकुल में जितने दिन रहे लाला जी ने खूब धड़ल्ले से काम किया। महात्मा जी के बाहर रहने पर गुरुकुल का प्रवंध भी आप ही के हाथों में रहता था। आपके सुपुत्र पं. युधिष्ठिर जी विद्यालंकार गुरुकुल के चमकदार स्नातकों में से हैं जिन्होंने वर्षों से संन्यास ले लिया हुआ है और स्वामी व्रतानंद नाम से विख्यात हैं। गुरुकुल चित्तौड़गढ़ आप के द्वारा ही स्थापित हुआ है। वहीं के आप आचार्य भी हैं।

सरदार मेहरसिंह

सरदार साहब एन.डब्ल्यू. रेलवे के रिटायर्ड अकाउंट्स ऑफीसर हैं। पिछले पचास वर्षों से आप लाहौर समाज के कार्यकर्ता रहे हैं। अट्ठाईस वर्ष से आप ही गुरुकुल कार्यालय के लेखा पथप्रदर्शक चले आ रहे हैं।

श्री मास्टर सुखराम जी

झज्झर निवासी स्वर्गीय श्री मास्टर सुखराम जी पंजाब के बी.ए.,एस.ए.बी. थे। गुरुकुल खुलने के चार-पाँच वर्ष पश्चात् ही आप सरकारी स्कूल का कार्य छोड़कर और सेवा लेकर महात्मा मुंशीराम जी की शरण में आ गए। ऐसे आए कि फिर हिलने

का नाम तक न लिया और गुरुकुल के आजीवन सदस्य बन गए। विद्यालय तथा महाविद्यालय में सेवाकाल तक अध्यापन कार्य करते रहे। कुछ वर्ष तक मुख्याध्यापक भी रहे। उन दिनों गुरुकुल के आजीवन सेवकों को पचहत्तर रुपए ही मिलता था। मास्टर जी इसी वेतन में ही परम संतुष्ट रहे। पचपन वर्ष की आयु में आपको सेवा से मुक्त होने पर सैंतीस रुपए पेंशन मिली। मास्टर जी बड़ी लगन के और अपनी मन के पक्के मनुष्य थे। गुरुकुल से आने के बाद मास्टर सुखराम जी कुछ वर्ष दिल्ली में रहे और वहाँ ही उनका देहांत हुआ।

पंडित ठाकुरदत्त शर्मा

अमृतधारा के आविष्कारक पंडित ठाकुरदत्त जी की सेवाएँ आर्यजगत् को विदित ही हैं। आप गुरुकुल की स्वामिनी सभा 'आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब' के अनेक बार मंत्री रह चुके हैं।

अपने परिश्रम से गत पचास वर्षों से पंडित जी ने लाखों कमाए-लाखों दान किए और लाखों की संपत्ति पाकिस्तान में छोड़कर देहरादून में पुनः अमृतधारा औषधालय स्थापित किया है। आपको वेद अन्वेषण की विशेष धुन है। एतदर्थ एक लाख की मॉडल टाउन, लाहौर की अचल संपत्ति आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब को अर्पण कर दी थी। शोक है कि वह अब पाकिस्तानी हो गई। गुरुकुल में भी आपकी दी हुई तीस हजार रुपए की वेद अन्वेषण गद्दी स्थापित है। इसके अतिरिक्त गुरुकुल के श्रद्धानंद सेवा आश्रम में दो रोगी शय्याओं के लिए दो सौ अट्ठासी रुपए वार्षिक सहायता मिल जाती है। समय-समय पर विशेष माँग भी कभी खाली नहीं गई। आपने अपनी संपत्ति में से छः-सात लाख रुपए का एक निजी ट्रस्ट स्थापित कर रखा है। ब्रह्मज्ञान के जिज्ञासुओं की सहायता का आपको विशेष ध्यान रहता है।

लाला जगतराम जी लेखा-निरीक्षक

लाला जी का जन्म पंजाब के एक कुलीन तथा प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था। गोरी, चिट्टी, हँसमुख, नाजुक, सुंदर मूर्ति देखकर कोई अनजान भी उनका आदर किए बिना न रह सकता था।

आप पंजाब प्रांत के नहर विभाग में प्रारंभिक लेखक पद से चढ़कर सुपरिंटेंडिंग इंजीनियर के दफ़्तर में साढ़े तीन सौ रुपए के ऑफ़िस सुपरिंटेंडेंट हो गए। इन पंक्तियों का लेखक भी उसी विभाग में नौकर था, अतः विश्वस्तरूप से कहता है कि आपने आजीवन रिश्वत की कौड़ी तक नहीं ली। अफ़सर लोग आप की योग्यता और ईमानदारी को खूब जानते थे। पुरस्कार स्वरूप वे अनेक साथियों को पीछे छोड़ तरक्की पा गए थे।

आप बहुत पुराने और पुराने टाइप के कट्टर आर्यसमाजी थे। कट्टर यों की

रग-रग में, रोम-रोम में आर्यसमाज के अतिरिक्त था ही नहीं कुछ। कोई सभा, सोसाइटी जगह न पा सकती। जिस नगर में बदलकर जाते वहाँ की आर्यसमाज की भरपूर सेवा करते। फ़िरोज़पुर शहर की आर्यसमाज के मान्य प्रधान रहे वर्षों तक। फ़िरोज़पुर केनाल-कालोनी की आर्यसमाज का जन्म आपके पुरुषार्थ का फल है। दैनिक संध्या-हवन-भजन में आप कभी नागा न करते। बुढ़ापे में भी 'वैदिक विनय' के पचासों भक्ति-मंत्र कंठस्थ कर लिये। पेंशन लेने पर आपका कुल समय समाज सेवा में ही लगा करता था।

गुरुकुल का लेखा-निरीक्षण (Audit) आठ-नौ वर्ष तक बड़ी लगन से किया। प्रतिवर्ष दो बार आते। दो-दो, ढाई-ढाई मास यहाँ रहते—मज़े-मज़े से देखभाल करते और दफ़्तर को निर्देश दे जाते। लेखा आडिटर के अतिरिक्त दफ़्तर की अन्य अड़चनों का भी उपाए बतला जाते। आप की दूरदर्शिता और धीरवृत्ति से गुरुकुल कार्यालय ने बहुत कुछ सीखा है। आप लेखा आडिट भी कर जाते थे और वार्षिकोत्सव पर छः-सात सौ रुपया अपनी मित्र-मंडली से एकत्र भी कर लाते थे।

एक बार मैंने कहा आप प्रातः-सायं खाते तो हैं केवल दो फुलकी और हम आपसे ठोककर ले लेते हैं दो थालियों का दाम। क्या यह अंन्याय नहीं ? दफ़्तर इन चार फुलकियों का दाम क्यों न दे दिया करें ? लाला जी हँसे—कहा, 'तू मेरा अच्छा खैरख्वाह दोस्त है, अब बुढ़ापे में मुझे दान की रोटियाँ भी खिलाना चाहता है।' मैं अवाक् रह गया।

प्रति वर्ष चार-पाँच मास गुरुकुल में निवास कर आडिट का काम करना, उत्सव पर अच्छी रकम एकत्रित कर लाना, बुढ़ापे में आप ही का साहस था। ऐसा आडिटर संस्था को अलभ्य रहेगा। यही प्रतीत होता है कि स्वामी जी ने कभी अपने धर्मोपदेश रूपी कोष से उन्हें अमूल्य वस्तुएँ प्रदान की थीं और लाला जगतराम जी धीरे-धीरे सेवा करके उनका ऋण चुका रहे थे। उनके देहावसान का पता लगने पर गुरुकुल में शोक सभा मनाई गई। उनकी आत्मा के लिए शांति की प्रार्थना की गई—उनके पारिवारिक जनों को सांत्वना के पत्र लिखे गए। यह जानकर सबने हार्दिक आदर प्रकट किया कि ये अपने पुत्र-पौत्रों को आर्यसमाज का प्रेम विरासत में दे गए हैं।

सर्वस्व दानी पंडित विश्वंभरनाथ काश्मीरी

गुरुकुल कांगड़ी को देशसेवा करते पचास वर्ष होने को आए। अब 17 से 23 फाल्गुन, 2006 तदनुसार 28 फरवरी से 6 मार्च, '50 (होलियों में) इसकी स्वर्ण जयंती महोत्सव मनाया जाना निश्चित हुआ है। इस अर्द्धशताब्दी में हम को बनारस यूनिवर्सिटी की भाँति लाखों के दान तो नहीं मिले, हाँ, गौरव से कहा जा सकता है कि लाखों से मिले अवश्य। सेठ रघुमल जी के एक लाख से उतरकर अंबाला के एक गुप्त दानी के सत्तासी हजार रुपए प्रथम गण्य हैं। सब छोटे और बड़े दानी

हमारे आदर के पात्र हैं, सभी ने अपने-अपने अभीष्ट कार्यार्थ दान दिए, गुरुकुल ने भी उनकी आज्ञानुसार ही धन का सदुपयोग किया और कर रहा है। मूल धन, उपाध्याय वृत्ति, छात्रवृत्ति, पुरस्कार, पदक, गोशाला, मंदिर निर्माण, शिक्षा व्यय तथा वार्षिक निधि आदि मुख्य-मुख्य विभागों के लिए श्रद्धा भरी भेंटें जनता से प्राप्त होती रही हैं।

इस लेख में जिस दानी महानुभाव का वर्णन किया जा रहा है यद्यपि उसकी प्रदत्त राशि धन संख्या की दृष्टि से उच्चतम नहीं, परंतु गुरुकुल सेवा व्रतधारी भक्त के विशुद्ध सात्त्विक परिश्रम-स्रोत से बूँद-बूँद एकत्रित होने के कारण निराली शान का, और गुरुकुल के इतिहास में अपने ढंग का अद्वितीय है। जिस की महिमा शास्त्र भी गा रहे हैं। सर्वस्व दान के साथ यश मान का भी सर्वथा त्याग इसी दानवीर का सौभाग्य है। सब कुछ अपने हाथों देकर आप ऐसे छुपे बैठे रहे कि आज गुरुकुल पत्रिकाओं के अतिरिक्त आप को जाननेवाले बहुत कम हैं।

आज आप की विश्वस्त जीवनी पाठकों के सन्मुख है, आशा है कि जनता साधुवाद कहकर उन की शांति अर्थ प्रार्थना करेगी। आप कश्मीर में जन्मे, कश्मीरी ब्राह्मण थे, पंद्रह वर्ष की आयु में कश्मीर पुलिस में भरती हुए, जैसे-तैसे दो वर्ष काटे, यह नौकरी उनकी ऋजु प्रकृति के अनुकूल न थी, माता-पिता मर चुके थे, दरिद्र नारायण की सेवा-सामग्री जुटाने के लिए जन्मभूमि से मुख मोड़ा यू.पी. आ पहुँचे, हरदोई आर्य समाज के प्रधान अपने बिरादरी भाई पं. अयोध्याप्रसाद तैमनी के यहाँ निजु सेवा स्वीकार कर ली, छह मास वहीं रह पं. केदारनाथ गुर्टू, वकील, शाहबाद, हरदोई के यहाँ उनके घर के अन्नपूर्णा मंदिर के वेतनोपभोगी पुजारी बन गए, उस समय उनकी आयु लगभग अठारह वर्ष की थी, तब से लेकर मरने के तीन दिन पहले तक इसी परिवार की सेवा करते रहे, सेवक होते हुए भी विश्वंभरनाथ ने पं. ब्रजकृष्ण गुर्टू, वकील, लखनऊ, उनके पिता और पितामह पं. केशवनाथ गुर्टू को स्वादु अन्न खिला-खिला परितृप्त रख तीन पुश्तों को अपना नमक खार-सा बना लिया। चिरकाल की धर्मपरायण सेवा बल से वह गुर्टू परिवार का आत्मीय-सा हो गया।

आर्यसमाज का रंग तो तैमुनी साहिब के सत्संग से ही चढ़ चुका था, पं. केशवनाथ गुर्टू वकील, शाहबाद के मुंशी दृढ़ आर्यसमाजी रामविलासशर्मा ने इस रंग को उनके नस-नस में प्रविष्ट कर दिया। उन्हीं दिनों स्वामी दयानंद जी के भाषण सुनने का सौभाग्य मिला, नामकरण की शास्त्रीय महिमा सुनी, स्वामी जी ने कहा कि लोग अपने बालकों का नाम दास रख उन्हें जन्मते ही दास बना देते हैं। बात चुभ गई, झट बिशनदास कौल से विश्वंभरनाथ शर्मा बन गए।

संवत् 1972 में आपने अपने गाढ़े पसीने की कमाई का अधिकांश पाँच हजार रुपया गुरुकुल को भेंट कर दिया, लिख दिया, कि उसके सूद से गुरुकुल में

नियमानुसार किसी निर्धन विद्यार्थी का सदा पालन-पोषण होता रहे। विद्यार्थी मेरी या अमुक बिरादरी का हो मुझसे स्वीकृति ली जाया करे, मुझे उसकी वार्षिक रिपोर्ट दी जाया करे; ऐसी अनेक अन्य दाताओं की तरह कोई शर्त न लगाई, बस सर्व अधिकार गुरुकुल को दे दिए। गुरुकुल उनकी आज्ञा का पालन कर रहा है। इस पार आने पर हमने धर्मशाला के कमरों के लिए अपील की, आपने पत्रों में पढ़ी और सात सौ पचास रुपए भिजवा दिए। कमरे पर उनके नाम का शिला लेख लगवा दिया गया है। धर्मशाला के दानियों के लिए गुरुकुल ने एक नियम बना रखा है कि जब वे उत्सव पर यहाँ आएँ तो यह कमरा उनको दे दिया जाए, आप गुरुकुलोत्सव पर आया करते, जेब भी हलकी कर जाते, पर श्री मुख्याधिष्ठाता जी से मिलना या कार्यालय में दर्शन देना अपने दान की मानहानि समझा सदा।

संवत् 1993 के प्रारंभ में श्री पं. ब्रजकृष्ण गुर्टू वकील ने लखनऊ से लिखा कि आज विश्वंभरनाथ जी बहुत वृद्ध और निर्बल हो रहे हैं, अपने अंतिम दिन गुरुकुल में ही बिताना चाहते हैं, हमने तुरंत अनुमति दे दी, वह आर्यसमाज के एक कार्यकर्ता और पंडित साहिब के एक आदमी के साथ वहाँ आ गए, निढाल थे बहुत, दुःख है कि वह हमसे दो ही दिन की सेवा ले सदा के लिए बिदा हो गए। इस प्रकार विश्वंभरनाथ जी ने श्रद्धानंद नगरी (गुरुकुल) में ही प्राण त्यागकर अपनी अंतिम कामना भी पूरी कर ली। मैं भी अपनी माता जी को ले उनसे मिलने के लिए हस्पताल में गया था, परंतु निर्बलता के कारण कोई काम की बात न कर सके।

मृत्यु पश्चात् दो हजार रुपए की राशि गुरुकुल को और मिल गई और उनकी वसीयत के अनुसार उसमें से एक हज़ार रुपया कन्या गुरुकुल, देहरादून को दे दिया गया। श्री गुर्टू साहिब ने उनकी संपत्ति की अंतिम राशि दो सौ पंद्रह रुपए भी यहाँ भेज दी।

पाठक कहेंगे कि पाँच-सात रुपया मासिक कमानेवाला इतना धन लाया कहाँ से ? सुनिए ! विश्वंभरनाथ अपने फन का उस्ताद था, जवानी के दिनों में शारीरिक शक्ति रहते, रजवाड़ों और धनी पुरुषों के यहाँ विवाह-शादी पर जाता, रक़में ले आता, कुछ गिरवी गाँठ भी कर लेता, पर जो कुछ लाता सब गुरुकुल अर्पण समझ जमा करता जाता। अपना व्यय तो उसका था ही, बहुत फटे-पुराने कपड़े, धोबी को दूर से नमस्ते, भोजन और अन्य साधारण व्यय गुर्टू परिवार के जिम्मा, बस जीवन भर इसी धुन में रहा कि गुरुकुल को अधिक-से-अधिक दे सकूँ, मानों वह जन्मा ही गुरुकुल की सेवा करने के लिए था। निर्धन परिवार जान विश्वंभरनाथ ने कमाया तो सही, पर गुरुकुल की सेवा अर्थ समस्त जीवन दरिद्र ही बना रहा।

वकील साहब के प्रति हृदय में बहुत आदर और प्यार है। उसकी बात करते वे आर्द्र नयन हो जाते हैं, 1923 में आपको राजयक्ष्मा का भय हो गया, लगातार सात वर्ष सोलन आदि पहाड़ पर ग्रीष्म व्यतीत किया करते, विश्वंभरनाथ साया की

तरह साथ-साथ, सोलन में अपने निरीक्षण में एक कुटिया भी बनवा दी उसने।

यदि इस आदर्श दानी, सच्चे मानी और वास्तविक धनी के दिव्य गुणों को लेखबद्ध करने का कार्य किसी साहित्यिक को दिया जाता तो वह निस्संदेह इनकी सहायता से आकाश पर जा चढ़ता, अपनी कृति को भी चार चाँद लगा देता—वितैषणा त्याग के साथ मानैषणा पर विजय पा लेना ही असली सर्वस्व त्याग है। ईश्वरीय नियमों के अनुसार ऐसे निष्काम सेवी को उच्चगति स्वतः ही मिल जाती है ऐसा हमारे शास्त्र मुक्तकंठ से बता रहे हैं।

मुझको इच्छा तो बार-बार हुई कि इस सत्यम् शिवम् कथा को सुंदरम् भी बनवालूँ किसी से, पर एक रात भाई साहेब चुपके से आ गए, कहने लगे 'अरे मियाँ !' अमरनाथ ! यह क्या कर रहे हो ! यह क्या कर रहे हो, केवल ज़रा से लेख यश लाभ के लिए मेरे शव पर प्रशंसा कालिमा क्यों मल रहे हो ! मुझे नहीं चाहिए यह कुछ, मैं गुम नाम ही खुश, फाड़ दो इस लेख को, मान लो कहना मेरा।' मैं इस स्वप्नस्मृति से असमंजस में पड़ गया—भाई साहब की आज्ञा मानूँ या अपनी दफ़्तरी ड्यूटी पालन करूँ, सोच-विचार, दफ़्तर का ही पलड़ा भारी रहा। चित्त ने यही साक्षी दी कि सुंदरता तो उनके अपने चरित्र में ही है, तू कुछ घुटे-घुटाए शब्दों से क्या वृद्धि कर सकता है। यह समझ लिया कि जब भाई साहब परलोक में मिलेंगे तो काश्मीरी भाषा में कुछ-न-कुछ ज़रूर कह सुनाएँगे, सिर खुजा आँखें नीची कर लूँगा !!

कहने को कोई भले ही कह दे कि विश्वंभरनाथ अनपढ़-सा था। केवल उर्दू जानता था और वह भी वाजिवी-वाजिवी, पर सत्य बात तो यह है कि उसने अपने आत्मकल्याण के लिए सार महात्मा मुंशीराम जी के सर्वस्व त्याग पन्ने से पढ़ लिया, ग्रहण कर आत्मसात् कर लिया, यह दिव्य गुण बड़े-बड़े पोथीधारी पंडितों के नसीब में कहाँ !

श्री पं. विश्वंभरनाथ जी को अपने दान का श्रेय तो है ही, पर गुर्टू परिवार का पुण्य-भाग भी इसमें कम नहीं। जिसकी छत्रच्छाया में विश्वंभरनाथ ने सदाचार का जीवन व्यतीत किया। कमाया, जमा रखा, और जिसकी सहृदय संपुरी से यह धन गुरुकुल को मिल सका। हाँ, कहना पड़ता है कि मौलिक श्रेय और नमस्कार है उस सर्वत्यागी स्वामी श्रद्धानंद को जिसके तपोबल और पावन जीवन से प्रभावित हो न जाने कितने और सर्वस्व त्यागी विश्वंभरनाथ मौन धारण किए हमारी आँखों से ओझल पड़े हैं।

—श्री अमरनाथ सप्रू

गुरुवर श्री काशीनाथ जी शास्त्री

श्री गुरुवर काशीनाथ जी शास्त्री छाता, ज़िला बलिया के निवासी थे। आप काशी के नामी पंडित थे। दर्शन, व्याकरण, संस्कृत साहित्य के काव्य तथा अलंकार आदि

विषयों को आप बिना पुस्तक को हाथ में लिये धाराप्रवाह में पढ़ाते जाते थे। आप काशी के दिग्गज पंडितों में गिने जाते थे। सन् 1902 में महात्मा मुंशीराम जी ने पं. गंगादत्त जी शास्त्री तथा श्री नरदेव जी शास्त्री को काशी इसलिए भेजा कि ये श्री गुरु जी को गुरुकुल में लावें। कार्तिक स्नान के निमित्त गुरुजी को हरिद्वार ये सज्जन ले आए। फिर महात्मा मुंशीराम जी और लाला रामकृष्ण जी वकील (जो कि उस समय आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब के प्रधान थे) के आग्रह और अनुरोध से गुरु जी गुरुकुल कांगड़ी में रहने लगे और चिरकाल तक गुरुकुल कांगड़ी में रहे। गुरुकुल कांगड़ी के प्रारंभिक स्नातक आप के ही मुख्य शिष्य थे। श्री गुरुजी से गुरुकुल के विद्यार्थी भी विद्याध्ययन करते थे तथा गुरुकुल के अन्य गुरुजन भी इन से विद्याभ्यास करते थे। आप गुरुकुल कांगड़ी के आनंदाश्रम नाम्नी भवन में रहा करते थे। चलते-फिरते, प्रातः-सायं तथा प्रायः हर समय में पढ़ाते ही दृष्टिगोचर होते थे। निर्णय-सागर प्रेस, बंबई ने श्री गुरु जी के सहयोग से 'चित्सुखी', तथा 'भामती' आदि ग्रंथों के संशोधित संस्करण छपवाए। आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् इन्हीं गुरु जी की शिष्य परंपरा में है। आप तपोनिष्ठ, स्थितप्रज्ञ थे, और सतयुगी सच्चे ब्राह्मण थे। आप के दो सुपुत्र थे। ज्येष्ठ पुत्र श्री हरनाथ जी शास्त्री तथा कनिष्ठ पुत्र श्री रघुनाथ जी शास्त्री। ज्येष्ठ पुत्र का तो देहावसान हो चुका है। श्री रघुनाथ जी शास्त्री संस्कृत कॉलिज, बनारस के व्याकरण तथा वेदांत के नामी अध्यापक है।

आचार्य श्री पं. गंगादत्त जी शास्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब ने जालंधर में जब वैदिक आश्रम की स्थापना की तब महात्मा मुंशीराम जी उसके निरीक्षक थे। आश्रम के लिए एक संस्कृत के प्रकांड विद्वान् की आवश्यकता थी। महात्मा जी ने श्री पं. कृपाराम शर्मा जगरावी से (पश्चात् के स्वामी दर्शनानंद सरस्वती) जो उस समय बनारस में अपना प्रेस चलाते थे, पत्र-व्यवहार प्रारंभ किया। श्री पं. गंगादत्त जी शास्त्री तथा पं. कृपाराम जी का बड़ा स्नेह संबंध था, उन्हीं की प्रबल प्रेरणा से पं. गंगादत्त जी जालंधर आए और आपकी विद्वता, उत्तम अध्यापन शैली के कारण वैदिक आश्रम का नाम चमका और वहाँ दूर-दूर से छात्र अध्ययनार्थ आने लगे। यह आश्रम कई वर्ष जालंधर रहा, फिर गुजराँवाला चला गया। पं. गंगादत्त जी भी वहीं गए। गुजराँवाले में वैदिक आश्रम के निरीक्षक स्वर्गीय राय रलियाराम पी.डब्ल्यू. इंस्पेक्टर थे। सन् 1902 जून मास में पं. गंगादत्त जी हरिद्वार चले गए और जब कांगड़ी में गुरुकुल खुला तब महात्मा मुंशीराम जी के साथ कार्य में हाथ बटानेवालों में यह प्रमुख थे। इन्हीं के कारण महात्मा जी गुरुकुल के प्रारंभिक दिनों में इतनी सफलता प्राप्त कर सके। पं. गंगादत्त जी शास्त्री गुरुकुल में पाँच वर्ष रहे, फिर आपने गुरुकुल छोड़ दिया। कुछ काल ऋषिकेश, भोगपुर आदि स्थानों में रहने के पश्चात् आप महाविद्यालय, ज्वालापुर में

आमरण (संवत् 1990 तक) रहे। आपका संन्यास का नाम था स्वामी शुद्धबोधतीर्थ।

श्री मुरारी लाल जी

ला. मुरारी लाल जी पटियाला के अकाउंटेंट जनरल के कार्यालय में एक उत्तरदायी पद पर थे। ला. मुरारीलाल जी ऋषि दयानंद के अनन्य भक्त और दृढ़ आर्यसमाजी थे।

सन् 1907 में समस्त पटियाला रियासत के आर्यसमाजियों पर रियासत की ओर से राजविद्रोह का प्रसिद्ध अभियोग चलाया गया। उसमें ला. मुरारी लाल जी अपने अनुज ला. सीताराम के साथ गिरफ़्तार हुए। मुकदमे की कार्यवाही समाप्त होने पर राजा ला. के अनुसार आप रियासत में रहते हुए अपने पूर्व पद पर कार्य कर सकते थे और उस विभाग में अर्थसचिव के पद तक उन्नति कर सकते थे, परंतु उन्हें ऐसे अन्यायपूर्ण राज्य में रहना पसंद न था और वे अपने परममित्र स्वर्गीय श्री ला. नंदलाल जी के साथ श्री महात्मा मुंशीराम जी की प्रेरणा पर गुरुकुल कांगड़ी की सेवा में आ गए !

गुरुकुल कांगड़ी में वे यद्यपि मुख्यतः कार्यालयाध्यक्ष का कार्य करते थे, परंतु उनमें गुरुकुल के आदर्शों के प्रति रहना तीव्र अनुराग था कि गुरुकुल का ऐसा कोई कार्य या विभाग न था जिसमें उनका कोई भाग न हो। कार्यालय के काम के साथ-साथ आश्रमाध्यक्ष का काम करते थे—समय-समय पर विद्यालय विभाग की नवम-दशम श्रेणियों को अंग्रेज़ी पढ़ाते थे और प्रवंध संवंधी सब समितियों में वे अनिवार्य रूप से अपने परामर्शादि द्वारा गुरुकुल की सेवा करते थे। उनका एक-एक मिनट गुरुकुल के कार्यों के लिए था ! अपने पिताजी के रुष्ट होने पर भी उन्होंने अपने भाई सत्यदेव को गुरुकुल में प्रविष्ट किया जो कि सफलतापूर्वक 1981 वि.सं. में स्नातक हुए और अब फार्मेसी में अध्यक्ष पद पर सेवा कर रहे हैं।

अंत में गुरुकुल की ही सेवा करते हुए 21 चैत्र सं. 1977 को आप निमोनिया से पीड़ित होकर कुल माता की गोद में सदा के लिए बिदा हुए।

पंडित चमूपति जी

पंडित जी ने कई वर्ष तक गुरुकुल में उपाध्याय, आचार्य तथा मुख्याधिष्ठाता के पदों पर रहकर बड़ी योग्यता से कार्य किया। इसके साथ-साथ जहाँ वे आर्यसमाजों के वार्षिकोत्सव पर भी जाते रहे वहाँ उच्चकोटि का आर्य साहित्य भी तैयार करते रहे। क़ई अनिवार्य कार्यों से श्री पंडित जी को गुरुकुल छोड़ना पड़ा। लाहौर जाकर पंडित जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब का इतिहास लिखने में घोर परिश्रम किया। स्वास्थ्य पहले ही अच्छा न था। दर्द-गुर्दे की शिकायत पुरानी थी। उसके लिए

शल्यक्रिया करवानी पड़ी जिससे दुर्बलता और भी बढ़ गई। इसी बीच में टाईफाईड का उग्र-आक्रमण हुआ। अनेक यत्न किए गए, किंतु यह रोग अंत में घातक सिद्ध हुआ।

डॉक्टर तांबे

डॉ. गोपाल रामचंद्र तांबे एक बहुत योग्य चिकित्सक थे। 1902 से आप कई रियासतों में स्टेट सर्जन तथा ब्रिटिश गवर्नमेंट में सिविल सर्जन रह चुके थे। आप वयोवृद्ध होते हुए भी कार्यशीलता, उत्साह तथा साहस में नवयुवकों से भी आगे बढ़े हुए थे। जिस समय गुरुकुल के अधिकारियों ने चिकित्सालय संबंधी अपनी श्रद्धानंद सेवाश्रम की नई स्कीम को समाचार पत्रों में प्रकाशित किया उसी समय गुरुकुल के सौभाग्य से डॉ. तांबे भी यही विचार कर रहे थे कि किसी उच्च कोटि की संस्था में बैठकर मानव जाति की सेवा में अपने जीवन की संध्या को बिताएँ। गुरुकुल को डॉक्टर तांबे जैसे व्यक्ति की तथा डॉ. तांबे को गुरुकुल जैसी संस्था की आवश्यकता थी। भाग्य ने दोनों को मिला दिया और गुरुकुल को शिक्षा तथा सेवा के कार्य में एक बहुत ही अनुभवी तथा दक्ष हाथ का सहारा मिल गया। डॉ. तांबे के आ जाने से गुरुकुल की सेवा की योजना तीव्र गति से बढ़ने लगी और उन्हीं की देख-रेख में श्रद्धानंद सेवाश्रम की स्थापना कर दी गई। पाँच-छः महीने के थोड़े से समय में ही डॉ. तांबे के नाम के साथ गुरुकुल के श्रद्धानंद मिशन की धूम दूर-दूर तक मच गई। पंचपुरी और आसपास के देहातों का तो कहना ही क्या। बहुत दूर-दूर से भी ऑपरेशन तथा चिकित्सा के लिए रोगी बड़ी संख्या में आने लगे। डॉक्टर साहब को सेवा की इतनी धुन थी कि वे सुबह-शाम, रात-दिन, कुछ भी न देखते हुए अनथक कार्य करने लगे। इतने बुढ़ापे में ऐसी असाधारण कार्यक्षमता देखकर लोग दाँतों तले उँगली दबाते थे। सेवा के साथ-साथ आयुर्वेद महाविद्यालय के विद्यार्थियों को प्रतिदिन नए-से-नए ऑपरेशन देखने को मिलने लगे। यह दूसरा बड़ा भारी लाभ था। गुरुकुल की ख्याति तथा सर्वप्रियता अलग बढ़ती जा रही थी। परंतु ईश्वर को यह मंजूर न था। यद्यपि डॉ. तांबे आजीवन गुरुकुल की सेवा करने का निश्चय करके आए थे। किंतु उनसे अधिक लाभ उठाना गुरुकुल के भाग्य में न था। दो महीने की छुट्टियों में डॉक्टर साहब अपने घर जा रहे थे। मार्ग में ही सहसा एक पुराने रोग ने उन पर आक्रमण किया। बहुत यत्न करने पर भी उनकी प्राण रक्षा न हो सकी। समाचार पत्रों द्वारा जिस गुरुकुलवासी ने जहाँ भी इस दारुण-समाचार को सुना वह वहीं मर्माहत हो गया। जो महान् समारंभ डॉ. तांबे की अध्यक्षता में गुरुकुल ने शुरू किया था वह बीच में ही रह गया। मेरे मन कुछ और है, कर्ता के कुछ और।

खंड-2

(1960 से अद्यतन)

अध्याय–1

यूनिवर्सिटी की स्थिति मान्य हो जाने के पश्चात् गुरुकुल कांगड़ी की प्रगति

❑ डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार
पूर्व कुलपति तथा कुलाधिपति

(1) सरकार द्वारा गुरुकुल कांगड़ी की यूनिवर्सिटी के रूप में मान्यता

ब्रिटिश सरकार से असहयोग करने के लिए जिस आंदोलन का महात्मा गांधी द्वारा प्रारंभ किया गया था, उसके परिणामस्वरूप अनेक राष्ट्रीय शिक्षण संस्थाएँ भारत में स्थापित हुई थीं। काशी विद्यापीठ, वाराणसी; जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली; गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद आदि इनमें मुख्य थीं। ये उच्च शिक्षा की केंद्र थीं, पर ब्रिटिश सरकार से इनका कोई संबंध नहीं था। इनके द्वारा दी जाने वाली डिग्रियों को भी सरकार स्वीकृत नहीं करती थी। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय और विश्वभारती, शांति निकेतन की स्थापना असहयोग आंदोलन के कारण नहीं हुई थी। गुरुकुल कांगड़ी के समान शांति निकेतन भी बीसवीं सदी के प्रारंभ में स्थापित हुआ था और सन् 1921 तक वहाँ उच्च स्तर की शिक्षा की भी व्यवस्था हो गई थी। ये दोनों शिक्षण संस्थाएँ सरकारी प्रभाव से पूर्णतया मुक्त थीं और इनका स्वरूप अविकल रूप से राष्ट्रीय था। सन् 1947 में स्वराज्य की स्थापना के अनंतर राष्ट्रीय शिक्षण संस्थाओं के लिए सरकार से संबंध न रखने का कोई अर्थ नहीं रह गया और इनके द्वारा स्वराज्य सरकार के साथ संबंध स्थापित करना प्रारंभ कर दिया गया। इसी के परिणामस्वरूप सन् 1951 में भारत की संसद् में स्वीकृत कानून द्वारा विश्वभारती को यूनिवर्सिटी बना दिया गया। इससे कुछ समय पूर्व ही उत्तर प्रदेश, बिहार और बंबई की सरकारों तथा अनेक यूनिवर्सिटियों ने गुरुकुल कांगड़ी की 'अलंकार' डिग्री को बी.ए. के समकक्ष स्वीकार कर लिया था, जिसके कारण गुरुकुल के स्नातकों के लिए सरकारी सर्विस प्राप्त कर सकने में कोई बाधा नहीं रह गई थी। पर गुरुकुल कांगड़ी सदृश पुरानी व सुविकसित शिक्षण संस्था के लिए यह पर्याप्त नहीं था। उसके संचालकों द्वारा प्रयत्न किया गया कि विश्वभारती, शांति

निकेतन के समान गुरुकुल भी सरकारी कानून के अधीन एक यूनिवर्सिटी बन जाए। पर इसमें उन्हें सफलता नहीं हुई। इस बीच सन् 1956 में भारत सरकार द्वारा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूनिवर्सिटी ग्रांट्स कमीशन) के निर्माण के लिए जो कानून स्वीकृत किया गया, उसकी धारा-3 के अनुसार यह व्यवस्था की गई थी कि देश में राष्ट्रीय महत्त्व के उच्च शिक्षा के जो अनेक शिक्षणालय विद्यमान हैं, उन्हें यूनिवर्सिटी की स्थिति की संस्था (Deemed to be University) स्वीकृत करने का आयोग को अधिकार हो। इसी धारा के अधीन विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने काशी विद्यापीठ, गुजरात विद्यापीठ, जामिया मिलिया इस्लामिया, टाटा इंस्टिट्यूट ऑफ् सोशल साइंसेज आदि अनेक शिक्षणालयों को यूनिवर्सिटी की स्थिति की संस्था स्वीकार किया और 19 जून, 1962 के नोटिफिकेशन द्वारा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की भी यही स्थिति मान ली गई। इस प्रकार कांगड़ी में गुरुकुल की स्थापना से ठीक साठ वर्ष पश्चात् सरकार के साथ उसका घनिष्ठ संबंध स्थापित हुआ और उसके विश्वविद्यालय विभाग का पूरा खर्च विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा दिया जाने लगा। जिन शिक्षणालयों को यूनिवर्सिटी की स्थिति की संस्थाओं के रूप में मान्यता प्राप्त हुई थी, उनमें से काशी विद्यापीठ सन् 1973 में उत्तर प्रदेश की राज्य सरकार द्वारा स्वीकृत कानून के अधीन चार्टर्ड यूनिवर्सिटी बन गया। गुरुकुल कांगड़ी द्वारा भी चार्टर्ड यूनिवर्सिटी बनने के लिए प्रयत्न किया गया, पर उसे सफलता प्राप्त नहीं हुई।

यूनिवर्सिटी की स्थिति प्राप्त हो जाने पर गुरुकुल के संचालकों को यह आवश्यकता अनुभव हुई कि अब उसके लिए नए संविधान तथा नियमावली का निर्माण किया जाना चाहिए। अब तक गुरुकुल कांगड़ी का प्रबंध आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब द्वारा गठित 'विद्या सभा' के अधीन था। विद्या सभा के संगठन पर पहले प्रकाश डाला जा चुका है। गुरुकुल के प्रधान अधिकारी मुख्याधिष्ठाता तथा आचार्य होते थे, जिनकी नियुक्ति विद्या सभा द्वारा की जाती थी। यूनिवर्सिटी के रूप में जो नई स्थिति गुरुकुल को प्राप्त हो गई थी, उसे दृष्टि में रखकर यह व्यवस्था की गई कि उच्च शिक्षा (स्नातक व स्नातकोत्तर स्तर की शिक्षा) के विभाग के लिए सीनेट का गठन किया जाए, जो विद्या सभा से पृथक् हो। विद्या सभा पूर्ववत् कायम रहे, पर उसके अधीन गुरुकुल के केवल वे विभाग (विद्यालय, म्यूजियम, गौशाला, कृषि आदि) रहें, जिनके लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से कोई आर्थिक सहायता प्राप्त नहीं होती और जिनका संचालन गुरुकुल को अपने साधनों द्वारा ही करना है। गुरुकुल के यूनिवर्सिटी विभाग के लिए जिस संविधान का अब निर्माण किया गया, वह प्रायः वैसा ही था जैसा कि सरकारी या चार्टर्ड यूनिवर्सिटियों का होता है। उसमें सीनेट (शिष्टपरिषद्), सिंडीकेट (कार्यपरिषद्) और एकेडेमिक कौंसिल (शिक्षा पटल) को स्थान दिया गया था और मुख्याधिष्ठाता तथा आचार्य

के स्थान पर अब कुलपति, उपकुलपति तथा कुलसचिव–ये उसके मुख्य पदाधिकारी रखे गए थे। इनके अतिरिक्त आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब के प्रधान को गुरुकुल यूनिवर्सिटी के चांसलर (कुलाधिपति) की स्थिति दी गई थी और कुलपति (वाइस चांसलर) की नियुक्ति का कार्य विजिटर के हाथों में रखा गया था। इस पदाधिकारी को सीनेट द्वारा नियुक्त किए जाने का प्रावधान किया गया था। नए संविधान को औपचारिक रूप से लखनऊ में पंजीकृत करा दिया गया, क्योंकि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से यूनिवर्सिटी के लिए शत-प्रतिशत अनुदान प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक था। इस प्रसंग में यह बात ध्यान देने योग्य है कि 'गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय' का जो नया संविधान इस समय तैयार किया गया, वह निर्दोष नहीं था। उसे जल्दी में तैयार किया गया था और उसमें अनेक कमियाँ रह गई थीं। आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब का गठन लोकतंत्रवाद पर आधारित है। उसके सदस्य विविध आर्यसमाजों द्वारा चुने जाते हैं और उसके प्रधान, मंत्री आदि पदाधिकारियों का चुनाव वार्षिक रूप से होता है। लोकतंत्रवाद के आधार पर निर्मित सभाओं में दलबंदी का विकसित हो जाना स्वाभाविक है। गुरुकुल यूनिवर्सिटी की सीनेट के सदस्यों में बहुसंख्या आर्य प्रतिनिधि सभा के पदाधिकारियों और उस द्वारा मनोनीत व्यक्तियों की थी, जिसके कारण गुरुकुल की सर्वोच्च सभा (सीनेट) के लिए भी दलबंदी के प्रभाव से मुक्त रह सकना संभव नहीं था। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय की दृष्टि में यह बात अनुचित थी। उनके द्वारा यह अनुरोध किया जा रहा था कि 'गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय' (Deemed to be University) के संविधान में ऐसे संशोधन किए जाएँ जिससे कि सरकारी अनुदान से चलने वाला यह शिक्षणालय आर्यसमाज की दलबंदी और उससे उत्पन्न झगड़ों से बचा रह सके। इन प्रयोजन से गुरुकुल ने अनेक प्रयत्न किए, संविधान में संशोधन के लिए अनेक कमेटियों की नियुक्ति की गई, कुछ संशोधन किए भी गए, पर अब तक भी ऐसा संविधान नहीं बन सका है, जो इस संस्था को दलबंदी की हानियों से मुक्त रख सके।

यह सब होते हुए भी गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की यूनिवर्सिटी की स्थिति अभी अक्षुण्ण रूप से विद्यमान है, यद्यपि इस संबंध में सरकार तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा समय-समय पर तर्क-वितर्क होते रहते हैं। किन आधारों पर किसी शिक्षणालय की यूनिवर्सिटी न होते हुए भी यूनिवर्सिटी की स्थिति स्वीकार की जाती है, इस विषय में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने कुछ नियम व मर्यादाएँ निर्धारित की हैं। उनके अनुसार किसी ऐसी संस्था को ही यूनिवर्सिटी की स्थिति दी जा सकती है, जो किन्हीं विशिष्ट विषयों के अध्यापन तथा शोध में व्यापृत हो और उस द्वारा किए जाने वाले ये कार्य उच्चतम स्तर के हों। यह सही है कि प्रारंभ में गुजरात विद्यापीठ और जामिया मिलिया इस्लामिया आदि अनेक शिक्षणालयों को

ऐतिहासिक कारणों से भी यूनिवर्सिटी की स्थिति प्रदान कर दी गई थी। इनमें किन्हीं विशिष्ट विषयों के विशेष अध्ययन व शोध की व्यवस्था नहीं थी और इनकी पाठविधि प्रायः उसी प्रकार की थी जैसी कि सरकार से मान्यता प्राप्त कॉलिजों की थी पर क्योंकि इनकी स्थापना भारत के स्वाधीनता संघर्ष के अंग के रूप में हुई थी, और इनका विकास पूर्णतया राष्ट्रीय ढंग से हुआ था, अतः इनकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तथा राजनीतिक आवश्यकता को दृष्टि में रखकर इन्हें यूनिवर्सिटी की स्थिति की संस्था मान लिया गया था। ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के आधार पर गुरुकुल कांगड़ी भी यूनिवर्सिटी की स्थिति का दावा कर सकता था और उसका वह दावा अयुक्तियुक्त भी न होता। संभवतः, उसे यूनिवर्सिटी की स्थिति देते हुए यह बात दृष्टि में रखी भी गई थी। पर गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना कतिपय विशिष्ट उद्देश्यों को सम्मुख रखकर की गई थी। उसे संस्कृत भाषा तथा वाङ्मय, वेद, शास्त्र और प्राचीन भारतीय ज्ञान-विज्ञान के अध्ययन व अनुशीलन के लिए स्थापित किया गया था। आधुनिक ज्ञान-विज्ञान तथा अंग्रेजी सदृश विदेशी भाषाओं के अध्ययन-अध्यापन को उसकी पाठविधि में इसलिए स्थान दिया गया था, क्योंकि उनसे वेदशास्त्रों के अभिप्राय को समझने में सहायता मिलती थी। गुरुकुल में इनका स्थान गौण था, प्रमुख स्थान वेदशास्त्रों का ही था। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को यही अभिप्रेत था कि वेदशास्त्र तथा प्राचीन भारतीय ज्ञान-विज्ञान के अध्ययन, अनुशीलन तथा शोध की यह संस्था केंद्र बने और इन्हीं की उच्चतम स्तर की शिक्षा की यहाँ व्यवस्था हो।

पर इस बात से भी इनकार नहीं किया जा सकता कि सन् 1962 में गुरुकुल कांगड़ी की यूनिवर्सिटी की स्थिति स्वीकार करते हुए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को यह भलीभाँति ज्ञात था कि इस शिक्षणालय में इतिहास, अर्थशास्त्र, गणित, मनोविज्ञान, पाश्चात्य दर्शन, रसायन आदि का भी उच्च स्तर का अध्ययन-अध्यापन होता है। उसे यह भी अभिप्रेत था कि यूनिवर्सिटी की स्थिति प्राप्त कर लेने पर भी इस संस्था में इन विषयों की शिक्षा पूर्ववत् जारी रहनी चाहिए। इसीलिए 9 अप्रैल, 1963 की आयोग की रिपोर्ट में कहा गया था कि गुरुकुल को शिक्षा विषयक भावी योजनाओं का निर्माण करते हुए साइंस तथा ह्यूमैनिटी के विषयों में समुचित समुतुलन कायम रखना चाहिए। इसीलिए सन् 1971 में गुरुकुल को साइंस फैकल्टी खोलने की भी अनुमति दे दी गई थी और वहाँ स्नातक स्तर तक न केवल रसायन का ही, अपितु भौतिकविज्ञान, प्राणिविज्ञान, गणित और वनस्पतिशास्त्र की भी पढ़ाई शुरू कर दी गई थी। प्रारंभ में ही जिन आठ विषयों में स्नातकोत्तर स्तर तक की शिक्षा की अनुमति प्रदान की गई थी, वे वेद, संस्कृत साहित्य, प्राचीन भारतीय इतिहास, प्राच्य दर्शन, अंग्रेजी, हिंदी, गणित और मनोविज्ञान थे। अंग्रेजी, गणित और मनोविज्ञान सदृश विषयों की शिक्षा वेदशास्त्रों के अध्ययन में सहायक रूप से न

होकर स्वतंत्र रूप में थी क्योंकि जो विद्यार्थी वेद या संस्कृत में एम.ए. करते थे, उन्हें न अंग्रेजी पढ़नी होती थी, न गणित और न कोई अन्य आधुनिक विषय। गणित आदि में ऐसे विद्यार्थी भी गुरुकुल से एम.ए. कर सकते थे, जिन्हें संस्कृत का कुछ भी ज्ञान न हो। वेदशास्त्रों के अध्ययन का तो उनके लिए प्रश्न ही नहीं था। यह स्वीकार करते हुए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के सम्मुख उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, उसका राष्ट्रीय स्वरूप, उसका एक स्वतंत्र विश्वविद्यालय के रूप में विकास आदि सब तथ्य विद्यमान थे। उसे अपने इस स्वरूप को कायम रखनां था, पर साथ ही संस्कृत, वेदशास्त्र, प्राचीन भारतीय इतिहास तथा अन्य प्राचीन ज्ञान-विज्ञान पर विशेष ध्यान भी उसे देना था, क्योंकि इनका अध्ययन-अध्यापन इस संस्था का मुख्य उद्देश्य था। यही कारण है कि बाद में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने इस बात पर जोर देना शुरू किया, जो सर्वथा उचित था। इसमें संदेह नहीं कि गुरुकुल कांगड़ी का भविष्य इसी बात पर निर्भर करता है कि सामान्य शिक्षा के साथ-साथ वह संस्कृत तथा वेदशास्त्रों के विशिष्ट अध्ययन-अध्यापन, अनुशीलन तथा शोध की किस उच्च स्तर तक व्यवस्था कर सकता है।

(2) यूनिवर्सिटी की स्थिति में गुरुकुल कांगड़ी की प्रगति

सन् 1962 में प्रोफेसर सत्यव्रत सिद्धांतालंकार गुरुकुल कांगड़ी के मुख्याधिष्ठाता थे। वह गुरुकुल के सुयोग्य स्नातक थे और सार्वजनिक जीवन में भी उन्हें प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त था। राष्ट्रपति द्वारा उन्हें राज्यसभा का सदस्य भी मनोनीत किया जा चुका था। गुरुकुल को यूनिवर्सिटी की स्थिति स्वीकृत कराने में भी उनका महत्त्वपूर्ण कर्तृत्व था। अब उन्हें ही गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय (Deemed to be University) का कुलपति (वाइस चांसलर) नियुक्त किया गया। आचार्य के पद पर तब पंडित प्रियव्रत वेदवाचस्पति थे। वह वेदशास्त्रों के प्रकांड विद्वान् थे और आर्यसमाज के क्षेत्र में उनकी स्थिति अत्यंत सम्मानास्पद थी। अब भी वही गुरुकुल के उपकुलपति (प्रो वाइस चांसलर या आचार्य) रहे। संविधान के अनुसार सीनेट, सिंडीकेट, शिक्षा पटल आदि का गठन कर लिया गया और यूनिवर्सिटी के रूप में गुरुकुल का संचालन सुचारु रूप से होने लगा। जिन आठ विषयों में स्नातकोत्तर स्तर की शिक्षा को प्रारंभ करने की अनुमति विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्रदान की गई थी, उनके लिए नए प्राध्यापकों की नियुक्ति की गई। पहले गुरुकुल कांगड़ी में केवल स्नातक स्तर तक की शिक्षा की व्यवस्था थी और प्रायः सभी विषयों के अध्यापन के लिए एक-एक प्राध्यापक रखा जाया करता था, पर अब क्योंकि स्नातकोत्तर स्तर की शिक्षा भी प्रारंभ की गई, अतः प्रत्येक विषय के लिए चार-चार प्राध्यापक नियुक्त किए गए। गुरुकुल के गुरु वर्ग के ये नए महानुभाव प्रायः ऐसे व्यक्ति थे, जो इस संस्था के आदर्शों, मान्यताओं तथा परंपराओं से

अपरिचित थे और जिनकी शिक्षा-दीक्षा उन कॉलेजों में हुई थी जिसकी शिक्षा पद्धति को दूषित समझकर गुरुकुलों की स्थापना की गई थी। इन नए प्राध्यापकों में अनेक ऐसे भी थे, जिनकी वैदिक धर्म तथा आर्यसमाज के प्रति भी आस्था नहीं थी। गुरुकुल कांगड़ी को स्थापित हुए आधी सदी से अधिक समय बीत चुका था। वहाँ शिक्षा प्राप्त कर सैकड़ों विद्यार्थी स्नातक हो चुके थे। गुरुकुल यह दावा किया करता था कि उसके स्नातक हिंदी, संस्कृत, वेदशास्त्र एवं प्राचीन भारतीय इतिहास के प्रकांड पंडित होते हैं। इस दावे में सच्चाई भी थी। गुरुकुल के बहुत से स्नातकों ने इन विषयों के गंभीर विद्वानों के रूप में अच्छी ख्याति भी प्राप्त की थी, पर आश्चर्य की बात है कि वेद, हिंदी, संस्कृत, प्राचीन भारतीय इतिहास और दर्शनशास्त्र सदृश विषयों के बहुसंख्यक प्राध्यापक भी ऐसे व्यक्ति नियुक्त किए गए, जो गुरुकुल के स्नातक नहीं थे। इसका परिणाम यह हुआ कि यूनिवर्सिटी की स्थिति के गुरुकुल का वातावरण उन आदर्शों व परंपराओं के अनुरूप नहीं रह गया, जिनको सम्मुख रखकर इस संस्था की स्थापना की गई थी।

यूनिवर्सिटी की स्थिति के गुरुकुल में स्नातकोत्तर कक्षाएँ प्रारंभ तो कर दी गई, पर उनसे लाभ उठाने के लिए विद्यार्थियों का पर्याप्त संख्या में प्राप्त कर सकना सुगम नहीं हुआ। गुरुकुल कांगड़ी के महाविद्यालय विभाग में अब तक वही विद्यार्थी प्रविष्ट हुआ करते थे, जिन्होंने कांगड़ी के गुरुकुल विद्यालय या उसके किसी शाखा गुरुकुल में नियमपूर्वक शिक्षा प्राप्त कर 'विद्याधिकारी' परीक्षा उत्तीर्ण कर ली हो। ऐसे विद्यार्थियों की संख्या अधिक नहीं होती थी और इसीलिए गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से 'अलंकार' (विद्यालंकार और वेदालंकार) परीक्षा उत्तीर्ण कर जो विद्यार्थी प्रति वर्ष स्नातक हुआ करते थे, वे दस-बारह से अधिक नहीं होते थे। इनसे यूनिवर्सिटी की स्थिति के गुरुकुल की स्नातकोत्तर कक्षाओं के लिए पर्याप्त विद्यार्थी प्राप्त नहीं किए जा सकते थे। अतः यह व्यवस्था की गई कि सामान्य यूनिवर्सिटियों से बी.ए. परीक्षा उत्तीर्ण विद्यार्थी भी गुरुकुल की स्नातकोत्तर कक्षाओं में प्रवेश प्राप्त कर सकें। वेद और संस्कृत सदृश विषयों में स्नातकोत्तर स्तर (एम.ए.) की कक्षाओं में प्रवेश के लिए अनेक ऐसी शिक्षण संस्थाओं की डिग्रियों को मान्यता दे दी गई, जिनमें प्रधानतया संस्कृत का ही अध्ययन होता था, पर इन सब व्यवस्थाओं से भी गुरुकुल में विद्यार्थियों की कमी की समस्या का समाधान नहीं किया जा सका। गुरुकुल के संचालकों व पदाधिकारियों के सम्मुख यह समस्या विद्यमान थी। पर वे यह समझते थे कि गुरुकुल को नया रूप प्राप्त हुए अभी बहुत कम समय हुआ है। उच्च शिक्षा की जो सुविधाएँ वहाँ विद्यमान हैं, उनसे परिचित होने में कुछ समय का लग जाना स्वाभाविक ही है। धीरे-धीरे विद्यार्थियों की कमी की समस्या भी हल हो जाएगी। इसमें संदेह नहीं कि गुरुकुल कांगड़ी को यूनिवर्सिटी के नए रूप में सुव्यवस्थित करने में प्रोफेसर सत्यव्रत सिद्धांतालंकार ने अनुपम कर्तृत्व प्रदर्शित

किया। गुरुकुल की मान्यताएँ तथा परंपराएँ अक्षुण्ण रहें, इसकी ओर भी उनका ध्यान था। संविधान के अनुसार कुलपति की नियुक्ति तीन वर्ष के लिए की जाती है। सन् 1966 में सत्यव्रत जी को कुलपति बने तीन वर्ष हो चुके थे। अतः अब उनके स्थान पर पंडित महेंद्रप्रताप शास्त्री की नियुक्ति की गई। यह केवल एक वर्ष के लगभग इस पद पर रहे। उनके पश्चात् क्रमशः पंडित प्रियव्रत वेदवाचस्पति (1968 से 1971 तक) और पंडित रघुवीरसिंह शास्त्री (1971 से 1974) गुरुकुल कांगड़ी यूनिवर्सिटी के कुलपति बने। ये दोनों संस्कृत भाषा तथा वेदशास्त्रों के प्रकांड पंडित थे और आर्यसमाज में भी इनकी उच्च स्थिति थी। गुरुकुल की परंपराओं से भी ये परिचित थे। पर इन्हें आर्य प्रतिनिधि सभा के आंतरिक झगड़ों के कारण विकट परिस्थिति का सामना करना पड़ा।[1] इसके पश्चात् इतिहास के सुप्रसिद्ध विद्वान् डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार कुलपति पद पर नियुक्त हुए। 2 जुलाई, 1974 को उन्होंने विश्वविद्यालय का कार्यभार सँभाला। डॉ. विद्यालंकार को एक ओर, आर्य प्रतिनिधि सभा की दलबंदी के कारण संकट का सामना करना पड़ा, तो दूसरी ओर, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा 3 नवंबर, 1973 को प्रेषित पुनरीक्षण समिति की रिपोर्ट से भी धक्का लगा। डॉ. विद्यालंकार चाहते थे कि गुरुकुल को प्राचीन भारतीय ज्ञान के ऐसे शोध केंद्र के रूप में विकसित किया जाए, जिसके प्रति विश्व भर के प्राच्य विद्या विशारद आकृष्ट हों। डॉ. विद्यालंकार के प्रयत्न से ही विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को अपने निर्णय पर पुनर्विचार करना पड़ा। डॉ. विद्यालंकार ने गुरुकुल को संस्कृत, वेदशास्त्र तथा प्राचीन भारतीय ज्ञान के अध्ययन-अध्यापन तथा शोध का महत्त्वपूर्ण केंद्र न बना पाने की स्थिति में स्वेच्छा से कुलपति पद से त्यागपत्र दे दिया तथा उसके बाद शिक्षाशास्त्री और प्रशासनिक योग्यता के धनी श्री बलभद्र कुमार हूजा ने कुलपति पद स्वीकार किया। श्री हूजा भारतीय प्रशासनिक सेवा से निवृत्त हुए प्रशासक थे तथा मणिपुर लोकसेवा आयोग के अध्यक्ष भी रह चुके थे, लेकिन दुर्भाग्य से विश्वविद्यालय में सभाओं के त्रिशाखन के कारण विकट परिस्थिति पैदा हो गई और कुछ असामाजिक तत्त्वों ने गुरुकुल की सुरक्षा पर ही प्रश्नसूचक चिह्न लगा दिया।

न्यायालय के निर्णय द्वारा 1980 में श्री बलभद्र कुमार हूजा पुनः कुलपति तथा मुख्याधिष्ठाता के रूप में कार्य करने लगे तथा अब उनके तत्त्वावधान में गुरुकुल में एक नए युग का प्रारंभ हुआ। भारत के आधुनिक विश्वविद्यालयों के मानचित्र पर गुरुकुल को खड़ा करने का श्रेय श्री बलभद्र कुमार हूजा को ही है। उनके समय में विश्वविद्यालय की बहुमुखी प्रगति हुई। डॉ. सत्यव्रत सिद्धांतालंकार परिदृष्टा बने तथा कुलाधिपति श्री वीरेंद्र, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब नियुक्त हुए। इसके बाद श्री सत्यकाम वर्मा कुलपति बने, पर वह अपना कार्यकाल पूरा न कर सके। उनके स्थान पर श्री रामचंद्र शर्मा, आइ.ए.एस., कुलपति नियुक्त हुए। शर्मा जी के

बाद सुभाष विद्यालंकार ने कुलपति का कार्यभार सँभाला। डॉ. विद्यालंकार के कार्यकाल में विश्वविद्यालय को प्राचीन गुरुकुलीय मूल्यों के प्रतिष्ठापन की प्रेरणा मिली। श्री विद्यालंकार के बाद कुछ समय के लिए प्रो. रामप्रसाद वेदालंकार ने कार्यवाहक कुलपति का कार्य किया। वह हूजा जी के समय से ही आचार्य एवं उपकुलपति के पद पर कार्य कर रहे थे। प्रो. वेदालंकार के समय ही जून 1993 में प्रो. धर्मपाल आर्य, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति बने। वह दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान रह चुके हैं। हिंदी के लब्धप्रतिष्ठ विद्वान् हैं तथा अंग्रेजी और संस्कृत पर भी उनका अधिकार है। प्रो. धर्मपाल जी के कार्यकाल में विश्वविद्यालय ने असाधारण उन्नति की। भवन निर्माण, प्रकाशन, नए विषयों का समावेश, परीक्षा तथा अध्ययन सत्रों का नियमितीकरण उनकी उपलब्धियाँ हैं।

गुरुकुल के विकास की संभावनाएँ अभी समाप्त नहीं हुई हैं, उसे और आगे जाना है। विज्ञान, प्रौद्योगिकी तथा तकनीकी विषयों के अध्ययन-अध्यापन के क्षेत्र में विश्वविद्यालय निश्चित रूप से कुछ ठोस कार्य कर सके, इसके लिए विश्वविद्यालय प्रशासन प्रयत्नशील है।[2]

संदर्भ

1. आर्यसमाज का इतिहास, भाग-3 से साभार।
2. संपादक की ओर से।

अध्याय-2

कुलपतियों के प्रतिवेदन : प्रगति के प्रेरक चरण (1976-1998)

1976–चिरविकास की सतत यात्रा

❑ श्री बलभद्र कुमार हूजा

पराधीन भारत को सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक और शैक्षणिक दासता से मुक्त करने का संकल्प लेकर दंडी स्वामी विरजानंद के व्रती शिष्य महर्षि दयानंद ने सर्वप्रथम स्वदेशी की धारणा व्यक्त की थी। भारत के क्षीणप्राय गौरव को पुनः प्राप्त करने का यह एक वैचारिक आंदोलन था जिसको मूर्तरूप देने के लिए महर्षि के शिष्य स्वामी श्रद्धानंद ने गुरुकुल की स्थापना "उपह्वरे गिरीणां संगमे च नदीनां धिया विप्रोऽजायत।" इस यजुर्वेद के सूत्र को ध्यान में रखकर पर्वतों की तलहटी में गंगा नदी के शांत तट पर सन् 1902 में की थी। गुरुकुल एक संस्था नहीं, एक विचार था, एक आंदोलन था। गुरुकुल की स्थापना का उद्देश्य वैदिक साहित्य, दर्शनशास्त्र आदि प्राच्य विषयों के तथा आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के अध्ययन-अध्यापन के साथ राष्ट्रीयता की रक्षा करना था। सरकारी विश्वविद्यालयों में उस समय प्रचलित दूषित शिक्षा पद्धति से हटकर समानता के आधार पर राष्ट्रीयता की शिक्षा देने की योजना गुरुकुल ने तैयार की। गणित, रसायन, भौतिक विज्ञान, जीवविज्ञान, वनस्पति शास्त्र, भारतीय एवं पाश्चात्य दर्शन, प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति, कृषि तथा आयुर्वेद जैसे विषयों को उच्च स्तर पर राष्ट्रभाषा हिंदी के माध्यम से पढ़ाए जाने की योजना भी सर्वप्रथम इसी शिक्षण संस्थान में क्रियान्वित हुई। राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वान् प्रो. साठे, प्रो. प्राणनाथ, प्रो. रामदेव, डॉ. जयचंद्र विद्यालंकार, आचार्य पद्मसिंह शर्मा, डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार और पंडित सत्यव्रत सिद्धांतालंकार जैसे विद्वानों ने विकासवाद, अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, भारतीय इतिहास, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान और हिंदी आलोचना जैसे विषयों पर हिंदी में उस समय उत्कृष्ट ग्रंथ लिखे।

गुरुकुल के वैदिक अनुसंधान विभाग से मौलिक और खोजपूर्ण पुस्तकें भी प्रकाशित हुईं, जिनमें पं. गंगादत्त जी कृत 'पाणिनीयाष्टकम्'; आचार्य रामदेव कृत

'भारतवर्ष का इतिहास'; 'आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति कृत 'वेद का राष्ट्रीय गीत', 'वरुण की नौका', 'मेरा धर्म'; स्वामी अभयदेव कृत 'वैदिक विनय', 'ब्राह्मण की गौ' तथा 'वैदिक ब्रह्मचर्य गीत'; पं. धर्मदेव विद्यामार्तंड कृत 'वैदिक कर्तव्यशास्त्र'; पं. भगवद्दत्त कृत 'ऋभु देवता', 'वैदिक स्वप्न विज्ञान' आदि उल्लेखनीय कृतियाँ हैं। राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रचार कार्य में पं. सत्यव्रत सिद्धांतालंकार उल्लेखनीय हैं। हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में पं. इंद्र विद्यावाचस्पति, पं. सत्यदेव विद्यालंकार, पं. भीमसेन विद्यालंकार, पं. चंद्रगुप्त विद्यालंकार तथा पं. सत्यकाम विद्यालंकार जैसे स्नातक ख्याति प्राप्त पत्रों के संपादन में प्रसिद्धि पा चुके हैं।

जब-जब देश का कोई भाग दुर्भिक्ष, जल विप्लव, महामारी व विदेशी आक्रमण आदि से आक्रांत हुआ, तब-तब इस संस्था ने तन-मन-धन से अपना सहयोग अर्पित किया। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में भी गुरुकुल की भूमिका उल्लेखनीय है। जब-जब देश की पुकार हुई तब-तब यहाँ के अधिकारियों, स्नातकों, कर्मचारियों तथा छात्रों ने तत्संबंधी कार्यक्रम में सक्रिय भाग लिया।

गुरुकुल कांगड़ी के शैक्षणिक स्तर को देखते हुए जून 1962 में विश्वविद्यालय अनुदान विभाग ने इसे विश्वविद्यालय की मान्यता प्रदान की। गुरुकुल की विद्यालंकार, वेदालंकार, सिद्धांतालंकार, आयुर्वेदालंकार, वेदवाचस्पति तथा विद्यावाचस्पति उपाधियाँ पहले से ही विश्व विश्रुत थीं। इनके अतिरिक्त अब हिंदी, अंग्रेजी, वेद, संस्कृत, दर्शन, मनोविज्ञान, प्राचीन भारतीय इतिहास और गणित जैसे प्रमुख आठ विषय स्नातकोत्तर स्तर पर खोले गए और भौतिकविज्ञान, रसायनशास्त्र, जीवविज्ञान, वनस्पतिशास्त्र तथा गणित विषय को लेकर बी.एस-सी. कक्षाएँ प्रारंभ की गईं। शोधकार्य को भी प्रोत्साहन दिया गया। वेद, संस्कृत, हिंदी और प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व में उच्चस्तरीय मौलिक अनुसंधान करके अनेक छात्र पी-एच.डी. उपाधि प्राप्त कर चुके हैं। वेद महाविद्यालय, विज्ञान महाविद्यालय, आयुर्वेद महाविद्यालय, द्रव्यविज्ञान संग्रहालय, पुरातत्त्व संग्रहालय तथा पुस्तकालय अपनी महत्तम उपलब्धियों एवं उल्लेखनीय कृतियों के कारण इस जनपद में अग्रगण्य हैं।

गुरुकुल शिक्षा पद्धति में जो प्रधान मूल भावना निहित है वह है गुरु-शिष्य का अंतरंग संबंध। ऋषियों की मर्यादा के अनुसार जब बालक गुरुकुल में प्रवेश करता है तब उसका उपनयन संस्कार किया जाता है। उपनयन का अर्थ ही है—समीप लाना। अथर्ववेद के अनुसार आचार्य शिष्य का उपनयन संस्कार करके उसे इतना अधिक अपने निकट ले आता है, मानो माता-पिता के समान उसे अपने गर्भ में ही स्थापित कर लेता है। इसके अतिरिक्त विविध विद्याओं का शिक्षण, ब्रह्मचर्य और सादा जीवन उच्च विचार, तपस्या, धनी-गरीब सबके साथ समान व्यवहार, जाति-पाँति का भेद न होना, प्राचीन और नवीन विद्याओं का समन्वय आदि

भी गुरुकुल शिक्षण प्रणाली के आधारभूत अंग हैं। इन्हीं आदर्शों पर यह गुरुकुल विश्वविद्यालय चलने का यत्न कर रहा है। कभी हम लड़खड़ाते भी हैं, गिरते-पड़ते हैं, तो भी हमारी आगे बढ़ने की दिशा उन्हीं आदर्शों के अनुसार निर्धारित है और उन्हीं आदर्शों की पूर्ति के लिए हम प्रभु का, देश के कर्णधारों का और जनता-जनार्दन का आशीर्वाद चाहते हैं।

इस विश्वविद्यालय की नींव है, हमारा विद्यालय विभाग। इसमें हम छः वर्ष से दस वर्ष की आयु के बालकों को प्रविष्ट करते हैं तथा सभी के लिए छात्रावास में निवास अनिवार्य है। यहाँ देश के सभी प्रांतों से और कभी-कभी विदेशों से भी बालक आश्रम जीवन के यापन तथा शिक्षा ग्रहण के लिए आते हैं। विद्यालय विभाग में हम विज्ञान, गणित, अंग्रेजी, हिंदी, इतिहास, भूगोल आदि विषयों की शिक्षा तो देते ही हैं, जिनका बाह्य शिक्षणालयों में प्रबंध है, किंतु उसके अतिरिक्त संस्कृत तथा धर्मशिक्षा की अनिवार्य रूप से विशेष शिक्षा दी जाती है। यहाँ दशम कक्षा तक के छात्र आश्रम प्रणाली से रहकर अध्ययन, शारीरिक व्यायाम, खेलकूद, स्काउटिंग आदि की शिक्षा ग्रहण करते हैं।

यहाँ का वेद महाविद्यालय भी अपनी एक पृथक् विशिष्टता रखता है। इस महाविद्यालय में वेदालंकार परीक्षा में वेद, वेदांग, संस्कृत साहित्य तथा भारतीय दर्शनशास्त्र की अनिवार्य उच्च शिक्षा के साथ-साथ अंग्रेजी भाषा, हिंदी साहित्य, मनोविज्ञान, इतिहास आदि के शिक्षण का प्रबंध है। इस प्रकार प्राचीनता और नवीनता का सुंदर समन्वय है। इसके अतिरिक्त इस महाविद्यालय में वेद तथा संस्कृत विषयों में एम.ए. तथा पी-एच.डी. का भी प्रबंध है।

कला महाविद्यालय में विद्यालंकार परीक्षा में संस्कृत तथा प्राचीन भारतीय संस्कृति का सामान्य ज्ञान अनिवार्य रूप से कराया जाता है। इसके अतिरिक्त छात्र कोई तीन विषय अपनी इच्छानुसार चुनते हैं। आगे विभिन्न विषयों में एम.ए. तथा पी-एच.डी. की भी व्यवस्था है। विज्ञान महाविद्यालय संप्रति बी.एस-सी. तक है। किंतु शीघ्र ही एम.एस-सी. कक्षाएँ खोलने की भी योजना है। विज्ञान का क्रियात्मक शिक्षण देने के लिए हमारे पास सुसज्जित एवं सुव्यवस्थित प्रयोगशालाएँ विद्यमान हैं।

आयुर्वेद महाविद्यालय में पाँच वर्ष का पाठ्यक्रम है। जिसमें आयुर्वेदिक तथा एलोपैथिक, दोनों चिकित्सा प्रणालियों का ज्ञान कराया जाता है। छात्रों को चिकित्सा का क्रियात्मक ज्ञान कराने के लिए तथा समीपस्थ ग्रामवासियों की सेवा के लिए रोगी-सुश्रूषागृह भी विद्यमान है जिसमें लगभग सौ रोगियों के लिए शय्याएँ हैं। रोगियों की चिकित्सा निशुल्क की जाती है। शल्य क्रिया एवं एक्स रे का भी प्रबंध है। समय-समय पर रोगियों की सेवा के लिए कैंप भी लगाए जाते हैं, जिनमें कुशल चिकित्सकों द्वारा विभिन्न प्रकार के ऑपरेशन किए जाते हैं। आयुर्वेद के

प्रचार में गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है तथा इस फार्मेसी द्वारा निर्मित की हुई ओषधियाँ अपनी प्रामाणिकता तथा विशुद्धता के लिए प्रख्यात हैं।

विश्वविद्यालय विभाग में गुरुकुलीय आचार-व्यवहार में छात्र को रखकर उच्च शिक्षा दी जाती है।

यहाँ एक प्राचीन संग्रहालय भी है जिसकी स्थापना 1950 ई. में की गई थी। इस संग्रहालय में प्राचीनतम सोने, चाँदी, ताँबे, अष्टधातु आदि के सिक्के, पांडुलिपियाँ, मूर्तियाँ, मृण्मूर्तियाँ, पुरातन चित्रकला आदि के नमूने विद्यमान हैं। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अनुदान से संग्रहालय की नई इमारत पी.डब्ल्यू.डी. द्वारा बनाई जा रही है। इस भवन के बनने पर उक्त सामग्री विधिवत् प्रदर्शित की जाएगी।

इस संस्था में एक विशाल पुस्तकालय है जिसमें विभिन्न विषयों की लगभग बानबे हजार पुस्तकें हैं। पुस्तकालय में इस विश्वविद्यालय के छात्रों के अतिरिक्त बाहर से भी शोधार्थी आते हैं, जो यहाँ के संदर्भग्रंथों का लाभ उठाते हैं। मैं यहाँ इस बात का उल्लेख करना चाहूँगा कि गुरुकुल पुस्तकालय में हम आर्यसमाज के संपूर्ण साहित्य का संग्रह करने जा रहे हैं, ताकि भविष्य में यह सामग्री शोधार्थियों को आसानी से सुलभ हो सके।

इसके अतिरिक्त हमारे पुस्तकालयाध्यक्ष श्री जबरसिंह सेंगर के नेतृत्व में गुरुकुल के समीपस्थ ग्रामीण क्षेत्र में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय पुस्तकालय की दस शाखाएँ खोलने का भी निर्णय लिया गया है, ताकि ग्रामीण जनता को उनके लिए उपयोगी साहित्य उपलब्ध कराया जा सके। यह योजना राजा राममोहन राय फाउंडेशन के सहयोग से आरंभ की जा रही है।

उन्हीं ग्रामों में मेरे सहयोगी डॉ. अनंतानंद के नेतृत्व में आयुर्वेद चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने की भी योजना है।

अब मैं आपके समक्ष इस संस्था ने गतवर्ष जो कार्य किया है उसका संक्षिप्त ब्यौरा प्रस्तुत करना चाहूँगा।

सबसे पहले मैं श्रद्धानंद शोध संस्थान का जिक्र करूँगा। आर्य साहित्य में शोध की आवश्यकता को दृष्टिगोचर रखते हुए इस संस्थान की स्थापना की गई है। इसके निर्देशक मेरे सुयोग्य अग्रज डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार हैं। हाल ही में इस संस्थान के तत्त्वावधान में डॉ. रामनाथ वेदालंकार का शोध प्रबंध 'वेदों की वर्णन शैलियाँ' प्रकाशित किया गया है। डॉ. हरगोपालसिंह का 'अथर्ववेद में चिकित्सा पद्धति' और डॉ. विनोदचंद्र सिन्हा का 'शुंगकालीन भारत' भी प्रकाशित किए जा रहे हैं। डॉ. सत्यकेतु जी का यह भी संकल्प है कि गुरुकुल का पचहत्तर वर्ष का इतिहास सितंबर 1976 तक पूरा कर दिया जाए, ताकि इसे दिसंबर 1976 में होने वाली स्वामी

श्रद्धानंद की बलिदान अर्द्धशताब्दी के अवसर पर आर्यजगत् के सम्मुख प्रस्तुत किया जा सके।

जैसा कि विद्वद्जनों को विदित ही है, प्रोफेसर गुरुदत्त ने पिछली शताब्दी में 'वैदिक मैगजीन' का प्रकाशन प्रारंभ किया था। उनके देहांत के बाद यह बंद हो गया था। पुनः प्रो. रामदेव ने इसका प्रकाशन गुरुकुल से 1907 में प्रारंभ किया और यह पत्रिका 1935 तक सफलतापूर्वक प्रकाशित होती रही। इस पत्रिका के माध्यम से तालस्ताय एवं रोम्याँ रोलाँ का रामदेव जी से पत्र व्यवहार हुआ। अब हमने 'वैदिक पाथ' के नाम से 'वैदिक मैगजीन' को पुनर्जीवित किया है। यह पत्रिका अंग्रेजी में है और इसके माध्यम से भारत के अहिंदी-भाषी प्रदेशों में एवं अंग्रेजी भाषा-भाषी जगत् में भारतीय संस्कृति के प्रसार को बढ़ावा मिलेगा। इसके संपादन का भार भी डॉ. सत्यकेतु जी ने सँभाला है। हम उनके बहुत आभारी हैं।

इसी प्रकार इन्हीं दिनों 'शोध भारती' के नए इश्यू का भी प्रकाशन होने जा रहा है। इनके अतिरिक्त, यहाँ से 'गुरुकुल पत्रिका' प्रकाशित होती है। वैसे तो यह पुरानी पत्रिका है, पर कई कारणों से उसका नियमपूर्वक प्रकाशन नहीं हो पा रहा था। अब ऐसी व्यवस्था कर दी गई है कि उसका नियमपूर्वक प्रकाशन हो। इसके मुख्य संपादक पहले पं. भगवद्दत थे। उनके अवकाश ग्रहण के बाद अब श्री रामाश्रय ने यह भार सँभाला है।

इसी प्रकार यहाँ के अध्यापकगण की देखरेख में विद्यालय के बच्चों ने 'ध्रुव' और विश्वविद्यालय के छात्रों ने 'प्रह्लाद' पत्रिकाओं का प्रकाशन प्रारंभ करने का निश्चय किया है। प्रह्लाद पत्रिका में इस प्रकार की जानकारी उपलब्ध की जाएगी जिससे कि छात्रों को रोजगार ढूँढ़ने में सुविधा हो। बच्चों के ये दोनों प्रोजेक्ट श्लाघनीय हैं।

जैसा कि मैं ऊपर कह चुका हूँ गुरुकुल शब्द ही एक पारिवारिक भावना का प्रतीक है। इस भावना को सुदृढ़ करने हेतु हमने यहाँ बारह परिवार बनाए हैं। वर्ष में बारह मास होते हैं। अतः जन्म के मास के अनुसार हमने छात्रों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों को बारह परिवारों में संगठित किया है एवं इन परिवारों के नाम आधुनिक भारत के निर्माता नेताओं के नामों से जोड़ दिए हैं; जैसे, नेहरू परिवार, श्रद्धानंद परिवार, लाजपत परिवार, दयानंद परिवार, भगतसिंह परिवार आदि। उसी के अनुसार यह निश्चय किया है कि गुरुकुल पत्रिका के भी उन्हीं नायकों के नाम पर बारह अंक निकाले जाएँ। अभी तक नेहरू अंक (नवंबर 1975), श्रद्धानंद अंक (दिसंबर 1975), लाजपतराय अंक (जनवरी 1976), दयानंद अंक (फरवरी 1976), एवं भगतसिंह अंक (मार्च 1976) निकल चुके हैं। इसके बाद आर्यभट्ट अंक (अप्रैल), रवींद्र अंक (मई), तिलक अंक (जुलाई), अरविंद अंक (अगस्त), विनोबा अंक (सितंबर), गांधी अंक (अक्टूबर) निकालने की योजना है। तात्पर्य यह है कि प्रत्येक

कुलवासी इन महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा प्राप्त करता हुआ अपने कर्तव्यपथ पर अग्रसर हो।

श्रीमती इंदिरा गांधी के बीस सूत्रीय कार्यक्रम को क्रियान्वित करने के संबंध में यहाँ के आचार्यों ने फरवरी में एक गोष्ठी की। उसकी रिपोर्ट गुरुकुल पत्रिका में छप गई है। इस प्रोग्राम के अंतर्गत विश्वविद्यालय में बुक बैंक की व्यवस्था की जा रही है, ताकि छात्रों को पाठ्यपुस्तकें आसानी से सुलभ हो सकें।

छात्रों के आश्रमों में अर्थात् होस्टलों में निवास एवं भोजनादि की व्यवस्था के लिए हमने आश्रमाध्यक्षों को नियुक्त किया है। उनसे अपेक्षित है कि वे आश्रम में ही रहें और छात्रों की आवश्यकताओं, दिनचर्या आदि की समुचित देखरेख करें। श्री क्रांतिकृष्ण मुख्य आश्रमाध्यक्ष हैं।

छात्रों के स्वास्थ्य को बढ़ावा देने हेतु हम यहाँ एक शारीरिक प्रशिक्षण विभाग एवं योग्य संस्थान स्थापित करना चाहते हैं। विश्वविद्यालय में घुड़सवारी और संगीत की कक्षाएँ भी प्रारंभ करने की योजना है। इसके साथ-साथ यहाँ स्टेडियम, वोट क्लब आदि खोलने का भी प्रस्ताव है। लेकिन ये सभी योजनाएँ धनाभाव के कारण रुकी हुई हैं।

हमारे एक छात्र ब्रह्मचारी देवकेतु ने कार रोकने का अभ्यास किया है तथा अन्य छात्रों ने यौगिक आसनों में दिलचस्पी दिखलाई है। इनके चित्र आपने गुरुकुल पत्रिका के दयानंद अंक में देखे होंगे। ब्रह्मचारी देवकेतु को 1976 के 'अभिमन्यु श्री' सम्मान से सुशोभित किया गया है। इसी कार्यक्रम के अंतर्गत राजेंद्र कुमार को उत्तरकाशी में हो रहे पर्वतारोहण शिविर में भेजा है। आशा है कि वह वापसी पर यहाँ के छात्रों को इस दिशा में प्रेरणा दे पाएँगे।

गुरुकुल की एन.सी.सी. यूनिट ने प्रो. वीरेंद्र के नेतृत्व में सराहनीय सफलता प्राप्त की है। आर्यसमाज शताब्दी जुलूस में उनके प्रदर्शन की सब ओर से सराहना की गई थी।

गुरुकुल के भावी विकास के लिए तथा वर्तमान दशा को सुधारने के लिए माननीय कुलाधिपति महोदय ने पिछले मास एक उच्चस्तरीय समिति का गठन किया है। इसके अध्यक्ष पंजाब विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुलपति, पद्मभूषण डॉ. सूरजभान हैं। इसके अन्य सदस्य श्री सत्यव्रत सिद्धांतालंकार, भूतपूर्व कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय; पं. अमरनाथ विद्यालंकार, संसद सदस्य; श्री भक्तदर्शन जी, कुलपति, कानपुर विश्वविद्यालय; श्री ध्यानपाल सिंह, भूतपूर्व कुलपति, पंतनगर विश्वविद्यालय; श्री मसूद हुसैन खाँ, कुलपति जामिया मिलिया; डॉ. हरवंशलाल शर्मा, निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय; श्री अनिल बोर्डिया, सहसचिव, शिक्षा मंत्रालय; श्री आर.के. छाबड़ा, सचिव, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग हैं। इसकी पहली मीटिंग 6 अप्रैल, '76 को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के कक्ष में हुई।

साधारण बहस के बाद कमेटी ने निम्नलिखित तीन सब-कमेटियाँ नियुक्त की हैं। वह अपने-अपने विषयों पर गहराई से विचार करके अपनी रिपोर्ट बड़ी कमेटी के सम्मुख विचारार्थ प्रस्तुत करेंगी।

1. विधान उपसमिति
2. शिक्षा उपसमिति
3. वित्तीय उपसमिति

इनके अध्यक्ष क्रमशः डॉ. सूरजभान जी, पं. सत्यव्रत जी तथा पं. अमरनाथ जी हैं। उनको अन्य सदस्य सहवरण करने के अधिकार दे दिए गए हैं।

मैं अपनी ओर से और गुरुकुल की ओर से इन महानुभावों के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ कि उन्होंने गुरुकुल के हित में अपना अमूल्य समय देना स्वीकार किया है।

पिछले दिनों मुझे आचार्य विनोबा भावे द्वारा बुलाए गए आचार्य सम्मेलन में भाग लेने का अवसर मिला। मेरी प्रार्थना पर हमारी संस्था के आचार्यगण एवं विद्यार्थीगण के नाम आचार्य जी ने जो संदेश दिया है वह गुरुकुल पत्रिका के दयानंद अंक में प्रकाशित हुआ है। वह है–"शान्तं शिवं अद्वैतम्।"

इतना जरूर कहूँगा कि हमें इस भावना को कार्यरूप में लाना है। इसी उद्देश्य से हमने गत वसंत पंचमी को अपने यहाँ भी आचार्यकुल की स्थापना की है। यह समारोह गुरुकुल की पुण्यभूमि में स्वामी धर्मानंद सरस्वती के सान्निध्य में संपन्न हुआ। सत्रह अध्यापकों ने आचार्य कुल के संकल्प लिये। श्री हरगोपालसिंह इसके संयोजक हैं।

गत जनवरी में तिरुपति में जो कुलपति सम्मेलन हुआ था उसमें शिक्षा के क्षेत्र में दो सुधार विशेष उभरकर सामने आए। एक था–10+2+3 की शिक्षा योजना को अपनाने के बारे में। दूसरा था, परीक्षाफल में लेटर ग्रेडिंग सिस्टम लागू करने के बारे में। इन सुझावों को गुरुकुल में कब, कैसे अपनाया जाए इसके बारे में हमारी शिक्षा पटल की पिछली बैठक में चर्चा हुई थी। निर्णय यह हुआ था कि हम अपने अध्यापकों की टीमें इन सुधारों की क्रिया पद्धति को समझने के लिए पिलानी, रुड़की तथा अन्य विश्वविद्यालयों में भेजें। साथ में जैसा कि महामहिम राज्यपाल महोदय द्वारा बुलाए गए उत्तर प्रदेश के कुलपतियों के सम्मेलन में वर्कशाप होल्ड करने का निर्णय हुआ है, इसमें भी हम अपने अध्यापकों को भेजने का इरादा रखते हैं।

बिला शक आज सभी स्वीकार करते हैं कि सामान्य शिक्षा को जीवनोन्मुख बनाए बिना देश का कल्याण नहीं है। साथ में शिक्षा के क्षेत्र को व्यापक करने के बारे में भी अब दो राय नहीं है। हर सम्मेलन में इंटर डिसिप्लिनरी शिक्षा पद्धति की चर्चा होती है। यह बात शायद कइयों के लिए नई होगी कि स्वामी दयानंद ने

तो आज से सौ वर्ष पहले इंटर डिसिप्लिनरी शिक्षा पद्धति लागू करने पर जोर दिया था। सत्यार्थ प्रकाश में शिक्षा के जिस पाठ्यक्रम का जिक्र किया गया है, उसके अनुसार एक शिक्षित युवक के लिए जहाँ यम-नियम के पालन एवं वेदाध्ययन का प्रावधान है, वहाँ चार वर्ष तक आयुर्वेद तथा दो वर्ष तक धनुर्वेद अर्थात् कवायद आदि सीखने का भी आदेश है। इसके बाद गान विद्या सीखने का कार्यक्रम है। साथ ही दो वर्ष तक ज्योतिषशास्त्र, सूर्यसिद्धांत, बीजगणित, अंकगणित, भूगोल, खगोल आदि विद्याओं को सीखने का प्रावधान है।

तत्पश्चात् हस्तकला, यंत्रकला भी सिखलावें ऐसा स्वामी जी का मत है। स्वामी जी कहते हैं कि 'ऐसा प्रयत्न पढ़ने और पढ़ानेवाले करें जिससे बीस व इक्कीस वर्ष के भीतर समग्र विद्या प्राप्त करके, मनुष्य कृतकृत्य हो, सदा आनंदमय रहे।'

कई हलकों में आरोप लगाया जाता है कि आर्यसमाज एक रूढ़िवादी एवं ज्ञानविरोधी संस्था है। पर यदि कोई भी निष्पक्ष व्यक्ति आर्यसमाज के नियमों पर दृष्टिपात करे तो उसे मानना होगा कि आर्यसमाज एक प्रगतिशील एवं क्रांतिकारी संस्था है, जो प्रत्येक नागरिक की आध्यात्मिक, मानसिक और शारीरिक उन्नति चाहती है। आर्यसमाज का लक्ष्य धर्म, जाति, देश से ऊपर उठकर समानता पर आधारित शोषणरहित विश्व समाज का निर्माण करना है। आर्यसमाज के पिछले सौ वर्षों के इतिहास पर किसको गर्व न होगा ! गुरुकुल की स्थापना भी इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति के लिए काम करने वाले व्रतधारी ब्रह्मचारी पैदा करने हेतु की गई थी। जैसा कि मैं ऊपर कह चुका हूँ गुरुकुल से निकले हुए ब्रह्मचारियों ने देश की विभिन्न प्रगतिशील प्रवृत्तियों में सक्रिय भाग लेकर जहाँ देश की प्रगति एवं कल्याण में अपना योगदान दिया है वहाँ गुरुकुल का नाम भी उज्ज्वल किया है। आज के सुअवसर पर हम अपने उन लब्धप्रतिष्ठ अग्रजों को पुनः याद करते हैं और उनके चरण-चिह्नों पर निर्भय होकर चलने का संकल्प लेते हैं।

जवाहरलाल नेहरू के शब्दों में

विश्वविद्यालय का उद्देश्य मानवता, सहिष्णुता, विवेक, नए-नए विचार और सत्य की खोज एवं मानव जाति को उच्चतर लक्ष्य की ओर अग्रसर करना है। जिस राष्ट्र के विश्वविद्यालय अपने कर्तव्य का सही अर्थ में पालन करते हैं, वह राष्ट्र धन्य है और उसकी प्रजा का कल्याण सुनिश्चित है, परंतु यदि विद्या के ये मंदिर संकीर्णता और तुच्छ लक्ष्यों के गढ़ बन जाएँ तो ऐसे राष्ट्र और जनपद उन्नति और विकास की ओर अग्रसर नहीं हो सकते।

मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि गुरुकुल के गुरुजन इन लक्ष्यों को सामने रखकर उन्नति के पथ पर अग्रसर होंगे, क्योंकि अंततोगत्वा किसी

भी विश्वविद्यालय का स्तर उसके अध्यापक वर्ग के स्तर से ऊँचा नहीं उठ सकता।

राष्ट्रीय विचारधारा से ओत-प्रोत इस विश्वविद्यालय को विश्वकवि रवींद्रनाथ टैगोर, पं. मदनमोहन मालवीय, महात्मा गांधी, मोतीलाल नेहरू, बाबू राजेंद्र प्रसाद, सरदार पटेल, डॉ. राधाकृष्णन, जवाहरलाल नेहरू, श्रीमती इंदिरा गांधी आदि का आशीर्वाद प्राप्त होता रहा है।

1977–दुर्गम पथ पर प्रयाण

❑ श्री बलभद्र कुमार हूजा

ब्रिटिश शासकों द्वारा चलाई गई शिक्षा पद्धति राष्ट्रीय भावनाओं, सांस्कृतिक आदर्शों एवं सामाजिक आवश्यकताओं के विपरीत थी। हमारी परंपरागत संस्कृत शिक्षा प्रणाली भी आधुनिक ज्ञान-विज्ञान से शून्य होने के कारण उतनी उपादेय न रह गई थी। अतः इन शिक्षा प्रणालियों की आलोचना देश के मनीषी करने लगे थे, परंतु इनका विकल्प केवल श्रद्धानंद और आर्यसमाज ने ही प्रस्तुत किया।

इन दोनों प्रकार की प्रणालियों की त्रुटियों को दूर करके स्वामी जी ने इस संस्था का ऐसा रूप निर्धारित किया जिसमें प्राचीन ब्रह्मचर्य आश्रम प्रणाली के आधार पर वैदिक संस्कृत साहित्य, दर्शन आदि के उच्चतम अध्ययन के साथ-साथ आधुनिक ज्ञान-विज्ञान आदि सभी विषयों का भी भरपूर समावेश किया गया। प्राचीनता एवं आधुनिकता का यह सुंदर समन्वय इस संस्था की विशेषता है।

आज देश में सर्वत्र राष्ट्रीय भाषाओं द्वारा शिक्षा देने की नीति स्वीकृत हो चुकी है, लेकिन एक समय था जब इस बात का विचार ही नहीं किया जा सकता था। उस समय स्वामी श्रद्धानंद के नेतृत्व में इस संस्था के विद्वान् आचार्यों ने न केवल इतिहास आदि, अपितु वैज्ञानिक विषयों में भी हिंदी माध्यम से शिक्षा देना आरंभ किया और इस संकल्प को निभाने के लिए हिंदी भाषा में ग्रंथों का निर्माण किया। प्रो. रामदेव ने मौलिक दृष्टि से 'भारत का इतिहास' लिखा। प्रो. बालकृष्ण ने अर्थशास्त्र पर, प्रो. साठे ने विकासवाद पर, प्रो. प्राणनाथ ने राजनीतिशास्त्र पर, प्रो. सुधाकर ने मनोविज्ञान पर, प्रो. सिन्हा ने वनस्पतिशास्त्र पर, प्रो. रामशरण ने गुणात्मक विश्लेषण पर और प्रो. गोवर्धन ने भौतिकी रसायन पर हिंदी में ग्रंथ रचे।

आज से सौ वर्ष पहले जब ऋषि दयानंद ने गुरु विरजानंद के आदेशानुसार वेद-प्रचार का कार्य आरंभ किया था, उस समय देश में वेद पढ़ने-पढ़ानेवाले विद्वानों का अभाव-सा ही था; लेकिन आज देश में कितने ही उच्चकोटि के दिग्गज विद्वान् वैदिक साहित्य के अनुशीलन में निष्ठापूर्वक तत्पर हैं। गत पचहत्तर वर्षों में गुरुकुल से निकले हुए अनेक विद्वान् पंडितों ने वैदिक साहित्य तथा भारतीय संस्कृति एवं इतिहास पर गवेषणात्मक ग्रंथ रचकर न केवल स्वयं के लिए विश्वख्याति अर्जित

की है, वल्कि राष्ट्र और संसार के चिंतन को एक नया मोड़ दिया है। इस प्रसंग में आचार्य रामदेव, प्रो. इंद्र, प्रो. विश्वनाथ, पं. चंद्रमणि, पं. जयदेव, स्वामी समर्पणानंद, स्वामी अभयदेव, प्रो. सत्यव्रत, स्वामी धर्मानंद, पं. यशपाल, पं. हरिकृष्ण, आचार्य प्रियव्रत, आचार्य रामनाथ, पं. मदनमोहन, डॉ. मंगलदेव, प्रो. हरिदत्त, पं. सत्यकाम, प्रो. सुखदेव, डॉ. वासुदेवशरण, स्वामी ब्रह्ममुनि, श्री गंगाप्रसाद, स्वामी सत्यप्रकाशानंद एवं श्री दामोदर सातवलेकर के नाम उल्लेखनीय हैं। सच पूछें तो वेदों का पांडित्य रखने वाले विद्वानों की शृंखला बहुत लंबी है। इस पर गुरुकुल जितना भी गर्व करे, कम है।

अध्ययन-अध्यापन के साथ ही इस संस्था में चरित्र गठन एवं यम-नियम के पालन पर विशेष बल दिया जाता रहा है।

स्वामी श्रद्धानंद जी ने गुरुकुल की स्थापना इसी उद्देश्य को लेकर की थी कि यहाँ से निकलने वाले स्नातक पूर्ण ब्रह्मचारी हों। उनका उद्देश्य वैदिक शिक्षा का कोरा प्रचार करना ही नहीं था, बल्कि वैदिक सिद्धांतों पर आधारित गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली के द्वारा ओजस्वी, वर्चस्वी ब्रह्मचारी पैदा करना था जो देशोत्थान के कार्य में दत्तचित्त होकर राष्ट्र का सर्वांगीण प्रगति में ठोस योगदान दे सकें। महात्मा मुंशीराम अध्यापकों से भी अपेक्षा करते थे कि वह ब्रह्मचर्य सूक्त में वर्णित आचार्य की संज्ञा पर पूरे उतरें। वह केवल एक विषय पढ़ानेवाले अध्यापक, प्राध्यापक, लेक्चरार या प्रोफेसर होकर हीं न रह जाएँ, बल्कि सही मायनों में गुरु के पद का भार सँभालें और ब्रह्मचारी को अपने गर्भ में स्थापित करके अपने आचार-व्यवहार द्वारा उसे राष्ट्र का व्रती नागरिक बनाने में पूर्ण मनोयोग से अपना उत्तरदायित्व निभाएँ।

इन्हीं विशेषताओं से आकृष्ट होकर अफ्रीका से लौटने पर महात्मा गांधी गुरुकुल पधारे। उनके अतिरिक्त पंडित मोतीलाल नेहरू, महामना पंडित मदनमोहन मालवीय, लाला लाजपतराय, सी.एफ.एंड्रूज, रवींद्रनाथ टैगोर, क्षितिमोहन सेन, डॉ. राजेंद्र प्रसाद, डॉ. राधाकृष्णन, पं. जवाहरलाल नेहरू, श्रीमती इंदिरा गांधी, श्री मोरारजी देसाई तथा श्री जगजीवनराम आदि सभी प्रमुख राष्ट्रीय नेता समय-समय पर यहाँ पधारे और गुरुकुलवासियों को उनका आशीर्वाद प्राप्त रहा।

इस समय इस विश्वविद्यालय में वैदिक साहित्य, संस्कृत साहित्य, प्राचीन इतिहास तथा पुरातत्त्व, हिंदी साहित्य, अंग्रेजी साहित्य, दर्शन, मनोविज्ञान, गणित आदि में पोस्ट ग्रेजुएट स्तर तक और विज्ञान के सभी विषयों में ग्रेजुएट स्तर तक शिक्षण होता है। वैदिक साहित्य, संस्कृत साहित्य, प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति तथा हिंदी आदि विषयों में अनुसंधान का विशिष्ट कार्य चल रहा है। इन विषयों पर अनेक महत्त्वपूर्ण प्रकाशन भी हो चुके हैं।

आर्य साहित्य में शोध की आवश्यकता को दृष्टिगोचर रखते हुए हमने गतवर्ष

श्रद्धानंद शोध संस्थान की स्थापना की थी। गुरुकुल के भूतपूर्व कुलपति, डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार ने इसके अवैतनिक निदेशक के तौर पर कार्य करना स्वीकार किया। इसके साथ ही उन्होंने 'वैदिक मैगजीन' के नए संस्करण 'वैदिक पाथ' के संपादन का कार्य भार सँभाला। चुनांचे उसकी पहली प्रति का विमोचन गत दीक्षांत समारोह पर सम्माननीय महामहिम डॉ. एम. चेन्ना रेड्डी, राज्यपाल, उत्तर प्रदेश सरकार ने किया था। इसकी दूसरी प्रति आज आपके समक्ष विमोचन हेतु प्रस्तुत है।

गुरुकुल विश्वविद्यालय की वर्तमान दशा को सुधारने एवं इसके भावी विकास के लिए दिशा निर्देशक हेतु गुरुकुल के कुलाधिपति महोदय श्री पृथ्वीसिंह आजाद ने मार्च 1976 में एक उच्चस्तरीय समिति का गठन किया था। इसके अध्यक्ष पंजाब विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुलपति, पद्मभूषण डॉ. सूरजभान थे। इसके अन्य सदस्य थे—श्री सत्यव्रत सिद्धांतालंकार; पं. अमरनाथ विद्यालंकार; श्री भक्तदर्शन, कुलपति, कानपुर विश्वविद्यालय; श्री ध्यानपालसिंह, भूतपूर्व कुलपति, पंतनगर वि.वि.; श्री मसूद हुसैन खाँ, कुलपति, जा.मि.; डॉ. हरवंश शर्मा, निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय; श्री अनिल बोर्डिया, संयुक्त सचिव, शिक्षा मंत्रालय; श्री आर.के. छाबड़ा, सचिव, वि. वि.अ.आ.। इसकी पहली मीटिंग 6 अप्रैल, 1976 को वि.वि.अ. आयोग के कक्ष में हुई। तदुपरांत इस समिति ने निम्न तीन उपसमितियों का गठन किया था—

1. संविधान उपसमिति, 2. शिक्षा उपसमिति, 3. वित्तीय उपसमिति। ये इस उद्देश्य से बनाई गई थीं कि वे अपने-अपने विषयों पर गहराई से विचार करके अपनी रिपोर्ट बड़ी समिति के सम्मुख प्रस्तुत करेंगी।

अब गुरुकुल का नया संविधान प्रारूप समिति द्वारा तैयार हो चुका है और इस मास के अंत में या मई के शुरू में संविधान उपसमिति के समक्ष प्रस्तुत होगा। वहाँ से पारित होने के पश्चात् यह उपर्युक्त उच्चसमिति के समक्ष प्रस्तुत किया जाएगा। तत्पश्चात् यह कुलाधिपति महोदय के समक्ष विचार हेतु आएगा। आशा है कि आगामी शिक्षा सत्र से हम नए संविधान के अंतर्गत कार्य करना आरंभ कर देंगे।

यहाँ मैं गुरुकुल विश्वविद्यालय के पुरातत्त्व संग्रहालय का भी जिक्र करना चाहूँगा। डॉ. विनोदचंद्र सिन्हा की अध्यक्षता में इस संग्रहालय ने जो उन्नति की है उसकी सराहना देश के अनेक विद्वानों और पुरातत्त्ववेत्ताओं ने मुक्तकंठ से की है। प्रतिवर्ष लाखों यात्री हरिद्वार में गंगा में स्नान करने आते हैं। उनके लिए यह संग्रहालय स्वस्थ मनोरंजन एवं ज्ञानवर्धन का साधन बन गया है। विद्यार्थियों तथा शिक्षित वर्ग की ज्ञान-पिपासा की शांति के लिए इतिहास, पुरातत्त्व, अभिलेखशास्त्र, मुद्राशास्त्र आदि की विविध सामग्री संग्रहालय में विद्यमान है। जनसाधारण में शिक्षण के उद्देश्य से प्रचुर सामग्री संग्रहालय की वीथिकाओं में सजाकर रखी गई है। लगभग सारे वर्ष दर्शकों की चहल-पहल से संग्रहालय भवन व्याप्त रहता है। प्रति वर्ष लाखों

व्यक्ति इस संग्रहालय को देखने आते हैं।

इस वर्ष संग्रहालय का नया भवन भी प्रायः तैयार हो चुका है और उसमें श्रद्धानंद प्रदर्शनी का आयोजन किया गया है।

इस प्रकार यह निर्विवाद रूपेण कहा जा सकता है कि यह विश्वविद्यालय आज भी शिक्षा एवं समाज सेवा के क्षेत्र में अपना भरपूर योगदान दे रहा है।

आज जब हम स्वामी श्रद्धानंद का बलिदान अर्द्धशताब्दी उत्सव मना रहे हैं, हमारे हृदय भावनाओं एवं भावुकता से परिपूर्ण हैं और हम अंतर्मुखी होकर बार-बार इस प्रश्न पर व्यक्तिगत एवं सामूहिक चिंतन कर रहे हैं कि हम कहाँ तक उस महान् बलिदानी के सपनों को साकार करने में सक्रिय हैं।

स्वामी श्रद्धानंद ने अपनी शहादत से पूर्व अपनी वसीयत में तीन बातें कही थीं और उनमें से एक थी, गुरुकुल की रक्षा करो। आज हम इस व्रत की पालना में कृतसंकल्प हैं और गुरुकुल के चतुरंग आचार्य, शिष्य, प्रशासक तथा अभिभावक बार-बार अपने से यही प्रश्न पूछ रहे हैं कि हम गुरुकुल में पारिवारिक स्नेह, योग, उद्योग, सहयोग, स्वालंबन एवं अप्रमाद का वातावरण बनाने में कहाँ तक अग्रसर हैं।

1981–चुनौतियों के बीच

❑ श्री बलभद्र कुमार हूजा

यह तो आप जानते ही हैं कि आज से अस्सी वर्ष पूर्व स्वामी श्रद्धानंद ने ब्रिटिश शिक्षा पद्धति के विरोध में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को पुनः स्थापित करने के लिए गुरुकुल की स्थापना की थी। स्वामी दयानंद की मृत्यु के पश्चात् उनके अनुयायियों ने उनकी यादगार कायम रखने के लिए लाहौर में दयानंद एंग्लो-वैदिक स्कूल स्थापित किया जो बाद में कॉलेज के रूप में परिणत हो गया, परंतु श्री गुरुदत्त विद्यार्थी एवं स्वामी श्रद्धानंद ने अनुभव किया कि यह कॉलेज भी स्वामी दयानंद द्वारा निर्देशित कार्यक्रम को पूरी तरह नहीं निभा पा रहा है। अतः उन्होंने स्वामी दयानंद के सपनों को साकार रूप देने के लिए गुरुकुल स्थापित करने की योजना बनाई।

गुरुदत्त विद्यार्थी की इहलीला 1889 में समाप्त हो गई और वे भगवान् को प्यारे हो गए। परंतु स्वामी श्रद्धानंद ने अभूतपूर्व आत्मविश्वास के साथ अपने अडिग संकल्प को पूरा किया। उन्होंने अपनी सारी संपत्ति और शक्ति इसी स्वप्न को पूरा करने में लगा दी और अनेक दानवीरों और सहयोगियों की सहायता के फलस्वरूप गुरुकुल की बुनियादें कायम करने में सफल हुए।

स्वामी श्रद्धानंद ने जिस प्रकार के गुरुकुल की स्थापना की इसके बारे में सर रैम्जे मैक्डानल्ड ने, जो 1914 में गुरुकुल पधारे थे और बाद में इंग्लैंड के प्रधानमंत्री बने, अपने संस्मरण में निम्नवत् लिखा है–

"जिस किसी व्यक्ति ने भारत के विद्रोह के बारे में पढ़ा-लिखा है वे निश्चय ही गुरुकुल के नाम से सुपरिचित होंगे। यहाँ आर्यों के बच्चों को शिक्षा दी जाती है।

"मेरी ट्रेन प्रातः ही हरिद्वार पहुँची। यहाँ गंगा पर्वतों से उतरकर मैदानी इलाके में प्रवेश करती है। जब हम नदी किनारे पहुँचे तो हमें मिट्टी के तेल के कनस्तरों से बँधी हुई बाँसों की एक किश्ती पर बिठा दिया गया और हमारी यह किश्ती शीघ्र ही मझधार में बहने लगी, अंत में हम एक रेतीले किनारे पर जा उतरे। वहाँ

से हम पैदल रवाना हुए। दूर हमें ध्वजा स्तंभ दिखाई दिया जिस पर गुरुकुल की ध्वजा फहरा रही थी। गुरुकुल जाने का पथ पुष्पवाटिकाओं से घिरा हुआ था। गुलाब और चमेली की सुगंध सर्वत्र व्याप्त थी। इधर-उधर खेल के मैदान थे। प्रवेश द्वार पर ओइम् का झंडा फहरा रहा था। लगभग तीन सौ विद्यार्थी इस समय यहाँ पढ़ते हैं। महात्मा मुंशीराम उनके पिता हैं और वे उनके पुत्र हैं। वे 4 बजे प्रातः उठते हैं। शारीरिक व्यायाम करते हैं। ठंडे पानी से स्नान करते हैं, फिर संध्या-उपासना करते हैं। पीत वस्त्र धारण करते हैं। माता-पिता से मिलने का अवसर उन्हें केवल वार्षिकोत्सव पर प्राप्त होता है। छुट्टियों में बच्चों को यत्र-तत्र ले जाया जाता है। महात्मा मुंशीराम कहते हैं कि बच्चों को तप और अनुशासन का अभ्यास कराने के लिए मैं यहाँ प्रयत्नशील हूँ।

"मेरे कमरे में उन्होंने लाल फूलों के दो पुष्पगुच्छ सजा दिए हैं। खाना खाने के बाद हम स्कूल देखने गए। स्कूल में चारों ओर अनुशासन और प्रसन्नता है। बच्चे बड़ी श्रद्धा से अपना पाठ पढ़ रहे हैं, कुछ बच्चे मिट्टी के मॉडल बना रहे हैं। जैसे ही कक्षाएँ समाप्त हुईं, बच्चे भागकर खेल के मैदान की ओर लपके।

"शाम को हम जंगल में भ्रमणार्थ गए और जैसे ही रात हुई हम वापस लौटे। शाम को मैंने उन्हें सामूहिक संध्या-हवन में और फिर ध्यान में उपस्थित देखा। तत्पश्चात् रात्रि भोज हुआ और दिन का कार्यक्रम समाप्त हुआ।"

इस प्रकार का था महात्मा मुंशीराम का गुरुकुल। मैंने उपर्युक्त उद्धरण को दोहराने की इसलिए धृष्टता की है कि जब हम पुनः स्वामी श्रद्धानंद के सपनों का गुरुकुल स्थापित करने के लिए कृतसंकल्प हैं यह चित्र हमारे आदर्श को सुस्पष्ट करता है।

विगत कई वर्षों से गुरुकुल पर अनुशासनहीनता, अराजकता और त्रास के बादल छाए रहे हैं। वास्तव में यहाँ एक प्रकार का देवासुर संग्राम ही होता रहा है। इस स्थिति में गुरुकुलवासियों पर विभिन्न दिशाओं से तरह-तरह के भीषण प्रहार हुए, उन्होंने जिस धैर्य और आत्मविश्वास के साथ अनेक कष्ट सहते हुए असुरों का मुकाबला किया वह प्रशंसनीय है। अंत में सत्य की विजय हुई और असुर पराजित हुए। आज गुरुकुलवासी स्वामी श्रद्धानंद द्वारा दर्शाए गए पथ पर अग्रसर हैं, भले ही उनके चरणों में वैसी गति और स्फूर्ति न आ सकी हो जिसकी अपेक्षा आप महानुभाव करते रहे हैं।

जिन सज्जनों ने जुलाई 1980 में गुरुकुल की दशा देखी है, वे जानते हैं कि उस समय परिसर में कितनी झाड़-झंखाड़ थी। सफाई का नामोनिशान नहीं था। इसके अतिरिक्त साल भर से स्टाफ को वेतन नहीं मिल पा रहा था। 1979-80 की परीक्षाएँ संभावित थीं। अध्यापक वर्ग एवं शिक्षकेतर वर्ग में कई स्थान रिक्त पड़े थे, जिसके कारण कार्य संचालन में बाधाएँ आ रही थीं।

गुरुकुल परिसर को साफ करने के लिए यह निर्णय लिया गया कि महीने के अंतिम शनिवार को श्रमदान के तौर पर सामूहिक सफाई दिवस मनाया जाए। इसका सर्वत्र बड़े उत्साह से स्वागत हुआ। नवंबर के प्रथम सप्ताह में आयुर्वेद कॉलेज, गुरुकुल कांगड़ी के प्रधानाचार्य डॉ. सुरेशचंद्र शास्त्री और राजस्थान के भूतपूर्व स्वास्थ्य और चिकित्सा निदेशक डॉ. सत्यदेव आर्य के नेतृत्व में धन्वंतरि सप्ताह मनाया गया। आज आप सब देख रहे हैं कि गुरुकुल परिसर चमकता और खिलता हुआ नजर आ रहा है। यह इसी श्रम-तप का फल है।

इसी प्रकार स्टाफ को यथासमय वेतन प्रदान करने की स्थिति में यथेष्ट सुधार आया है। इसके लिए मैं पूर्व वित्त अधिकारी श्री सरदारी लाल वर्मा और वर्तमान वित्ताधिकारी श्री बी.एम. थापर का आभारी हूँ। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से अब नियमित रूप से अनुदान प्राप्त होने लगा है। परीक्षाएँ भी संपन्न हो चुकी हैं जिनका अंतिम चरण आज उपाधि प्रदान द्वारा संपादित हो रहा है। कतिपय रिक्त स्थानों पर अध्यापकगण की नियुक्ति हो चुकी है। अन्य स्थानों की पूर्ति के लिए हम विधिवत् प्रयत्नशील हैं। विश्वविद्यालय और विद्यालय के पठन-पाठन और क्रीड़ा-कौशल में स्थैर्य अनुभव किया जा रहा हैं

अभी हाल ही में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय को एसोशिएशन ऑफ इंडियन यूनिवर्सिटीज की सदस्यता प्राप्त हुई है जिसके लिए मैं डॉ. अमरीक सिंह, सचिव, एसोशिएशन ऑफ इंडियन यूनिवर्सिटीज का आभारी हूँ। आज हमारी खेल-कूद की टीमें अंतर्विश्वविद्यालय प्रतियोगिताओं में भाग लेने लग गई हैं।

गत मास विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने कुमायूँ को पहाड़ियाँ, कार्बेट नेशनल पार्क एवं दिल्ली, उत्तर प्रदेश और राजस्थान के ऐतिहासिक नगरों की सरस्वती यात्राएँ कीं। उन्हें आदेश थे कि जहाँ-जहाँ जाएँ नियमपूर्वक हवन-यज्ञ करें एवं आर्य साहित्य का वितरण करें। इस प्रकार उन्होंने न केवल स्वयं यात्रा का लाभ उठाया, अपितु आर्यसमाज के संदेश का भी प्रचार-प्रसार किया। प्रचार और प्रसार के लक्ष्य को ही दृष्टि में रखकर डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार और डॉ. हरगोपालसिंह के संपादकत्व में अंग्रेजी में त्रैमासिक पत्रिक 'वैदिक पाथ' के नियमित प्रकाशन का कार्य पुनारंभ किया गया है। इसके अतिरिक्त डॉ. अंबिकाप्रसाद वाजपेयी के निर्देशन में विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा त्रैमासिक 'प्रह्लाद' एवं डॉ. विष्णुदत्त राकेश के निर्देशन में विद्यालय के ब्रह्मचारियों द्वारा त्रैमासिक 'ध्रुव' पत्रिका का प्रकाशन का कार्य आरंभ किया गया है, जिससे कि प्रचार के कार्य के साथ-साथ गुरुकुल के विद्यार्थी पत्रकारिता के क्षेत्र में समुचित अनुभव प्राप्त कर सकें।

यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि गुरुकुल के वेद विभाग के अध्यक्ष डॉ. रामप्रसाद विगत कई वर्षों से सर्वसाधारण में आर्ष साहित्य के प्रचार हेतु लघु पुस्तिकाओं की रचना कर रहे हैं। अब तक इन्होंने उन्नीस ऐसी पुस्तकों का निर्माण

किया है जिनकी पचहत्तर हजार प्रतियाँ जिज्ञासुओं में वितरित की जा चुकी हैं। इन पुस्तिकाओं में चुने हुए वेद मंत्रों की व्याख्या दी जाती है जिससे कि उनके अर्थ सुबोध होकर सर्वसाधारण को हृदयंगम हो सकें। इनका मूल्य केवल पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना है।

मुझे यह कहते हुए प्रसन्नता हो रही है कि उनकी इस साधना और उपलब्धि को देखते हुए संघड विद्या सभा ट्रस्ट, जयपुर ने उनको एक हजार रुपए का प्रथम आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार 11 अप्रैल को हुए वेद सम्मेलन में प्रदान किया।

यहाँ मैं प्रो. चंद्रशेखर त्रिवेदी की स्वतः स्वीकृत कर्तव्यपरायणता का भी उल्लेख करना चाहूँगा। 'सत्यार्थ प्रकाश' के दूसरे समुल्लास को 'शतपथ ब्राह्मण' के 'मातृमान् पितृमानाचार्यवान् पुरुषो वेद' से आरंभ करते हुए ऋषि दयानंद लिखते हैं कि वास्तव में जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात् माता, दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवे तभी मनुष्य ज्ञानवान् होता है।

आगे चलकर वह लिखते हैं कि मिथ्या बातों का उपदेश बाल्यावस्था में ही संतानों के हृदय में डाल दें जिससे स्वसंतान किसी के भ्रमजाल में पड़ के दुःख न पावे और वीर्य की रक्षा में आनंद और नाश करने में दुःख प्राप्ति भी जना देनी चाहिए क्योंकि शरीर में सुरक्षित वीर्य रहता है तब उसको आरोग्य, बुद्धि, बल-पराक्रम बढ़ के बहुत सुख की प्राप्ति होती है।

इसी समुल्लास में आगे चलकर स्वामी जी ने लिखा है कि जैसे अन्य शिक्षा, वैसे ही चोरी, जारी, आलस्य, प्रमाद, मादक द्रव्य, मिथ्या भाषण, हिंसा, क्रूरता, ईर्ष्या, द्वेष, मोह आदि दोषों को छोड़ने और सदाचार के ग्रहण करने की शिक्षा भी बालकों को देनी चाहिए। माता-पिता तथा आचार्य अपनी संतानों एवं शिष्यों को सदा सत्य बोलने के उपदेश करें और यह भी कहें कि जो-जो हमारे धर्मयुक्त कर्म हैं उनको ग्रहण करो और जो-जो दुष्ट कर्म हों उनका त्याग कर दिया करो। जो-जो सत्य जानें उनका प्रचार और प्रकाश करें। किसी पाखंडी-दुष्टाचारी पर विश्वास न करें और जिस-जिस उत्तम कर्म के लिए माता-पिता और आचार्य आज्ञा देवे उसका यथेष्ट पालन करो।

इसी लक्ष्य को सम्मुख रखकर गुरुकुल में सातवीं, आठवीं, नौवीं, दसवीं के इक्तीस ब्रह्मचारियों को प्रतिदिन एक-एक मंत्र अथवा संस्कृत सुभाषित कंठस्थ करवाने का संकल्प प्रो. चंद्रशेखर त्रिवेदी, प्रवक्ता, मनोविज्ञान विभाग ने लिया और जब एक सौ दो मंत्र श्लोक कंठस्थ हो गए तो इन्हें संघड विद्या सभा ट्रस्ट, जयपुर द्वारा प्रदत्त आर्थिक सहायता से 'जीवन ज्योति' नामक लघु पुस्तिका के आकार में प्रकाशित करवाया गया। इसका विमोचन ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर कांगड़ी ग्राम में आयोजित बृहत् सभा में किया गया।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि यह कार्यक्रम बीच में ही टूट जाता यदि इसमें

वयोवृद्ध अधिष्ठाता पं. चंद्रकेतु एवं स्वयं ब्रह्मचारीगण अटूट दिलचस्पी न दिखाते। मुझे पूर्ण आशा है कि गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय का यह अग्रिम दस्ता जहाँ कहीं जाएगा ऋषि दयानंद की सत्य और न्याय की पाखंड खंडिनी पताका को प्रतिष्ठित करेगा एवं सर्वत्र निर्भय होकर इदन्नमम की भावना से धर्माचरण करते हुए जीवन यात्रा में अग्रसर होगा।

यहाँ मैं आर्य स्वाध्याय केंद्र का भी जिक्र करना चाहूँगा। आप जानते ही हैं कि श्री रामगोपाल शालवाले के नेतृत्व में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने आर्यसमाज के गत सौ वर्ष का बृहत् इतिहास तैयार करने की योजना बनाई है। इस कार्य की पूर्ति हेतु हमारे विद्वान् इतिहासवेत्ता डॉ. सत्यकेतु की अध्यक्षता में एक कार्य संचालन समिति का गठन किया गया है। डॉ. सत्यकेतु ने नेहरू नेशनल म्यूजियम की तरह का गुरुकुल में एक आर्य संग्रहालय बनाने का प्रस्ताव गुरुकुल के कुलाधिपति के समक्ष रखा, जिसे सहर्ष स्वीकार करते हुए गुरुकुल में विद्यमान संग्रहालय का एक भाग उनके सुपुर्द करने का निश्चय किया गया है। यहीं पर वह आर्य स्वाध्याय केंद्र का मुख्य कार्यालय एवं बृहत् पुस्तकालय भी स्थापित करेंगे, जहाँ आर्य विद्वानों द्वारा रचित ग्रंथों के अतिरिक्त अत्यंत मूल्यवान पांडुलिपियों का एवं ऐतिहासिक सामग्री का संग्रह एवं प्रदर्शन किया जाएगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि डॉ. सत्यकेतु का यह संकल्प शीघ्र ही सिद्ध होगा। इस कार्य में गुरुकुल के इतिहास विभाग के अध्यक्ष डॉ. विनोदचंद्र सिन्हा उनके साथ सहयोग कर रहे हैं।

इस अवसर पर आर्यभट्ट विज्ञान मेले का उल्लेख न करूँ तो प्रतिवेदन में एक बड़ी भारी कमी रह जाएगी। आप जानते हैं कि 19 अप्रैल, 1975 को भारतीय वैज्ञानिकों ने सोवियत रूस की सहायता से आर्यभट्ट उपग्रह को कक्षा में स्थापित करके बड़ी भारी वैज्ञानिक उपलब्धि प्राप्त की। तदुपरांत भास्कर और रोहिणी की उपलब्धियों ने हमारे वैज्ञानिकों की कीर्ति में चार चाँद लगाए। भारत का नाम ऊँचा हुआ। आप सब यह भी जानते हैं कि पुरातनकाल में वैज्ञानिक जगत् में भारत का कितना ऊँचा स्थान था, किंतु कालगति से भारत अज्ञान और अंधविश्वास के कूप में जा गिरा। ऋषि दयानंद की कृपा हुई कि हम अपनी सनातन संस्कृति से सुपरिचित हुए और अब पुनः आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक उन्नति की ओर अग्रसर हैं। हालाँकि वेद श्रेयस् और प्रेयस् दोनों की उपलब्धि की प्रेरणा देते हैं, परंतु कई क्षेत्रों में यह धारणा अब भी बनी हुई है कि आर्यसमाज का काम केवल धार्मिक क्षेत्र तक सीमित है। सच तो यह है कि भारत के अथवा प्राणीमात्र के उद्धार के लिए आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक उपलब्धियों के सुमधुर समन्वय की आवश्यकता है। इसी दृष्टि से स्वामी श्रद्धानंद जी महाराज ने गुरुकुल के पाठ्यक्रम में जहाँ आध्यात्मिक शिक्षा पर बल दिया वहाँ वैज्ञानिक शिक्षा की उपेक्षा नहीं की। मेरे

पूज्य पिताजी आचार्य श्री गोवर्धन ने जो 1908-'10 तक यहाँ मुख्याध्यापक थे, उन्हीं दिनों हिंदी में भौतिकी और रसायन की दो पुस्तकों की रचना की जो कई वर्षों तक यहाँ की पाठ विधि में प्रचलित रहीं। हिंदी जगत् में भारत की वैज्ञानिक उपलब्धियों का प्रचार हो और हमारे ब्रह्मचारी उनसे सत्प्रेरणा प्राप्त करें इस आशय से गुरुकुल कांगड़ी के विज्ञान महाविद्यालय के डॉ. विजयशंकर के संपादकत्व में अब वहाँ से एक त्रैमासिक पत्रिक 'आर्यभट्ट' नाम से निकाली जाने लगी है। इसी शृंखला में इसी वर्ष यहाँ आर्यभट्ट मेले का भी आयोजन किया गया है। इसका विधिवत् उद्घाटन रुड़की विश्वविद्यालय के कुलपति जगदीश नारायण द्वारा 11 अप्रैल को संपन्न हुआ। इसमें हमें भारत हैवी इलेक्ट्रिकल्स, रानीपुर; रुड़की विश्वविद्यालय; राष्ट्रीय छात्र सेना इत्यादि से अमूल्य सहयोग प्राप्त हुआ। हम उनके आभारी हैं।

आप जानते ही हैं कि वर्षों पहले दानवीर श्री अमृतराय की श्रद्धा गुरुकुल परिसर में अमृतवाटिका के रूप में प्रकट हुई थी और मध्य में एक भव्य यज्ञशाला उजड़ी पड़ी रही। गत वर्ष इसमें पुनः प्राण प्रतिष्ठा हुई जब गुरुकुल आर्यसमाज के नव-निर्वाचित तरुण अधिकारियों ने यहाँ साप्ताहिक सत्संग करने का निर्णय लिया। जिस कर्तव्यपरायणता से डॉ. जयदेव वहाँ साप्ताहिक हवन-यज्ञ कराते हैं वह श्लाघनीय है। इसकी शोभा बढ़ाते हैं गुरुकुल विद्यालय के ब्रह्मचारीगण और उनके धर्मपरायण अधिष्ठाता सर्वश्री ईश्वर सिंह, चंद्रकेतु, हुकमसिंह और हरिबंधु।

इसी समाज मंदिर में गत सितंबर में 21 ता. को एक अभूतपूर्व कार्यक्रम संपन्न हुआ जब इस इलाके के नामी डाकू भीष्म पांडेय ने यज्ञाग्नि के समक्ष उपस्थित होकर यज्ञोपवीत ग्रहण किया और वेदानुकूल जीवन व्यतीत करने का व्रत लिया। डॉ. जयदेव ने उसको नारायण नाम से सुशोभित किया और श्री जितेंद्र ने उसको श्री नारायण स्वामी की 'कर्तव्य दर्पण' पुस्तक मार्ग दर्शन के रूप में भेंट की। इसके बाद भीष्म नारायण कैसा जीवन व्यतीत कर रहे हैं इसकी मुझे जानकारी नहीं, लेकिन सुनता हूँ, उन पर विभिन्न दबाव हैं जैसे कि हरेक व्यक्ति पर होते हैं।

हम जानते हैं कि हमारा मन एक प्रकार का कुरुक्षेत्र है जहाँ सात्त्विक और तामसिक शक्तियों का निरंतर युद्ध चलता रहता है। तभी तो श्री आनंद स्वामी कहा करते थे कि गायत्री हम आर्यजनों की माँ है। हमें चाहिए कि हम सदा उसका जाप करें एवं उसकी गोद ही में विचरें, विश्राम करें। मेरी परमपिता से यही प्रार्थना है कि वह भीष्म नारायण और उसके साथियों को सुपथ पर चलने की शक्ति प्रदान करें। वह किसी धूर्त के चंगुल में फँसकर पथभ्रष्ट न हों।

मैंने ऊपर जिक्र किया था कि हम स्वामी श्रद्धानंद जी के चरण चिह्नों पर चलने का प्रयास कर रहे हैं, लेकिन लड़खड़ाते कदमों से; मैंने यह शब्द पूरी जिम्मेवारी

से इस्तेमाल किए। उस लड़खड़ाहट का नमूना है कि अभी गुरुकुल परिवार के बहुत से सदस्य दैनिक अग्निहोत्र में तो छोड़ो आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग में भी उपस्थित होना अपना कर्तव्य नहीं समझते। वह परम सौभाग्य का दिन होगा जब आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग में गुरुकुलवासियों की यथेष्ट उपस्थिति होगी।

आर्यसमाज के उपनियमों में प्रावधान है कि सदस्य अपनी आय का शतांश चंदे के रूप में दें। गुरुकुल कांगड़ी आर्यसमाज के समक्ष इस उपनियम को पूर्णतया पालन करने का प्रस्ताव है। यदि ऐसा हो जाता है तो इस समाज की आर्थिक स्थिति बहुत सुदृढ़ हो ज़ाएगी। यह ट्रैक्ट, पुस्तक, समाचार बुलेटिन इत्यादि के प्रसार के कार्यक्रम हाथ में लेकर सक्रिय हो सकती है। स्थायी रूप से पुरोहित इत्यादि की नियुक्ति की जा सकती है। वास्तव में गुरुकुल आर्यसमाज का यह परम कर्तव्य है कि यह न केवल हरिद्वार और भारत के, किंतु समस्त संसार के अंधकार आच्छादित स्थलों को ज्योतिर्मय करने हेतु प्रकाशस्तंभ की भूमिका निभाए।

ऊपर मैंने रैम्जे मैक्डानल्ड की गुरुकुल यात्रा का जिक्र किया था। आपने सुना स्वामी श्रद्धानंद ने उन्हें कहा था कि वह बच्चों को तप और अनुशासन का अभ्यास कराने में प्रयत्नशील हैं। आइए, हम अपने आप से पूछें कि हम स्वयं कहाँ तक ऐसी जीवन साधना कर रहे हैं। जैसे मैंने कई बार कहा है बच्चे तो वानर समान नकलची होते हैं। जैसा बड़ों को करता देखते हैं वैसा करते हैं। आइए, हम अंतर्मुख होकर सोचें कि हम उनके सामने क्या आदर्श और उदाहरण उपस्थित कर रहे हैं। हम स्वयं कहाँ तक यम-नियम का पालन कर रहे हैं ? आज देश में विलासिता की बीमारी घर कर रही है। उससे जुड़ी हुई हैं आलस्य, प्रमाद और अनुशासनहीनता की घातक बीमारियाँ। ऋषि दयानंद ने नव-मानव के निर्माण का जो नुसखा हमकों आज से सौ वर्ष पूर्व दिया था, यदि हमने उस पर पूर्णतया अमल किया होता तो आज हमारी स्थित कहीं अधिक उत्तम होती। उनके नुसखे के मूल मंत्र हैं, ब्रह्मचर्य, तप और संयम।

निस्संदेह कठोर तप से ही नव-मानव का निर्माण होगा और इस कार्यक्रम में अगवाई करना आर्य संस्थाओं का काम है। लेकिन क्या मैं यह पूछने की धृष्टता कर सकता हूँ कि हमारी आर्य संस्थाओं में कार्यरत कितने गुरुजन ब्रह्मचर्य के तप की आवश्यकता अथवा साधना से भिज्ञ हैं ? कभी उनसे पूछिए तो सही कि ब्रह्मचर्य सूक्त कौन से वेद का सूक्त है ? उसका आशय क्या है ? स्वामी श्रद्धानंद जी महाराज ने उसकी क्या व्याख्या की है ?

यह है काम और चुनौती जो आज हमारे वेदज्ञ और संस्कृत विद्वानों के सामने है। उनका धर्म है कि वह इन आदर्शों का न केवल स्वयं पालन करें, वरन् इनको जनसाधारण तक पहुँचाएँ। सर्वप्रथम कम-से-कम अपनी ही शिक्षा संस्थाओं में कार्यरत सहयोगियों को तो इनसे परिचित कराएँ। इस हेतु यदा-कदा संगोष्ठियाँ करें।

शिविर लगाएँ। स्पष्ट है कि इन आदर्शों का सर्वत्र प्रचार करने हेतु हमें संस्कृत और हिंदी के दायरे से भी बाहर निकलना होगा। और न केवल अन्य देशी और विदेशी भाषाओं के माध्यम को अपनाना होगा, बल्कि दूरदर्शन और दूरसंचार—से आधुनिक साधनों को भी प्रयोग में लाना होगा। तभी तो हम विश्व को आर्य बना सकते हैं। लेकिन विश्व को आर्य बनाने का बीड़ा वही तो उठा सकता है जो स्वयं असली मानो में आर्य हो, न कि नाम निहाद आर्यसमाजी।

इस प्रसंग में हमारे कुलसचिव डॉ. चंद्रभानु अकिंचन ने एक कार्यक्रम शुरू किया था, जो चल नहीं पाया। उसकी ओर भी आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहूँगा। दोष उनका नहीं है, दोष है मेरे जैसे अनुशासनहीन विद्यार्थियों का। डॉ. अकिंचन ने घोषणा की कि वे सप्ताह में तीन दिन अमृतवाटिका में सरल संस्कृत सुबोध हेतु वयस्कों की कक्षाएँ आरंभ करेंगे। जोश में आकर मैंने अपना नाम तो उनकी श्रेणी में लिखवा दिया, परंतु नियमित रूप से उपस्थित न हो पाया। ऐसा ही अन्य विद्यार्थियों द्वारा हुआ। डॉ. अकिंचन की कक्षाएँ टूट गईं। जैसा मैंने ऊपर कहा है अब वह स्टेज आ गई है जब गुरुकुल के अध्यापकों, विशेषकर अंग्रेजी जानने वाले अध्यापकों को संस्कृत और वेद में प्रवेश करने हेतु उद्यमशील होना चाहिए। आप जानते ही हैं कि विश्व भर में आज वैदिक साहित्य के प्रति जिज्ञासा उभर रही है, संसार के प्रबुद्ध व्यक्ति योग की ओर आकृष्ट हो रहे हैं। लेकिन उन तक वैदिक साहित्य पहुँचाने वाले हैं कौन ? यही स्वयं घोषित भगवान् ? यह तो अपनी खुदाई के नशे में मखमूर हैं। यह असली वैदिक संस्कृति का क्या संदेश देंगे ? अतः आज आर्य अध्यापकों के सामने यह चुनौती है। वह द्विभाषी, त्रिभाषी बनें। पहल गुरुकुल से हो सकती है। यहाँ संस्कृत और अंग्रेजी भाषा के विद्वान् एक ही परिसर में रहते हैं। वह आचार्य रामदेव, पं. लेखराम से प्रेरणा ग्रहण करें और उनके सदृश एक-दूसरे से अन्य भाषाएँ सीखकर देश-विदेश में वेद प्रचार के कार्य में समर्पण भाव से जावें।

इसी प्रकार इनका यह भी धर्म है कि वह गुरुकुल में प्रविष्ट ब्रह्मचारियों की संस्कृत और अंग्रेजी भाषाओं में संभाषण शक्ति को उजागर करें। पुराने समय में गुरुकुल की यह एक विशिष्टता थी। उसे पुनः प्राप्त करना हमारा परम धर्म है।

मैं कहाँ तक गुरुकुल की उपलब्धियों, विफलताओं अथवा सपनों का बखान करूँ ? पंजाबी थियेटर के संस्थापक श्री गुरदयाल सिंह खोसला ने शेरे पंजाब लाला लाजपतराय पर पंजाबी में एक पंजाबी नाटक लिखा। उसका हिंदी अनुवाद गुरुकुल विद्यालय के अध्यापकों ने किया है, जो शृंखलाबद्ध रूप से 'आर्य मर्यादा' में प्रकाशित हो रहा है। सर्वश्री जितेंद्र और दीनानाथ के नेतृत्व में वार्षिक परीक्षाओं के पश्चात् गुरुकुल विद्यालय के ब्रह्मचारी इस नाटक को खेलने जा रहे हैं। इसी प्रकार हम सचेष्ट हैं कि वेद महाविद्यालय का संस्कृत विभाग अपने विद्यार्थियों द्वारा कोई-न-कोई

संस्कृत नाटक तैयार करावे। हम यह भी चाहते हैं कि विद्यालय में संगीत की भी कक्षाएँ जारी हों, जिससे कि ब्रह्मचारी वेद मंत्रों, श्लोकों इत्यादि के सस्वर पाठ करने में कौशल प्राप्त कर सकें और हम उन्हें टी.वी., रेडियो इत्यादि के माध्यम से दूरदराज तक प्रसारित करें।

हम यह भी चाहेंगे कि गुरुकुल विद्यालय के ब्रह्मचारियों को किसी-न-किसी हस्तकला कौशल में पर्याप्त दक्षता प्राप्त करने का अवसर मिले, ताकि यहाँ से उत्तीर्ण होने के पश्चात् वह सरकारी नौकरियों की तलाश में इधर-उधर न भटकें। ऋषि दयानंद ने 'सत्यार्थ प्रकाश' में वेद-वेदांग, गणित, भूगोल, विज्ञान, ज्योतिष इत्यादि की शिक्षा के अतिरिक्त गुरुकुल की पाठविधि में आयुर्वेद, गांधर्ववेद, धनुर्वेद, अथर्ववेद के प्रशिक्षण का भी प्रस्ताव किया है। आज जब बैंकों इत्यादि से कर्ज आसानी से मिल सकते हैं; कोई वजह नहीं हमारे ब्रह्मचारी नौकरी की खातिर दर-दर भटकें। इस कार्यक्रम को ठोस स्वरूप देने हेतु हमने खादी ग्रामोद्योग से संपर्क स्थापित किया है। आशा है कि आगामी वर्ष में इस दिशा में हमें सफलता प्राप्त होगी और विद्यालय में शिल्पकला के प्रशिक्षण का सुचारु प्रबंध हो जाएगा।

आप सब जानते हैं 1982 में नई दिल्ली में एशियायी खेलें होने जा रहे हैं और इनके बाद 1984 में लास एंजिल्स में ओलंपिक खेलें होंगी। मैं जानना चाहूँगा आप उनमें विजयश्री प्राप्त करने के लिए क्या तैयारी कर रहे हैं ? जैसा मैंने अनेक बार कहा है, ओलंपिक की खेलों में लगभग पाँच सौ पदक वितरित होते हैं। भारत के हिस्से में कितने आए हैं ? जनसंख्या के अनुपात से हम भारतवासी विश्व का सातवाँ भाग हैं। हमें पाँच सौ में से सत्तर पदक जीतने चाहिए। यदि हम ऐसा नहीं कर पाते तो क्यों ? क्या कभी आपने इस पर विचार किया है ?

जैसे डॉ. सुरेशचंद्र शास्त्री कहा करते हैं कि पुस्तक परीक्षा में तो लब्धांक, कृपांक, भिक्षांक अथवा छुरांक प्राप्त करके प्रथम श्रेणी उपलब्ध की जा सकती है, परंतु क्रीड़ा के क्षेत्र में ऐसा नहीं हो पाएगा। यहाँ तो निरंतर साधना, अटूट तप और अखंड ब्रह्मचर्य की आवश्यकता होगी। क्या आप यह कीमत देने को तैयार हैं ? आइए, आज ध्यानचंद का स्मरण करें, जिसने भारत की हॉकी की टीम का कुशल नेतृत्व करके तिरपन वर्ष पहले विश्व खेल-कूद जगत् में भारत माँ का मुख उज्ज्वल किया था। आइए, उनके पद-चिह्नों पर चलते हुए एशियायी और ओलंपिक खेलों में भारत के गौरव के लिए एवं अपने और अपने माता-पिता के सम्मान के लिए स्वर्णपदकों की मालाएँ अर्जित करने का संकल्प लें। हाँ, इस यज्ञ में जहाँ आपकी साधना और तप की आहुतियाँ पड़ेंगी वहाँ हम बड़ों को धन और सुव्यवस्था की सामग्री जुटानी होगी। गुरुकुल का वर्तमान प्रशासन इस दिशा में अपनी जिम्मेदारी के प्रतिपूर्ण सजग है। हम यह स्वप्न लेते हैं कि आगामी एशियायी खेलों में गुरुकुल के स्नातक अथवा ब्रह्मचारी अपना कला-कौशल दिखाकर कुलमाता का

नाम उज्ज्वल करेंगे। इस हेतु हमने गुरुकुल में शारीरिक शिक्षा के निदेशक का पद सृजन करने का निश्चय किया है। यहाँ के विद्यार्थियों का डील-डौल बहुत सुंदर है, उनमें अदम्य उत्साह है, पौरुष है। क़मी है केवल पथ-प्रदर्शन की और वैज्ञानिक तौर पर प्रशिक्षण की। इसे हम दूर करने जा रहे हैं।

आज देश और समाज में सर्वत्र विघटनकारी शक्तियों का प्रादुर्भाव हो रहा है। एक राष्ट्र, एक विधान, एक निशान की भावना धूमिल हो रही है। भारत में चिराग लेकर भी ढूँढ़िए तो भारतीय या हिंदुस्तानी जन मुश्किल से मिलेगा। यहाँ कोई पंजाबी है तो कोई बंगाली, कोई असमिया है तो कोई मारवाड़ी, कोई मराठा है तो कोई गुजराती, कोई ब्राह्मण है तो कोई शैव या वैष्णव, कोई सिख या जाट है तो कोई हरिजन या अहीर, शिया या सुन्नी। लेकिन हिंदुस्तानी आज कहाँ है ? आज देश में प्रांतीयता और उपजातिवाद की बीमारी घुन की तरह लगी हुई है। ऋषि दयानंद ने हमें राष्ट्रप्रेम का मंत्र दिया था। दयानंद के सैनिक आर्य जन ही इस बीमारी का दृढ़ता से मुकाबला कर सकते हैं।

जिला जज सहारनपुर के निर्णय दिनांक 2 जुलाई के बाद जब मैं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले से मिला तो उन्होंने मुझे माल्यार्पण करते हुए 'संगच्छध्वम्' का मंत्र दिया था। मेरा दृढ़ मत है कि इस संकट की घड़ी में जब हम अपने आपको आंतरिक और बाहरी आसुरी शक्तियों से घिरा हुआ पाते हैं हम सबका हित इसी मंत्र को स्वीकार करने में है।

ब्रह्मचारियों में राष्ट्रप्रेम और एकता की भावना जाग्रत करने हेतु हमने 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर विद्यालय के ब्रह्मचारियों को निम्नवत् चार सदनों में विभक्त किया और उन्हें झंडे प्रदान किए।

1. वीर हकीकत सदन, 2. शहीद चंद्रशेखर आजाद सदन
3. शहीद भगतसिंह सदन, 4. शहीद रामप्रसाद बिस्मिल सदन

इसी प्रसंग में हमने यह भी निश्चय किया है कि हम वीरों, शहीदों की पुण्य तिथियाँ और विभिन्न आर्य पर्व यथेष्ट श्रद्धा और उल्लास से मनाया करेंगे।

इसी शृंखला में 5 सितंबर को शिक्षक दिवस मनाया गया, इसी प्रकार बाल दिवस, महिला दिवस, रामदेव दिवस, शहीद लेखराम दिवस, गुरुकुल स्थापना दिवस, आर्यसमाज स्थापना दिवस, श्रद्धानंद सप्ताह और ऋषि निर्वाण उत्सव इत्यादि भी सोत्साह मनाए गए।

परंपरानुसार इस वर्ष वसंत पंचमी के अवसर पर पुण्यभूमि में सोल्लास सहभोज एवं खेल-कूद के कार्यक्रम संपन्न हुए।

ऋषि बोधोत्सव भी पुण्यभूमि में मनाया गया। 4 मार्च को कांगड़ी ग्राम में यज्ञ-हवन किया गया। इस अवसर पर कांगड़ी ग्राम के श्री अर्जुनसिंह नामक एक सौ दो वर्षीय वृद्ध सज्जन ने, जो कि स्वामी श्रद्धानंद जी के साथ काम करते थे,

अपने संस्मरण सुनाते हुए कहा कि स्वामी जी को पेड़ों से अत्यंत प्रेम था, लेकिन अब ये निर्दयतापूर्वक काटे जा रहे हैं। इस पर विज्ञान महाविद्यालय के वनस्पति विभाग के अध्यक्ष डॉ. विजयशंकर ने संकल्प किया कि आगामी वर्षा ऋतु में वे इस ग्राम में सात सौ पचास पेड़ लगाएँगे। सात सौ पचास इसलिए कि कांगड़ी ग्राम की जनसंख्या सात सौ पचास है। इसी प्रकार गाँव की सफाई, चिकित्सा व्यवस्था, कन्या विद्यालय आदि के प्रबंध के लिए जिलाधीश बिजनौर से संपर्क स्थापित किया गया। जिन्होंने कि इन कार्यों के लिए अपने संबंधित अधिकारियों को आदेश दे दिए हैं। मैं जिलाधीश बिजनौर के प्रति इस सहयोग के लिए अपना आभार प्रकट करना चाहूँगा।

भाषण शृंखला में स्वामी श्रद्धानंद की जीवनी एवं उनके आदर्शों पर प्रकाश डाला गया। इस अवसर पर उपस्थित सभी युवकों, विद्यार्थियों ने प्रतिज्ञा की कि वह स्वामी दयानंद द्वारा दर्शाए निर्देशों के अनुसार पच्चीस वर्ष की आयु से पूर्व विवाह नहीं करेंगे।

तत्पश्चात् यह कार्यक्रम गुरुकुल कांगड़ी के पुरातन महाविद्यालय के भवन में साधना शिविर के रूप में परिवर्तित होकर दिनांक 6 मार्च, '81 तक चला। वहाँ जमीन में गड़ा हुआ एक हवनकुंड प्राप्त हुआ जहाँ अनुमानतः स्वामी श्रद्धानंद यज्ञ किया करते थे। 5 एवं 6 मार्च को सभी शिविरवासियों ने वहाँ यज्ञ किया। रात्रि को कांगड़ी ग्रामवासी डेढ़ बजे तक भजन, प्रवचन एवं स्वामी श्रद्धानंद के संस्मरण सुनाया करते थे।

इस साधना शिविर में आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के प्रधान श्री सरदारी लाल वर्मा ने भी दो दिन बिताए। आयुर्वेद कॉलेज, गुरुकुल कांगड़ी के प्रिंसिपल डॉ. सुरेशचंद्र शास्त्री भी वहाँ पधारे और उन्होंने सफाई और स्वास्थ्य की दृष्टि से कांगड़ी ग्राम की ओर विशेष ध्यान देने का आश्वासन दिया।

मुझे इस शिविर में ऐसा आभास हुआ कि मानो हमारे पूर्वजों की आत्मा हमें ललकारकर यह चुनौती एवं पुण्य संदेश दे रही है कि यज्ञ की ज्वाला की भाँति–

1. सर्वत्र प्रकाश फैलाओ–अंधकार मिटाओ।
2. सर्वत्र सुगंधि फैलाओ–दुर्गंध मिटाओ।
3. अपनी दुर्वासनाओं को दग्ध करो।
4. सर्वदा ऊर्ध्वगामी बनो।

मैं समझता हूँ यदि हम ऋषि दयानंद द्वारा दिए गए इस सत्य मार्ग के पथिक बनने का प्रयास करें तो इसमें न केवल हमारा कल्याण है, वरन् स्वदेश और संसार का भी कल्याण है।

मैं शायद जरूरत से ज्यादा बातें कह गया। मेरे दिल में आग है, मैं उसे प्रकाशित होने से रोक नहीं पाया, क्षमाप्रार्थी हूँ।

1982–परिवर्तन के स्वर

❑ श्री बलभद्र कुमार हूजा

आप गुरुकुल कांगड़ी के इतिहास से सुपरिचित हैं। जैसाकि स्वामी श्रद्धानंद ने अपनी जीवनी में लिखा है, उनका यौवन काल बहुत तूफानी रहा, एक पुलिस अफसर के पुत्र होने के नाते वे कुसंग और दुर्व्यसनों के शिकार हुए। उन्होंने क्या-क्या उच्छृंखलताएँ नहीं कीं, किंतु भगवत् कृपा से जब वे वेदमार्तंड स्वामी दयानंद के संपर्क में आए और उन्होंने स्वामी जी द्वारा रचित 'सत्यार्थ प्रकाश' का अध्ययन किया तो उनके दिव्य नेत्र खुल गए। उनके जीवन ने 180 अंश पलटा खाया। वे भोगी से योगी बन गए। उन्होंने अनुभव किया, जैसे उनसे पहले स्वामी दयानंद ने अनुभव किया था और स्वामी दयानंद से पहले स्वामी विरजानंद ने अनुभव किया था कि देश की कठिनाइयों और मुसीबतों का मूल कारण अनार्ष ग्रंथों का प्रचार एवं विदेशी शासन का अस्तित्व है। उन्होंने यह भी अनुभव किया कि यदि देश को संकटों से मुक्त करना है तो उसके लिए वज्र समान दृढ़, नैतिक मूल्यों से ओत-प्रोत, तपस्वी एवं समर्पित युवक समुदाय का सृजन करना होगा। ऐसा युवक समुदाय जो न केवल प्राचीन संस्कृति के मूल्यों पर आचरण करता हो, अपितु आधुनिक विज्ञान की शक्ति से सुसज्जित हो। प्रमाद, आलस्य, अज्ञान, असत्य से ऊपर हो, भ्रष्टाचार-पाखंड से ऊपर हो। ब्रह्मचारी हो अर्थात् ब्रह्मांड में विचरण करे और ब्रह्मांड के रहस्यों को लूट-लूटकर ग्रहण करे और उनका सर्वसाधारण के हित में वितरण करे।

इसी प्रकार के ब्रह्मचारी पैदा करने के लिए स्वामी श्रद्धानंद ने गुरुकुल की स्थापना की थी।

इसमें कोई संदेह नहीं कि गत अस्सी वर्षों में गुरुकुल ने देश को बड़े-बड़े सत्याग्रही दिए, व्यापारी दिए, लेकिन हमको मानना पड़ेगा कि देश की प्रगति में गुरुकुल का योगदान आटे में नमक के बराबर रहा है।

देश की दशा कहाँ तक सुधरी है यह सर्वविदित है।

जहाँ एक ओर, देश में हरित क्रांति हुई है; आर्यभट्ट और भास्कर की उड़ानें

हुई हैं; गोविंद सागर, नागार्जुन सागर जैसे बड़े-बड़े बाँधों का निर्माण हुआ है; सीमेंट और खाद के कारखाने खुले हैं, वहीं दूसरी ओर, गरीबी और बेरोजगारी के दानव अभी भी मुँह बाए खड़े हैं, हरिजन पर अत्याचार हो रहे हैं, दहेज की कुप्रथा के कारण हजारों नारियों का जीवन नरकमय बन रहा है, सैकड़ों ग्रामों में पीने के लिए शुद्ध जल नहीं मिलता, ऊँच-नीच की, जाति-पाँति की, प्रांतीयता, प्रदेशवाद की समस्याएँ घुन की तरह देश की एकता और शक्ति का ह्रास कर रही हैं। भ्रष्टाचार का बोलवाला है। विश्वविद्यालयों में, सचिवालयों में तोड़-फोड़ है। यद्यपि अंग्रेज यहाँ से चले गए हैं, किंतु अंग्रेजियत का वर्चस्व बढ़ रहा है। दयानंद के नाम से चलाई जा रहीं शिशु पाठशालाओं में भी गलत या सही गिटपिट हो रही है।

सच पूछिए तो आज मैकाले अपनी कब्र में पड़ा हुआ हँस रहा होगा और स्वामी दयानंद और श्रद्धानंद की आत्मा हमारी दास मनोवृत्ति और आत्मबलहीनता पर हमें फटकार रही होगी। स्मरण कीजिए।

युवक सदा आदर्शवादी होता है। यह संसार में फलना-फूलना चाहता है। वह मार्गदर्शन माँगता है। लेकिन जब उसे अपने माता-पिता, आचार्यगण से सही मार्ग दर्शन नहीं मिलता तो वह छटपटाता है। आज युवक समुदाय में जो परेशानी है, छटपटाहट है, इसी कारण है।

ऋषि दयानंद ने कहा था, 'मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेद' । उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश तथा अपने अन्य ग्रंथों द्वारा हमारे सम्मुख मानव के निर्माण का नुसखा प्रस्तुत किया था। सत्यार्थ प्रकाश के प्रारंभ में ही उन्होंने नव-भारत को कैसी शिक्षा की आवश्यकता है, इस विषय पर अपने विचार प्रतिपादित किए। स्वामी श्रद्धानंद ने उन्हीं आदर्शों को लेकर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना की, किंतु कालांतर में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय भी अपनी परंपराओं को त्यागकर साधारण विश्वविद्यालयों का अनुकरण करने लग गया।

आज देश के शिक्षाक्षेत्रों में 10+2+3 की बात चलती है। दिसंबर 1977 में स्वर्गीय श्रीमन्नारायण की अध्यक्षता में एक राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन हुआ था। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति के नाते मुझे भी उसमें भाग लेने का अवसर प्राप्त हुआ। उसमें 10+2 के बजाए 5+3+4 का फार्मूला उभरकर सामने आया था। अर्थात् पहले पाँच वर्ष में बालक मातृभाषा का ज्ञान प्राप्त करे। इस अवस्था में बालकों को वेद मंत्र, सुभाषित आदि कंठस्थ कराए जाएँ जिससे कि उनके मन एवं चित्त बल प्राप्त करें और जीवन यात्रा के संघर्ष में समय-समय पर उन्हें वेदवाणी और देववाणी से मार्गदर्शन प्राप्त हो।

इसके वाद आगामी तीन वर्षों में बालकों को संस्कृत, अंग्रेजी या अन्य कोई भाषा सिखलाई जाए जिससे उनके अंदर एक देशीय एवं अंतर्राष्ट्रीय भावना का उद्भव हो। इस काल में उन्हें वैज्ञानिक शिक्षा भी प्रदान की जाए जिससे वे वैज्ञानिक

उपलब्धियों से सुपरिचित हो सकें और उनके मस्तिष्क का विकास हो।

इसके बाद अगले चार वर्षों में अर्थात् आठवीं श्रेणी तक प्रत्येक विद्यार्थी को एक-न-एक धंधा, हस्तकला, जिसे स्वामी दयानंद ने सत्यार्थ प्रकाश के तीसरे समुदाय में हस्त क्रिया की संज्ञा दी है, सिखलाई जाए। ताकि तेरहवीं कक्षा करते-करते वह किसी-न-किसी धंधे में समुचित दक्षता प्राप्त कर ले और चाहे तो अठारह वर्ष की वय को प्राप्त करते ही बैंक से उधार लेकर अपना निजी धंधा स्थापित कर सके। आखिर कितने नवयुवक सरकारी नौकरियों में खप सकते हैं ? अधिकांश को तो निजी धंधे चलाने ही पड़ेंगे।

अब रही विश्वविद्यालय के स्तर की शिक्षा की बात। अब प्रायः सभी कुलपति, शिक्षा विशारद और देश हितैषी इस बात को स्वीकार करते हैं कि वर्तमान विश्वविद्यालय शिक्षा प्रणाली खोखली हो चुकी है। हमारे विश्वविद्यालय रोजगार की गाड़ी की प्रतीक्षा करते हुए बेरोजगारों के वेटिंग हॉल (प्रतीक्षालय) बने हुए हैं, न कि नव-मानव के निर्माण के यज्ञकुंड।

जहाँ विद्याध्ययन, अनुसंधान होना चाहिए वहाँ लाठी, गोलियाँ चल रही हैं। सौम्य-शांतिमय वातावरण की जगह भय और आतंक का राज्य है। सरस्वती की न होकर, रुद्र की प्रतिष्ठा है। प्रतिबद्ध गुरु का स्थान, शंकालु थानेदार ने ग्रहण कर लिया है। बहुत कम गुरु ऐसे मिलेंगे जो शिष्यों के अध्ययन-अध्यापन, चरित्र निर्माण के सर्वांगीण विकास में समुचित रुचि रखते हों। अधिकांश गुरु तो अपने शिष्यों के नामों से भी अपरिचित होते हैं।

उपाधि प्राप्त करने की होड़ तो है, लेकिन उनके लिए तप करने की इच्छा नहीं है।

जहाँ कम-से-कम दो सौ दिन पढ़ाई होनी चाहिए वहाँ केवल अस्सी-नब्बे-सौ दिन ही पढ़ाई होती है। उसमें भी शिष्य कितने दिन उपस्थित रहता है यह तो पूछिए ही न। शून्य उपस्थितिवालों को भी परीक्षा में प्रवेश मिल जाता है। फिर क्यों न परीक्षाओं में नकलबाजी हो ? क्यों न छुरेबाजी हो ?

जब मैं नवंबर 1975 में गुरुकुल कांगड़ी में आया तो यह तो मैं जानता था कि समय पर वेतन न मिलने के कारण यहाँ के अध्यापक वर्ग में रोष व्याप्त है और यहाँ अभद्र घटनाएँ घटित हो चुकी हैं, किंतु मैं इस बात को सुनने के लिए कदापि तैयार न था कि यहाँ भी नकलबाजी चलती है। 1973 में यहाँ के रसायन विभाग के सत्यनिष्ठ प्राध्यापक स्व. ओमप्रकाश सिन्हा को नकलबाजी रोकने के प्रयास में ही अपनी बलि देनी पड़ी थी। क्या हम छाती पर हाथ रखकर कह सकते हैं कि आज स्थिति में सुधार हुआ है ?

आपने कभी सोचा है कि नकलबाजी के लिए जिम्मेदार कौन है ? मैं पूछना चाहूँगा, ऐसे कुकृत्यों के लिए हम केवल विद्यार्थियों को ही क्यों दोष दें। क्या इस

प्रसंग में समाज अथवा सरकार भी उत्तरदायी नहीं है ?

जब प्रत्येक अच्छी नौकरी के लिए बी.ए. की शर्त लगाई जाएगी तो येन-केन-प्रकारेण सभी बी.ए. करना चाहेंगे। फिर डिवीजन भी उपयोगी सिद्ध हो तो येन-केन-प्रकारेण डिवीजन लेना भी आवश्यक हो जाता है।

प्रश्न यह उठता है कि पुलिस की नौकरी के लिए बी.ए. की शर्त क्यों लाजमी हो ? यदि फौज की नौकरी के लिए केवल बारहवीं कक्षा पास व्यक्ति कोशिश कर सकता है और उचित फौजी प्रशिक्षण के बाद जनरल बनने की आकांक्षा रख सकता है तो क्यों न आई.जी. पुलिस बनने के लिए बारहवीं के बाद ही क्षेत्र खुल जाए ? इसी तरह आई.ए.एस., पी.सी.एस., तहसीलदार, बैंक मैनेजर, आदि के लिए भी क्यों न बारहवीं के बाद चयन कर लिया जाए ? बाकी प्रशिक्षण तत्संबंधी विशेष विद्यालयों में ही हो।

इस संदर्भ में मैं शिक्षाशास्त्रियों के सम्मुख 12+3 की बजाए 12+दक्ष का फार्मूला रखा करता हूँ। हम बारह के बाद डिग्री कोर्स को दो या तीन वर्ष की अवधि में ही समाप्त करने का लक्ष्य क्यों रखें ? क्यों न इस बात की छूट दे दी जाए कि जब विद्यार्थी विभिन्न निर्धारित विषयों में यथेष्ट दक्षता प्राप्त कर ले, वह स्नातक की उपाधि प्राप्त कर सकता है। जैसाकि मैंने कई कैनडियन और अमरीकी विश्वविद्यालयों में देखा है। इन विश्वविद्यालयों में डिग्री प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि विद्यार्थी पंद्रह क्रेडिट (अथवा अलंकार) प्राप्त करे। वह एक वर्ष में पाँच से अधिक अलंकार प्राप्त नहीं कर सकता। इस तरह उसे बी.ए. करने के लिए कम-से-कम जब वह पंद्रह क्रेडिट (अलंकार) प्राप्त कर लेता है तो विश्वविद्यालय से उसे उपाधि प्राप्त हो जाती है। इन सब समस्याओं-सुझावों पर गहराई से विचार करने हेतु हमने शिक्षा पटल की गत 4 अप्रैल की बैठक में एक दक्ष समिति का गठन किया है जिसमें हमारे तीन प्रधानाचार्यों के अतिरिक्त दिल्ली, रोहतक, गढ़वाल विश्वविद्यालय के अध्यापक भी हैं। आशा है उनके सुझाव हमारे लिए लाभदायक सिद्ध होंगे।

इसके अतिरिक्त आगामी ग्रीष्मावकाश में हम यहाँ गुरुकुल कांगड़ी परिसर में वैदिक शिक्षा प्रणाली पर राष्ट्रीय स्तर पर एक कार्यशाला का आयोजन भी करने जा रहे हैं जिसमें कि हम इस संबंध में आर्ष ग्रंथों से प्रेरणा लेते हुए अपना भावी मार्ग और कार्यक्रम सुनिश्चित कर सकें।

आपको स्मरण होगा कि 1974 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय को नोटिस दिया था कि क्यों न इसका विश्वविद्यालय स्तर समाप्त कर दिया जाए और इसके महाविद्यालयों को मेरठ विश्वविद्यालय से संबद्ध कर दिया जाए ? उनकी मुख्य आपत्ति यह थी कि जिन उद्देश्यों को लेकर यह विश्वविद्यालय स्थापित हुआ था, उनकी पूर्ति नहीं हो रही है। उनकी इच्छा थी कि

गुरुकुल के संविधान में ऐसे परिवर्तन कर दिए जाएँ जिससे विश्वविद्यालय का वातावरण आसुरी वृत्तियों से मुक्त रहे तथा वहाँ शांति और गरिमा के साथ अध्ययन-अध्यापन का कार्य होता रहे। इसी उद्देश्य को लेकर 1976 में स्वर्गीय पद्मभूषण डॉ. सूरजभान की अध्यक्षता में एक उच्चस्तरीय समिति का गठन किया गया था, लेकिन इस बीच गुरुकुल में हुई उथल-पुथल के कारण यह समिति अपना कार्य पूरा न कर सकी।

गत वर्ष इस कार्य की पूर्ति हेतु डॉ. गंगाराम को विशेषाधिकारी नियुक्त किया गया। उन्होंने शिक्षा मंत्रालय, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और विभिन्न शिक्षाशास्त्रियों के सुझावों को दृष्टिगत रखते हुए नए संविधान का प्रारूप तैयार किया जिसको गहरे विचार विनिमय के बाद सीनेट द्वारा 10 अक्तूबर, 1981 को विशेष बैठक में पारित कर दिया गया। अब तदनुसार कार्य हो रहा है।

इस प्रकार विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की ओर से गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का अनुदान रिलीज करने में जो आपत्ति थी वह अब समाप्त हो गई है।

इसी तरह गत वर्षों में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की ओर से आय-व्यय का लेखा न पहुँचने के कारण विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने विकास अनुदान की ग्रांट पर भी रोक लगा दी थी। आपको यह जानकर हर्ष होगा कि अब 1980 तक का लेखा जा चुका है और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने गुरुकुल को छठी पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत पचास लाख रुपए की राशि देना स्वीकार किया है।

इस प्रसंग में एक प्रारंभिक बैठक अभी हाल में 18 मार्च, '82 को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की अध्यक्षा तथा सचिव के साथ हुई जिसमें उन्होंने प्रथम चरण में इस योजना के अंतर्गत चार प्रोफेसर पद (1. वेद, 2. संस्कृत, 3. दर्शन, 4. प्राचीन भारतीय इतिहास) तथा एक पद पुस्तकालयाध्यक्ष का, एक पद क्रीड़ाध्यक्ष का, दो सहा. पुस्तकालयाध्यक्ष के पद स्वीकृत किए हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने दस मकानों की और अतिथिगृह पूर्ति की स्वीकृति भी प्रदान की है। इन कार्यों पर लगभग बीस लाख रुपए व्यय होने का अनुमान है। हमने अपनी छठी योजना में कई नए कोर्स जैसे शारीरिक और यौगिक शिक्षा, पुस्तकालय विज्ञान, विज्ञान में स्नातकोत्तर कक्षाएँ, कन्या गुरुकुल, देहरादून में बी.एड. अथवा गृहविज्ञान में डिप्लोमा खोलने के प्रस्ताव किए हैं। इन प्रस्तावों की जाँच हेतु आयोग की ओर से एक विजिटिंग कमेटी आएगी जो वस्तुस्थिति का आकलन करके हमारी योजना को सुनिश्चित करेगी। मैं इन उपलब्धियों पर वित्ताधिकारी श्री थापर एवं कुलसचिव श्री हीरा को बधाई देता हूँ।

कांगड़ी ग्राम हमारा मातृग्राम है। इसका स्मरण करते ही हम सबको रोमांच हो जाता है। गत वर्ष हमने यहाँ 25 जुलाई को बड़े पैमाने पर महोत्सव मनाया।

मुख्य अतिथि थे मुरादाबाद मंडल के आयुक्त श्री अरविंद वर्मा, आई.ए.एस.। बिजनौर के जिलाधीश श्री अनीस अंसारी के नेतृत्व में हमें जिलाधिकारियों की ओर से पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। आनन-फानन में कांगड़ी ग्राम की लिंक रोड बन गई। कोई दो हजार के करीव पेड़ रोपे गए, ग्रामीण शिल्प के लिए कतिपय उपकरण वितरण किए गए तथा वृद्धों को पेंशनें दी गईं। आपमें से जिन महानुभावों ने इस कार्यक्रम को दिल्ली दूरदर्शन पर देखा होगा वे जानते हैं कि उस समय ग्रामीणों में कितना उत्साह था।

कांगड़ी ग्राम उद्धार के कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए गत 12 मार्च को डॉ. विजयशंकर अध्यक्ष, वनस्पति विभाग, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय इस योजना के अवैतनिक निदेशक एवं श्री जगदीश विद्यालंकार, पुस्तकालयाध्यक्ष ने नवयुवक मंगल दल, कांगड़ी ग्राम के सहयोग से श्रद्धानंद प्राथमिक पाठशाला में कांगड़ी ग्राम में गोवर्धन शास्त्री स्मृति पुस्तकालय की स्थापना की, जिसका विधिवत् उद्‌घाटन कुलाधिपति महोदय श्री वीरेंद्र द्वारा किया गया, यह पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय विस्तार रेखा के प्रथम चरण के रूप में स्थापित किया गया है और आशा है, इस अंचल के ग्रामवासियों के बौद्धिक विकास में यथोचित योगदान देगा। इस पुस्तकालय के लिए संवड़ विद्या सभा ट्रस्ट, जयपुर की ओर से पाँच सौ रुपए वार्षिक अनुदान स्वीकृत हुआ है। कांगड़ी ग्राम सुधार योजना की सफलता में सर्वश्री जबरसिंह सेंगर, के.पी. गुप्ता तथा सहायक मुख्याधिष्ठाता जितेंद्र का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

कांगड़ी ग्राम में आयुर्वेद औषधालय की शाखा स्थापित करने हेतु गुरुकुल कांगड़ी राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. सुरेशचंद्र शास्त्री से निवेदन किया गया है। उनसे यह भी निवेदन किया गया कि यहाँ चल-चिकित्सा का भी प्रबंध करें जिससे इस ग्राम की और विशेषतौर पर इस अंचल की स्वास्थ्य-संबंधी आवश्यकताएँ पूर्ण हों। कांगड़ी ग्राम को अंतर्राष्ट्रीय ख्याति उपलब्ध है। देश-विदेश से लोग इस तीर्थस्थल पर आना चाहते हैं। प्रश्न यह है कि क्या हम आज उनको इस ग्राम के दर्शनों के लिए निमंत्रण देने की स्थिति में हैं ?

इस संबंध में आपके सम्मुख हमारे मान्य कुलाधिपति श्री वीरेंद्र का प्रस्ताव दोहराना चाहूँगा और आपसे निवेदन करूँगा कि कांगड़ी ग्राम सुधार निधि में प्रतिव्यक्ति कम-से-कम एक रुपया दान दे। मुझे विश्वास है कि इस प्रकार हम इस निधि में लाखों रुपया एकत्रित कर सकेंगे और तदनुसार हमें सरकारी संस्थाओं की ओर से प्रचुर मात्रा में मैचिंग ग्रांट उपलब्ध हो जाएगी।

इसी शृंखला में 27 जुलाई, '81 को मेरठ मंडल के आयुक्त श्री आर.डी. सोनकर के करकमलों द्वारा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में भी वन महोत्सव का उद्‌घाटन हुआ। इस कार्यक्रम के अंतर्गत विश्वविद्यालय परिसर में अनेक प्रकार

के वृक्ष लगाए गए तथा पुष्पवाटिका का जीर्णोद्धार किया गया। विज्ञान महाविद्यालय के ग्रीन हाउस के लिए बहुत से दुर्लभ पौधे मँगवाए गए।

यहाँ मैं राष्ट्रीय सेवा योजना, राष्ट्रीय कैडिट कोर और आर्य वीर दल का भी जिक्र करना चाहूँगा। 1974 में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय ने विद्यार्थियों को राष्ट्रीय सेवा योजना में नियोजित करने का निश्चय किया था, किंतु कुछ परिस्थितियों से यह कार्यक्रम आगे बढ़ न पाया। अब मेजर वीरेंद्र अरोड़ा के नेतृत्व में यह कार्यक्रम पुनः प्रारंभ किया जा रहा है। इसके अंतर्गत विश्वविद्यालय ने ग्राम कांगड़ी के अतिरिक्त पड़ोस के दो गाँव जमालपुर एवं जगजीतपुर की सेवा करने का निश्चय किया है। कन्या गुरुकुल, देहरादून से कहा गया है कि वह भी अपने समीपवर्ती एक गाँव को अपनाएँ। इन गाँवों के सामाजिक सुधार के लिए विश्वविद्यालय पूर्ण रूप से कार्य करेगा। विशेषकर दलित वर्ग के उत्थान के लिए प्रत्येक संभव कार्य किया जाएगा।

इन्हीं उद्देश्यों को लेकर गत वर्ष श्री बाल दिवाकर हंस के संचालन में 1 से 15 जून तक गुरुकुल कांगड़ी परिसर में आर्य वीर दल शिविर का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री ओमप्रकाश पुरुषार्थी ने किया। इस अवसर पर आर्य वीरों ने विश्वविद्यालय के परिसर में लगभग तीन सौ पेड़ लगाकर अपनी कार्यशीलता की छाप छोड़ी। आशा है गत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी आर्य वीर दल का शिविर यहाँ लगेगा।

इसी शृंखला में 21 दिसंबर, '81 को ग्राम जमालपुर में शिशु प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें छत्तीस बच्चों के स्वास्थ्य का निरीक्षण किया गया और सर्वश्रेष्ठ बच्चों को स्वामी श्रद्धानंद बलिदान के अवसर पर 23 दिसंबर, '81 को श्री के.एन. सिंह, जिलाधीश, सहारनपुर द्वारा पुरस्कृत किया गया। उसी दिन गुरुकुल में हरिजन स्नेह मिलन समारोह भी मनाया गया।

एन.सी.सी. के छात्रों ने समाज सेवा के इस कार्यक्रम में भाग लिया।

इन योजनाओं को प्रारंभ करके गुरुकुल कांगड़ी ने स्वामी श्रद्धानंद के सपनों को मूर्त रूप दिया है।

आपको यह जानकर हर्ष होगा कि इस वर्ष कन्या गुरुकुल, देहरादून की 'ज्योति समिति' का कार्यक्रम अत्यंत उत्साहपूर्वक संपन्न हुआ। इस महाविद्यालय की छात्राओं ने जिला स्तर पर आयोजित राष्ट्रीय समूह गान में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया। इसी प्रकार आर्यसमाज, देहरादून द्वारा संचालित कुँवर बृजभूषण चल-वैजंती संगीत प्रतियोगिता में उन्होंने प्रथम स्थान प्राप्त किया। खेल-कूद प्रतियोगिता में भी इस महाविद्यालय ने सीनियर वर्ग की चैंपियनशिप प्राप्त की। इसमें कु. नायब कौर को सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी के रूप में सम्मानित किया गया।

मुझे आपको यह सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि संघड़ विद्या सभा ट्रस्ट,

जयपुर ने प्रतिवर्ष 'माता हूजा स्मृति निबंध प्रतियोगिता' आयोजित करने के लिए कन्या गुरुकुल, देहरादून को पांच सौ रुपए वार्षिक का अनुदान देना स्वीकार किया है।

मुझे आपको यह सूचित करते हुए प्रसन्नता हो रही है कि गंधर्व महाविद्यालय, नई दिल्ली के प्राचार्य श्री विनयचंद्र मौद्गल्य ने आगामी सत्र से विश्वविद्यालय एवं विद्यालय के छात्रों के लिए गंधर्व वेद की शिक्षा की व्यवस्था करने का हमारा आग्रह स्वीकार कर लिया है।

श्री मौद्गल्य के पिता श्री रामचंद्र स्वामी श्रद्धानंद के साथ गुरुकुल में अंग्रेजी के अध्यापक रहे। आपके अग्रज व्याख्यान कला के धनी स्वामी समर्पणानंद जी से कौन परिचित नहीं है ! मेरे निमंत्रण पर वे शिक्षा पटल की गत बैठक 4 अप्रैल, '82 में सम्मिलित हुए। उन्होंने यहाँ की स्थिति का अवलोकन किया। आशा है श्री मौद्गल्य के निर्देशन में गुरुकुल गंधर्व वेद की शिक्षा की दिशा में यथेष्ट सफलता प्राप्त करेगा।

प्राचीन भारतीय इतिहास विभाग की देखरेख में पुरातत्त्व संग्रहालय उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। पिछले वर्ष संग्रहालय का विधिवत् उद्घाटन आर्य संन्यासी स्वामी ओमानंद द्वारा किया गया। वर्तमान दीक्षांत समारोह के अवसर पर पुरातत्त्व संग्रहालय में एक भव्य प्रदर्शनी का आयोजन किया गया है। आशा है, आप इसे देखकर आनंदित होंगे।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि इस वर्ष लंदन में हो रहे 'भारत उत्सव' में इस संग्रहालय की एक महत्त्वपूर्ण कलाकृति 'सागर मंथन' प्रदर्शित की जा रही है। दसवीं शती का यह पाषाण फलक झींवरहेड़ी (सहारनपुर) से प्राप्त हुआ था।

आपको यह जानकर भी प्रसन्नता होगी कि पुरातत्त्व संग्रहालय की ऊपरी मंजिल में डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार की अध्यक्षता में चल रहे आर्य स्वाध्याय केंद्र का स्थायी कार्यालय स्थपित कर दिया गया है। आपसे निवेदन है कि आपके पास या आपके मित्रों के पास इस संबंध में कोई सामग्री हो जो इस केंद्र के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकती है उसे संग्रहालय निदेशक डॉ.वी.सी. सिन्हा के पास रक्षार्थ भेजने की कृपा करें।

इसी वर्ष हमने एक अन्य कार्यक्रम को भी आगे बढ़ाया है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत डॉ. ताराचंद शर्मा, अध्यक्ष, रसायन विभाग ने विभिन्न प्रशासनिक सेवाओं के लिए विद्यार्थियों को प्रशिक्षण देने का उत्तरदायित्व स्वीकार किया। प्रतियोगिता के लिए प्रशिक्षण देने की इन कक्षाओं को चलाने में उन्हें प्रो. चंद्रशेखर त्रिवेदी, एवं प्रो. सदाशिव भगत की ओर से सहयोग मिला। इस वर्ष ग्यारह छात्रों को फारेस्ट रेंजर कोर्स की प्रतियोगिता के लिए प्रशिक्षण दिया गया।

इस वर्ष हमारे विद्यार्थियों ने कतिपय सरस्वती यात्राएँ भी कीं। दिसंबर मास

में विज्ञान महाविद्यालय के छात्रों का एक दल बंबई गया जहाँ इसने समुद्री जानवरों एवं वनस्पति का संग्रह किया। यहाँ से यह दल बंगलौर गया। यहाँ इन्होंने रमण शोध संस्थान, एच.एम.टी. कारखाना, विश्वेश्वरीय टेक्नीकल विज्ञान इंस्टिट्यूट, नेशनल बॉटेनिकल गार्डन का अवलोकन किया। यहाँ से सरस्वती दल मैसूर गया जहाँ उन्होंने ज्यूओलोजिकल गार्डन में संसार के विभिन्न भागों की वस्तुओं की जातियों का अध्ययन किया। तत्पश्चात् इन्होंने कावेरी नदी पर बना बाँध तथा वृंदावन गार्डन भी देखा। यह दल मैसूर से मद्रास पहुँचा। वहाँ छात्रों ने मद्रास विश्वविद्यालय, जियम लाइट, स्नेक पार्क, चिल्ड्रन पार्क इत्यादि को देखा।

कन्या गुरुकुल, देहरादून की छात्राओं ने भी मसूरी भ्रमण का कार्यक्रम बनाया।

इसी तरह वेद एवं कला महाविद्यालय तथा विद्यालय के ब्रह्मचारियों का दल जयपुर, अजमेर, पुष्कर, उदयपुर, आबू आदि की सांस्कृतिक यात्राओं पर गया। ब्रह्मचारी विश्वपाल जयंत के सौजन्य से कण्वाश्रम की यात्राएँ तो विद्यालय के ब्रह्मचारी यदा-कदा करते ही रहते हैं।

मुझे यह सूचित करते हुए भी प्रसन्नता हो रही है कि गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी प्रो. चंद्रशेखर त्रिवेदी एवं ईश्वरदत्त भारद्वाज और स्नातक आत्मदेव जी के सहयोग से विद्यालय विभाग के वरिष्ठ ब्रह्मचारियों को एक सौ आठ वेदमंत्र हिंदी पद्यात्मक अनुवाद और भावार्थ सहित कंठस्थ कराए गए। इनका पद्यबद्ध रूपांतर स्नातक आत्मदेव जी ने किया। ये सौ वेद मंत्र इस वर्ष 'गोवर्धन ज्योति' नामक पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुए हैं।

इस वर्ष क्रीड़ा के क्षेत्र में प्रो. ओम् प्रकाश मिश्र के नेतृत्व में विश्वविद्यालय ने कुछ कदम आगे बढ़ाया। कन्या गुरुकुल, देहरादून का उल्लेख मैं ऊपर कर चुका हूँ। विश्वविद्यालय की टीम ने इस वर्ष जॉन अंतर्विश्वविद्यालय हॉकी टूर्नामेंट में भाग लिया। बहुत वर्षों के बाद इस वर्ष स्वामी श्रद्धानंद हॉकी टूर्नमेंट का आयोजन किया गया। इसमें रुड़की, मसूरी, मुजफ्फरनगर, देहरादून, धामपुर, बरेली, सहारनपुर, बी.एच.ई.एल., हरिद्वार की टीमों ने भाग लिया। इस टूर्नामेंट में बी.एच.ई.एल., हरिद्वार की टीम विजयी रही एवं विश्वविद्यालय की टीम उपविजयी।

जनवरी '82 में विश्वविद्यालय की टीम ने रायबरेली में आयोजित राज्य स्तरीय हॉकी टूर्नामेंट में भाग लिया और प्रथम स्थान प्राप्त किया।

विश्वविद्यालय की बैडमिंटन टीम ने नार्थ जॉन अंतर्विश्वविद्यालय बैडमिंटन टूर्नामेंट में भी भाग लिया। इसी प्रकार क्रिकेट टूर्नामेंट में भाग लिया और वहाँ उपविजेता रही।

इस वर्ष बास्केट बाल के खेल की व्यवस्था भी की गई। टेबिल टेनिस आदि का खेल तो प्रायः नियमित रूप से हो रहा है।

इस वर्ष विश्वविद्यालय की शिक्षा पटल ने यह प्रस्ताव पारित किया कि अन्य विषयों के शोधछात्रों को संस्कृत का ज्ञान अवश्यमेव होना चाहिए और संस्कृत के शोधछात्रों को अंग्रेजी का ज्ञान होना चाहिए। इसके लिए एक मास का लघु कोर्स बनाया जा रहा है। यह भी निश्चय किया गया है कि शोधछात्र अपने शोध विषय की रूपरेखा बनाते समय ऋषि दयानंद के विचारों को सम्मुख रखे और उन्हीं के द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों पर व्यापक परिप्रेक्ष्य में अधिकाधिक शोध के क्षेत्र निर्धारित करे, इसी दृष्टिकोण को लेकर विश्वविद्यालय में शोधकार्य चल रहा है। उदाहरण के लिए कुछ का उल्लेख यहाँ प्रासंगिक होगा—

1. संस्कृत में ऋषि दयानंद के परिप्रेक्ष्य में महाभारत में निर्दिष्ट धर्मों की समीक्षा।

2. संस्कृत में ही महर्षि दयानंद के परिप्रेक्ष्य में नारद, बृहस्पति तथा कात्यायन स्मृतियों का समीक्षात्मक अध्ययन।

3. प्राचीन भारतीय इतिहास में प्राचीन भारतीय नारी शिक्षा एवं महर्षि दयानंद का योगदान।

4. वेद में महर्षि दयानंद की बृहत्त्रयी का आलोचनात्मक अध्ययन।

5. संस्कृत में महर्षि दयानंद के शास्त्रार्थ : एक विवेचनात्मक अध्ययन।

गत वर्ष सुप्रसिद्ध साहित्यकार प्रेमचंद की शताब्दी विश्व भर में मनाई गई। उन्हें विभिन्न वादों के घेरे में बाँधने का उद्योग विश्व के विद्वानों ने किया, किंतु प्रसन्नता की बात है प्रेमचंद पर आर्यसमाज के प्रभाव का अध्ययन इस विश्वविद्यालय में हुआ और इस महत्त्वपूर्ण कार्य पर पी-एच.डी. की उपाधि प्रदान की गई। आपको जानकर सुखद आश्चर्य होगा कि प्रेमचंद गुरुकुल भी आए थे और यहाँ से लौटकर उन्होंने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के महत्त्व पर निबंध भी लिखा था।

इस अवसर पर मैं वर्ष 1983 के आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार विजेता श्री पंडित विश्वनाथ विद्यालंकार का भी अभिनंदन करता हूँ। यह पुरस्कार संघड़ विद्या सभा ट्रस्ट, जयपुर के अनुदान से प्रतिवर्ष उस विद्वान् अथवा संस्थान को दिया जाता है जो जनसाधारण के बीच वैदिक मूल्यों के प्रचार-प्रसार में अमूल्य सहयोग दे। श्री पंडित विश्वनाथ विद्यालंकार गुरुकुल के यशस्वी स्नातक हैं जो वर्षों से निरंतर वेद तथा आर्यसिद्धांतों के पोषण एवं प्रसार में लगे हुए हैं। प्रभु उन्हें चिरायु करे।

1983–अस्थिरता से स्थिरता की ओर

❑ श्री वलभद्र कुमार हूजा

अपने स्थापना काल से लेकर तिरासी वर्षों के इस विशाल अंतराल में इस विश्वविद्यालय ने आत्मविश्वास, परिपक्वता एवं स्वावलंबन का एक ऊँचा तथा निश्चित स्तर प्राप्त कर लिया है। इस शिक्षा संस्थान ने अध्ययन-अध्यापन, अनुसंधान और विस्तार के कार्यों के साथ-साथ विद्यार्थी को सच्चे अर्थों में मानव बनाने की दिशा में सराहनीय कार्य किया है। अपने विकास की प्रक्रिया में यह विश्वविद्यालय उस प्राचीन वैदिक शिक्षा के दर्शन से प्रभावित रहा है जिसमें ब्रह्मचर्य के पालन तथा गुरु-शिष्य के माध्यम से संपूर्ण व्यक्तित्व से मंडित एक स्नातक का निर्माण होता है। योग्य, चरित्रवान्, राष्ट्रभक्त स्नातकों के निर्माण सदा हमारा लक्ष्य रहा है जो ज्ञान और प्रचंड कर्म की गंगा में स्नान कर निर्मल हो चुके हों।

कुछ अवांछनीय तत्त्वों की कुचेष्टा के कारण, गत वर्षों हमारे मार्ग में व्यवधान उपस्थित हो गए थे, किंतु जुलाई 1980 के जिला जज, सहारनपुर के ऐतिहासिक निर्णय के बाद हमने पुनः उसी मार्ग पर बढ़ना आरंभ कर दिया है जो स्वामी श्रद्धानंद ने दिखलाया था।

विश्वविद्यालय के संविधान में कतिपय दोषों की ओर शिक्षा मंत्रालय तथा अनुदान आयोग द्वारा बार-बार इंगित किया जा रहा था। अतः 1981 में इसमें समुचित परिवर्तन किया गया। इसके अंतर्गत अब विश्वविद्यालय के कुलाधिपति का कार्यकाल एक वर्ष से बढ़ाकर तीन वर्ष कर दिया गया है। पहले आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब का प्रधान पदेन कुलाधिपति होता था। अब आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली के प्रधानों की संस्तुति पर भारत का कोई भी सुयोग्य नागरिक सीनेट द्वारा तीन वर्ष के लिए कुलाधिपति के पद पर चुना जा सकता है। इसी प्रकार कुलपति की नियुक्ति के लिए भी जो चयन समिति अब गठित होती है, उसमें विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के प्रतिनिधि को भी सम्मिलित कर लिया गया है, जिससे इस संबंध में अनिश्चितता की स्थिति कभी उत्पन्न न होने पाए।

इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय के संविधान को अन्य दृष्टियों से स्वस्थ बनाने का प्रयास निरंतर जारी है।

गत वर्ष विश्वविद्यालय के गुरुजनों और अधिकारियों ने समय-समय पर अनेक शिक्षा सम्मेलनों और परिचर्चा संगोष्ठियों में भाग लिया। प्रौढ़ शिक्षा, निरंतर शिक्षा, समाज शिक्षा और जनसंख्या शिक्षा आदि के क्षेत्रों में नवीन जानकारियाँ प्राप्त की गईं और उन पर विस्तृत चर्चा के परिणामों के परिप्रेक्ष्य में अब यहाँ कार्यक्रम बनाए जा रहे हैं।

परीक्षाओं के क्षेत्र में हमारे गुरुजन विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के मार्गदर्शन में यथेष्ट सुधार करने हेतु सचेष्ट हैं। हमारे पाठ्यक्रम किस प्रकार जीवनोपयोगी सिद्ध हों, इस दिशा में भी वह विचार कर रहे हैं।

विश्वविद्यालय के विद्यार्थी शैक्षिक क्षेत्र के अतिरिक्त खेल-कूद में भी अपनी विशेष योग्यता प्रदर्शित करने में पीछे नहीं रहे। अब हमारे खिलाड़ी दल अंतर्विश्वविद्यालय प्रतियोगिताओं में भी भाग लेने लगे हैं।

विभिन्न स्तर के समुदायों में वेद प्रचार और ज्ञान-विज्ञान के विस्तार हेतु गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय द्वारा पाँच पत्रिकाएँ और 'गोवर्धन ज्योति' प्रकाशित की जा रही हैं। लक्ष्य बोध रहे है, इसका प्रतीक 'ध्रुव' है। ध्रुव दृढ़ता का भी प्रतीक है। फिर है 'प्रह्लाद' जो ओज, तेज, दृढ़संकल्प और तरुणाई का प्रतीक है। फिर है 'आर्यभट्ट'। इस पर आरूढ़ होकर 'प्रह्लाद' 'ध्रुव' की ओर बढ़ रहा है, 'वैदिक पाथ' का अनुसरण करते हुए। 'गुरुकुल पत्रिका' इस यात्रा का उद्घोष करती है। 'गोवर्धन ज्योति' गुरुकुल का पथ प्रशस्त करती है।

यह ज्योति क्या है ? यही न, कि गोवर्धन पर्वत की शरण में आए सभी स्त्री-पुरुष अपने-अपने डंडे व उँगलियाँ उठाएँ, गोवर्धन को छत्रवत् धारण करें तभी अतिवृष्टि से बचाव होगा। प्रजातंत्र में सभी का कर्तव्य है कि सभी अपने धर्म का पालन करें। हम तो अवतारवाद में विश्वास नहीं करते। कब तक किसी नेता या देवता की प्रतीक्षा करेंगे ? आइए, हम स्वयं अपने गुरु बनें। अपनी दिव्याग्नि को जलाएँ। 'आत्मदीपो भव' का आर्ष संदेश सुनें। अपने दायित्व को समझें। तभी देश का और हम सबका कल्याण होगा। हम गोवर्धनधारी बनें, यही 'गोवर्धन ज्योति' का संदेश है।

गत वर्षों में अनुसंधान के क्षेत्र में वेद, संस्कृत, हिंदी और प्राचीन भारतीय इतिहास विभागों द्वारा विशेष कार्य हुआ है। उदाहरण के लिए अनुसंधान के कुछ विषयों का उल्लेख इस प्रकार है—

1. वैदिक मानवतावाद, 2. महर्षि दयानंद के यजुर्वेद भाष्य में समाज का स्वरूप, 3. वेदों में वर्णित संस्थाएँ, 4. प्राचीन भारत में धर्मनिरपेक्षता, 5. प्राचीन भारत में जनमत, 6. हिंदी व्याकरण का उद्गम और विकास, 7. इंद्र विद्यावाचस्पति

और उनकी साहित्य साधना, 8. मध्यकालीन हिंदी साहित्य में वैदिक परंपरा, 9. प्रेमचंद साहित्य पर आर्यसमाज का प्रभाव, 10. भारत और कंबुज के संबंध।

सितंबर 1982 में वैदिक शिक्षा प्रणाली पर गुरुकुल कांगड़ी में एक राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों से उच्चकोटि के विद्वान् इसमें सम्मिलित हुए। वैदिक शिक्षा प्रणाली से ही देश का उद्धार संभव है, ऐसा मत सभी विद्वानों ने प्रकट किया। इस कार्यशाला में परीक्षा प्रणाली में सुधार और पाठ्यक्रम को संशोधित करने पर भी विशेष वल दिया गया। अपने उद्घाटन भाषण में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की अध्यक्षा श्रीमती माधुरी शाह ने भारत के नव-जागरण के आंदोलन में ऋषि दयानंद की भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि आज देश को गुरुकुल के मार्गदर्शन की आवश्यकता है, क्योंकि उसके पास एक अमूल्य निधि है। वेद प्रकाश के पुंज हैं। उन्होंने आशा व्यक्त की कि गुरुकुल विश्वविद्यालय से ऐसी ज्योति प्रस्फुटित होगी जो न केवल देश, अपितु विश्व का मार्ग प्रशस्त करेगी।

पिछले वर्ष सोवियत यूनियन, इटली, जर्मनी, इंडोनेशिया तथा मैक्सिको के विद्वान् तथा राजनेता गुरुकुल पधारे। आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि वे गुरुकुल शिक्षा पद्धति से अत्यंत ही प्रभावित होकर इस देश से लौटे हैं। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के मुख से वेदमंत्र सुनकर वे अत्यंत ही मुग्ध हुए।

पिछले कुछ समय से विश्वविद्यालय में आरंभ की गई योग शिक्षा भी आकर्षण का प्रबल केंद्र बन गई है। योग कक्षाएँ वयस्कों के लिए तथा विद्यालयों के ब्रह्मचारियों के लिए पृथक् रूप से चलाई जा रही हैं।

गुरुकुल का संग्रहालय और पुस्तकालय भी उत्कर्ष के मार्ग पर निरंतर अग्रसर हैं। ज्ञान की सुरक्षा और इसके प्रसार में इनका महत्त्व सुविदित है। स्वामी श्रद्धानंद की प्रेरणा से गुरुकुल संग्रहालय की स्थापना बीसवीं शती के प्रथम दशक में 'गंगा के पूर्वी किनारे पुण्यभूमि पर की गई थी। वह छोटा सा पौधा अब विशाल वट-वृक्ष बन गया है।

गुरुकुल के पुस्तकालय में एक लाख से ऊपर पुस्तकें हैं। इनमें दुर्लभ पांडुलिपियों का अच्छा संग्रह है।

विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए इस पुस्तकालय में आवश्यक पुस्तकों का संग्रह किया गया है। आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि हमारे बहुत से स्नातक जो भारतीय प्रशासनिक सेवा, प्रांतीय सिविल सेवा, सेना, इंजीनियरिंग, स्वास्थ्य शिक्षण संस्थानों तथा बैंकों में नियुक्तियाँ प्राप्त करने में सफल हुए हैं, उन्हें इस पुस्तकालय से यथेष्ट सहायता मिली है। विश्वविद्यालय के पुस्तकालय द्वारा ऐसे छात्रों के लिए जो शिक्षा के आर्थिक बोझ को नहीं उठा सकते, आंशिक रोजगार योजना भी क्रियान्वित की गई है, जिसके अंतर्गत छात्रों को पुस्तकालय

में दैनिक कार्य करने के बदले में आर्थिक अनुदान दिया जाता है।

गुरुकुल पुस्तकालय में संगृहीत हजारों दुर्लभ पुस्तकों, पत्रिकाओं आदि को माइक्रो फिल्मिंग द्वारा संरक्षित करने का कार्य नेहरू मेमोरियल म्यूजियम एवं लाइब्रेरी, दिल्ली के सौजन्य से किया जा रहा है। गुरुकुल के वैभवपूर्ण इतिहास का स्मरण दिलाने वाले 'सद्धर्म प्रचारक', 'श्रद्धा', 'आर्य' आदि पत्रों का संरक्षण माइक्रो फिल्मिंग द्वारा संपन्न हो चुका है। इस सहयोग हेतु हम नेहरू मेमोरियल म्यूजियम एवं लाइब्रेरी के आभारी हैं।

आप जानते ही हैं कि 1981 में हमने इस संस्था की जन्मस्थली ग्राम कांगड़ी को पूर्ण रूप से विकसित करने का संकल्प लिया था। बिजनौर के जिलाधिकारियों की सहायता से यह कार्य तीव्र गति से आगे बढ़ रहा है। वृक्षारोपण के अतिरिक्त सड़कों को पक्का करने का काम चल रहा है। घरेलू उद्योग-धंधे वहाँ प्रारंभ किए जा रहे हैं। इस वर्ष दो गोबर गैस प्लांट और पाँच निर्बल आवास बनकर तैयार हो चुके हैं। स्टेट बैंक व न्यू बैंक ऑफ इंडिया द्वारा कांगड़ी ग्राम निवासियों को आर्थिक सहायता प्राप्त हो रही है। ग्राम का नवयुवक मंगल दल ग्राम विकास में पूरी आस्था के साथ जुटा हुआ है।

कुछ ही माह पूर्व राष्ट्रीय सेवा योजना के महत्त्व को देखते हुए शिक्षा मंत्रालय के सहयोग से इस कार्यक्रम को विश्वविद्यालय में भी आरंभ करा दिया गया है। इस योजना के अंतर्गत दिसंबर 1982 में एक दस दिवसीय शिविर का आयोजन कांगड़ी ग्राम की पुण्यभूमि में किया गया। शिविरवासियों ने समर्पण भावना से कांगड़ी ग्राम में सड़कों के निर्माण, वृक्षारोपण, आर्थिक विकास तथा परिवार कल्याण की दिशा में अनेक कार्य किए। विश्वविद्यालय के पुस्तकालय द्वारा एक लघु शाखा के रूप में वहाँ पर गोवर्धन पुस्तकालय की स्थापना की गई है।

इसी शृंखला में हमारे अंगभूत महाविद्यालय कन्या गुरुकुल, देहरादून की कन्याओं ने भी अपने समीपस्थ तपोवन में राष्ट्रीय सेवा योजना के अंतर्गत एक सफल शिविर का आयोजन किया।

विश्वविद्यालय का विद्यालय विभाग भी गुरुकुल परंपरा के अनुरूप प्रगति के पथ पर अग्रसर है। प्रातः ब्राह्ममुहूर्त में विद्यालय के ब्रह्मचारियों द्वारा वैदिक मंत्रों का पाठ परिसरवासियों में स्फूर्ति भर देता है। मंत्र पाठ के पश्चात् ब्रह्मचारी योगाभ्यास के कार्यक्रम में सम्मिलित होते हैं। तत्पश्चात् दैनिक यज्ञ की सुगंधि से विश्वविद्यालय का संपूर्ण क्षेत्र भर जाता है। विद्यालय के कार्यक्रम में वरिष्ठ ब्रह्मचारियों को प्रतिदिन एक वेद मंत्र अर्थ सहित पढ़ाया जाता है। जब सौ से अधिक मंत्र इस प्रकार पढ़ा दिए जाते हैं तो उन्हें 'गोवर्धन ज्योति' के रूप में प्रकाशित कर दिया जाता है। इस वर्ष इस पुस्तिका का विमोचन गोवर्धन जयंती के अवसर पर 19 मार्च को किया गया। इस अवसर पर स्थानीय विद्यार्थियों की

वार्षिक वेदपाठ प्रतियोगिता का भी शुभारंभ किया गया।

किसी भी उत्तम शिक्षण संस्थान के लिए सुंदर वातावरण की आवश्यकता होती है। इस दृष्टि से यह विश्वविद्यालय बड़ा ही भाग्यशाली है। प्रकृति ने जो भी सौंदर्य प्रदान किया है, उसे और भी मनोहारी बनाने के लिए हमारे सभी गुरुजन, विद्यार्थी और कर्मचारी क्रियाशील हैं। गत वर्ष यहाँ लगभग दो हजार फूलदार और अन्य वृक्ष लगाए गए जो प्रायः सभी चल रहे हैं।

इस विश्वविद्यालय को चरमोत्कर्ष तक पहुँचाने का संकल्प विश्वविद्यालय के शिक्षकों, अधिकारियों, कर्मचारियों तथा विद्यार्थियों ने लिया है। पीछे हमें जिन परेशानियों से गुजरना पड़ा है, उनसे शिक्षा ग्रहण करते हुए हम कल के प्रति सजग हैं। आलस्य, द्वेष, विषमता, शोषण और हिंसा से रहित समाज का निर्माण आर्य समाज का मुख्य लक्ष्य है और गुरुकुल वह कार्यशाला है, जहाँ इस लक्ष्य की पूर्ति हेतु योग्य ब्राह्मणों, क्षत्रियों, वैश्यों और शूद्रों का निर्माण होता है। दयानंद के ये वीर सैनिक राष्ट्रोत्थान के कार्य में प्रबल योगदान कर रहे हैं। हम ऋषियों के महदस्तु महस्तु च लक्ष्य को अपनी प्रगति का पाथ्य मानते हैं। उन्होंने कहा था कि चित्त और हृदय को जितना हो सके, बड़ा करो। अनंत की भाषा सोचो, हमारे समस्त प्रयास विराट् की ओर बढ़ें।

हमारा मनोरथ पूर्ण हो, इसके लिए हम आप सबका सहयोग चाहते हैं। गुरुकुल के विकास कार्यक्रम में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तथा शिक्षा मंत्रालय से जो प्रेरणा व सहायता प्राप्त होती रहती है, उसके लिए हम उनके आभारी हैं।

1984–विश्वसनीयता बढ़ी

❑ श्री बलभद्र कुमार हूजा

इस वर्ष के आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार विजेता श्री सत्यकाम विद्यालंकार का मैं अभिनंदन करता हूँ। श्री सत्यकाम विद्यालंकार वेदों के निष्णात ज्ञाता हैं और उन्होंने भी ऋग्वेद का अंग्रेजी में अनुवाद करके ऋषि दयानंद के कार्यों को गति दी है। आप गुरुकुल के यशस्वी स्नातक हैं और वर्षों से वेद का प्रचार, भाषण, चित्रकला तथा शब्दों के आलेखों द्वारा करते रहे हैं।

इधर जो कुछ पंजाब में हो रहा है उसके बारे में भी हमें कुछ सोचना है; करना है। एक वक्त था जब हमारा देश 'आसिंधु' सिंधु पर्यंत था और सिंधु से ही हमने हिंदू नाम लिया था। लेकिन हमारे देश के चार टुकड़े बने और अब पाँचवाँ टुकड़ा बनाने का षड्यंत्र रचा जा रहा है। गुरुकुल के गुरुजन और आर्यजनों को सोचना है कि इसका किस प्रकार से प्रतिकार किया जाए तथा राष्ट्र की मूलभूत एकता पर मँडराते हुए सांप्रदायिक खतरों का कैसे मुकाबला किया जाए !

इस संदर्भ में मैं श्री वी.के.आर.वी. राव द्वारा वी.टी. कृष्णमाचारी स्मृति व्याख्यान माला में दिए गए व्याख्यान को दोहराना चाहूँगा, जिसमें उन्होंने कहा कि हमें राष्ट्र निर्माण की सर्वांगीण प्रक्रिया में भारतीय तत्त्वचिंतन और मूल्यों के आधार पर ही विकास का ढाँचा स्थिर करना है। भारत में भिन्नता होते हुए भी एक राष्ट्रीयता का स्वरूप विद्यमान है। अतः न केवल शासन तंत्र को, अपितु स्वयंसेवी संस्थानों को भी इस महान् राष्ट्रीय यज्ञ में इकट्ठे मिलकर कार्य करना है जिससे देश में फैली हुई संकुचित विचारधारा और व्याप्त पाखंड का नाश हो, प्राचीन और आधुनिक जीवन मूल्यों का समन्वय हो और राष्ट्र हर दृष्टि से अभ्युदय तथा कल्याण की ओर अग्रसर हो सके।

अपने स्थापना काल से लेकर चौरासी वर्षों की सुदीर्घ यात्रा में इस विश्वविद्यालय ने युग की कई करवटें देखीं। आँधी और तूफान के अनेक झटके महसूस किए। लेकिन सुदृढ़ और अडिग चट्टान के सदृश कुलपिता के आदर्शों से पोषित यह विश्वविद्यालय आज अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त शिक्षा संस्थान

के रूप में प्रतिष्ठित हो चुका है और संपूर्ण विश्व की दृष्टि आज गुरुकुल पर केंद्रित है।

कामनवेल्थ विश्वविद्यालयों के बरमिंघम सम्मेलन में गुरुकुल के कुलपति के रूप में अगस्त 1983 में मुझे आमंत्रित किया गया था। इस सम्मेलन में विश्व के प्रमुख शिक्षाशास्त्रियों ने भाग लिया। इसमें मैंने निरंतर शिक्षा एवं सर्वांगीण ग्राम सुधार में गुरुकुल विश्वविद्यालय की भूमिका पर प्रकाश डाला। मैंने आयरलैंड, फ्रांस, हालैंड, पश्चिम जर्मनी, बेल्ज़ियम आदि देशों के प्रमुख विश्वविद्यालयों का अवलोकन भी किया। मैंने अनुभव किया कि वहाँ के शिक्षाशास्त्री गुरुकुल शिक्षा के स्वरूप को समझने और ग्रहण करने में जिज्ञासा तथा रुचि लिये हुए हैं। मैंने अनेक कुलपतियों को गुरुकुल में आकर शिक्षा की भारतीय परंपरा को देखने का निमंत्रण दिया है।

1980 के जिला जज, सहारनपुर के निर्णय के बाद गुरुकुल में पुनर्निर्माण का युग आरंभ हुआ। किंतु गत तीन वर्षों में आशा के विपरीत कतिपय अप्रत्याशित दिशाओं से गुरुकुल की प्रगति में बाधाएँ डालने के अनेक प्रयत्न किए गए। फिर भी मैं निस्संकोच कह सकता हूँ कि बावजूद इन बाधाओं के मान्य परिद्रष्टा डॉ. सत्यव्रत और कुलाधिपति श्री वीरेंद्र जी के नेतृत्व में गुरुकुल निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर हुआ है। संवैधानिक व्यवस्था के अनुरूप नियमित रूप से शिक्षा पटल, कार्यपरिषद् एवं शिष्टपरिषदों की बैठकें संपन्न हुईं। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार तथा उत्तर प्रदेश सरकार के प्रतिनिधि इन बैठकों में सम्मिलित हुए। उनके सहयोग एवं परामर्श से विश्वविद्यालय को उज्ज्वल स्वरूप प्राप्त हुआ है।

गत वर्ष विश्वविद्यालय के गुरुजनों और अधिकारियों ने समय-समय पर अनेक शिक्षा सम्मेलनों, परिचर्चाओं एवं संगोष्ठियों में भाग लिया।

5 जून, 1983 को विश्वविद्यालय में पर्यावरण दिवस पर एक विद्वद्संगोष्ठी का आयोजन हुआ। देश के अनेक विद्वानों ने इस संगोष्ठी में भाग लिया। भारत सरकार के पर्यावरण मंत्रालय के उपमंत्री माननीय श्री दिग्विजयसिंह इस संगोष्ठी के उद्घाटन के लिए पधारे।

मुझे आपको सूचित करते हुए प्रसन्नता है कि भारत सरकार के पर्यावरण विभाग ने गंगा के समन्वित अध्ययन की योजना के अंतर्गत इस विश्वविद्यालय को लगभग दस लाख रुपए का अनुदान देना स्वीकार किया है। इस कार्य हेतु हमें ऋषिकेश से लेकर गढ़मुक्तेश्वर तक का गंगा का भाग मिला है। डॉ. विजयशंकर, अध्यक्ष, वनस्पतिविज्ञान इस प्रायोजना के निदेशक हैं।

25 जुलाई, 1983 को विश्वविद्यालय में वृक्षारोपण का कार्यक्रम बड़े भव्य रूप से मनाया गया। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश के मंत्री श्री शिवनाथसिंह कुशवाहा,

चिपको आंदोलन के प्रणेता पद्मश्री सुंदरलाल बहुगुणा, मेरठ मंडल के आयुक्त श्री वी.के. गोस्वामी, जिलाधीश श्री एल.के. गुप्ता ने पर्यावरण संबंधी अपने विचार अभिव्यक्त किए। गत वर्षा ऋतु में विश्वविद्यालय परिसर एवं कांगड़ी ग्राम में हजारों वृक्षों का आरोपण किया गया।

25 से 27 दिसंबर तक अखिल भारतीय कृषक समाज ने इस विश्वविद्यालय में डॉ. बलराम जाखड़, अध्यक्ष लोकसभा के नेतृत्व में अपना वार्षिक सम्मेलन आयोजित किया। इस अवसर पर देश भर से हजारों कृषकबंधु इस विश्वविद्यालय में आए। उन्होंने इसे देखा और इसकी प्रगति की सराहना की।

9-10 मार्च, 1983 को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की विजिटिंग कमेटी गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की छठी पंचवर्षीय योजना को अंतिम रूप देने के लिए गुरुकुल में आई। इसके सदस्य थे—श्री रमारंजन मुखर्जी, भू.पू. कुलपति बर्दवान विश्वविद्यालय; प्रो. आर.सी. गौड़, अलीगढ़ विश्वविद्यालय; प्रो. एम.एल. रैना, पंजाब विश्वविद्यालय; श्री बी.आर. क्वाटरा, उप-सचिव, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग इस समिति के सचिव थे।

इस संदर्भ में जो प्रश्न उभरकर सामने आया वह था कि क्या गुरुकुल की कोई निजी विशेषता है अथवा गुरुकुल भी अन्य विश्वविद्यालयों की तरह ही है जो बी.ए., एम.ए. की परीक्षाएँ लेते हैं और डिग्रियाँ बाँटते हैं।

इस अवसर पर मैंने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के आठवें दशक का कार्यक्रम उपस्थित करते हुए कहा कि गुरुकुल सामान्य विश्वविद्यालयों की तरह नहीं, अपितु विश्व की समस्याओं के समाधान की दिशा में भी उपयोगी हो सकता है। वह संदेश है आध्यात्मिक मूल्यों का प्रचार, विज्ञान का प्रसार और पाखंड का खंडन अर्थात् श्रेयस् और प्रेयस् का संगम। आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानंद जानते थे कि देश तभी सशक्त होगा जब सभी देशवासी सशक्त, सबल, हृष्ट-पुष्ट, तेजस्वी, ओजस्वी और विचारवान् होंगे। वह देश की निर्बल, असहाय, असमर्थ जनता को बलवान्, स्वावलंबी तथा समर्थ बनाना चाहते थे। अतः जहाँ एक ओर उन्होंने समाज सुधार के कार्यक्रम पर बल दिया, वहाँ व्यक्तिगत सुधार पर भी उन्होंने यथेष्ट बल दिया।

इसी हेतु स्वामी श्रद्धानंद ने आज से चौरासी वर्ष पूर्व गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की, ताकि यहाँ से निकले हुए ओजस्वी स्नातक अच्छे ब्राह्मण, अच्छे वैश्व बनें और देश के उद्धार में अपना योगदान दें, लेकिन जिस पौराणिकता, पाखंड और पोपलीला के विरुद्ध स्वामी दयानंद ने युद्धभेरी बजाई थी वह अभी भी देश में व्याप्त है। अतः उनके कार्यक्रम को गतिमान करने हेतु तथा अज्ञान और रूढ़ियों के इन गढ़ों को मिटाने हेतु कृतसंकल्प नवयुवक समुदाय की, दयानंद के वीर सैनिकों की, बहुत आवश्यकता है और उनको तैयार करने का कार्य गुरुकुल कांगड़ी

विश्वविद्यालय का है।

इस संदर्भ में आचार्य सत्यकाम विद्यालंकार ने गुरुकुल को वैदिक संस्कृति का अंतर्राष्ट्रीय केंद्र बनाने की योजना विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की विजिटिंग कमेटी के सम्मुख रखी, जिसे उन्होंने बहुत पसंद किया।

विजिटिंग कमेटी ने हरिद्वार की शैक्षणिक आवश्यकताओं का भी जायजा लिया तथा विश्वविद्यालय की गतिविधियों का गहराई से अध्ययन किया और इसकी कमजोरियों एवं क्षमताओं का मूल्यांकन किया। आशा की जाती है कि उनकी सिफारिशें गुरुकुल के विस्तार में बहुत उपयोगी सिद्ध होगीं।

19 मार्च, 1984 को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में आचार्य गोवर्धन शास्त्री स्मृति मंत्रोच्चारण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस अवसर पर गोवर्धन ज्योति की छठी रश्मि का विमोचन करते हुए महात्मा आर्य भिक्षु ने कहा कि 'आचार्यों का परम कर्तव्य है कि वे बालकों में गुणों की वृद्धि करें तथा अवगुणों को दूर करें।'

इन दिनों आर्यसमाज गुरुकुल कांगड़ी ने भी अंगड़ाई ली है। संघड़ विद्या सभा ट्रस्ट, जयपुर की आर्थिक सहायता से आर्यसमाज गुरुकुल कांगड़ी ने स्वामी दयानंद के ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के दूसरे, तीसरे एवं छठे समुल्लास के सरलीकृत एवं संक्षिप्त संस्करण प्रकाशित किए। इसी प्रकार उन्होंने 'व्यवहार भानु' के सरलीकृत संस्करण का प्रकाशन किया। इन तीनों पुस्तिकाओं का प्रकाशन इस आशा से किया गया है कि स्वामी जी के विचार घर-घर तक पहुँचें।

मुझे यह कहते हुए भी प्रसन्नता हो रही है कि पद्मश्री विनयचंद मौद्गल्य, प्राचार्य, गंधर्व महाविद्यालय, नई दिल्ली, जिनकी प्रारंभिक शिक्षा गुरुकुल में ही हुई थी, ने गुरुकुल के ब्रह्मचारियों को संगीत शिक्षा की ओर प्रेरित करने हेतु अपनी अमूल्य सेवाएँ प्रदान की हैं। इस शृंखला में उन्होंने पिछले दिनों तीन दिन तक गुरुकुल में प्रवास किया तथा चुने हुए ब्रह्मचारियों को सस्वर वेदमंत्र एवं अन्य गीत सिखाए।

मुझे आपको यह सूचना देते हुए हर्ष हो रहा है कि पिछले दिनों इस विश्वविद्यालय में अमेरिकन अध्ययन के अखिल भारतीय संगठन का चौरासीवाँ वार्षिकोत्सव मनाया गया। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश के पर्यटन मंत्री श्री गुलाब सेहरा ने अपने संदेश में कहा कि ऐसी संस्थाओं ने देश-विदेश में एकात्मकता प्रतिष्ठित करने में लाभदायक भूमिका निभाई है। अवध विश्वविद्यालय के कुलपति श्री मेहरोत्रा ने कहा कि इस प्रकार के सम्मेलनों से गुरुकुल कांगड़ी की छवि निखरेगी। इस सम्मेलन का उद्घाटन हमारे मान्य परिद्रष्टा डॉ. सत्यव्रत जी सिद्धांतालंकार ने अपने ओजस्वी भाषण से किया। उन्होंने कहा कि किपलिंग तो कहता था, पूर्व-पश्चिम का संगम सर्वथा असम्भव है। मैं भारतीय किपलिंग कहता

हूँ—पूर्व और पश्चिम अभिन्न हैं और सदा ही एक-दूसरे से जुड़े रहेंगे।

आप जानते ही हैं कि गुरुकुल का मातृग्राम कांगड़ी ग्राम है। इस विश्वविद्यालय द्वारा इस गाँव को पूर्ण रूप से अंगीकृत कर लिया गया है। 26 दिसंबर, 1983 को लोकसभा अध्यक्ष श्री बलराम जाखड़ का इस गाँव में पदार्पण हुआ तथा वे इस गाँव की प्रगति से काफी प्रभावित हुए। स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, ज्वालापुर ने ग्रामवासियों को कुटीर उद्योग-धंधों के लिए ऋण देने का व्यापक कार्यक्रम शुरू किया है जिससे यहाँ के निवासियों की आर्थिक स्थिति में पर्याप्त सुधार हुआ है।

गत वर्ष श्रद्धानंद सप्ताह के दौरान डॉ. बी.डी. जोशी के निर्देशन में पुण्यभूमि में राष्ट्रीय सेवा योजना के अंतर्गत कैंप लगाया गया। विश्वविद्यालय के पचास छात्रों ने अत्यंत लगन और निष्ठा से कांगड़ी ग्राम में कार्य किया।

अन्य विशिष्ट अतिथिगण के अलावा माननीय बलराम जाखड़; श्री आर. वैंकट नारायण, कृषि उत्पादन आयुक्त, उत्तर प्रदेश; श्री दर्शनसिंह बैंस, जिलाधीश, बिजनौर ने कैंप का अवलोकन किया। इसका उद्घाटन भारत सरकार के भूतपूर्व सलाहकार श्री शाह ने किया था।

डॉ. त्रिलोक चंद के निर्देशन में गुरुकुल कांगड़ी द्वारा प्रौढ़ शिक्षा के कार्यक्रम के अंतर्गत तीस प्रौढ़ शिक्षा केंद्रों को सफलतापूर्वक संचालन किया जा रहा है।

गुरुकुल पुस्तकालय ने भी आशातीय प्रगति की है। गत वर्ष पुस्तकालय में विभिन्न विषयों की लगभग पाँच हजार पुस्तकें मँगवाई गईं। इस समय विभिन्न विषयों की तीन सौ पचास पत्रिकाएँ नियमित रूप से आ रही हैं। पुस्तकालय में इस वर्ष गुरुकुल से प्रकाशित संपूर्ण साहित्य एवं गुरुकुल के स्नातकों के विपुल प्रकाशन को पृथक् रूप से 'गुरुकुल प्रकाशन संग्रह' के नाम से संगृहीत किया गया है। इसके लिए पुस्तकालयाध्यक्ष श्री जगदीश विद्यालंकार धन्यवाद के पात्र हैं।

प्रो. विनोदचंद्र सिन्हा के नेतृत्व में गुरुकुल का संग्रहालय राष्ट्रीय ख्याति की ओर अग्रसर हो रहा है। इस सत्र से यहाँ अष्टधातु कक्ष और चित्रकला कक्ष की भी स्थापना की गई है। पंजाब विधान सभा के अध्यक्ष माननीय श्री मेहरोत्रा ने, जो पिछले दिनों गुरुकुल आए थे, गुरुकुल के संग्रहालय हेतु दस हजार रुपया विशेष अनुदान के रूप में स्वीकृत किए।

आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि विश्वविद्यालय में शोध तथा प्रकाशन का कार्य आलोच्य वर्ष में उत्साहवर्धक ढंग से बढ़ा है। आपको ज्ञात ही है कि गुरुकुल से नियमित रूप से प्रकाशित होने वाली पाँच पत्रिकाओं के अतिरिक्त ऋषि दयानंद निर्वाण शताब्दी पर गुरुकुल कांगड़ी ने अपने श्रद्धासुमन प्रस्तुत करते हुए 'ऋषि दयानंद की साधना और सिद्धांत' नामक ग्रंथ प्रकाशित किया। निर्वाण शताब्दी के अवसर पर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के सौजन्य से डॉ. गंगाराम गर्ग ने अंग्रेजी

में 'वैदिक पर्सपेक्टिव ऑन स्वामी दयानंद सरस्वती' नामक ग्रंथ प्रकाशित किया। इस पुस्तक की भूमिका सुप्रसिद्ध दार्शनिक प्रो. केनिथ जान्स द्वारा लिखी गई।

वेद एवं कला महाविद्यालय के वेद, संस्कृत, प्राचीन भारतीय इतिहास तथा हिंदी विभागों में अनुसंधान कार्य प्रगति पर हैं। इस वर्ष वेद विभाग में दो, संस्कृत विभाग में पांच छात्रों के पंजीकरण किए गए। इस संबंध में उल्लेखनीय है कि अब तक केवल चार विभागों में ही अनुसंधान कार्य की अनुमति थी। इस वर्ष दर्शन विभाग में भी अनुसंधान कार्य प्रारंभ करने की अनुमति विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने प्रदान कर दी है। तदनुसार दर्शन विभाग में भी पाँच छात्र पंजीकृत किए गए हैं। इसके अतिरिक्त अनुसंधान कार्य प्रारंभ करने हेतु मनोविज्ञान, अंग्रेजी तथा विज्ञान महाविद्यालय के वनस्पतिविज्ञान, जीवविज्ञान तथा रसायनविज्ञान आदि विभागों में भी अनुसंधान कार्य प्रारंभ करने के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से पत्राचार चल रहा है।

विश्वविद्यालय अपने स्थापना काल से ही उच्चतर अध्ययन तथा अनुसंधान कार्य में अग्रणी रहा है। महर्षि दयानंद को केंद्र बनाकर शोध के विविध परिदृश्य प्रस्तुत किए जाते रहे हैं। वैदिक मानवतावाद, वेद वर्णित संस्थाएँ, दयानंद कृत यजुर्वेद भाष्य में समाज का स्वरूप, प्राचीन भारत में धर्म निरपेक्षता, जनमत, भारत-कंबुज संबंध, बाली द्वीप में भारतीय संस्कृति का विकास, मध्यकालीन हिंदी साहित्य में वैदिक परंपरा, सत्यदेव परिव्राजक तथा आर्यसमाज और प्रेमचंद ऐसे कार्य हैं जो विश्वविद्यालयीय शोधकार्य की तुलना में प्रतिबद्ध, किंतु लोकोपयोगी कार्य का दिशाबोध कराते हैं। वैदिक शिक्षा दर्शन का आधुनिक परिप्रेक्ष्य में विनियोग करना ही हमारा लक्ष्य है और भावी अनुसंधान कार्य की रूपरेखा भी इसी दिशा में स्थिर की जा रही है।

आज की नई पीढ़ी स्वतंत्रता के ऊँचे महलों में उपलब्ध सुख-सुविधाओं की तो आकांक्षा करती है और उनके अभाव में उग्र आंदोलन चलाने की बात भी करती है, पर वह नहीं जानती कि स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए उनके पूर्वजों ने क्या कुर्बानियाँ दीं, क्या यातनाएँ भोगीं। स्वतंत्रता के लिए लड़ी गई लड़ाई तथा उसकी बुनियादी विशेषताओं का राष्ट्रीय दृष्टिकोण से आकलन कर, भारतीय इतिहास की पुनर्रचना के लिए योजनाबद्ध अध्ययन करने की आवश्यकता को ध्यान में रखकर विश्वविद्यालय ने अपनी छठी योजना में लाजपतराय अनुसंधान पीठ प्रतिष्ठित करने का प्रस्ताव अनुदान आयोग के समक्ष रखा। विजिटिंग कमेटी के सदस्यों ने इस प्रस्ताव का हार्दिक अनुमोदन किया है। मुझे विश्वास है कि भारत की स्वतंत्रता एवं पुनर्जागरण के इतिहास की नवसंरचना में यह पीठ अप्रतिम योगदान करेगी।

विश्वविद्यालयीय सकायों के विद्यार्थियों को आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की विशेष उपलब्धियों से परिचित कराने के लिए भारतीय विश्वविद्यालयों के विद्वानों के

व्याख्यानों का आयोजन किया गया। मगध विश्वविद्यालय, गया के इतिहास के प्रोफेसर डॉ. उपेंद्र ठाकुर; जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के सेंट्रल एशिया स्टडीज के अध्यक्ष डॉ. राम राहुल; दिल्ली विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. एच.सी. गांगुली; राँची विश्वविद्यालय के दर्शन विभाग के अध्यक्ष डॉ. आर.एस. श्रीवास्तव तथा मुजफ्फरनगर के प्रोफेसर डॉक्टर विश्वनाथ मिश्र ने विजिटिंग फैलो के रूप में आकर व्याख्यान दिए। इनके आगमन से विश्वविद्यालय की सार्थकता बढ़ी है।

प्राध्यापकों की नियुक्तियों के निमित्त विषय-विशेषज्ञ के रूप में जगन्नाथ विश्वविद्यालय, पुरी के कुलपति डॉ. सत्यव्रत शास्त्री; बर्दवान विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर रमारंजन मुखर्जी; गुजरात विद्यापीठ के कुलपति डॉ. रामलाल पारिख तथा कश्मीर विश्वविद्यालय के कुलपति श्री वहीद मलिक यहाँ पधारे। उन्होंने विश्वविद्यालय की प्रगति को देखकर हार्दिक संतोष व्यक्त किया।

इलाहाबाद उच्च न्यायालय के श्री के.एन. सिंह, कर्नाटक उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश तथा लाओस, वियतनाम और कंपूचिया के मान्य राजदूत भी इस वर्ष गुरुकुल पधारे और यहाँ की प्राचीन गुरु-शिष्य प्रधान प्रणाली को देखकर अभिभूत हो गए।

भारत की भावात्मक एकता की पुष्टि तथा नवनिर्माण की अद्यतन जानकारी के लिए जहाँ, यहाँ के विद्यार्थी बंबई, कन्याकुमारी, रामेश्वरम्, मद्रास, अजमेर, जयपुर, आगरा तथा मथुरा की सरस्वती यात्रा पर गए, वहाँ अंतर्विश्वविद्यालयीय खेल परिषद् की सदस्यता प्राप्त कर हमारे विद्यार्थी खेल-कूद के क्षेत्र में भी उतरे। इस वर्ष अलीगढ़ विश्वविद्यालय में आयोजित अंतर्विश्वविद्यालयीय हॉकी प्रतियोगिता में हमारे छात्रों का उल्लेखनीय प्रदर्शन रहा।

विद्यार्थियों की शारीरिक क्षमता की वृद्धि के लिए जिमनाजियम की व्यवस्था को भी सुधारा गया, यद्यपि इस क्षेत्र में बहुत कुछ करना शेष है। इसका उद्घाटन श्री टी.एन. चतुर्वेदी, तत्कालीन शिक्षा सचिव, भारत सरकार ने किया।

विश्वविद्यालय के छात्रों को परिसर में ही उचित व्यवसाय मार्ग निर्देशन तथा व्यवसाय जगत् की पूरी जानकारी देने के लिए एक विश्वविद्यालय सेवा योजना एवं मंत्रणा केंद्र की स्थापना की गई है, जो व्यवसायोन्मुख शिक्षा के व्यवहारीकरण में एक ठोस कदम है और इस दिशा में इस अंचल के छात्रों को आगे बढ़ने का पूर्ण अवसर मिल सकेगा। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा प्रदत्त इस योजना के लिए हम हृदय से आभार व्यक्त करते हैं।

शिष्टपरिषद् तथा कार्यपरिषद् में शिक्षा मंत्रालय तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आगामी तीन वर्षों के लिए मनोनीत सदस्यों—डॉ. एल.पी. सिन्हा कुलपति, हिमाचल विश्वविद्यालय; डॉ. एम. आराम, कुलपति, गांधी रूलर इंस्टीट्यूट,

मदुराई; जस्टिस श्री आई.डी.दुआ; श्री गुरुबख्श सिंह, उपसचिव, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार; डॉ. रामलाल पारिख, कुलपति, गुजरात विद्यापीठ तथा श्री आर.एस. चितकारा का मैं इस अवसर पर हार्दिक स्वागत करना चाहूँगा। ये अपने क्षेत्र के प्रतिष्ठित विद्वान् हैं और इनके दीर्घ अनुभवों से हमें भरपूर लाभ मिलेगा।

यदि इस अवसर पर मैं कन्या गुरुकुल की उपलब्धियों का जिक्र न करूँ तो बात अधूरी ही रहेगी। यहाँ की आचार्या बहन दमयंती कपूर कन्याओं को वेद, वेदांग-व्याकरण, संस्कृत तथा गृहकलाओं में पारंगत बनाने के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहती हैं। कन्याओं को अतीत के राष्ट्रीय आदर्शों से प्रेरणा लेकर जीवन संग्राम में विवेक तथा उत्साहपूर्वक चल पड़ने के लिए तैयार करना ही इस संस्था का लक्ष्य है। कन्या गुरुकुल की स्नातिकाओं ने ललित कला, उद्योग तथा शिक्षा के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित किए हैं। यहाँ की छात्राएँ चरखा कताई, काव्य तथा वाद-विवाद प्रतियोगिता, खेलों, गृहविज्ञान प्रदर्शनी में प्रथम रहती हैं। खेलों में प्रादेशिक तथा राष्ट्रीय स्तर पर यहाँ की छात्राओं का चयन हुआ है।

निर्माण कार्यों की शृंखला में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्रदत्त धनराशि से आठ प्रोफेसर क्वाटर्स का निर्माण सार्वजनिक निर्माण विभाग द्वारा किया जा रहा है। इसका शिलान्यास 1 फरवरी, 1984 को कुलाधिपति श्री वीरेंद्र जी के सान्निध्य में हमारे परिद्रष्टा डॉक्टर सत्यव्रत जी सिद्धांतालंकार ने किया।

विद्यालय विभाग गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली की जीती-जागती प्रयोगशाला है। ब्राह्ममुहूर्त में उठकर नित्यक्रिया से निवृत्त होकर श्री ईश्वरदत्त भारद्वाज के नेतृत्व में ब्रह्मचारी वेद मंत्रों का सस्वर पाठ तथा योगाभ्यास करते हैं। वरिष्ठ ब्रह्मचारियों को प्रो. चंद्रशेखर त्रिवेदी द्वारा प्रतिदिन एक वेद मंत्र अर्थ सहित कंठस्थ कराया जाता है। ब्रह्मचारियों की नियत वेशभूषा, भोजन व्यवस्था तथा आवासीय व्यवस्था में इस वर्ष विशेष सुधार हुआ है। पंडित सत्यकाम जी के सुदक्ष आचार्यत्व में ब्रह्मचारियों का दल अपने कार्य में निरंतर अग्रणी होता चलेगा, इसका मुझे पूर्ण विश्वास है।

1985–भारत जय-विजय करें

☐ श्री बलभद्र कुमार हूजा

आज नव-स्नातकों को आशीर्वाद देने हमारे मध्य इस विश्वविद्यालय के लब्धप्रतिष्ठ स्नातक श्री सत्यदेव भारद्वाज विद्यालंकार पधारे हैं। आपने चौदह वर्ष तक गुरुकुल में रहकर वेद-वेदांगों का अध्ययन किया और फिर लुधियाना में सरकारी शिक्षणालय से नीटिंग इंडस्ट्री में डिप्लोमा लेकर व्यावसायिक क्षेत्र में प्रवेश किया। 1934 में आप केनिया के नैरोबी शहर में गए और फिर 1949 में 'सन फ्लैग नीटिंग वर्क्स', के नाम से उद्योग की स्थापना की। आपकी दूरदर्शिता, लगन, कर्मठता तथा व्यावसायिक पैनी दृष्टि का ही परिणाम है कि आज सन फ्लैग उद्योग के केंद्र भारत, केनिया, तंजानिया, नाइजीरिया, केमरून तथा लंदन में स्थापित होकर निरंतर प्रगति कर रहे हैं। वेद भगवान् के इस आदेश का कि सौ हाथों से एकत्र करो तथा हजार हाथों से दान करो, आपने अक्षरशः पालन कि ा है। वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार तथा लोक कल्याण के लिए आपके द्वारा स्थापित 'भारद्वाज वैलफेयर ट्रस्ट' अनेक उल्लेखनीय कार्य कर रहा है। 20 मार्च, 1978 को नैरोबी में आर्य महासम्मेलन का विराट् आयोजन आपके ही सहयोग से संपन्न हुआ। लंदन में होने वाले सार्वभौम आर्य महासम्मेलन की सफलता में भी आपका अविस्मरणीय योगदान रहा है। श्री भारद्वाज ने समग्र भारत का भ्रमण कर जहाँ इसकी सांस्कृतिक विरासत का गहरा अध्ययन किया, वहाँ बर्मा, स्याम, सिंगापुर, इंडोनेशिया, हांगकांग, ताइवान, जापान, नेपाल, अफ्रीका, अमेरिका, फ्रांस, इंग्लैंड, जर्मनी, नार्वे, स्विट्जरलैंड तथा इटली आदि देशों का पर्यटन कर प्रचुर अनुभव अर्जित किए हैं। आर्यसिद्धांतों के प्रचार-प्रसार के लिए यायावरी वृत्ति ग्रहण करने वाले 'परिव्राजक' श्री भारद्वाज को अपने बीच पाकर हमारा गौरवान्वित होना स्वाभाविक ही है।

गुरुकुल विश्वविद्यालय भारतीयतामूलक पद्धति पर आधारित संपूर्ण शिक्षा की आदर्श प्रयोगशाला है। आज हमारे प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी तथा शिक्षामंत्री श्री कृष्णचंद्र पंत शिक्षा के परंपरित ढाँचे में आमूल-चूल परिवर्तन के लिए कृतसंकल्प हैं। अनुभव किया जा रहा है कि विश्वविद्यालय शिक्षा का वर्तमान ढाँचा राष्ट्रीय

समस्याओं की पूर्ति नहीं कर सकता। समाज सेवा, ग्रामोत्थान तथा प्रसार की धारा से विच्छिन्न होकर वह समाज से कट गया है। गत मार्च मास में दिल्ली में होने वाले एशिया के कुलपतियों के सम्मेलन में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की अध्यक्षा श्रीमती माधुरी शाह ने मानवीय मूल्यों पर आधारित राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली की रूप रेखा प्रस्तावित की और कहा कि यही प्रणाली वर्तमान परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय अखंडता, समाज सेवा, मानवजाति की एकता, विश्वव्यापी प्रेम, चरित्र निर्माण, आत्मानुशासन, सामाजिक तथा लोकतांत्रिक न्याय, सामूहिक कार्य चेतना, ज्ञान की खोज एवं प्रसार जैसे उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक हो सकती है।

गुरुकुल में विगत वर्षों में, हम इन्हीं मूल्यों की खोज का यत्न करते रहे हैं। अपने सीमित साधनों के बावजूद जहाँ एक ओर यहाँ आश्रम व्यवस्था का सुधार किया गया वहाँ ब्रह्मचारियों के आध्यात्मिक विकास के लिए व्रताभ्यास, योगाभ्यास तथा वेदमंत्र पाठ पर अधिकाधिक बल दिया गया। ब्रह्मचारियों ने प्रतिवर्ष जो सौ मंत्र याद किए उनको 'गोवर्धन ज्योति रश्मियों' के नाम से संघड़ विद्या सभा ट्रस्ट, जयपुर की ओर से मुद्रित करवाकर निशुल्क वितरित कराया गया। इस बार वैदिक सूक्तियों तथा ब्रह्मचर्य सूक्त का प्रकाशन श्री सत्यकाम विद्यालंकार ने दिल्ली के राजपाल एंड संस ने करवाया है। इनका विमोचन गत मास लुधियाना में पंडित सत्यव्रत सिद्धांतालंकार कर चुके हैं। पिछली शताब्दी में प्रोफेसर गुरुदत्त ने 'वैदिक मैगजीन' नामक एक पत्रिका निकाली थी। बाद में इसकी उपयोगिता समझते हुए आचार्य रामदेव ने पुनः इसका प्रकाशन आरंभ किया। इस पत्रिका के माध्यम से ही आचार्य रामदेव ने तालस्ताय तथा रोम्याँ रोलाँ जैसे अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिलब्ध साहित्यकारों से पत्र-व्यवहार किया था। कालांतर में यह पत्रिका बंद हो गई थी। अब डॉ. हरगोपाल सिंह के संपादन में 'वैदिक पाथ' नाम से इसे पुनः जीवित किया गया है। बच्चों के लिए 'ध्रुव', गुरुकुल हितैषियों के लिए 'गुरुकुल पत्रिका', विज्ञान के प्रसार के लिए 'आर्यभट्ट' तथा पुराविद्याओं की गवेषणा के लिए 'प्रह्लाद' पत्रिकाएँ निकाली गईं, जो क्रमशः डॉ. दीनानाथ, डॉ. मानसिंह, डॉ. विजयशंकर तथा डॉ. विष्णुदत्त राकेश के संपादन में नियमित प्रकाशित हो रही हैं। अनुदान आयोग द्वारा प्रदत्त राशि से इस वर्ष तीन शोधग्रंथ 'स्वामी सत्यदेव परिव्राजक', 'भवभूति : उनका व्यक्तित्व तथा पात्र' एवं 'कंबुज का प्राचीन इतिहास' ग्रंथ भी राजपाल एंड संस, दिल्ली तथा मीनाक्षी प्रकाशन से प्रकाशित हुए हैं। अंग्रेजी में डॉ. गंगाराम की पुस्तक 'वर्ल्ड पर्सपैक्टिव्स ऑन दयानंद' तथा पंडित प्रियव्रत वेदवाचस्पति की हिंदी में तीन खंडों में प्रकाशित 'वेदों के राजनीतिक सिद्धांत' ग्रंथों से विश्वविद्यालय का सम्मान बढ़ा है। पंडित प्रियव्रत जी की पुस्तक का विमोचन स्वर्गीय श्रीमती इंदिरा गांधी, प्रधानमंत्री, भारत सरकार ने किया था।

गुरुकुल का एक प्रमुख दर्शनीय स्थान गुरुकुल का पुरातत्त्व संग्रहालय है।

इसमें पुरातत्त्व, अभिलेखशास्त्र तथा मुद्राशास्त्र की विविध दुर्लभ तथा रोचक सामग्री प्रदर्शित है। जनसाधारण को दिखाने के उद्देश्य से प्रचुर ऐतिहासिक सामग्री वीथिकाओं में सजाई गई है। राजस्थान सरकार के पूर्व पुरातत्त्व निदेशक तथा गुरुकुल विश्वविद्यालय के विजिटिंग प्रोफेसर डॉ. आर.सी. अग्रवाल ने डॉ. विनोदचंद्र सिन्हा तथा उनके सहयोगियों के साथ कांगड़ी के सिद्धस्रोत स्थान से ललितासनस्थ अग्निदेव, दिक्पाल ईशान या यम, सप्त मातृकाएँ, सर्वतोभद्रिका, सिंहवाहिनी देवी तथा शिरविहीन कुबेर की मूर्तियाँ खोजकर इस वर्ष संग्रहालय को दीं। कुंडी-सोटा नामक स्थान से अन्वेषित महिषमर्दिनी मूर्ति तो ईसा की नौवीं शती की है। कला सौष्ठव की दृष्टि से नव-अन्वेषित कुबेर की प्रतिमा देश में उपलब्ध अन्य कुबेर मूर्तियों से भिन्न तथा स्वतंत्र अस्तित्व रखती है।

संग्रहालय के साथ जुड़ा हुआ श्रद्धानंद कक्ष भी दर्शनीय है। इसमें पूज्य स्वामी जी की पादुकाएँ, वस्त्र, कमंडल तथा दुर्लभ चित्र सुरक्षित हैं। भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के इतिहास की एक स्वर्णिम कड़ी है स्वामी जी का व्यक्तित्व और इसका दर्शन होता है इस स्मृतिकक्ष में, सजीव रूप में। स्वामी जी का वह चित्र तो अत्यंत प्रेरणाप्रद है जब 1919 में अमृतसर में होने वाले राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन के वह स्वागताध्यक्ष थे। उनके साथ पंडित मोतीलाल नेहरू, महामना मदनमोहन मालवीय, श्रीमती ऐनी बेसेंट तथा पादपंक्ति में पंडित जवाहरलाल नेहरू बैठे हुए हैं। अब यहाँ अष्टधातु तथा चित्रकक्ष की भी स्थापना हो गई है। छठी योजना के अंतर्गत गुरुकुल विश्वविद्यालय में उत्खनन विभाग खोलने की स्वीकृति भी हमें विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से प्राप्त हुई है। अतः आगामी योजना में हम इस ओर दत्तचित्त होकर अग्रसर होंगे। इसके साथ ही सातवीं योजना में गंगा संग्रहालय स्थापित करने का प्रयत्न किया जा रहा है। आप यह जानकर प्रसन्न होंगे कि पुरातत्त्व विभाग के अध्यक्ष डॉ. विनोदचंद्र सिन्हा को अनुदान आयोग ने राष्ट्रीय प्रोफेसर नियुक्त करके सम्मानित किया है और वह आगामी जुलाई से अपना पद भार सँभालेंगे।

यहाँ मैं अंग्रेजी विभाग के रीडर डॉ. राधेलाल वार्ष्णेय का भी जिक्र करना चाहूँगा जिन्हें गत वर्ष विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने रूसी विश्वविद्यालयों की यात्रा पर भेजा। वहाँ जाकर उन्होंने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का प्रतिपादन किया और रूसी शिक्षा जगत् के समक्ष एक नया दृष्टिकोण उपस्थित किया। जुलाई '84 में राष्ट्रीय स्तर पर परीक्षा-शिक्षा सुधार के लिए एक कार्यशाला प्रोफेसर वी.नटराजन की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय संघ के संकेत पर हुई। उसका संयोजन भी डॉ. वार्ष्णेय ने किया। उसकी विस्तृत रिपोर्ट प्रकाशित हो गई है। डॉ. वार्ष्णेय बधाई के पात्र हैं।

आपको यह जानकर भी प्रसन्नता होगी कि हमारे वयोवृद्ध वैदिक विद्वान्

पंडित भगवद्दत्त वेदालंकार को इस वर्ष शिक्षा मंत्रालय ने हमारे यहाँ वैदिक स्कॉलर के रूप में दो वर्ष तक कार्य करने की अनुमति प्रदान की है। उन्होंने पहली अप्रैल से अपना कार्य भार सँभाल लिया है। इस प्रकार हमारे वेद विभाग को बल मिला है। इसके साथ उन्हें संघड़ विद्या सभा ट्रस्ट, जयपुर ने इस वर्ष का आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार देकर सम्मानित किया है। मैं उनका हार्दिक अभिनंदन करता हूँ।

गुरुकुल पुस्तकालय तो उत्तर भारत के गिने-चुने पुस्तकालयों में एक है। यहाँ प्राच्य विद्याओं, धर्म, दर्शन, इतिहास तथा मानविकी और विज्ञान की दुर्लभ पुस्तकें तथा पांडुलिपियाँ सुरक्षित हैं। विभिन्न विषयों पर एक लाख से ऊपर पुस्तकें यहाँ विद्यमान हैं जिनका उपयोग देश-विदेश के शोधार्थी करते रहते हैं। अनुदान आयोग ने इस वर्ष छठी योजनांतर्गत पुस्तकालय के विभिन्न संघटकों के विकास हेतु साढ़े दस लाख रुपए की राशि दी है। विविध उपकरणों के साथ इस वर्ष सोलह स्वाध्यायकक्ष स्थापित किए गए हैं। पाँच हजार नई पुस्तकें, तीन सौ पचास पत्रिकाएँ तथा शोध सामग्री मँगाई गई हैं। राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता के निर्देशक तथा गुरुकुल के विजिटिंग फैलो श्री डी.आर. कालिया के अनुभव से लाभ उठाकर पुस्तकालयाध्यक्ष श्री जगदीश विद्यालंकार पुस्तकालय को पूर्णतया अप-टू-डेट (अद्यतन) करने की दिशा में प्रयत्नशील हैं। इस वर्ष हिंदी के सुप्रसिद्ध विद्वान् तथा कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति, डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त भी विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में हमारे बीच कार्य कर रहे हैं। उनसे हमारे विद्यार्थी लाभांवित हुए हैं।

प्रौढ़ शिक्षा का कार्य डॉ. ए.के. इंद्रायण, योग केंद्र का कार्य श्री ईश्वरदत्त भारद्वाज, क्रीड़ा का कार्य प्रो. ओम्प्रकाश मिश्र तथा श्री खट्टर एवं गंगा समन्वित विकास योजना का कार्य डॉ. विजयशंकर देख रहे हैं। राष्ट्रीय कैडेट कोर का कार्य मेजर वीरेंद्र अरोड़ा देख रहे हैं। राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्य का श्रीगणेश मेजर अरोड़ा ने किया था जिसे डॉ. बी.डी. जोशी देख रहे हैं। हिमालय योजना के तहत डॉ. जोशी के निर्देशन में जंतु विज्ञान विभाग को भारत सरकार के पर्यावरण विभाग से लगभग दस लाख रुपए की अनुदान राशि अभी-अभी प्राप्त हुई है। एम.एस-सी. माइक्रो बायोलॉजी का विषय भी विश्वविद्यालय में खुल गया है। इस दृष्टि से देश का यह पहला विश्वविद्यालय होगा जहाँ स्नातकोत्तर स्तर पर विज्ञान के एक विषय का 'शिक्षा-परीक्षा सुधार नीति' के अंतर्गत नूतन क्रेडिट प्रणाली के अनुसार अध्यापन होगा। इसी प्रकार आगामी सत्र से हरिद्वार में अनुदान आयोग के सहयोग से गुरुकुल कन्या महाविद्यालय खोलने की भी योजना है। आरंभ में यहाँ गृहविज्ञान में विद्यालंकार तक की शिक्षा का प्रबंध रहेगा।

मित्रो, आपको यह जानकर भी प्रसन्नता होगी कि इस वर्ष तमिल कक्षाएँ खोलने हेतु तमिलनाडु सरकार की ओर से यथेष्ट धनराशि उपलब्ध कराई गई है। आशा है इस दिशा में आगामी सत्र से कार्यारंभ हो जाएगा।

आर्यसमाज का नौवाँ नियम है कि प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट नहीं रहना चाहिए, किंतु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए। इस भावना को मूर्तरूप देने के लिए प्रयोगरूप में 1981 में कांगड़ी ग्राम को अंकीकृत किया गया था। सड़कों का निर्माण, वृक्षारोपण, गोबर गैस संयंत्र की स्थापना, साक्षरता अभियान, नारी शिक्षा, परिवार कल्याण, गोवर्धन पुस्तकालय तथा वाचनालय की स्थापना ग्रामोत्थान के लिए किए गए महत्त्वपूर्ण कार्य हैं। जिला प्रशासनाधिकारी श्री दर्शनसिंह बैंस तथा स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के सहयोग से ग्रामवासियों ने कुटीर उद्योग-धंधे शुरू किए हैं। अब वे आत्मविश्वासी होते जा रहे हैं। राष्ट्रीय सेवा योजना के शिविर भी यहीं लगाए जाते हैं। इससे विद्यार्थियों का ग्रामीण जीवन की समस्याओं से परिचय होता है और जब वह स्थानीय नवयुवक मंगल दल के सदस्यों के साथ मिलकर ग्राम सफाई तथा अन्य निर्माण के कार्य करते हैं तो एक समां-सा बँध जाता है। विद्यार्थियों को रोजगार दिलाने के लिए रोजगार ब्यूरो की इकाई की भी विश्वविद्यालय में स्थापना की गई है तथा डॉ. डी.एन. तनेजा की देखरेख में ''स्वास्थ्य केंद्र' का कार्य भी सुचारु रूप से चल रहा है।

छठी योजनांतर्गत अनुदान आयोग ने दस विभागों में दस प्रोफेसर पद निर्मित करने की स्वीकृति भी दी। प्रोन्नति योजना के तहत वरिष्ठ प्रवक्ताओं को रीडर तथा रीडरों को प्रोफेसर पद पर प्रोन्नत किया गया। प्रोफेसरों का चयन भी हुआ। अनुदान आयोग की जो समिति गुरुकुल पधारी उसने लाजपतराय पीठ की स्थापना का अनुमोदन किया। भारतीय इतिहास की पुनर्रचना तथा स्वाधीनता आंदोलन के मूल्यांकन का कार्य यह पीठ करेगी।

विश्वविद्यालय के आचार्यों के क्वाटर्स के लिए आयोग ने लगभग अठारह लाख रुपए की राशि प्रदान की। आधुनिक सुविधासंपन्न ये आवासगृह बनकर लगभग तैयार हैं। इस योजना का प्रारंभ परिद्रष्टा डॉ. सत्यव्रत सिद्धांतालंकार ने किया था। शिक्षकेतर कर्मचारियों के आवास-भवनों का शिलान्यास कुलाधिपति श्री वीरेंद्र के हाथों संपन्न हो चुका है।

विश्वविद्यालयीय संकायों के विद्यार्थियों तथा प्रबुद्ध नागरिकों के ज्ञानवर्धन के लिए भारतीय विश्वविद्यालयों के लब्धप्रतिष्ठ विद्वानों के व्याख्यानों, परिचर्चाओं, कार्यशालाओं तथा सम्मेलनों का आयोजन भी विश्वविद्यालय परिसर में समय-समय पर होता रहा। वैदिक शिक्षा, राष्ट्रीय कार्यशाला, मानवमूल्य और समाज में अंत:संबंद्ध विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी, अमेरिकन अध्ययन के अखिल भारतीय संगठन का अधिवेशन, परीक्षा सुधार कार्यशाला तथा दयानंद निर्वाण शताब्दी व्याख्यानमाला का आयोजन विश्वविद्यालय की शैक्षिक, गवेषणात्मक तथा प्रसार कार्य की उपलब्धियाँ हैं। उत्तरक्षेत्रीय, चालीस के लगभग, विश्वविद्यालयों के खिलाड़ी

दलों का बैडमिंटन टूर्नामेंट जिस धूमधाम से संपन्न हुआ, उसका उल्लेख करते हुए मुझे हर्ष होता है। गत जनवरी में अखिल भारतीय विश्वविद्यालय संघ के तत्त्वावधान में विश्वविद्यालय में अनुसूचित तथा जनजातियों के आरक्षण के प्रश्न को लेकर उत्तरक्षेत्रीय कुलपतियों का दो दिवसीय सम्मेलन यहाँ हुआ। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता पद्मश्री डॉ. आर.एस.मिश्र, कुलपति, लखनऊ विश्वविद्यालय ने की तथा उद्घाटन, भाषण भूतपूर्व गृहसचिव तथा वर्तमान महालेखानियंत्रक, भारत सरकार, श्री टी.एन. चतुर्वेदी ने किया। अखिल भारतीय विश्वविद्यालय संघ के संयुक्त सचिव श्री अंजनी कुमार ने प्रस्तावना भाषण किया। इस सम्मेलन में निश्चय किया गया कि आरक्षण नीति का पुनर्मूल्यांकन होना चाहिए। दस वर्ष तक आरक्षण की नीति का पालन वर्तमान पद्धति से ही किया जाए और फिर इसे समाप्त कर दिया जाए। इस अवसर पर यह बात विशेषरूप से उभरकर आई कि यदि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली स्वीकार कर ली जाए तो आरक्षण का प्रश्न ही नहीं उठेगा। इस प्रणाली में सबके लिए समान वस्त्र, भोजन तथा समान शिक्षा का प्रावधान है। जाति-पाँति तथा स्तरगत विषमता के भेद से ऊपर उठकर समस्त जन को शिक्षा देने की बात महर्षि दयानंद और श्रद्धानंद ने की थी, उसे विश्वविद्यालयों के कुलपतियों ने तहेदिल से स्वीकार किया। इस सम्मेलन की सुचारु व्यवस्था के लिए जहाँ इसके संयोजक प्रो. ओम्प्रकाश मिश्र, अध्यक्ष, मनोविज्ञान विभाग बधाई के पात्र हैं, वहाँ वी.एच.ई.एल. के महाप्रबंधक श्री सी.एम. गुप्ता तथा जनसंपर्क अधिकारी श्री चंद्रकांत सरदाना विशेषरूप से धन्यवाद के अधिकारी हैं।

आर्यसमाज की उपलब्धियों और अपेक्षाओं से जनसामान्य का परिचय कराने के लिए इस वर्ष हमने महर्षि दयानंद निर्वाण शताब्दी व्याख्यानमाला का आयोजन भी किया। स्वामी जी के निर्वाण के सौ वर्षों के लंबे समय में देश ने कई उतार-चढ़ाव देखे और जिन विस्फोटक परिस्थितियों में आज देश खड़ा हुआ है, उनमें स्वामी जी की प्रासंगिकता बढ़ गई है। नव-जागरण के युग में उन्होंने राष्ट्रीय एकता, सामाजिक जाग्रति, भारतीय शिक्षा, सामाजिक न्याय, स्वदेशी और स्वभाषा का जो शंख फूँका उसने समृद्ध, रूढ़िमुक्त तथा आत्मनिर्भर राष्ट्र के निर्माण में अहम भूमिका अदा की। 'सत्यार्थ प्रकाश' में उन्होंने मनु आदि धर्मशास्त्रकारों का युगानुरूप नवीन भाष्य प्रस्तुत किया। दयानंद की दयालु तथा अंतःभेदिनी दृष्टि ह्रासोन्मुखी सामंती समाज, पिछड़ी हुई दलित जातियों तथा नारी परतंत्रता की ओर भी गई। प्रचारक होने के नाते दयानंद पत्रकारिता की संभावनाओं के प्रति भी पूर्णतया जागरूक थे। अतः उन्होंने हिंदी पत्रकारिता के प्रारंभिक युग में पत्रकारिता को टकसाली हिंदी और नए विचारणीय विषय दिए। अजमेर में प्रेस स्थापित किया तथा मेरठ से 'आर्य समाचार', फर्रुखाबाद से 'भारत सुदशा प्रवर्तक', शाहजहाँपुर से 'आर्य दर्पण' तथा 'राजस्थान समाचार' जैसे पत्र उन्हीं की प्रेरणा से निकले। फिर तो आर्यसमाज और

विशेष रूप से गुरुकुल के स्नातकों ने हिंदी के मासिक, साप्ताहिक तथा दैनिक पत्रों के संपादन का एक युग ही खड़ा कर दिया। स्वामी जी के इस बहु-आयामी व्यक्तित्व के उद्घाटन के लिए हमने दयानंद पीठ, पंजाब विश्वविद्यालय के आचार्य डॉ. भवानीलाल भारतीय, सुप्रसिद्ध मार्क्सवादी तथा गांधीवादी विचारक और भारतीय भाषा परिषद् कलकत्ता के निदेशक डॉ. प्रभाकर माचवे, ट्रिब्यून के पूर्व संपादक श्री मदनगोपाल तथा साहित्य अकादमी दिल्ली के पूर्व सचिव पद्मश्री पं. क्षेमचंद सुमन के क्रमशः 'दयानंद सरस्वती के विचार समय की कसौटी पर', 'दयानंद, गांधी और मार्क्स', 'दयानंद और प्रेमचंद' तथा 'दयानंद और हिंदी पत्रकारिता' पर व्याख्यान कराए तथा उन्हें पुस्तकाकार प्रकाशित कर निशुल्क वितरित कराया। इससे नगर के सभी वर्गों के लोगों तथा साधु समाज के विभिन्न संप्रदाय के आचार्यों को दयानंद के कार्यों की जानकारी मिली। इस व्याख्यानमाला की सफलता के लिए इसके संयोजक डॉ. विष्णुदत्त राकेश, प्रोफेसर हिंदी विभाग साधुवाद के पात्र हैं।

इसके अतिरिक्त जिन विद्वानों ने अभ्यागत आचार्य अथवा नियुक्ति और विशेष बैठकों के सिलसिले में यहाँ आकर हमारे आचार्यों और ब्रह्मचारियों का मार्ग दर्शन किया, उनमें जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के श्री राम राहुल, मगध विश्वविद्यालय के डॉ. उपेंद्र ठाकुर, राँची विश्वविद्यालय के कुलपति, डॉ. अनुजकुमार धान, बर्दवान के कुलपति डॉ. रमारंजन मुखर्जी, काशी विद्यापीठ के पूर्व कुलपति डॉ. राजाराम शास्त्री, जगन्नाथपुरी वि.वि. के कुलपति डॉ. सत्यव्रत शास्त्री, गुजरात विद्यापीठ के कुलपति डॉ. रामलाल पारिख, कश्मीर विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. वहीद मलिक, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. हरवंशलाल शर्मा, उज्जैन के पूर्व कुलपति तथा उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान के अध्यक्ष पद्मभूषण डॉ. शिवमंगल सिंह सुमन, मदुरई के कुलपति डॉ. एम. आराम, हिमाचल विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. एल.पी. सिन्हा, राजस्थान विश्वविद्यालय के डॉ. दयाकृष्ण तथा दिनमान के संपादक और प्रसिद्ध साहित्यकार श्री कन्हैयालाल नंदन के नाम विशेषरूप से उल्लेखनीय हैं।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की अध्यक्षा श्रीमती माधुरी शाह भी इस वर्ष गुरुकुल में पधारीं। विश्वविद्यालय द्वारा संचालित योजनाओं और शैक्षिक गतिविधियों को देखकर उन्होंने संतोष व्यक्त किया। परिसर में शांति, व्यवस्था, अनुशासन तथा अध्ययन-अध्यापन का वातावरण देखकर उन्होंने आचार्यों और अंतेवासियों को बधाई दी। उन्होंने आशा प्रकट की, जहाँ इस विश्वविद्यालय में वैदिक साहित्य, आर्य सिद्धांत तथा प्राचीन भारतीय विद्याओं का उच्चतर अध्ययन, शोध और प्रसार का कार्य संपन्न हो, वहाँ इसमें संगणक विज्ञान जैसे आधुनिक पाठ्यक्रमों का समावेश भी होना चाहिए। आपने विश्वविद्यालय को एक कंप्यूटर देने का भी आश्वासन दिया।

इस अवसर पर चूँकि यह मेरा अंतिम प्रतिवेदन होगा, इसलिए मैं विश्वविद्यालय के आचार्यों, ब्रह्मचारियों तथा कर्मचारियों से भी कुछ कहना चाहूँगा। गुरुदेव महर्षि विरजानंद जी ने जैसे महर्षि दयानंद से गुरुदक्षिणा माँगी थी, इस अवसर पर मैं श्रद्धानंद जी का नाम लेकर आपसे कुलदक्षिणा की माँग करता हूँ। आज आप स्तर, वेतनमान तथा अन्य सुविधाओं की दृष्टि से देश के अन्य विश्वविद्यालयों के समकक्ष खड़े हैं। मैं चाहूँगा कि आप वर्ष में कम-से-कम दो सौ पचास दिन तथा एक सप्ताह में चालीस घंटे विश्वविद्यालय के लिए कार्य करने का व्रत लें। गुरुकुल के कर्मचारी आर्यसमाज के कोष में अपनी आय का एक प्रतिशत दें तथा जनसाधारण तक कल्याणी वेदवाणी का संदेश पहुँचाएँ। सत्य, ऋत, दीक्षा, दृढ़संकल्प, तप, आस्तिकता और यज्ञ का व्रत लेकर मन, कर्म और विचार से समाज और राष्ट्र की सेवा करें तभी गुरुकुल शब्द अपनी सार्थकता प्रमाणित कर सकेगा। मुझे संतोष तब होगा जब यहाँ का प्रत्येक आचार्य तथा शिष्य संस्कृत में संभाषण करेगा, अंग्रेजी तथा अन्य अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं में दक्षता प्राप्त करेगा तथा संस्कृत का संदेश पूर्वोत्तर भारत में तथा विदेशों में विदेशी भाषा के माध्यम से पहुँचाएगा। दयानंद की व्याख्याएँ विदेशी भाषाओं में करें आप–आप लोगों को यह अंतर्राष्ट्रीय चुनौती है।

यह युवावर्ष है। हम सचेष्ट हैं कि हमारे विद्यार्थी सामूहिक उत्साह के साथ खेल के मैदान में भी उतरें। आस्ट्रेलिया में विश्व क्रिकेट चैंपियन मैच जीतकर तथा शारजाह में रॉथमैंस कप जीतकर भारत के खिलाड़ियों ने युवावर्ष का मंगलाचरण किया है। वे हमारी बधाई के पात्र हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हमारे विद्यार्थी भी कपिलदेव और गावस्कर से प्रेरणा लेते हुए जीवन के मैदान में अच्छे खिलाड़ियों की तरह उतरेंगे तथा भावात्मक संगठन और शारीरिक संतुलन का परिचय देंगे।

इसी संदर्भ में विवेकानंद जयंती पर हमने युवा वर्ष समारोह का आयोजन किया जिसमें विश्वविद्यालय के ब्रह्मचारियों ने नगर की शिक्षण संस्थाओं के प्रतिनिधि कलाकारों के साथ अनेक रोचक कार्यक्रम दिए। आकाशवाणी नजीबाबाद के अधिकारी और मुख्यरूप से युवा कार्यक्रम के संचालक श्री हिंदवान धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने इस कार्यक्रम का आकाशवाणी से प्रसारण कराया। वेद मंदिर में पंडित सत्यव्रत जी की सन्निधि में आकाशवाणी ने भक्ति संगीत सम्मेलन का भी आयोजन किया। इसकी व्यवस्था के लिए श्री कमलेश नैथानी को मैं आशीर्वाद देता हूँ।

आचार्यों और ब्रह्मचारियों के टूटते हुए संबंधों को देखकर हमारा चिंतित होना स्वाभाविक है। गुरुकुलीय शिक्षा का यह 'संबंध' दृढ़ अंग है। ब्रह्मचारी जहाँ राष्ट्र की मूल्यवान निधि है, आचार्य वहाँ उसका निष्काम रक्षक। हमारे कुल का मूलकेंद्र

ब्रह्मचारी ही तो है। वह इस आश्रम का अपरिहार्य अंग है। उसकी शिक्षा-दीक्षा, सेवा तथा पोषण गर्भस्थ शिशु की तरह आचार्यों को करना है, तभी ब्रह्मचारी आचार्य के अनुकूल कर्म करने वाला बनेगा, तभी कुलमाता के समान वह सहभाव रखेगा। यदि वह आचार्य तथा कुल का अनुव्रती नहीं बन सका तो इसे आचार्य की विफलता मानिए।

गुरुकुल के बहुत से हितैषी गुरुकुल की भावी रूप रेखा के बारे में यदा-कदा यत्र-तत्र अपने विचार प्रकट करते रहते हैं। मैं उन्हें बड़े ध्यान से पढ़ता हूँ। कइयों का विचार है कि गुरुकुल की नींव ब्रह्मचारी हैं। मैं विनम्रतापूर्वक इससे मतभेद रखता हूँ। गुरुकुल की नींव हैं गुरुजन। जैसे गुरुजन होंगे, वैसे ही शिष्य होंगे और यह भी कि किसी भी संस्था को उभारने, खड़ा करने या पुनर्जीवित करने के लिए केवल भाषणों या लेखों से ही काम नहीं चलेगा। किसी इमारत को खड़ा करने के लिए ईंट-पत्थर, सीमेंट इत्यादि इकट्ठा करना पड़ता है, व्यावहारिक साधन जुटाने पड़ते हैं जिससे कि संस्था को चलाने के लिए जिम्मेदार अधिकारी, कर्मचारी, गुरुजन दत्तचित्त होकर, मनोयोग से अपने-अपने कर्तव्यों का पालन कर सकें।

जैसे कि मैंने ऊपर कहा है कि प्रत्येक शिक्षा संस्था की नींव गुरुजन होते हैं। इसके लिए योग्य गुरुजन का चुनाव हो और जो गुरुजन संस्था में विद्यमान हों उनके लिए पुनर्शिक्षण की व्यवस्था हो। इस हेतु गुरुजन एवं कर्मचारियों को यथेष्ट वेतन एवं श्रद्धा देनी पड़ेगी।

जहाँ तक विश्वविद्यालय का संबंध है, वेतनों के संबंध में तो अब कोई चिंता की बात नहीं, लेकिन विद्यालय विभाग में गुरुजनों को यथोचित वेतन प्राप्त नहीं हो रहे हैं। जब तक इसका प्रबंध नहीं होता, सुयोग्य शिक्षक कैसे उपलब्ध होंगे और विद्यार्थियों का स्तर कैसे ऊँचा होगा ?

आज का विद्यार्थी हमारे जमाने के विद्यार्थी से कहीं अधिक सचेत एवं जागरूक है। वह अपना भविष्य बनाने के लिए हमारे पास आया है, उसकी शिक्षा-दीक्षा के लिए हम उत्तरदायी हैं। हम स्वयं भी सचेष्ट एवं जागरूक हों और आधुनिक विज्ञान द्वारा उपलब्ध साधनों का पूर्ण उपयोग करें जिससे कि हमारे ब्रह्मचारी किसी भी संस्था के विद्यार्थियों के समकक्ष खड़े हो सकें।

आचार्यो तथा ब्रह्मचारियो !

प्रतिज्ञा करो कि आप लोग अपने देश तथा अपने कुल की गौरवमयी परंपराओं का, ऋषि-मुनियों की विचार-सरणियों का, राष्ट्रीय और सामाजिक मूल्यों का तथा स्वकीय विकास के साथ मानव मात्र के कल्याण और सेवा का व्रत कभी नहीं तोड़ोगे। आगामी वर्ष हरिद्वार में कुंभ हो रहा है। स्वामी जी ने हरिद्वार में कुंभ पर ही पाखंड खंडिनी पताका फहराई थी। देश में अभी भी पाखंड और अज्ञान

का कुशासन व्याप्त है। कितना ही अच्छा हो कि गुरुकुल के आचार्य तथा ब्रह्मचारी और सार्वदेशिक सभा के अधिकारी इस अवसर पर एक वेद-विज्ञान शिविर लगाकर देव दयानंद की पताका की पुनः प्रतिष्ठा करें। साथ में समाजकल्याण और संपूर्ण उत्थान हेतु अपने समीपस्थ ब्लाकों नजीबाबाद और वहादराबाद की सेवा का व्रत लें।

आपको यह भी स्मरण होगा कि सन् 1981 में हमें तीन वर्ष के लिए अखिल भारतीय विश्वविद्यालय संघ की अस्थायी मान्यता प्राप्त हुई थी। अब उसकी अवधि दो वर्ष और बढ़ा दी गई है। आगामी सत्र में उनकी जाँच समिति विश्वविद्यालय के मूल्यांकन हेतु इस आशय से आएगी कि इसे स्थायी मान्यता दी जाए अथवा नहीं। आशा है, आप गुरुजन, ब्रह्मचारीगण तथा कर्मचारी इस परीक्षा में यश के साथ उत्तीर्ण होंगे।

मुझे यह देखकर प्रसन्नता होती है कि हमारे आचार्यकुल ने करवट बदली है और अब इसके कतिपय सदस्य जागरूक होकर मनोयोग से पुनर्निर्माण की दिशा में कार्य करने लगे हैं। उनके लिए मेरे आशीर्वाद। शेष प्रभु इच्छा से इसके लिए तैयार होंगे, ऐसा मेरा विश्वास है। उनकी सद्‌बुद्धि के लिए परमेश्वर से प्रार्थना। मैं चाहूँगा कि गुरुकुल अब फिर रोगग्रस्त न हो, इस कुल के सभी लोग हृष्ट-पुष्ट हों।

विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम्।

आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि विश्वविद्यालय की शिष्टपरिषद् ने श्री सत्यदेव भारद्वाज जी को विद्यामार्तंड की मानद उपाधि से अलंकृत करने का अनुमोदन किया है। मैं उन्हें विद्यामार्तंड की उपाधि प्रदान करने की घोषणा करता हूँ।

मैं इस अवसर पर अपने आचार्यों, ब्रह्मचारियों तथा कर्मचारियों को भी साधुवाद देना चाहूँगा जिन्होंने मेहनत और लगन से ये सब उपलब्धियाँ प्राप्त कीं।

1986–लक्ष्य दूर नहीं

❑ श्री बलभद्र कुमार हूजा

इस वर्ष दीक्षांत भाषण के लिए हमारे मध्य सुप्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री एवं वैदिक विद्वान् डॉ. सत्यव्रत सिद्धांतालंकार उपस्थित हैं। श्री सिद्धांतालंकार ने स्वामी श्रद्धानंद जी महाराज के श्रीचरणों में बैठकर विद्याध्ययन किया है। गुरुकुल के विख्यात स्नातकों में वे अग्रणी रहे हैं। समाज सेवा, स्वतंत्रता आंदोलन, अध्यापन तथा बहु-आयामी लेखन के क्षेत्र में उनकी सेवाएँ उल्लेखनीय हैं। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने उनकी असाधारण विद्वता से प्रभावित होकर उन्हें राज्यसभा का सदस्य मनोनीत किया था। समाजशास्त्र तथा नृतत्त्वशास्त्र जैसे विषयों पर हिंदी में विश्वविद्यालय स्तर के ग्रंथ लिखने वाले वे पहले व्यक्ति हैं। आपके 'एकादशोपनिषद् भाष्य' की प्रशंसा डॉ. राधाकृष्णन तथा 'गीती भाष्य' की प्रशंसा प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री ने की थी। पंजाब सरकार ने आपकी साहित्यिक सेवाओं के लिए चंडीगढ़ में एक दरबार आयोजित कर आपका सार्वजनिक सम्मान किया। 'वैदिक विचारधारा का वैज्ञानिक आधार' तथा 'संस्कार चंद्रिका' आपके अन्य विशिष्ट ग्रंथ हैं। राजगोपालाचार्य पुरस्कार, मंगला प्रसाद पुरस्कार, गंगाप्रसाद उपाध्याय पुरस्कार तथा राष्ट्रपति पुरस्कारों से सम्मानित होने वाले ऐसे अद्भुत मनीषी को अपने बीच पाकर हमारा प्रसन्न होना स्वाभाविक ही है। गुरुकुल को विश्वविद्यालय का दर्जा दिलाने में आपकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। गुरुकुल के उत्थान के लिए आपके हृदय में विशेष तड़प है। हमारे नव-स्नातक सौभाग्यशाली हैं कि उन्हें आशीर्वाद देने के लिए इस विश्वविद्यालय के पुराने स्नातक, जो कुलपति भी रहे और परिद्रष्टा भी, आज यहाँ पधारे हैं। मैं डॉ. सत्यव्रत जी का विशेषरूप से आभारी हूँ कि उन्होंने हमारी प्रार्थना स्वीकार की।

विश्वविद्यालय की वार्षिक प्रगति और विकास के अवलोकन का यह उचित अवसर है। पूर्व में विश्वविद्यालय की बहुमुखी प्रगति हुई। इस संस्था को समन्वित गंगा योजना तथा हिमालय इकलोजीकल योजनाएँ प्राप्त हुईं। प्रौढ़ शिक्षा का कार्यक्रम प्रारंभ हुआ और माइक्रो बॉयलोजी में एम.एस-सी. की परीक्षाएँ प्रारंभ की

गईं। इसके साथ ही योग का डिप्लोमा कोर्स भी प्रारंभ किया गया। पुस्तकालय का विकास एवं आधुनिकीकरण किया गया। प्रोफेसरों के लिए मकान बनाए गए। जिमनाजियम हॉल बनाया गया और खेल-कूद के क्षेत्र में विशेष प्रगति हुई। अनेक राष्ट्रीय स्तर के सम्मेलन तथा विचार संगोष्ठियाँ आयोजित की गईं।

इस वर्ष फिजिक्स में एम.एस-सी. कक्षाएँ इसी जुलाई से खोलने का प्रयास किया जा रहा है। हमारी योजना रोजगार पाठ्यक्रम चलाने की है, ताकि यहाँ से शिक्षा पाने के बाद छात्र, जीवन में रचनात्मक कार्यों के साथ-साथ रोजगार भी प्राप्त कर सकें और साथ-ही-साथ अपनी संस्कृति की रक्षा और चरित्र निर्माण में भी संलग्न रहें। जुलाई 1986 से 'डिप्लोमा कोर्स इन कंप्यूटर साइंस' खोलने की योजना है। शिक्षा का तात्पर्य छात्र का बहुमुखी विकास है, अस्तु छात्रों के शारीरिक और मानसिक विकास हेतु सभी संभव प्रयत्न किए जा रहे हैं। मान्य कुलाधिपति डॉ. सत्यकेतु जी विद्यालंकार के अथक परिश्रम, ज्ञान और अनुभव के आधार पर विश्वविद्यालय में 'वैदिक तथा इंडोलोजिकल अध्ययन तथा अनुसंधान संस्थान' खोलने का संकल्प लिया गया है। इसका उद्देश्य वेदों तथा संबंधित साहित्य की व्याख्या करना है; प्राचीन भारतीय इतिहास, दर्शन तथा संस्कृति में अनुसंधान की सुविधा प्रदान करना है; संस्कृत भाषा, व्याकरण तथा साहित्य के उच्चतम अध्ययन की सुविधाएँ प्रदान करना तथा विश्व के महान् धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना है। इस संस्थान द्वारा प्रकाशन, अनुवाद, वैदिक शब्दार्थ कोश आदि की भी व्यवस्था की जाएगी। वैदिक संस्थान के प्रारंभ करने का अनुग्रह पूर्व कुलाधिपति श्री वीरेंद्र जी, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब का भी रहा है।

मुझे आप सबको सूचित करते हुए अपार हर्ष होता है कि कन्या गुरुकुल, देहरादून इस वर्ष से इसी विश्वविद्यालय का दूसरा कैंपस बन गया है। इसकी मान्यता भारत सरकार तथा यू.जी.सी. से प्राप्त हो गई है। मैं शिक्षा मंत्रालय तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को इस स्वीकृति के लिए आप सबकी ओर से धन्यवाद देता हूँ। इसी सत्र से कन्या गुरुकुल में बी.एड. कक्षाओं की स्वीकृति हेतु यू.जी.सी. से पुनः अनुरोध किया जा रहा है।

हरिद्वार की जनता की माँग को दृष्टिगत रखते हुए हरिद्वार में ही विश्वविद्यालय से बाहर विज्ञान की शिक्षा हेतु एक कन्या महाविद्यालय खोलने के लिए प्रयास जारी रहेगा।

जैसा कि आपको विदित है, कुछ वर्ष पूर्व गुरुकुल कांगड़ी आयुर्वेद कॉलेज, उत्तर प्रदेश सरकार ने अपने आधीन ले लिया था। हमारा प्रयास यह होगा कि इस कॉलेज का इंतजाम सरकार से वापस लेकर यहाँ एक उच्चतम आयुर्वेद पीठ की स्थापना करें। जिसमें स्नातकोत्तर अध्ययन के अतिरिक्त उच्चकोटि के अनुसंधान की व्यवस्था हो।

विश्वविद्यालय का प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम लगातार प्रगति की ओर अग्रसर हो रहा है। निरक्षरता उन्मूलन के अतिरिक्त यह कार्यक्रम सफाई, पर्यावरण का महत्त्व, परिवार नियोजन के लाभ, देश की स्वतंत्रता और अखंडता बनाए रखने में महापुरुषों द्वारा किए गए योगदान आदि की सूचना भी देता है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत विश्वविद्यालय के चौवन केंद्र यथासंभव कार्य कर रहे हैं। इस कार्यक्रम की सफलता को देखकर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने विश्वविद्यालय को पचास हजार रुपए का विशेष अनुदान आडियो-विजुअल एडस् खरीदने हेतु दिया है, जिससे वी.सी.आर., रंगीन टेलीविजन, स्लाइड्स, प्रोजेक्टर आदि क्रय किए गए हैं।

फरवरी माह में अनुदेशकों हेतु एक रिफरेशर प्रशिक्षण भी आयोजित किया गया। इस कार्य को अधिक गति देने के लिए यह योजना भी बनाई गई कि सलाहकार समिति के सात-सात, आठ-आठ सदस्य केंद्रों पर जाकर अभिभावक की तरह निरीक्षण करें तथा आवश्यक सुझाव दें।

गंगा समन्वित योजना का सैंपलिंग, विश्लेषण आदि कार्य दिन-प्रतिदिन उन्नति पर है। कुंभ मेले को दृष्टिगत रखते हुए गंगाजल का, विशेषकर स्नान स्थानों का सैंपलिंग प्रत्येक स्नान-पर्व पर लिया जाता रहा है। नए पौधे उगाने का कार्यक्रम भी प्रगति पर है। यह पौधे प्रदूषण कम करने की दृष्टि से उगाए गए हैं। इस विभाग द्वारा एक नर्सरी भी विकसित की गई है। गंगा के विभिन्न प्रदूषण स्रोतों का पता लगाया गया है तथा अनेक स्थानों से जल के नमूने एकत्रित करके प्रयोगशाला में उनका विश्लेपण किया गया है। भविष्य में जल के अंदर पाए जाने वाले जीव-जंतुओं का जल के प्रदूषण में क्या स्थान है—इस विषय पर अनुसंधान करने की योजना है। गंगा के किनारे स्थित श्मशान घाटों की राख तथा अधजले शरीर के हिस्से जो गंगा में फेंक दिए जाते हैं, उनके प्रभाव से गंगाजल की गुणता किस सीमा तक प्रभावित होती है, इस पर आधारित एकत्र किए गए आँकड़ों की समीक्षा की जा रही है।

'हिमालय इकलोजिकल योजना' के अंतर्गत आवश्यक उपकरण और एक जीप खरीद लिये गए हैं। इस पर लगभग 2.20 लाख रुपए खर्च किए जा चुके हैं। विश्वविद्यालय तथा कण्वाश्रम में वन महोत्सव मनाया गया, पेड़ लगाए तथा कोटद्वार में 19 फरवरी से 21 फरवरी तक हिमालय पर्यावरण विषय पर राष्ट्रीय गोष्ठी में विश्वविद्यालय के हिमालय शोध योजना के निदेशक डॉ. जोशी सहित योजना के अन्य शोधकर्मियों ने भाग लिया।

नवंबर मास में मंडलीय स्तर पर गढ़वाल में होने वाली राष्ट्रीय गान प्रतियोगिता में कन्या गुरुकुल, देहरादून की छात्राओं ने प्रथम स्थान प्राप्त करके रनिंग शील्ड प्राप्त की। दिसंबर मास में जिला स्तर पर आयोजित पल्लव भावगीत प्रतियोगिता में छात्राओं ने प्रथम स्थान प्राप्त करके शील्ड प्राप्त की। इसी प्रकार

अनेक छात्राओं ने जिला स्तर, मंडलीय स्तर तथा प्रादेशिक स्तर पर अनेक खेल-कूद प्रतियोगिताओं में भाग लिया और विजयश्री प्राप्त की। पच्चीस छात्राओं ने राष्ट्रीय सेवा योजना के अंतर्गत शिविर में भाग लिया और स्वयंसेविकाओं के कार्य पूरे किए। इस शिविर में छात्राओं ने सड़क का निर्माण और सफाई अभियान भी चलाया।

विश्वविद्यालय के रसायन विभाग में एकवर्षीय कॉमर्शियल मैथड्स ऑफ कैमिकल एनालाइसिस का भी पी.जी. डिप्लोमा कोर्स प्रारंभ किया गया है। रसायन विभाग के प्रवक्ता डॉ. रणधीरसिंह को रुड़की विश्वविद्यालय का वार्षिक खोसला पुरस्कार अन्य वैज्ञानिकों के साथ सामूहिक रूप से 1 मार्च, '86 को केंद्रीय मंत्री श्री पी.वी. नरसिम्हाराव द्वारा प्रदान किया गया। डॉ. अक्षय कुमार इंद्रायण का आकाशवाणी नजीबाबाद से 4 मार्च, '86 को एक्सटेंशन कार्य संबंधी एक क्विज प्रोग्राम प्रसारित हुआ।

हेली पुच्छल तारा देखने हेतु विश्वविद्यालय को एक तीन इंच की दूरबीन भी केंद्रीय सरकार द्वारा दी जा रही है।

वेद विभाग ने अनुसंधान के क्षेत्र में आशातीत प्रगति की। वेद विभाग वैदिक मंत्रों के उच्चारण और यज्ञ के वैज्ञानिक परीक्षणों के कार्य का आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति के आधार पर अध्ययन कर रहा है। वैदिक यज्ञों, यज्ञपात्रों तथा याज्ञिक सामग्री के प्रदर्शन के लिए वेद संग्रहालय बनाया जा रहा है। संस्कृत विभाग में बाहर के विद्वानों ने भाषण दिए तथा अनुसंधान कार्य में प्रगति हुई।

दर्शन विभाग में इस वर्ष अनेक प्रकार की शैक्षणिक उपलब्धियाँ रही हैं। 6 मार्च से 9 मार्च तक अखिल भारतीय दर्शन परिषद् का तीसवाँ अधिवेशन इसी विश्वविद्यालय में संपन्न हुआ। इसी विभाग में राष्ट्रीय दार्शनिक सम्मेलन 'विश्व की प्रमुख ज्वलंत समस्याओं का दार्शनिक निदान' विषय पर संपन्न हुआ। दर्शन विभाग में डॉ. हर्ष नारायण,. रिटायर्ड प्रोफेसर, शिलांग, विजिटिंग फैलो के रूप में पधारे और उनके कई व्याख्यान अनेक दार्शनिक विषयों पर हुए। इन आयोजनों के लिए डॉ. जयदेव वेदालंकार विशेषरूप से धन्यवाद के पात्र हैं।

इस वर्ष हिंदी विभाग में केंद्रीय निदेशालय द्वारा संचालित अहिंदी क्षेत्रीय विद्वानों द्वारा हिंदी क्षेत्र में दी जाने वाली भाषणमाला योजना के अंतर्गत गुजरात के हिंदी आचार्य डॉ. सुरेशचंद्र त्रिवेदी के चार व्याख्यान हुए। काशी हिंदू विश्वविद्यालय के आचार्य डॉ. त्रिभुवन सिंह, दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदी आचार्य तथा अध्यक्ष डॉ. महेंद्र कुमार एवं पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ के हिंदी विभाग के अध्यक्ष डॉ. धर्मपाल मैनी विश्वविद्यालय मे पधारे तथा विद्यार्थियों को अनुसंधान प्रक्रिया से परिचित कराया। काशी हिंदू विश्वविद्यालय में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में 'भारतेंदु और दयानंद' पर हमारे हिंदी के प्रोफेसर डॉ. विष्णुदत्त राकेश ने विशेष

वक्ता के रूप में भाषण दिया।

मनोविज्ञान विभाग में क्लीनिकल कोर्सेस खोलने की योजना है। अंग्रेजी विभाग में एक लैंग्वेज लैबोरेटरी की स्थापना की गई है। अंग्रेजी विभाग के रीडर डॉ. आर.एल. वार्ष्णेय का एक भाषण 'सोवियत संघ में हिंदी का स्थान' 4 अगस्त को ऑल इंडिया रेडियो से प्रसारित हुआ। इस विभाग में अनुसंधान में भी प्रगति हुई और विभाग के डॉ. श्रवण कुमार एवं श्री अजय शर्मा ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग समर इंस्टीट्यूट, मेरठ में भाग लिया। इसी विभाग के डॉ. वार्ष्णेय तथा डॉ. श्रवण कुमार ने मेरठ विश्वविद्यालय में डी.एच. लारेंस पर हुए एक सेमिनार में भी भाग लिया। विश्वविद्यालय के विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के संपादक सर्वश्री डॉ. हरगोपाल सिंह, डॉ. विजयशंकर, डॉ. विष्णुदत्त राकेश, आदि बधाई के पात्र हैं। 'वैदिकपाथ' तथा अन्य पत्रिकाओं का प्रकाशन पुनः शुरू कर दिया गया है।

इस वर्ष गणित विभाग का प्रसार किया गया। इस विभाग में अब दो प्रोफेसर हैं। इसमें पी-एच.डी. खोलने की योजना है। वनस्पति विभाग में भी दो प्रोफेसर हैं। इस विभाग के अंतर्गत गंगा समन्वित योजना भी चल रही है। भौतिक विभाग में एम.एस-सी. के अतिरिक्त कंप्यूटर कोर्स भी शुरू किया जा रहा है। जूलोजी विभाग में माइक्रो बॉयलोजी की एम.एस-सी. कक्षाएँ प्रारंभ कर दी गई हैं और पर्यावरण तथा इकालोजी पर सराहनीय कार्य हो रहा है।

गुरुकुल का एक प्रमुख दर्शनीय खंड गुरुकुल का पुरातत्त्व संग्रहालय है। इसमें अभिलेखशास्त्र तथा मुद्राशास्त्र की विविध दुर्लभ तथा रोचक सामग्री प्रदर्शित है। जनसाधारण को दिखाने के उद्देश्य से प्रचुर ऐतिहासिक सामग्री वीथिकाओं में सजाई गई है।

एन.सी.सी. का कार्य मेजर वीरेंद्र अरोड़ा कर रहे हैं। पिछले वर्ष की भाँति इस वर्ष भी एन.सी.सी. का सफल कैंप उनके नेतृत्व में लगा। आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि इस वर्ष तमिल कक्षाएँ खोलने हेतु तमिलनाडु सरकार से यथेष्ट राशि उपलब्ध कराई गई है। आशा है कि इस दिशा में आगामी सत्र से कार्यारंभ हो जाएगा।

गुरुकुल सिस्टम वर्तमान परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय अखंडता, समाज सेवा, मानव जाति की एकता, विश्वव्यापी प्रेम, चरित्र निर्माण, आत्मानुशासन, सामाजिक तथा लोकतांत्रिक न्याय, सामूहिक कार्य चेतना, ज्ञान की खोज एवं प्रसार जैसे उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक हो सकता है। गुरुकुल में विगत वर्षों में हम इन्हीं मूल्यों की खोज का यत्न करते रहे हैं। इस दिशा में अपने सीमित साधनों के बावजूद जहाँ एक ओर आश्रम व्यवस्था का सुधार किया गया वहाँ ब्रह्मचारियों के आध्यात्मिक विकास के लिए व्रताभ्यास, योगाभ्यास तथा वेदमंत्र पाठ पर

अधिकाधिक बल दिया गया।

गुरुकुल की उपलब्धियों के लिए मैं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, उत्तर प्रदेश सरकार, आकाशवाणी नजीबाबाद, विश्वविद्यालय की शिष्टपरिषद्, कार्यपरिषद् तथा शिक्षा पटल के मान्य सदस्यगण के प्रति आभार प्रकट करता हूँ। उन्होंने समय-समय पर हमें अपना अमूल्य सहयोग प्रदान किया तथा हमारा मार्गदर्शन किया। इसके साथ ही मैं स्थानीय प्रशासन को भी धन्यवाद देता हूँ, उन्होंने यहाँ व्यवस्था बनाए रखने में अपना पूर्ण सहयोग दिया।

मैं इस अवसर पर अपने आचार्यों, ब्रह्मचारियों तथा स्टाफ को भी धन्यवाद देना चाहूँगा जिनकी मेहनत और लगन से ये सब उपलब्धियाँ हो सकीं। मैं कुलसचिव, उपकुलसचिव तथा वित्ताधिकारी एवं उनके स्टाफ के सहयोग का भी आभारी हूँ।

1987–ग्राम्य विकास शिक्षा का लक्ष्य

❑ श्री रामचंद्र शर्मा

इस वर्ष दीक्षांत भाषण के लिए हमारे मध्य उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री माननीय श्री वीरबहादुर सिंह जी उपस्थित हैं। प्रदेश की नई शक्ति के रूप में उन्होंने सरकार का दायित्व सँभाला। गोरखपुर के एक साधारण ग्राम में जन्म लेकर भी अपने व्यक्तित्व और क्रियाशीलता से वह राष्ट्रीय स्तर के नेता बने। संघर्ष, निष्ठा, दूरदृष्टि, प्रशासनिक क्षमता और लोकहृदय से संपन्न होने के कारण नेतृत्व के सहज गुणों से मंडित आपका व्यक्तित्व हमारे स्नातकों को सार्वजनिक जीवन में उतरकर सफलता प्राप्त करने में प्रेरणा देगा। क्षेत्रीय तथा राष्ट्रीय स्तर पर प्रशासनिक संरचना का सर्वेक्षण कर उसे वर्तमान सामाजिक-आर्थिक विकास के अनुरूप ढालने में जो सूझबूझ आपने दिखाई तथा समाज के कमजोर और पिछड़े वर्ग के लोगों का जीवन स्तर सुधारने में जिन योजनाओं को आपने तत्परता से क्रियान्वित कराया, उससे प्रदेश को नई शक्ति मिली है। 1970 ई. से आज तक आप सार्वजनिक निर्माण विभाग, राजस्व, सिंचाई, आबकारी, परिवहन तथा उद्योग जैसे महत्त्वपूर्ण मंत्रालयों का सफलतापूर्वक संचालन करते रहे और संप्रति मुख्यमंत्री के रूप में अपने दायित्व का सफलतापूर्वक निर्वाह कर रहे हैं। यह हमारे अंतेवासियों का सौभाग्य है कि देश-विदेश के अनुभवों से संपन्न, राजनीतिक और सांस्कृतिक सूझबूझ से ओत-प्रोत तथा विकास योजनाओं में कार्यरत एक विचारशील मनीषी के द्वारा उन्हें संबोधन प्राप्त करने का अवसर मिल रहा है। मैं मुख्यमंत्री जी का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ कि वह अत्यंत व्यस्तता के रहते हुए भी हमारे बीच आए। विश्वविद्यालय में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा विशाल स्पोर्टस स्टेडियम बनवाने की घोषणा उन्होंने पिछले दिनों हमारे अनुरोध पर सार्वजनिक रूप से हरिद्वार की चुनाव सभा में की थी। इस अवसर पर इस महत्त्वपूर्ण उपलब्धि के लिए मैं आप सबकी ओर से मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद देता हूँ और आशा करता हूँ कि इस घोषणा की पूर्ति यथाशीघ्र होगी। मुझे विश्वास है कि इस राष्ट्रीय महत्त्व के विश्वविद्यालय को आपका स्नेह-सहयोग बराबर मिलता रहेगा।

विश्वविद्यालय की वार्षिक प्रगति और विकास के अवलोकन का यह उचित अवसर है। गत वर्षों में जहाँ विश्वविद्यालय को विभिन्न विषयों में आचार्य पद प्राप्त हुए वहाँ समन्वित गंगा योजना, हिमालय पर्यावरण योजना, प्रौढ़ शिक्षा प्रसार कार्यक्रम तथा रोजगार ब्यूरो की स्थापना भी हुई। कांगड़ी ग्राम विकास योजना तथा राष्ट्रीय सेवा योजना के कारण जहाँ ग्रामोत्थान के संकल्प को मूर्तरूप दिया गया वहाँ व्यवसायोन्मुखी शिक्षा के व्यावहारिक पक्ष का ज्ञान भी स्नातकों को हुआ और इस प्रकार हम कह सकते हैं कि सीमित साधनों के होते हुए भी हमारे विद्यार्थी राष्ट्र की रचनात्मक धारा से बराबर जुड़े रहे और पोथी ज्ञान के अलावा उन्हें समाज और देश की बुनियादी जरूरतों का परिचय भी मिलता रहा।

योग-मनोविज्ञान द्वारा मानव व्यवहार को उन्नत कर उसमें देवोपम गुणों का विकास कराया जा सकता है। इस धारणा से प्रभावित होकर अनुदान आयोग की सहायता से भारतीय मनोविज्ञान पर ग्रीष्मकालीन संस्थान का आयोजन प्रोफेसर हरगोपाल सिंह के निदेशन में 25 जून से 9 जुलाई, 1986 तक किया गया। इसमें भारत के विश्वविद्यालयों से आए प्राध्यापकों ने प्रशिक्षण लिया। इस संस्थान में वैदिक मनोविज्ञान, मनोचिकित्सा, योग मनोविज्ञान, व्यक्तित्व के प्रकार एवं संवर्द्धन, स्वरविज्ञान, मानव व्यवहार, आयुर्वेदीय मानस-रोग एवं भारतीय तथा पाश्चात्य मनोविज्ञान की तुलना जैसे विषय पर अधिकारी विद्वानों ने शोधपत्र प्रस्तुत किए। इस शिविर का उद्घाटन पूर्व परिद्रष्टा डॉ. सत्यव्रत सिद्धांतालंकार तथा समापन कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान के पूर्व आचार्य डॉ. ए.के. सिन्हा ने किया।

हिमालय पर्यावरण योजना के तहत 1 अगस्त से 12 अगस्त 1986 तक वृक्षारोपण शिविर का आयोजन कोटद्वार में किया गया। इस शिविर में इंदिरा प्रियदर्शिनी इंटर कॉलेज, मोटाढ़ाक, कोटद्वार, जिला-पौड़ी गढ़वाल के सौ छात्रों ने भाग लिया। इस शिविर का उद्घाटन भारत सरकार के मंत्री माननीय श्री ब्रह्मदत्त जी द्वारा पौधे लगाकर किया गया। भारतीय जाति के उद्भव और विकास का साक्षी हिमालय और उसका पर्यावरण यदि सुरक्षित न रहा तो निश्चय ही गंगा-यमुना आदि पवित्र नदियों, वनस्पतियों, खनिज पदार्थों तथा मानव संसाधनों का यह अक्षय स्रोत नष्ट हो जाएगा। इस बारह दिवसीय शिविर में लगभग इक्कीस हजार पौधों को लगाया गया। शीशम, कंजु, खैर और पापुलर की ये पौधें स्थानीय वन विभाग, सिंचाई विभाग तथा हिमालय पर्यावरण योजना की अपनी नर्सरी से लेकर लगाई गई। हम इनके संरक्षण के लिए भी बराबर यत्न कर रहे हैं। इसी योजना के अंतर्गत कण्वाश्रम घाटी के ग्रामीणों की आवश्यकता एवं रुचि के अनुसार फलदार, ईंधन, चारा एवं इमारती लकड़ीवाले वृक्षों की विभिन्न प्रजातियों की लगभग एक लाख पौध तैयार की गई। आगामी मानसून में राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर के विद्यार्थियों द्वारा इन पौधों का रोपण कराया जाएगा तथा मालिनी नदी के तट पर बाढ़ नियंत्रण

तथा भूमि संरक्षण के लिए कण्वाश्रम-कलाल घाटी के क्षेत्र में बंध, स्पर तथा सीमेंट ब्लॉक्स का निर्माण किया जाएगा। विश्वविद्यालय के जंतुविज्ञान विभाग में एक आधुनिक उपकरणों-संयंत्रों से युक्त प्रयोगशाला स्थापित की जा रही है और इसके लिए आवश्यक यंत्र खरीद लिये गए हैं।

जंतुविज्ञान विभाग के तत्त्वावधान में 15 दिसंबर से 18 दिसंबर, '86 तक 'मत्स्य एवं पर्यावरण' पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन भी विश्वविद्यालय में हुआ। इस संगोष्ठी में देश भर से आए दो सौ बीस वैज्ञानिकों ने भाग लिया तथा बानबे वैज्ञानिकों ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए। वैज्ञानिकों ने जल प्रदूषण एवं अन्य कारणों से मत्स्य जाति की रक्षा के उपायों पर विचार किया। इसका उद्‌घाटन उत्तर प्रदेश के मंत्री श्री सीताराम निषाद तथा समापन कुलाधिपति डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार ने किया। योजना के निदेशक डॉ. बी.डी. जोशी इसके लिए बधाई के पात्र हैं। गंगा समन्वित योजना का कार्य भी विश्वविद्यालय में सुचारु रूप से डॉ. विजयशंकर के नेतृत्व में चल रहा है। इस वर्ष धार्मिक पर्वों पर रात-दिन जल नमूने एकत्र करके, सामूहिक स्नान करने से गंगाजल की गुणता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन कर लिया गया है। यह रिपोर्ट अलग से प्रकाशित कराई जा रही है। औद्योगिक एवं घरेलू उत्प्रवाहों पर विभिन्न पौधों की अलग-अलग जातियों को उगाकर यह अध्ययन किया जा रहा है कि किस पौधे की कौन सी जाति प्रदूषण कम करने में अधिक सहायक है।

कांगड़ी ग्राम विकास योजना के अंतर्गत कांगड़ी एवं निकटवर्ती ग्रामों को बाढ़ से बचाने के लिए जिला स्तर पर कार्यवाही की गई है। जिलाधिकारी, बिजनौर का पूर्ण सहयोग इस कार्य के लिए मिल रहा है। हमारे विद्यार्थियों ने इस वर्ष गाँव के साठ घरों के पीछे किचन सोकपिट बनाए। गाँव को मुख्य सड़क से जोड़ने वाली दो सौ मीटर खड़ंजे की सड़क को मिट्टी से पाटकर मरम्मत का कार्य किया। तीन पेयजल के कुओं की सफाई, निकास-नालियों का निर्माण, परिवार नियोजन की शिक्षा तथा ग्रामवासियों को स्वास्थ्य शिक्षा की जानकारी दी गई। डॉ. विजयशंकर तथा सेवा योजना के समन्वयक श्री ओम्प्रकाश मिश्र के संचालन में इस ग्राम का उत्थान हो रहा है।

रसायन विभाग में 1985-86 सत्र से एकवर्षीय स्नातकोत्तर डिप्लोमा 'कॉमर्शियल मैथड्स ऑफ कैमिकल एनालाइसिस' शुरू किया गया है। इसके अंतर्गत विद्यार्थियों को जल, मिट्टी, तेल, वसा, साबुन, सीमेंट, गारा, लवण, अयस्क, ड्रग्स तथा उर्वरक आदि के विश्लेषण का अभ्यास कराया जाता है तथा आधुनिक इलैक्ट्रोनिक उपकरणों पर कार्य करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। रोजगारोन्मुखी शिक्षा के क्षेत्र में यह हमारा एक कदम है और हमें यह कहते हुए प्रसन्नता हो रही है कि इस डिप्लोमा में अब तक उत्तीर्ण विद्यार्थी सरकारी तथा

गैर-सरकारी संस्थाओं में नौकरी प्राप्त कर चुके हैं। डॉ. रामकुमार पालीवाल तथा डॉ. रजनीशदत्त कौशिक इस कार्य को सफलतापूर्वक कर रहे हैं। डॉ. रणधीरसिंह अगस्त '86 में फ्लोरेंस इटली में शोध पत्र प्रस्तुत करने गए। गणित तथा भौतिकशास्त्र विभाग भी अपना कार्य भलीभाँति कर रहे हैं। विज्ञान महाविद्यालय के प्राचार्य श्री सुरेशचंद्र त्यागी इन सभी कार्यक्रमों में विशेष रुचि लेते हैं।

प्रौढ़ शिक्षा तथा सतत प्रसार कार्यक्रम के तहत 17 फरवरी से 23 फरवरी तक प्रशिक्षकों का एक प्रशिक्षण शिविर लगाया गया। प्रधानमंत्री जी के बीस सूत्रीय कार्यक्रम, नवोदय पाठशालाओं, नई शिक्षा नीति, सौर ऊर्जा तथा शिक्षण की पद्धतियों और उपायों पर प्रकाश डाला गया। लखनऊ के साक्षरता विभाग से तीन सौ किट्स उपलब्ध हुई तथा साक्षरता का विशाल स्तर पर अभियान शुरू किया गया। डॉ. अनिलकुमार तथा डॉ. चोपड़ा इस योजना को सुचारु रूप से चला रहे हैं। इस कार्यक्रम को देखकर अनुदान आयोग ने दृश्य-श्रव्य साधनों के जुटाने हेतु विशेष अनुदान दिया था।

पिछले दिनों भारत सरकार ने हिमालय-आर्किड्ज की पार्यावर्णिक जीवविज्ञान पर तथा अनुदान आयोग ने पश्चिमी हिमालय के दाल-बीजों तथा लैक्नींज़ पर बृहत् शोध योजना भी विश्वविद्यालय के लिए स्वीकृत की है। यह कार्य डॉ. पुरुषोत्तम कौशिक के निरीक्षण में संपन्न होगा।

इस विश्वविद्यालय की बहुमुखी योजनाओं के विकास के लिए सप्तम पंचवर्षीय योजना में अनुदान आयोग ने पचास लाख रुपए की राशि स्वीकृत की है। कन्या गुरुकुल, देहरादून, जो इस विश्वविद्यालय का दूसरा कैंपस है, के लिए पाँच लाख रुपए अलग से दिए हैं। वेद संग्रहालय जिसमें यज्ञ के प्रकार, यज्ञपात्र, यज्ञवेदियाँ तथा समिधा आदि के वैदिक रूपों का संकलन होगा, साइको आयुर्वेदिक चिकित्सा तथा हिंदी पत्रकारिता के डिप्लोमा के लिए विस्तृत योजनाएँ आयोग ने विचारार्थ माँगी हैं।

स्वामी श्रद्धानंद जी महाराज हिंदी पत्रकारिता के पितामह थे। उनके 'सद्धर्म प्रचारक' ने पराधीन भारत में जनजागरण का कार्य किया था। उनके शिष्यों ने, इस विश्वविद्यालय के स्नातकों ने इस दिशा में ऐतिहासिक महत्त्व का कार्य किया है। हमने उस सारी सामग्री के संकलन-संपादन की योजना बनाई है, ताकि हम सद्धर्म प्रचारक की शताब्दी मनाएँ और उस अवसर पर वह सामग्री प्रकाशित हो। आज़ादी की लड़ाई का इतिहास तब तक अधूरा है जब तक इस सारी सामग्री का आकलन नहीं हो जाता।

अनुदान आयोग के अधिकारियों, विशेषकर इसके विद्वान् अध्यक्ष प्रो. यशपाल तथा उपाध्यक्ष डॉ. सच्चिदानंद मूर्ति का मैं विशेषरूप से आभारी हूँ जिन्होंने हमारी योजनाओं पर सहानुभूतिपूर्वक विचार किया।

22 अगस्त को संस्कृत विभाग ने संस्कृत दिवस का आयोजन किया। निर्धन निकेतन, हरिद्वार के अध्यक्ष श्री ऋषि केशवानंद जी की अध्यक्षता में नगर की संस्कृत पाठशालाओं के विद्वानों तथा गुरुकुल के आचार्यों और ब्रह्मचारियों ने संस्कृत भाषा और साहित्य के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डाला। डॉ. निगम शर्मा तथा श्री वेदप्रकाश शास्त्री इसके संयोजक थे। वेद विभाग के विद्वानों ने वैदिक धर्म और साहित्य पर बाहर जाकर अनेक व्याख्यान दिए। प्रो. रामप्रसाद वेदालंकार की अनेक छोटी-बड़ी पुस्तकें प्रकाशित हुईं। जनसामान्य को वैदिक सिद्धांतों से परिचित कराने में इन पुस्तिकाओं की बड़ी उपयोगिता है।

स्वामी श्रद्धानंद जी महाराज के बलिदान दिवस पर अनेक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। बैडमिंटन टूर्नामेंट में भी ब्रह्मचारियों ने सोत्साह भाग लिया। इस शृंखला में नई पीढ़ी के उद्‌बोधन और मार्गदर्शन के लिए स्वामी जी की स्मृति में एक राष्ट्रीय स्तर की व्याख्यानमाला का शुभारंभ किया गया। इसमें भारतीय साहित्य, संस्कृति, पुरातत्त्व, दर्शन, विज्ञान, समाज सेवा तथा स्वाधीनता आंदोलन के इतिहास पर विश्रुत विद्वानों के व्याख्यान कराए जाएँगे। 4 मार्च, 1987 को इस 'प्रसार व्याख्यानमाला' का उद्‌घाटन भाषण हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकार तथा गांधीवादी विचारक श्री विष्णु प्रभाकर ने दिया। 'भारतीय नवजागरण और स्वामी श्रद्धानंद' शीर्षक सुरुचिपूर्ण रूप में छपा उनका व्याख्यान वितरित कराया गया। इस समारोह की अध्यक्षता कुलाधिपति डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार ने की। इस भव्य आयोजन की सफलता के लिए मैं हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. विष्णुदत्त राकेश को साधुवाद देता हूँ।

20 से 29 मार्च तक एन.सी.आर.टी. (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्), दिल्ली की ओर से यहाँ समूहगान प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। उत्तर प्रदेश के तैंतालीस प्रशिक्षार्थियों ने इसमें भाग लिया। इस शिविर का उद्‌घाटन पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वीरेंद्र ने किया। उत्तर प्रदेश के मंत्री श्री बलदेवसिंह जी आर्य मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। देश प्रसिद्ध संगीतशास्त्री श्री विनय मुद्‌गल, श्री कनु घोष, डॉ. देशपांडे तथा लक्ष्मीकेशव जैसे प्रशिक्षकों से शिविर में जान आ गई। डॉ. जोशी तथा प्रो. ओम्प्रकाश मिश्र ने इसे सफल बनाने में पूर्ण सहयोग दिया।

गुरुकुल का एक प्रमुख दर्शनीय खंड गुरुकुल का पुरातत्त्व संग्रहालय है। इसमें अभिलेखशास्त्र तथा मुद्राशास्त्र की दुर्लभ एवं रोचक सामग्री प्रदर्शित है। संग्रहालय के साथ जुड़े हुए श्रद्धानंद कक्ष की प्रगति भी उल्लेखनीय है। इसमें पूज्य स्वामी जी की पादुकाएँ, वस्त्र, कमंडल तथा दुर्लभ चित्र-पत्रादि सुरक्षित हैं। इस स्मृतिकक्ष में भारतीय स्वाधीनता आंदोलन की अद्‌भुत झाँकी मिलती है। 1919 के जलियाँवाला हत्याकांड के बाद अमृतसर कांग्रेस के अधिवेशन का वह चित्र उल्लेखनीय है जिसमें

स्वामी श्रद्धानंद की स्वागताध्यक्ष के रूप में विराजमान हैं तथा श्री मोतीलाल नेहरू, श्रीमती एनी बेसेंट एवं महामना मदनमोहन मालवीय उनके साथ बैठे हैं। नवयुवक श्री जवाहरलाल नेहरू और लाला लाजपतराय भी विद्यमान हैं। अब यहाँ अष्टधातु तथा चित्रकक्ष की स्थापना भी हो गई है। इस संग्रहालय का उद्‌घाटन माननीय पंडित जवाहरलाल नेहरू तथा प्रख्यात पुरातत्त्ववेत्ता डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल ने किया था। अक्तूबर, नवंबर में प्रसिद्ध पुरातत्त्ववेत्ता डॉ. रत्नचंद्र अग्रवाल विजिटिंग फैलो के रूप में यहाँ पधारे। 8 मार्च को संग्रहालय के प्रस्तर प्रतिमाकक्ष का उद्‌घाटन संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के संयुक्त सचिव श्री रमेशचंद्र त्रिपाठी ने किया। इस संग्रहालय के निदेशक डॉ. जबरसिंह सेंगर इसके विकास में कोई कसर नहीं रखेंगे, मुझे इसका पूर्ण विश्वास है। इतिहास विभाग के अध्यक्ष डॉ. विनोदचंद्र सिन्हा को नेशनल फैलोशिप मिली।

गुरुकुल पुस्तकालय की गणना उत्तर भारत के गिने-चुने पुस्तकालयों में की जाती है। यहाँ धर्म, दर्शन, इतिहास, मानविकी, साहित्य और विज्ञान की दुर्लभ पुस्तकें तथा पांडुलिपियाँ सुरक्षित हैं। विभिन्न विषयों पर एक लाख से अधिक पुस्तकें विद्यमान हैं जिनका उपयोग देश-विदेश के विद्वान् करते हैं। संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा गुरुकुल पुस्तकालय को भारत की सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखे जाने के केंद्र के रूप में मान्यता दी गई है। वर्ष '86-87 में दुर्लभ ग्रंथों तथा पांडुलिपियों के संरक्षण हेतु छियासठ हजार पांच सौ रुपए का अनुदान मिला। दो हजार नए ग्रंथ खरीदे गए तथा ज्ञान-विज्ञान की अधुनातन चार सौ पत्रिकाएँ नियमित रूप से मँगाई गई। इनमें अंतर्राष्ट्रीय स्तर की पचास पत्रिकाएँ विदेशों से आ रही हैं। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने वर्तमान पुस्तकालय भवन के विस्तार हेतु पाँच लाख रुपए की सहायता दी है तथा चार लाख रुपए की अतिरिक्त धनराशि नवीन पुस्तकों एवं पत्र-पत्रिकाओं के क्रय के लिए दी है।

एन.सी.सी. का कार्य भी सुचारु रूप से चल रहा है।

संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ. निगम शर्मा अपने सहयोगियों के साथ संस्कृत सर्टिफिकेट कोर्स तथा अंग्रेजी विभागाध्यक्ष डॉ. राधेलाल वार्ष्णेय अंग्रेजी सर्टिफिकेट कोर्स सफलतापूर्वक चला रहे हैं। भाषा शिक्षण की आधुनिक तकनीक के आधार पर अंग्रेजी में भाषा ज्ञान के लिए आवश्यक उपकरण मँगाए गए हैं। संस्कृत, अंग्रेजी न जानने वाले तो इससे लाभान्वित होंगे ही, अपितु भाषा के शुद्ध लेखन तथा उच्चारण के लिए यह प्रयोगशाला अधिक उपयोगी सिद्ध होगी। नए सत्र से हम अन्य भारतीय भाषाओं के ज्ञान के लिए भी कुछ कार्यक्रम शुरू करने जा रहे हैं। तमिल कक्षाओं के लिए तो हमने बातचीत भी कर ली है।

योग प्रशिक्षण पाठ्यक्रम को सुचारु रूप से चलाने के लिए श्री ईश्वरदत्त भारद्वाज धन्यवाद के पात्र हैं।

गंगा और गंगा के मैदान के वैज्ञानिक अध्ययन के साथ ऋषिकेश से गढ़मुक्तेश्वर तक के प्रायः दो हजार पाँच सौ ग्रामों का सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण एवं अध्ययन किया गया। अभी तक के अध्ययन से ज्ञात हुआ कि अनेक ग्राम अपरदन, जलप्लावन, बाढ़, सीपेज आदि से पीड़ित हैं। गजरौला क्षेत्र में उद्योगों के कारण एक बड़े क्षेत्र में प्रदूषण फैला हुआ है। गंगा के जल का बी.ओ.डी., सी.ओ.डी. एवं बैक्टीरिया-संख्या अनेक स्थानों पर काफी बढ़े हुए पाए गए जो प्रदूषण के सूचक हैं। योजना ने ओषधीय एवं अन्य पौधों की एक सूची तैयार की है जिन्हें गंगा के मैदान, किनारों तथा पहाड़ियों पर लगाया जाएगा जिससे भूमि कटाव भी रोका जा सकेगा एवं स्थानीय लोगों के लिए ओषधि, ईंधन, डेटरजेंट्स एवं कीटनाशी आदि उपलब्ध हो सकेंगे। ये कदम जहाँ राष्ट्रीय समृद्धि में सहायक होंगे वहाँ साथ ही पर्यावरण को अधिक अच्छा भी बनाएँगे।

ग्रामों में शिक्षा की सुविधा एवं स्वास्थ्य सेवाएँ संतोषजनक नहीं हैं। अधिकतर ग्रामीणों की आर्थिक अवस्था कमजोर है। प्रधानतया लोग खेती या मजदूरी पर निर्भर करते हैं। उपरोक्त स्थिति में सुधार लाने के लिए गंगा योजना कार्यक्रम बना रही है। कांगड़ी ग्राम विकास योजना के अंतर्गत कांगड़ी ग्राम को बाढ़ से बचाने के लिए वि.वि. के प्रयास से चैक डैम बनाना प्रारंभ हो गया है। ग्राम के पास से शराब का ठेका हटाने के लिए बिजनौर जिलाधिकारी ने आश्वासन दिया है। इस संबंध में उत्तर प्रदेश के राज्य आबकारी मंत्री महोदय ने भी आदेश दिए हैं।

मुझे यह कहते हुए संतोष का अनुभव हो रहा है कि विश्वविद्यालय के 1986 तक के आय-व्यय निरीक्षण का कार्य भारत सरकार के ऑडिट विभाग द्वारा संपन्न हो गया है। और प्रशासनिक दृष्टि से यह एक उपलब्धि कही जा सकती है।

मुख्यमंत्री जी !

गुरुकुल का आयुर्वेद कॉलेज देश के सबसे पुराने कॉलेजों में एक है। वैद्य धर्मदत्त, डॉ. धर्मानंद केसरवानी जैसे अनेक स्नातकों ने आयुर्वेद की शिक्षा में कीर्तिमान स्थापित किए। स्वामी श्रद्धानंद जी महाराज न केवल वेद-वेदांग के पक्षपाती थे, अपितु वह आधुनिक विज्ञान और भारतीय चिकित्साशास्त्र में नवीन अनुसंधानों की प्रेरणा दे रहे थे। कुछ कारणों से यह कॉलेज उत्तर प्रदेश सरकार ने अपने अधीन कर लिया था। अब हम चाहते हैं कि इसका पूर्ण व्यय उत्तर प्रदेश सरकार वहन करते हुए इसे गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय को सौंप दे। यदि ऐसा हो जाए तो हम यहाँ आयुर्वेद की उच्चतम अध्ययनपीठ स्थापित कर, स्नातकोत्तर अध्ययन और अनुसंधान का कार्य प्रारंभ करेंगे। इससे गुरुकुल की पहचान बनेगी तथा आयुर्वेद की आधुनिक आवश्यकता की पूर्ति हो सकेगी। आशा है, आप हमारी यह प्रार्थना स्वीकार करेंगे।

आर्य बंधुओ,

गुरुकुल प्रणाली वर्तमान परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय अखंडता, समाज सेवा, मानव जाति की एकता, विश्वव्यापी प्रेम, चरित्र निर्माण, आत्मानुशासन, सामाजिक तथा लोकतांत्रिक न्याय, सामूहिक कार्य चेतना, ज्ञान की खोज एवं प्रसार जैसे उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक हो सकती है। इस दिशा में अपने सीमित साधनों के बावजूद हम आगे बढ़ रहे हैं। हमारे ब्रह्मचारी व्रताभ्यास, योगाभ्यास तथा आत्मानुशासन से वल ग्रहण कर राष्ट्रीय जीवन में उतरें, मेरी यही सदिच्छा है। इकवाल के शब्दों में कहना चाहूँ तो कहूँगा—दृढ़ विश्वास, निरंतर कर्मण्यता तथा विश्वव्यापी प्रेम ही जीवन के महायुद्धों में पुरुषार्थी मनुष्यों की तलवारें हैं—

'यकीं मुहकम अमल पैहम मुहब्बत फातेहे आलम,
जहादे ज़िंदगानी में हैं यही मर्दों की शमशीरें।'

आइए एक वार कहें, 'जिस प्रकार आकाश एवं पृथ्वी निर्भय होकर निर्दोष कर्म करते हैं, उसी प्रकार हम भी भयरहित होकर सत्कर्म करते रहें।'

यथा द्यौश्च पृथिवी च न विभीतो न रिष्यतः
एवा मे प्राण मा विभेः।

(अथर्ववेद 2/15/1)

1988–आएँ, आत्म-निरीक्षण करें

❑ श्री रामचंद्र शर्मा

इस वर्ष दीक्षांत भाषण के लिए हमारे मध्य देहली उच्च न्यायालय के भूतपूर्व मुख्य न्यायाधीश श्री वी.एस. देशपांडे जी उपस्थित हैं। यह हमारे अंतेवासियों का सौभाग्य है कि देश-विदेश के शैक्षिक, सांस्कृतिक तथा विधि संबंधी अनुभवों से संपन्न, सुलझे हुए विचारक और विधिवेत्ता-मनीषी के द्वारा उन्हें आशीर्वाद प्राप्त करने का सुखद अवसर मिल रहा है। मैं महामहिम श्री देशपांडे जी का संस्था की ओर से हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ कि वह अत्यंत व्यस्तता के रहते हुए भी हमारे बीच पधारे। मुझे विश्वास है कि इस राष्ट्रीय महत्त्व के विश्वविद्यालय को आपका स्नेह-सहयोग बराबर मिलता रहेगा।

विश्वविद्यालय की वार्षिक प्रगति और विकास के अवलोकन का यह उचित अवसर है। गत वर्षों में जहाँ विश्वविद्यालय में विभिन्न विषयों में आचार्य पद प्राप्त हुए, समन्वित गंगा योजना, हिमालय पर्यावरण योजना, प्रौढ़ शिक्षा प्रसार कार्यक्रम तथा रोजगार ब्यूरो की स्थापना हुई, वहाँ कंप्यूटर प्रशिक्षण तथा प्रकाशन केंद्र की स्थापना से व्यवसायोन्मुखी शिक्षा की धारणा को मूर्तरूप देने की कोशिश की गई। स्नातकों को पुस्तकीय ज्ञान देने के अतिरिक्त समाज और देश की बुनियादी जरूरतों का परिचय देने के लिए उन्हें राष्ट्रीय विकास की रचनाधारा से जोड़े रखने की चेष्टा भी की गई। मुझे प्रसन्नता है कि सीमित साधनों के रहते हुए भी हमारे स्नातक आस-पास के ग्रामीण परिवेश से जुड़े रहे, ग्राम सुधार तथा परिवेश के नवनिर्माण में संलग्न होकर वह शिक्षा के व्यावहारिक पक्ष से परिचित हो सके। इससे आशा बँधती है कि वह महात्मा गाँधी और स्वामी श्रद्धानंद के विचारों को निष्ठापूर्वक भावी जीवन में भी क्रियान्वित कर सकेंगे।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की सहायता से प्रो. हरगोपालसिंह ने 27 जून से 11 जुलाई तक 'व्यक्तित्व के विकास तथा व्यवहार के रूपांतरण' पर एक ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण संस्थान का आयोजन किया। इसमें भारत के विश्वविद्यालयों से आए प्राध्यापकों ने प्रशिक्षण लिया। भारतीय विचार और तकनीक द्वारा व्यक्तित्व

के विकास की संभावनाओं पर विचार इस संस्थान की प्रमुख विशेषता थी। मनोविज्ञान विभाग के तत्त्वावधान में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से स्वीकृत 'केन्द्रीय विश्वविद्यालय में विभागाध्यक्षों एवं संकायाध्यक्षों की भूमिका' डॉ. सुवर्ण आतिश ने पूर्ण कर ली है और इसका प्रतिवेदन आयोग को भेज दिया गया है।

15 मई से 18 मई '87 तक दर्शन विभाग की ओर से डॉ. जयदेव वेदालंकार ने शिक्षा पद्धति में मूल्य तथा भर्तृहरि और विटगेस्टाइन के भाषा दर्शन पर एक राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया। इसमें पंजाव विश्वविद्यालय के दर्शन विभागाध्यक्ष डॉ. धर्मेंद्र गोयल प्रमुख रूप से उपस्थित हुए। इसका उद्‌घाटन परिद्रष्टा श्री सोमनाथ मरवाह ने किया तथा अध्यक्षता दिल्ली विश्वविद्यालय के दर्शन के प्रोफेसर डॉ. संतोष कुमार ने की।

11 से 14 अक्तूबर '87 तक प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग की ओर से प्रो. विनोदचंद्र सिन्हा ने एक राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया, विषय था—'प्राचीन भारत में स्थानीय स्वशासन'। इस संगोष्ठी का उद्‌घाटन परिद्रष्टा श्री सोमनाथ जी मरवाह ने किया। इस अवसर पर अनेक इतिहासवेता एकत्र हुए। इनमें कुलाधिपति डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार, गया के प्रो. उपेंद्र ठाकुर, सागर के प्रो. कृष्णदत्त वाजपेयी तथा लखनऊ के प्रो. बैजनाथ पुरी प्रमुख हैं।

इतिहास विभाग ने इस वर्ष सर्वेक्षण कार्य को और भी गतिमान किया। हरिद्वार के समीपवर्ती स्थानों से सर्वेक्षण के दौरान अनेक प्राचीन मृण्मूर्तियाँ तथा मृण्पात्र प्राप्त हुए। आशा है आगामी सत्र में उत्खनन कार्य भी प्रारंभ किया जा सकेगा।

9 मार्च '88 को गैर-हिंदी-भाषी क्षेत्रों में हिंदी अध्येता छात्र-छात्राओं का एक अध्ययन दल केंद्रीय हिंदी निदेशालय, भारत सरकार के शोध सहायक श्री अश्विनी कुमार के साथ गुरुकुल पधारा। इसमें असम, उड़ीसा, इंफाल, अरुणाचल, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक तथा तमिलनाडु के प्रतिनिधि प्रमुख थे। हिंदी विभाग के अध्यक्ष डॉ. विष्णुदत्त राकेश ने इन विद्यार्थियों की हिंदी अध्ययन संबंधी समस्याओं का समाधान किया। इस दल ने तीन दिन परिसर में रहकर विश्वविद्यालय की गतिविधियों का अवलोकन किया। इस दल को लखनऊ विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के आचार्य एवं अध्यक्ष डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित ने भी संबोधित किया। डॉ. दीक्षित ने हिंदी विभाग के निमंत्रण पर 'भारतीय साहित्य की मूलभूत एकता' विषय पर अपना रोचक भाषण दिया।

अंग्रेजी विभाग के अध्यक्ष डॉ. आर.एल. वार्ष्णेय ने अंग्रेजी विभाग में मेरठ विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग के आचार्य एवं अध्यक्ष डॉ. टी.आर. शर्मा का 'अरस्तू के कैथार्सिस सिद्धांत' पर भाषण कराया।

श्रावणी पर संस्कृत विभाग ने संस्कृत दिवस का आयोजन किया। इसमें नगर

की संस्कृत पाठशालाओं के विद्वानों तथा गुरुकुल के आचार्यों और ब्रह्मचारियों ने संस्कृत भाषा और साहित्य के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डाला। 30 सितंबर को अखिल भारतीय त्रिभाषा भाषण प्रतियोगिता का आयोजन संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ. निगम शर्मा और रीडर श्री वेदप्रकाश शास्त्री ने किया। अनेक विश्वविद्यालयों के विद्यार्थी इसमें सम्मिलित हुए। इस प्रतियोगिता की अध्यक्षता वैदिक साहित्य के सुप्रसिद्ध विद्वान् डॉ. रामनाथ वेदालंकार ने की। योग प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के लिए ईश्वर भारद्वाज ने उल्लेखनीय कार्य किया।

वेद विभागाध्यक्ष प्रो. रामप्रसाद वेदालंकार ने वैदिक प्रयोगशाला को सर्वांगीण बनाने के लिए उचित कदम उठाए। विभिन्न प्रकार के यज्ञपात्रों, यज्ञोपधियों तथा यज्ञवेदियों को प्रदर्शनार्थ तैयार कराया तथा सस्वर वेदमंत्रपाठ, यज्ञों द्वारा रोग चिकित्सा, वृष्टि विज्ञान एवं पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभावों के अध्ययन की योजना बनाई। वैदिक कर्मकांड सिखाने के लिए एक वर्ष के डिप्लोमा का प्रावधान किया गया। इसके अंतर्गत आर्यसमाज के मंतव्यों, पंचमहायज्ञ, श्रौतयोग तथा षोड्श संस्कारों का प्रशिक्षण दिया जाएगा। प्रो. रामप्रसाद ने जनसामान्य तक वैदिक सिद्धांतों और महर्षि दयानंद के विचारों को पहुँचाने के लिए अनेक छोटी पुस्तकों का प्रकाशन कराया। विश्वविद्यालय के विजिटिंग फैलो तथा अरबी के सुप्रसिद्ध विद्वान् डॉ. शिवराम चौधरी ने संपूर्ण गीता तथा तीन सौ वेदमंत्रों का अरबी और अंग्रेजी में अनुवाद कर दिया है। इनका प्रकाशन भी विचाराधीन है। विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों, ब्रह्मचारियों तथा कर्मचारियों का साप्ताहिक सत्संग तथा यज्ञ कार्यक्रम भी आचार्य रामप्रसाद जी की देखरेख में सुचारु रूप से चल रहा है।

मुझे यह कहते हुए अपार हर्ष हो रहा है कि गुरुकुल के प्राचीन प्रकाशित, किंतु अब अनुपलब्ध ग्रंथों के पुनः प्रकाशन और वैदिक साहित्य, इतिहास, संस्कृति, दर्शन, आर्य विचारधारा, भारतीय साहित्य, भारतीय विज्ञान और महर्षि दयानंद संबंधी शोधकार्य को विश्वविद्यालय स्तर पर प्रतिष्ठित करने के लिए इस वर्ष स्वामी श्रद्धानंद अनुसंधान प्रकाशन केंद्र की स्थापना कर दी गई है। इस कार्य के लिए सरकारी अनुदान भी प्राप्त हुआ है। इस केंद्र की ओर से 'शोध सारावली' तथा 'वैदिक साहित्य, संस्कृति और समाज दर्शन' ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं तथा आचार्य प्रियव्रत वेदमार्तंड प्रणीत शोधग्रंथ 'महर्षि दयानंद के वेद और धर्म संबंधी विचार' प्रकाशनाधीन है। आशा है कि इस प्रकाशन केंद्र से विश्वविद्यालय और आर्यजगत् के बीच एक सुखद संबंध स्थापित हो सकेगा। आचार्य रामदेव, प्रो. जयचंद्र विद्यालंकार जैसे मनीषियों के पूर्व प्रकाशित ग्रंथों के परिवर्द्धित अद्यतन शोधसंवलित संस्करणों से गुरुकुल की महत्ता का आधुनिक पीढ़ी को आभास मिल सकेगा।

संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ. निगम शर्मा अपने सहयोगियों के साथ संस्कृत सर्टिफिकेट कोर्स तथा अंग्रेजी विभागाध्यक्ष डॉ. वार्ष्णेय अंग्रेजी सर्टिफिकेट कोर्स

सफलतापूर्वक चला रहे हैं। भाषा शिक्षण की आधुनिक तकनीक के आधार पर अंग्रेजी में भाषाविज्ञान के लिए आवश्यक उपकरण मँगा लिये गए हैं। भाषा के शुद्ध लेखन तथा उच्चारण के लिए यह प्रयोगशाला अत्यंत उपयोगी है।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का पुस्तकालय प्राच्य विद्याओं से संबद्ध दुर्लभ पुस्तकों के संग्रह हेतु एक राष्ट्रीय महत्त्व का पुस्तकालय है। इस पुस्तकालय में धर्म, दर्शन, प्राचीन भारतीय इतिहास, वेद, साहित्य और विज्ञान की दुर्लभ पुस्तकें तथा पांडुलिपियाँ सुरक्षित हैं। इस समय इस पुस्तकालय में ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों की एक लाख से अधिक पुस्तकों का संग्रह है, जिसका उपयोग देश एवं विदेश के विद्यार्थी करते हैं। सातवीं पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत, प्रारंभ में जहाँ विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा चार लाख रुपए का अनुदान स्वीकार किया गया था, वहीं मुझे यह बताते हुए अत्यंत प्रसन्नता है कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा वर्ष 1987-88, 89-90 के लिए सात लाख रुपए का विशेष अनुदान स्वीकृत किया गया है। आलोच्य वर्ष '87 से अब तक पुस्तकालय द्वारा एक हजार पाँच सौ तिरपन विभिन्न विषयों की पुस्तकें क्रय की गईं।

विभिन्न विषयों की पत्रिकाओं के क्रय किए जाने के कार्य में पूर्व की अपेक्षा काफी वृद्धि हुई। 1981-82 में जहाँ एक सौ अड़तालीस पत्रिकाएँ आती थीं वहीं अब वर्ष 1987-88 में चार सौ पैंतालीस पत्रिकाएँ मँगाई जा रही हैं। जिसमें से पचास पत्रिकाएँ तो विदेशों से आ रही हैं। पुस्तकालय के संग्रह को आधुनिक बनाने में विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों में कार्य कर रहे प्राध्यापकों का सक्रिय योगदान है। विश्वविद्यालय के सभी विभागों से प्राध्यापकों को विश्व पुस्तक मेले में नवीन पुस्तकों के चयन किए जाने हेतु भेजा गया तथा विश्व पुस्तक मेले में आई नवीनतम पुस्तकों को पुस्तकालय के संग्रह में समाविष्ट किया गया। गुरुकुल पुस्तकालय में उपलब्ध प्राच्य विद्याओं से संबद्ध पुस्तकों की एक बृहत् सूची प्रकाशित किए जाने का कार्य भी चल रहा है। शीघ्र ही यह बृहत् सूची देश के शोध छात्रों तथा विद्वानों को उपलब्ध हो सकेगी। उक्त बिबलियोग्राफी के प्रकाशित हो जाने से पुस्तकालय की संचित निधि का ज्ञान देश-विदेश के विद्वानों को हो सकेगा।

गुरुकुल का एक प्रमुख दर्शनीय खंड गुरुकुल का पुरातत्त्व संग्रहालय है। इसमें अभिलेखशास्त्र तथा मुद्राशास्त्र की दुर्लभ, किंतु रोचक सामग्री प्रदर्शित है। संग्रहालय के साथ जुड़े हुए श्रद्धानंद कक्ष की प्रगति भी उल्लेखनीय है। इसमें पूज्य स्वामीजी की पादुकाएँ, वस्त्र, कमंडल तथा दुर्लभ चित्र और पत्रादि सुरक्षित हैं। इस वर्ष भारत सरकार के शिक्षा एवं संस्कृति विभाग के अंतर्गत कार्यरत राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली द्वारा संग्रहालय को एक लाख रुपए की अनुदान राशि प्राप्त हुई है। इस राशि में से पैंतालीस हजार रुपए की राशि के उपकरण कैमरा, छत के पंखे तथा प्रदर्शन संभाग निमित हुए। शेष राशि से मुद्राकक्ष में शोकेस तथा प्लास्टर कास्ट

गैलरी में बिजली के पंखे लगवाए गए। उत्तर प्रदेश शासन द्वारा प्राप्त बारह हजार रुपए की सहायता राशि से मुद्राकक्ष में नोटों के प्रदर्शन हेतु शोकेस तैयार हुए। फोटो इंडेक्सिंग कार्ड निर्माण हेतु पचपन हजार रुपए की राशि स्वीकृत हुई जिसकी प्रथम पच्चीस प्रतिशत किश्त का उपयोग मृण्मूर्ति, अष्टधातु कक्ष तथा पाषाण-प्रतिमाकक्ष के फोटोग्राफ के लिए हुआ। उत्तर प्रदेश सरकार के मुख्यमंत्री द्वारा घोषित राशि में से पुस्तकालय को दो लाख एवं संग्रहालय को एक लाख की किश्त आर्य बंधुओं के सहयोग से 31 मार्च को प्राप्त हो गई हैं संग्रहालय के निदेशक डॉ. जबरसिंह सेंगर इसके विकास के लिए सतत प्रयत्नशील हैं। वह भोपाल में आयोजित अखिल भारतीय संग्रहालय सम्मेलन में भाग लेने के लिए विश्वविद्यालय की ओर से गए।

प्रो. सुरेशचंद त्यागी के निरीक्षण में विज्ञान महाविद्यालय भी प्रगति की ओर उन्मुख है। इस बार जंतुविज्ञान, वनस्पतिविज्ञान तथा गणित में शोधकार्य करने की अनुमति प्राप्त हुई। जंतुविज्ञान विभाग में तीन शोध परियोजनाएँ चल रही हैं। वन्य जंतु संरक्षण पर गढ़वाल विश्वविद्यालय की डॉ. आशा सकलानी का व्याख्यान हुआ। विभागाध्यक्ष डॉ. बी.डी. जोशी के संपादन में 'फिश एंड देयर एनवायरमेंट' पुस्तक प्रकाशित हुई। डॉ. भट्ट का शोध पत्र नीदरलैंड में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में, मिनोसिटा विश्वविद्यालय के प्रो. हैल्वर्ग के सहलेखन में वाचनार्थ प्रस्तुत हुआ। रसायन विभाग में चल रहे एकवर्षीय स्नातकोत्तर डिप्लोमा 'कॉमर्शियल मैथड्स ऑफ कैमिकल एनालाइसिस' में विद्यार्थियों की माँग बढ़ रही है और इस बार भी डिप्लोमा उत्तीर्ण विद्यार्थियों को सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थाओं में उचित स्थान प्राप्त हो गए हैं। विभागाध्यक्ष डॉ. रामकुमार पालीवाल इस कार्य को सफलतापूर्वक संचालित कर रहे हैं। विभाग के रीडर डॉ. ए. इंद्रायण को टोरंटो एवं ग्रीस तथा रजनीशदत्त कौशिक को टोरंटो में होने वाली अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में निबंधवाचन के लिए आमंत्रित किया गया है। हिमालय पर्यावरण का कार्य भी सुचारु रूप से चल रहा है। गंगा समन्वित योजना का कार्य डॉ. विजयशंकर, वनस्पति विभागाध्यक्ष के निर्देशन में संपन्न हो चुका है। गंगा और गंगा के मैदान के वैज्ञानिक अध्ययन के साथ ऋषिकेश से गढ़मुक्तेश्वर तक के सैकड़ों ग्रामों का सामाजिक, आर्थिक एवं पर्यावरण संबंधी सर्वेक्षण एवं अध्ययन किया गया। प्रोजेक्ट की अंतिम रिपोर्ट में गंगा के जल को स्वच्छ रखने के उपाए तथा पर्यावरणजन्य अपकर्ष निवारण के उपाए सुझाए गए हैं। यह रिपोर्ट परियोजना निदेशालय को भेजी जा चुकी है। गंगा एक्शन प्लान के अंतर्गत हुए कार्यों से इस क्षेत्र के गंगाजल पर अच्छा प्रभाव पड़ा है। परियोजना के अंतर्गत पर्यावरण शिक्षा संबंधी लघुगीतों की रचना एवं प्रकाशन का कार्य संपन्न हुआ। डॉ. पुरुषोत्तपम कौशिक, प्रवक्ता वनस्पति विभाग के निरीक्षण में गतिशील हिमालय आर्किड्ज की पार्यावर्णिक योजना भी सफलतापूर्वक

चल रही है। गणित विभाग के प्रोफेसर डॉ. एम.एल. सिंह शोध पत्रिका प्रकाशित कर रहे हैं तथा भौतिकविज्ञान विभाग के अध्यक्ष और प्राध्यापक भी विभाग को समुन्नत करने में लगे हुए हैं। इस प्रकार विज्ञान महाविद्यालय आधुनिकता के साथ कदम-से-कदम मिलाकर चल रहा है।

राष्ट्रीय सेवा योजना का कार्य डॉ. ए. के. चोपड़ा देख रहे हैं। इस वर्ष विश्वविद्यालय परिसर में छात्रों द्वारा वृक्षारोपण किया गया तथा जनसाक्षरता अभियान के अंतर्गत छियासी निरक्षर व्यक्तियों को अक्षरज्ञान कराया गया। ग्राम सराय, प्रतीत नगर तथा श्यामपुर में छात्रों के तीन शिविर आयोजित किए गए। कांगड़ी ग्राम में दस दिवसीय शिविर लगाया गया। इन शिविरों में ग्राम सुधार के अनेक कार्य किए गए। डॉ. चोपड़ा के साथ विश्वविद्यालय के छात्र, उत्तर प्रदेशीय अंतर्विश्वविद्यालय युवा महोत्सव, मेरठ में सम्मिलित हुए। कांगड़ी ग्राम के पुनरुत्थान का जो कार्य पूर्व कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा द्वारा प्रारंभ हुआ था, वह विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों तथा ब्रह्मचारियों के लिए पुनीत संकल्प का प्रतीक है। डॉ. विजयशंकर, डॉ. चोपड़ा तथा समन्वयक प्रो. ओम्प्रकाश मिश्र के संचालन में इस ग्राम का संतोषजनक उत्थान हो रहा है।

प्रौढ़ शिक्षा तथा प्रसार कार्यक्रम योजनांतर्गत बीस सूत्रीय कार्यक्रम में से सोलहवें सूत्र की पूर्ति हेतु साठ प्रौढ़ शिक्षा केंद्र खोले गए। डॉ. अनिलकुमार, सहायक निदेशक अपने सहयोगियों के साथ कांगड़ी, श्यामपुर, मिस्सरपुर, फेरूपुर, धनपुरा तथा बहादराबाद ब्लाक के केंद्रों पर इस योजना को सुचारु रूप से चला रहे हैं। प्रौढ़ शिक्षा के अधिकारी तथा प्रशिक्षक समय-समय पर कार्यशालाओं, संगोष्ठियों तथा सलाहकार समितियों का आयोजन करते रहे हैं। इस कार्य की प्रगति को देखते हुए आशा है, भविष्य में और अधिक नए केंद्र खोले जा सकेंगे।

जैसा कि आपको विदित ही है, विश्वविद्यालय में सेवायोजना सूचना एवं मंत्रणा केंद्र भी कार्यरत है। इस केंद्र द्वारा अभ्यर्थियों को व्यावसायिक सूचना प्रदान करने एवं स्नातकों का मार्गदर्शन करने हेतु 'रोजगार दर्पण' नामक एक पाक्षिक पत्र का नियमित प्रकाशन हो रहा है। इस पत्र के माध्यम से शिक्षारत विद्यार्थी लाभ उठा रहे हैं। व्यवसाय चयन करने में भी इससे स्नातकों को लाभ मिल रहा है। इस कार्यालय में एक 'कैरियर कार्नर' की स्थापना भी की गई है जिसको व्यावसायिक साहित्य और पत्र-पत्रिकाओं से सुसज्जित किया गया है। इस विश्वविद्यालय के विज्ञान एवं कला स्नातक इस केंद्र से विशेष लाभ उठा रहे हैं। फरवरी '88 में ऐसे इकतीस विद्यार्थियों को व्यक्तिगत रूप से इस विषय की जानकारी दी गई।

यह भी उल्लेखनीय है कि कामनवैल्थ विश्वविद्यालय कार्यकारिणी के अध्यक्षों के सम्मेलन में इन पंक्तियों के लेखक ने पेनांग (मलेशिया) जाकर भारतीय शिक्षा

और गुरुकुलीय शिक्षा के रूप से विदेशी विद्वानों को परिचित कराने का विनम्र प्रयास किया। इसी प्रकार कुलसचिवों तथा प्रशासकों की सिडनी (आस्ट्रेलिया) में संपन्न संगोष्ठी में हमारे कुलसचिव डॉ. वीरेंद्र अरोड़ा ने भी भाग लिया।

विद्यालय के ब्रह्मचारियों को सौ वेदमंत्र सस्वर उच्चारण और अर्थसहित कंठस्थ कराए गए। मनोविज्ञान विभाग के रीडर श्री चंद्रशेखर त्रिवेदी ने इस कार्य को निष्ठापूर्वक संपन्न किया। 'गोवर्धन ज्योति' के रूप में जिज्ञासुओं के लाभ के लिए इन मंत्रों का संकलन प्रकाशित होने जा रहा है। दैनिक जीवन में अत्यंत उपयोगी, इन मंत्रों से पाठकों को विशेष लाभ मिल सकेगा।

गुरुकुल प्रणाली वर्तमान परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय अखंडता, समाज सेवा, मानव जाति की एकता, विश्वव्यापी प्रेम, चरित्र निर्माण, आत्मानुशासन, सामाजिक एवं लोकतांत्रिक न्याय, सामूहिक कार्य चेतना, ज्ञान की खोज एवं प्रसार जैसे उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक हो सकती है। इस दिशा में अपने सीमित साधनों के बावजूद हम आगे बढ़ रहे हैं। हमारे ब्रह्मचारी व्रताभ्यास, योगाभ्यास तथा आत्मानुशासन से बल ग्रहण कर राष्ट्रीय जीवन में उतरें, मेरी यही सदिच्छा है। इकबाल के शब्दों में कहना चाहूँ तो कहूँगा—दृढ़ विश्वास निरंतर कर्मठता तथा विश्वव्यापी प्रेम ही जीवन के महायुद्ध में पुरुषार्थी मनुष्यों की तलवारें हैं—

'यकीं मुहकम अमल पैहम मुहब्बत फातेहे आलम
ज़हादे ज़िंदगानी में हैं यही मर्दों की शमशीरें।'

आइए एक बार कहें—'जिस प्रकार आकाश एवं पृथ्वी निर्भय होकर निर्दोष कर्म करते हैं, उसी प्रकार हम भी भयरहित होकर सत्कर्म करते रहें।'

यथा द्यौश्च पृथिवी च न विभीतो न रिष्यतः
एवा मे प्राण मा विभेः।

(अथर्ववेद 2/15/1)

1989–कृति : जीवन की पहचान

❑ श्री रामप्रसाद वेदालंकार

इस वर्ष दीक्षांत के लिए हमारे मध्य उत्तर प्रदेश की प्रखरमेधा और केंद्रीय सरकार के पेट्रोलियम राज्य मंत्री माननीय श्री ब्रह्मदत्त जी उपस्थित हैं। आप निष्ठावान् आर्यसमाजी, दूरदर्शी राजनेता, कर्मठ समाजसेवी, उच्चकोटि के शिक्षाशास्त्री, राजनीतिशास्त्र के पंडित, भारतीय संस्कृति और जीवन-मूल्य के पोषक तथा गुरुकुल के अत्यंत हितैषी हैं। उत्तर प्रदेश के वित्तमंत्री के रूप में आपने बड़ी ख्याति अर्जित की और अब केंद्रीय सरकार को आपका रचनात्मक सहयोग प्राप्त हो रहा है। मैं माननीय राज्य मंत्री जी का हार्दिक आभारी हूँ कि उन्होंने अत्यंत व्यस्त रहते हुए भी हमारे बीच पधारकर हमारा गौरव बढ़ाया है।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय की प्रगति और विकास के कुछ बिंदुओं का उल्लेख करना भी मैं आवश्यक समझता हूँ। विश्वविद्यालय जहाँ वैदिक साहित्य, संस्कृति, दर्शन, इतिहास जैसी पुराविद्याओं के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य कर रहा है, वहाँ कंप्यूटर जैसे आधुनिक विषयों के अध्ययन और अध्यापन का कार्य भी सुचारु रूप से संपन्न कर रहा है। प्रौढ़ शिक्षा प्रसार कार्यक्रम, योग प्रशिक्षण तथा कॉमर्शियल मैथड्स ऑफ कैमिकल एनालाइसिस जैसे व्यवसायोन्मुखी डिप्लोमाओं का प्रशिक्षण देकर वह समाज और देश की मौलिक आवश्यकताओं को भी पूरा कर रहा है। मुझे प्रसन्नता है कि राष्ट्रीय सेवा योजना के शिविरों द्वारा हमारे स्नातक, राष्ट्रीय विकास की रचनाधारा में भी जुड़े और ग्राम सुधार तथा परिवेश के नवनिर्माण में संलग्न होकर शिक्षा को व्यावहारिक रूप दे सके। इससे आशा बनती है कि वे स्वामी श्रद्धानंद और गांधी जी के विचारों को साकार रूप देने में पीछे नहीं हटेंगे।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की सहायता से इस वर्ष संस्कृत विभाग में महाभाष्यकार पतंजलि पर त्रिदिवसीय संस्कृत संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर एवं डीन ऑफ कॉलेजज, डॉ. सूबेसिंह राणा ने तथा समापन स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती डी.एस-सी. ने किया।

इसमें देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों से अनेक विद्वानों ने पधारकर निबंधों का वाचन किया। विशिष्ट व्याख्यान के लिए संपूर्णानंद वि.वि. के कुलपति डॉ. रामकरन शर्मा, डॉ. रामनाथ जी वेदालंकार, पंजाब वि.वि. के डॉ. वेदप्रकाश उपाध्याय तथा दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ. बृजमोहन चतुर्वेदी पधारे। विभाग के अध्यक्ष डॉ. योगेश्वरदत्त शर्मा अपने सहयोगियों के साथ अखिल प्राच्य विद्या संगोष्ठी में भाग लेने के लिए विशाखापत्तन गए। मुझे कहते हुए हर्ष होता है कि 1990 में अखिल भारतीय प्राच्य विद्या संगोष्ठी का आयोजन गुरुकुल में होगा।

वेद विभाग में वैदिक यज्ञ-याज्ञ विधान (वैदिक कर्मकांड) और संस्कारों के प्रशिक्षण के लिए वैदिक डिप्लोमा शुरू किया गया तथा वैदिक संग्रहालय को अत्याधुनिक बनाने के विषय में कार्य किया गया। वैदिक प्रयोगशाला में अलंकार से एम.ए. तक प्रयोगात्मक वैदिक कक्षा भी प्रारंभ की गई। इस वर्ष वेद विभाग में डॉ. रामनाथ वेदालंकार आदि कई अन्य विद्वानों के व्याख्यान हुए।

हिंदी विभाग में सागर विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष तथा राष्ट्रीय प्रोफेसर डॉ. लक्ष्मीनारायण दूबे, रोहतक वि.वि. के हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. पुष्पा बंसल, रेल मंत्रालय के हिंदी सलाहकार श्री बलदेव वंशी के उपयोगी व्याख्यान हुए तथा फिजी से विशेषरूप से हिंदी अध्ययन के लिए पधारे हुए छात्र श्री नेतराम शर्मा ने फिजी में हिंदी शिक्षण के लिए हिंदी पर एक पुस्तक की रचना की। विभाग की सुचारु गतिविधि के लिए हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. विष्णुदत्त राकेश ने उल्लेखनीय कार्य किया। विभाग के प्राध्यापकों तथा विद्यार्थियों ने हिंदी प्रचार-प्रसार के लिए जनसंपर्क किया तथा अनेक आयोजनों में भाग लिया। मनोविज्ञान विभाग के अध्यक्ष श्री चंद्रशेखर त्रिवेदी ने विभागीय उन्नति के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य किया। विभाग के प्राध्यापक डॉ. सूर्यकुमार श्रीवास्तव ने इंडियन काउंसिल ऑफ सोशल साइंस रिसर्च, नई दिल्ली के तत्त्वावधान में रिसर्च प्रोजेक्ट पूरा करके प्रस्तुत कर दिया।

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग डॉ. विनोदचंद्र सिन्हा की अध्यक्षता में प्रगति की ओर उन्मुख है। इस वर्ष विभाग में इलाहाबाद उच्च न्यायालय के अवकाश प्राप्त न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री चंद्र प्रकाश का 'प्राचीन भारत में न्याय व्यवस्था' विषय पर व्याख्यान हुआ। विभाग ने एक सरस्वती यात्रा का भी आयोजन किया। इस यात्रा में थानेश्वर, दिल्ली, आगरा, मथुरा तथा खजुराहों के प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्मारकों का अध्ययन किया गया। थानेश्वर में भारत सरकार द्वारा चलाए जा रहे उत्खनन कार्य का अवलोकन भी विद्यार्थी और अध्यापकों ने किया। विभाग ने निकट भविष्य में उत्खनन की योजना बनाई है और इसका प्रारूप सर्वेक्षण विभाग को भेज दिया है। सरस्वती यात्रा के संयोजक डॉ. जबरसिंह सेंगर और डॉ. श्यामनारायण सिंह थे।

सांस्कृतिक धरोहर का प्रतीक पुरातत्त्व संग्रहालय, विश्वविद्यालय का महत्त्वपूर्ण

अंग है। सिंधु सभ्यता से लेकर उन्नीसवीं शताब्दी तक की विभिन्न पुरातन वस्तुएँ, प्रतिमाएँ, कलाकृतियाँ, पांडुलिपियाँ एवं मुद्राएँ यहाँ संकलित हैं। संग्रहालय के साथ जुड़े हुए श्रद्धानंद कक्ष में स्वामी जी की पादुकाएँ, वस्त्र, कमंडल, दुर्लभ चित्र तथा पत्र आदि सुरक्षित हैं। उत्तर प्रदेश की सहायता राशि से जहाँ कलावीथिका के लिए सोलह प्रदर्श पटल बनवाए गए वहाँ स्वामी श्रद्धानंद जी के जीवन से संबंधित लगभग दो सौ छायाचित्र राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय, नई दिल्ली से क्रय किए गए। राष्ट्रीय अभिलेखागार से प्राप्त अनुदान राशि से पांडुलिपि के संरक्षण के लिए काष्ठ एवं परिशोधित अयस् धूमण प्रकोष्ठों का निर्माण कराया गया। फिजी के निवासी तथा हमारे छात्र श्री नेतराम जी शर्मा ने छः ताम्र एवं रूपक मुद्राएँ भेंट कीं। संग्रहालय निदेशक डॉ. जबरसिंह सेंगर के निर्देशन एवं संग्रहालय के अध्यक्ष सूर्यकांत श्रीवास्तव के तकनीकी ज्ञान से संग्रहालय विकास की ओर उन्मुख है।

विश्वविद्यालय का पुस्तकालय दर्शनीय है। पुस्तकालय में विभिन्न विषयों की एक लाख से अधिक पुस्तकें संकलित हैं। शोध कार्य के लिए देश-विदेश के विद्यार्थी पुस्तकालय में संग्रहीत संस्कृत साहित्य, वैदिक साहित्य, धर्म, दर्शन, आर्यसमाज और विज्ञान की दुर्लभ पुस्तकों एवं पांडुलिपियों का अध्ययन करते हैं। सातवीं पंचवर्षीय योजना में अनुदान आयोग ने नवीनतम पुस्तकों एवं पत्रिकाओं के क्रय के लिए ग्यारह लाख रुपयों का अनुदान स्वीकृत किया था। इस वर्ष तीन हजार छः सौ छप्पन नई पुस्तकें क्रय की गईं, चार सौ चौवन पत्रिकाएँ मँगाई गईं जिनमें इकतालीस पत्रिकाएँ विदेशी हैं। वैदिक एवं संस्कृत साहित्य की सात हजार पाँच सौ पुस्तकों की बिबलियोग्राफी तैयार की गई जो ग्रंथ के रूप में प्रकाशित हो गई। दुर्लभ पुस्तकों के संरक्षण के लिए प्लेन पेपर कापियर मशीन खरीदी गई। पुस्तकालयाध्यक्ष जगदीश विद्यालंकार के निर्देशन में दो हजार छह सौ पुस्तकों का वर्गीकरण तथा दो हजार पाँच सौ सत्रह का सूचीकरण किया गया। आलोच्य वर्ष में चौबीस हजार सौ पाठकों द्वारा पुस्तकालय का उपयोग किया गया।

विश्वविद्यालय छात्रावास के नवीनीकरण के साथ प्रतिदिन संध्या एवं अग्निहोत्र की व्यवस्था की गई तथा विश्वविद्यालय के अध्यापकों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों के लिए प्रति सप्ताह सामूहिक अग्निहोत्र की व्यवस्था की गई जो सुचारु रूप से संपन्न हुई। परिसर में प्रति सप्ताह वैदिक पारिवारिक यज्ञ समिति के आयोजन आर्य विचारों के प्रचार एवं प्रसार के लिए किए जाते रहे। इन साप्ताहिक आध्यात्म सत्संग के आयोजन के लिए वित्ताधिकारी श्री राजेंद्र प्रसाद सहगल बधाई के पात्र हैं। डॉ. अंबुज शर्मा और डॉ. ईश्वर भारद्वाज के निर्देशन में क्रीड़ा एवं योग विभाग ने पर्याप्त उन्नति की। लखनऊ, मेरठ, दिल्ली, कुरुक्षेत्र, आगरा तथा कानपुर में आयोजित प्रतियोगिताओं में हमारे छात्र सम्मिलित हुए तथा योग विभाग में योग चिकित्सा केंद्र की स्थापना के साथ योग के एकवर्षीय और चतुर्मासीय

पाठ्यक्रम भी विधिवत् संपन्न हुए।

प्रौढ़, सतत शिक्षा एवं विस्तार कार्यक्रम का संचालन डॉ. अनिल कुमार, सहायक निदेशक के तत्त्वावधान में सफलतापूर्वक चला आ रहा है। विभाग की प्रगति से संतुष्ट होकर अनुदान आयोग ने इस विभाग को साठ प्रौढ़ शिक्षा केंद्रों के अतिरिक्त तीन जनशिक्षण निलयम्, तीन सतत शिक्षा परियोजनाएँ तथा एक जनसंख्या शिक्षा क्लब स्वीकार किया है। पचपन प्रौढ़ शिक्षा केंद्रों का संचालन हरिद्वार और उससे लगे ग्रामीण शिक्षा क्षेत्रों में किया गया।

राष्ट्रीय सेवा योजना का कार्य डॉ. जयदेव वेदालंकार तथा डॉ. ए.के. चोपड़ा देख रहे हैं।

फरवरी '89 में राष्ट्रीय सेवा योजना विभाग द्वारा राष्ट्रीय एकीकरण शिविर डॉ. जयदेव वेदालंकार, समन्वयक के संचालन में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। इस शिविर में पंद्रह प्रांतों से विभिन्न विश्वविद्यालयों के दो सौ छात्र एवं छात्राओं ने ग्राम जमालपुर एवं जगदीशपुर में रात-दिन सड़कों का निर्माण, ओषधि वितरण, साक्षरता अभियान आदि कार्यों को किया।

इसके उद्घाटन समारोह के अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री जगदंबिका पाल, मंत्री, शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार पधारे थे। उन्होंने विशिष्ट व्याख्यान में विश्वविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना विभाग की प्रशंसा करते हुए कहा कि राष्ट्रीय एकीकरण शिविर का आयोजन करके इस विश्वविद्यालय ने अपनी गौरवपूर्ण परंपरा का निर्वाह किया है। डॉ. सतीश चंद्र, निदेशक, भारत सरकार ने इस शिविर का उद्घाटन किया। इस अवसर पर एक विशाल रैली का आयोजन किया गया।

गत जून में दर्शन विभाग के तत्त्वावधान में माननीय डॉ. के. सच्चिदानंद मूर्ति, उपाध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली का वैदिक दर्शन विषय पर डॉ. जयदेव वेदालंकार, अध्यक्ष, दर्शन विभाग के संयोजकत्व में एक विशिष्ट व्याख्यान संपन्न हुआ। इस अवसर पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की ओर से उन्हें प्रशस्ति पत्र व शाल भेंट की गई। डॉ. मूर्ति ने अपने व्याख्यान में दर्शन विभाग की प्रगति पर संतोष व्यक्त करते हुए, राष्ट्रीय संगोष्ठियों के आयोजन के लिए, साथ ही विश्वविद्यालय की प्रगति पर प्रसन्नता व्यक्त की। डॉ. जयदेव वेदालंकार एवं डॉ. यू.एस.विष्ट ने इंडियन फिलोसोफिकल कांग्रेस के पांडिचेरी अधिवेशन, 1988 में सक्रिय भाग लिया। डॉ. विजयपाल शास्त्री ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित इलाहाबाद विश्वविद्यालय में रिफ्रेसर्स कोर्स पूर्ण किया।

प्रोफेसर सुरेश चंद्र त्यागी, प्राचार्य विज्ञान महाविद्यालय के निरीक्षण में विज्ञान महाविद्यालय प्रगति की ओर उन्मुख है। भौतिकविज्ञान, रसायनशास्त्र, गणित,

कंप्यूटर, जंतुविज्ञान, तथा वनस्पतिविज्ञान में उच्चतर अध्ययन और जंतुविज्ञान, वनस्पतिविज्ञान तथा गणित में शोध कार्य चल रहा है। इस वर्ष गणित विभाग में वैदिक गणित परंपराएँ एवं अनुप्रयोग तथा आधुनिक विज्ञान एवं टेक्नोलॉजी में गणित के अनुप्रयोग पर दो सिंपोजियम आयोजित हुए। अखिल भारतीय स्तर की विज्ञान सोसायटी, विज्ञान परिषद् के अध्यक्ष सुप्रसिद्ध गणितशास्त्री प्रोफेसर जे.एन. कपूर ने इस समारोह की अध्यक्षता की। इस आयोजन में दो दर्जन आमंत्रित भाषण हुए तथा साठ शोध पत्र प्रस्तुत हुए। प्रो. त्यागी और प्रो. डॉ. एस.एल. सिंह को इसकी सफलता का श्रेय जाता है। प्रो. त्यागी के निर्देशन में प्राकृतिक एवं भौतिकीय विज्ञान शोध पत्रिका का प्रकाशन भी हो रहा है जिसके विनिमय में युगोस्लाविया, पाकिस्तान, पोलेंड और वियतनाम आदि से गणित एवं विज्ञान की उत्कृष्ट शोध पत्रिकाएँ प्राप्त हो रही हैं। श्री एच.एल. गुलाटी ने डी. फिल. उपाधि हेतु अपना शोध प्रबंध प्रस्तुत किया। भौतिकविज्ञान विभाग श्री हरिश्चंद्र ग्रोवर की अध्यक्षता में सफलतापूर्वक आगे बढ़ रहा है। विद्यार्थियों एवं शिक्षकों की यू.जी.सी. द्वारा संचालित कार्यक्रम दिखाने के लिए विभाग में टी.वी. जैसे उपकरण भी उपलब्ध है। तथा बी.एस-सी. तृतीय वर्ष में प्रोजेक्ट वर्क का प्रावधान किया गया है। इससे विद्यार्थियों को आधुनिक इलैक्ट्रोनिक यंत्र सीखने का अवसर मिला है।

भौतिकी विभाग के प्राध्यापक डॉ. पी.पी. पाठक ने स्वीडन के उपशाला विश्वविद्यालय में आयोजित वायुमंडलीय विद्युत् पर आठवें अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया तथा जर्मनी में वॉन विश्वविद्यालय के रेडियो ऐस्ट्रोनोमिकल इंस्टीट्यूट में यज्ञ द्वारा वर्षा (रेन मेकिंग बाई यज्ञ) पर शोध पत्र प्रस्तुत किया। रसायन विभाग के अध्यक्ष डॉ. रामकुमार पालीवाल के निर्देशन में रसायन विभाग में कॉमर्शियल मैथड्स ऑफ कैमिकल एनालाइसिस डिप्लोमा नियमित अध्ययन के साथ सफलतापूर्वक चल रहा है और इसमें विद्यार्थियों द्वारा प्रवेश की माँग निरंतर बढ़ रही है। जंतुविज्ञान विभाग प्रो. बी.डी. जोशी की अध्यक्षता में सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है। हिमालय शोध परियोजना के प्रमुख अन्वेषक प्रो. बी.डी. जोशी ने परियोजना की अंतिम रिपोर्ट भारत सरकार को भेज दी है। विभाग में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. चट्टोराज का महत्त्वपूर्ण व्याख्यान हुआ तथा 'बदलता पर्यावरण एवं जंतु संरक्षण' विषय पर एक त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन हुआ जिसमें भारतीय वि.वि. के लगभग पैंसठ वैज्ञानिक-प्राध्यापकों ने भाग लिया।

डॉ. पुरुषोत्तम कौशिक, मुख्य अन्वेषक वनस्पतिविज्ञान विभाग, गुरुकुल के निर्देशन में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत लैक्टिन परियोजना तथा हिमालय आर्किड्स की पर्यावरण शोध योजना भी सफलतापूर्वक चल रही है। विभाग के अध्यक्ष प्रो. विजयशंकर ने वनस्पति विभाग को प्रगति की ओर ले जाने में

उल्लेखनीय कार्य किया है। इस प्रकार विज्ञान महाविद्यालय आधुनिकता के साथ कदम मिलाकर चल रहा है।

आर्य बंधु एवं बहनो !

विश्वविद्यालय के शोधात्मक कार्यक्रम, शैक्षिक प्रगति तथा आर्य विचारधारा और भारतीय विज्ञान को प्रोत्साहित करने के लिए विश्वविद्यालय से नियमित पत्र-पत्रिकाएँ निकल रहे हैं। इनमें 'आर्यभट्ट' के संपादक डॉ. विजयशंकर, 'वैदिक पाथ' के संपादक डॉ. राधेलाल वार्ष्णेय, 'गुरुकुल पत्रिका' के संपादक डॉ. जयदेव वेदालंकार तथा 'प्रह्लाद' के संपादक डॉ. विष्णुदत्त राकेश के प्रयास सराहनीय हैं। मैंने भी जनसामान्य तक वैदिक सिद्धांतों और महर्षि दयानंद के विचारों को सुगमता के साथ पहुँचाने के लिए सरल, सुबोध रूप में अनेक पुस्तिकाओं का प्रकाशन कराया जो लाखों की संख्या में जिज्ञासुओं में वितरित की जा चुकी हैं। दैनिक जीवन में अत्यंत उपयोगी मंत्र-पुस्तिकाओं से पाठकों को विशेष लाभ मिल रहा है। इन पुस्तकों की देश-विदेश से संस्तुतियाँ प्राप्त हो रही हैं तथा कई भारतीय एवं विदेशी भाषाओं में इनका अनुवाद हो रहा है, जैसे कन्नड़, अंग्रेजी, उर्दू आदि। डॉ. लूथरा यूमा (आरिजना) से यह आग्रह किया गया है कि इन विचारों को कैसेट्स के रूप में भी तैयार किया जाए, इसके लिए जो भी सहायता अपेक्षित होगी मैं भेजूँगा।

अंग्रेजी विभाग प्रोफेसर डॉ. राधेलाल वार्ष्णेय के निर्देशन में आशातीत प्रगति कर रहा है। विभाग में डॉ. निर्मल मुखर्जी, प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग, पंजाब वि.वि. का व्याख्यान 'ए पेसेज मोर देन इंडिया' विषय पर हुआ। विद्यार्थियों ने विभिन्न विषयों पर सेमिनार पेपर्स पढ़े। डॉ. वार्ष्णेय ने बी.एच.ई.एल. में आयोजित क्षेत्रीय अंग्रेजी अध्यापकों की अध्यापन संबंधी समस्याओं के समाधान के लिए एक त्रिदिवसीय अंग्रेजी कार्यशाला का आयोजन कराया। रुड़की विश्वविद्यालय तथा बी.एस.एम. कॉलेज, रुड़की में हुई दो शोध संगोष्ठियों में डॉ. वार्ष्णेय एवं विभागीय सहयोगियों ने भाग लिया।

गुरुकुल प्रणाली वर्तमान परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय अखंडता, समाज सेवा, मानवजाति की एकता, विश्वव्यापी प्रेम, चरित्र निर्माण, आत्मानुशासन,सामाजिक न्याय, सामूहिक कार्यचेतना तथा ज्ञान की खोज के उद्देश्य की पूर्ति में सहायक हो सकती है। इस दिशा में अपने सीमित साधनों के बावजूद हम आगे बढ़ रहे हैं और आप महानुभावों का प्यार और सहयोग पाकर हम इसी प्रकार आगे बढ़ते रहेंगे। हमारे ब्रह्मचारी व्रताभ्यास, योगाभ्यास तथा आत्मानुशासन का बल लेकर राष्ट्रीय जीवन में उतरें और सफलता प्राप्त करें, यही मेरा आशीर्वाद है।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।।

1990–कार्य बोलता है, शब्द नहीं

❑ श्री सुभाष विद्यालंकार

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के नब्बेवें दीक्षांत समारोह में आप सबका हार्दिक स्वागत कर मुझे अत्यंत प्रसन्नता है। आज से इकतालीस वर्ष पूर्व जब मैं इस विश्वविद्यालय का स्नातक बना था तब मेरे कानों में 7 अक्तूबर, 1913 को दिल्ली भारतीय आर्य कुमार सम्मेलन में दिया गया स्वामी श्रद्धानंद जी महाराज का यह उद्‌बोधन गूँज रहा था–'सत्येन लभ्यस्तपसा ह्येष आत्मा, सम्यग्ज्ञानेन ब्रह्मचर्येण नित्यम्'–अर्थात् यह आत्मा सत्य से मिलता है, तप से मिलता है, तप का पालन सम्यक् ज्ञान के बिना नहीं होता और सम्यक् ज्ञान ब्रह्मचर्य अर्थात् गुरु, शास्त्र तथा परमेश्वर की कृपा और इंद्रिय निग्रह बिना दृढ़ नहीं होता।

प्रिय ब्रह्मचारियो !

मेरे अग्रज स्नातकों ने ऋषि दयानंद, स्वामी श्रद्धानंद और आर्यसमाज के लिए मर-मिटनेवाले महापुरुषों के व्रत का निर्वाह करते हुए कुलमाता के गौरव की वृद्धि की है। पंडित इंद्र विद्यावाचस्पति, आचार्य रामदेव, पंडित विश्वनाथ, स्वामी समर्पणानंद, आचार्य अभयदेव, आचार्य प्रियव्रत, पंडित जयचंद्र, डॉ. सत्यकेतु, पंडित रामनाथ तथा पंडित चंद्रगुप्त जैसे अनेक स्नातकों ने साहित्य, संस्कृति, धर्म, दर्शन और राष्ट्रसेवा के क्षेत्रों में जो कार्य किए हैं उनसे देश-विदेश में गुरुकुल का यश और गौरव बढ़ा है। मेरी इच्छा है कि आप इस परंपरा को आगे बढ़ाएँ तथा कुलपिता स्वामी श्रद्धानंद जी के सपनों को चरितार्थ करें। अपने व्यक्तित्व और कृतित्व से आप अपने आस-पास ऐसा वातावरण बनाएँ जिससे समाज और देश का ध्यान आपकी ओर जाए। स्मरण रखो, 'सत्येनोत्तभिता पृथिवि' यह संसार सत्य पर आश्रित है। सत्य के बिना समाज का कोई नियम अनुकरणीय नहीं हो सकता। यदि सत्य आपके जीवन का अवलंबन है तो मैं आपके उज्ज्वल भविष्य के प्रति आश्वस्त हूँ। यही सत्य संकल्प हमारे प्रति तुम्हारी गुरुदक्षिणा होगी।

सज्जनो !

हम सौभाग्यशाली हैं कि आज सुप्रसिद्ध समाजसेवी, शिक्षाविद्, विचारक और स्वतंत्रता सेनानी आदरणीय श्री चीमन भाई जी मेहता, शिक्षा राज्यमंत्री, भारत सरकार, दीक्षांत भाषण देने के लिए गुरुकुल पधारे हैं। श्री मेहता पिछले पचास वर्षों से समाज सेवा का कार्य कर रहे हैं। उनके जीवन पर महात्मा गांधी, महर्षि दयानंद, सरदार पटेल तथा विनोबाजी का गहरा प्रभाव है। सन् '42 के भारत छोड़ो आंदोलन तथा 1955 के गोवा-दिव आंदोलन में वह जेल गए। 1984 से आप राज्यसभा के सदस्य हैं। इससे पूर्व आप गुजरात विधानसभा के भी सदस्य रह चुके हैं। गुजरात के श्रम, परिवहन और जेल मंत्री के रूप में आपने उल्लेखनीय कार्य किए हैं। कांग्रेस संसदीय समिति, वित्त मंत्रालय, गुजरात हाउसिंग बोर्ड, गुजरात इंटक किसान प्रकोष्ठ, सौराष्ट्र किसान सभा तथा गुजरात कौमी एकता समिति आदि संगठनों में विभिन्न पदों पर कार्य कर आपने समाज सेवा के क्षेत्र में कीर्तिमान प्रतिष्ठित किए हैं। गुजराती और अंग्रेजी में दर्शन, राजनीति और अर्थशास्त्र पर तथा विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं पर आपने उच्चकोटि की पुस्तकों की रचना की है। आप सफल पत्रकार भी हैं। चीन, जापान, सोवियत संघ, जर्मनी आदि अनेक देशों की आपने यात्रा की है। आज समस्त कुलवासी ऐसे मनीषी व्यक्ति को अपने बीच पाकर धन्य हैं, जो निष्ठावान्, समाजसेवी, राजनीतिशास्त्र के पंडित और भारतीय जीवनमूल्यों एवं सिद्धांतों के पोषक हैं तथा जिनका व्यक्तित्व बहु-आयामी है। आपने गुरुकुल के विकास में रुचि लेकर इस राष्ट्रीय शिक्षा मंदिर के पुनरुद्धार का द्वार खोला है। मैं शिक्षा राज्यमंत्री जी का इस अवसर पर हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ कि आपने अत्यंत व्यस्त होते हुए भी हमारे बीच पधार कर हम सबका गौरव बढ़ाया है।

आर्य बंधुओ !

इस अवसर पर विश्वविद्यालय की प्रगति और विकास की संक्षिप्त चर्चा करना संभवतः अप्रासंगिक नहीं होगा।

इस विश्वविद्यालय को पिछले दो वर्षों में अनेक कठिनाइयों से गुजरना पड़ा। सातवीं पंचवर्षीय योजना में स्वीकृत विकास की राशि नहीं मिल पा रही थी और अनेक स्वीकृत रिक्त पदों पर नियुक्तियाँ नहीं हो सकी थीं। मुझे यह सूचित करते हुए हार्दिक प्रसन्नता है कि माननीय शिक्षा राज्यमंत्री महोदय की गुरुकुल के प्रति सद्भावना और सहृदयता से विश्वविद्यालय की ये कठिनाइयाँ दूर हो गई हैं।

पिछले दिनों विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अधिकारियों ने विश्वविद्यालय की आठवीं पंचवर्षीय योजना के प्रस्तावों पर विचार-विमर्श करने हेतु हमें आमंत्रित

किया था। आयोग के अधिकारियों ने विचार-विनिमय के दौरान स्पष्ट कहा कि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना जिन आधारभूत उद्देश्यों और आदर्शों की पूर्ति करने हेतु की गई है, उन्हें पूरा करने के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की ओर से हर प्रकार की सहायता प्रदान की जाएगी।

विश्वविद्यालय के अधिकारियों ने आयोग के अधिकारियों को सूचित किया कि आठवीं पंचवर्षीय योजना में श्रद्धानंद शोध संस्थान की गतिविधियों को बढ़ाने का भी प्रस्ताव है। इसके अनुसार विभिन्न धर्मों के तुलनात्मक अध्ययन, वैदिक साहित्य की पाठ्यपुस्तकों के लेखन, चेकोस्लावाकिया सोवियत संघ और अन्य स्लाव भाषा-भाषी विद्वानों के भारतीय विद्याओं से संबंधित ग्रंथों के अनुशीलन और अनुवाद की योजनाओं पर भी कार्य किया जाएगा। उपरोक्त कार्यों के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने शिक्षकों के अतिरिक्त पद, पुस्तकों तथा आवश्यक उपकरणों और भवनों आदि के लिए अनुदान स्वीकृत कर दिया है।

इस वर्ष 16 से 18 नवंबर को पहली बार इस विश्वविद्यालय में अखिल भारतीय प्राच्य विद्या सम्मेलन का भी आयोजन किया जा रहा है। इसमें संपूर्ण भारत के वैदिक तथा संस्कृत साहित्य और भारतीय विद्याओं की विभिन्न धाराओं के लगभग तीन हज़ार विद्वानों के पधारने की संभावना है।

नया शिक्षा सत्र 11 जुलाई, 1990 से प्रारंभ हो चुका है। मुझे यह सूचित करते हुए प्रसन्नता है कि विज्ञान महाविद्यालय, वेद महाविद्यालय तथा मानविकी महाविद्यालय के सभी विभागों में विद्यार्थी पिछले वर्षों की अपेक्षा अधिक संख्या में प्रविष्ट हुए हैं। अब विश्वविद्यालय में शिक्षा प्रतिदिन प्रातः 9-30 बजे यज्ञ और वैदिक प्रार्थना के साथ प्रारंभ की जाती है।

विश्वविद्यालय जहाँ वैदिक साहित्य, संस्कृत साहित्य, भारतीय दर्शन, संस्कृति, पुरातत्त्व और प्राचीन भारतीय इतिहास के साथ हिंदी, अंग्रेजी, मनोविज्ञान जैसे विषयों के उच्च अध्ययन और अनुसंधान का कार्य कर रहा है, वहाँ कंप्यूटर, वनस्पतिविज्ञान, माइक्रो बॉयलोजी, भौतिकी, रसायन, जीवशास्त्र और गणित जैसे आधुनिक विषयों के अध्ययन-अनुसंधान का कार्य भी सुचारु रूप से संपन्न कर रहा है। यहाँ संस्कारों के प्रशिक्षण के लिए भी विशेष पाठ्यक्रम का प्रबंध है। अंग्रेजी दक्षता पाठ्यचर्या भी सुचारु रूप से चल रही है। योग का एकवर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी चलाया जा रहा है। इसके अतिरिक्त योग प्रशिक्षण के लिए चार-चार मास के दो पाठ्यक्रम भी आयोजित किए गए हैं। प्रौढ़ शिक्षा, प्रसार कार्यक्रम, ग्राम सुधार, योग प्रशिक्षण, अंग्रेजी-संस्कृत दक्षता पाठ्यक्रम तथा कॉमर्शियल मैथड्स ऑफ कैमिकल एनालाइसिस जैसे व्यवसायोन्मुखी डिप्लोमा पाठ्यक्रमों का प्रशिक्षण देकर विश्वविद्यालय समाज और देश की आत्मिक तथा भौतिक आवश्यकताएँ भी पूरी कर रहा है। इस शिक्षा सत्र से कंप्यूटर में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम प्रारंभ

करने की भी व्यवस्था कर दी गई है। राष्ट्रीय सेवा योजना और प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों तथा शिविरों द्वारा गुरुकुल के ब्रह्मचारी देश की मिट्टी से जुड़ने की चेष्टा कर रहे हैं। राष्ट्रीय विकास की रचनात्मक धारा के साथ जुड़े बिना वे शास्त्रवेत्ता तो हो सकते हैं, पर जीवनवेत्ता या आत्मवेत्ता नहीं।

विश्वविद्यालय के आचार्यों ने पिछले वर्ष जिन ग्रंथों का प्रणयन किया, उनमें से उल्लेखनीय ग्रंथ इस प्रकार हैं–

1. 'आथर्वणिक राजनीति'–डॉ. भारतभूषण विद्यालंकार।
2. 'वृहदारण्यकोपनिषद् : एक विवेचन'–डॉ. मनुदेव बंधु।
3. 'महर्षि दयानंद के यजुर्वेद भाष्य में समाज का स्वरूप'–डॉ. सत्यव्रत राजेश।
4. 'एनिमल प्रोटेक्शन अंडर चेंजिंग एनवायरनमेंट्स'–प्रो. बी.डी. जोशी।
5. 'वैदिक दर्शन'–डॉ. जयदेव वेदालंकार।

संस्कृत विभाग के छात्र ब्रह्मचारी हरिशंकर तथा ब्रह्मचारी जयेंद्र कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित अंतर्विश्वविद्यालयीय संस्कृत वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम आए। इसी प्रकार ब्रह्मचारी राजेश तथा ब्रह्मचारी ताराचंद ने पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ की भाषण प्रतियोगिता में विजय-वैजयंती प्राप्त की। विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन तथा संस्कृत अकादमी, उत्तर प्रदेश की प्रतियोगिताओं में भी वे विजयी हुए।

दर्शन विभागाध्यक्ष डॉ. जयदेव वेदालंकार ने इस वर्ष विभाग में राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। इसमें पंजाव, दिल्ली, बंबई, कलकत्ता, मद्रास, कर्नाटक तथा प्रयाग विश्वविद्यालयों के दार्शनिकों ने भाग लिया।

हिंदी पत्रकारिता के पितामह, गुरुकुल के प्रथम स्नातक और कुलपति, स्वतंत्रता सेनानी, सांसद तथा हिंदी के उन्नायक पंडित इंद्र विद्यावाचस्पति की जन्मशती का आयोजन भी हिंदी विभाग की ओर से हुआ। समारोह की अध्यक्षता वेदों के उद्भट विद्वान् तथा विश्वविद्यालय के परिद्रष्टा आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति ने की। हिंदी के विश्रुत आलोचक डॉ. विजयेंद्र स्नातक, पूर्व आचार्य एवं हिंदी विभागाध्यक्ष, दिल्ली विश्वविद्यालय ने 'भारतीय मनीषा के प्रतीक पंडित इंद्र विद्यावाचस्पति' विषय पर व्याख्यान दिया। प्रह्लाद का 'इंद्र जन्मशती' विशेषांक भी विभागाध्यक्ष डॉ. विष्णुदत्त राकेश के उद्योग से प्रकाशित हुआ।

विभिन्न विश्वविद्यालयों के प्राचार्य एवं शिक्षक व्याख्यान देने के लिए समय-समय पर पधारे। इनमें से श्रीमती लक्ष्मीबाई, डॉ. पी. अवतार, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय; डॉ. कृष्णदत्त वाजपेयी, सागर विश्वविद्यालय; डॉ. रामनाथ वेदालंकार, डॉ. रमाशंकर तिवारी, डॉ. वेदप्रकाश उपाध्याय, चंडीगढ़ विश्वविद्यालय; डॉ. रमाकांत शुक्ल, डॉ. महेंद्रकुमार, दिल्ली विश्वविद्यालय; डॉ. शिवशेखर मिश्र, भू.पू. विभागाध्यक्ष,

लखनऊ विश्वविद्यालय आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। काशी विद्यापीठ के कुलपति डॉ. त्रिभुवनसिंह भी विश्वविद्यालय में पधारे। विश्वविद्यालय में आयोजित संस्कृत दिवस समारोह में भारत सरकार के संस्कृत परामर्शदाता डॉ. रामकृष्ण शर्मा मुख्य अतिथि के रूप में पधारे। हिंदी दिवस पर आयोजित गोष्ठी में अन्य विद्वानों के अतिरिक्त डॉ. श्यामसुंदर शुक्ल, काशी हिंदू विश्वविद्यालय ने अपने विचार प्रस्तुत किए। फिज़ी से हिंदी पढ़ने के लिए आए छात्र नेतराम शर्मा ने फिज़ी में हिंदी शिक्षण के लिए डॉ. विष्णुदत्त राकेश के निर्देशन में पाठ्यपुस्तक लिखी।

इस विश्वविद्यालय में भारत के विभिन्न प्रांतों के अतिरिक्त विदेशी छात्र भी अध्ययन कर रहे हैं। इनमें मारीशस के वरजानंद उमा, फिज़ी के राजेश्वर प्रसाद, दक्षिण अफ्रीका के राधेश सिंह, सूरीनाम के आनंदकुमार विरजा के नाम उल्लेखनीय हैं।

देश की विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं तथा प्रतियोगी प्रवेश परीक्षाओं में भी इस विश्वविद्यालय के छात्र सफलता प्राप्त कर रहे हैं। पिछले कुछ वर्षों में इस विश्वविद्यालय के छात्र अखिल भारतीय एवं प्रांतीय सेवाओं में चुने गए हैं।

इस वर्ष रुड़की विश्वविद्यालय के एम.टेक. जियोफिजिक्स पाठ्यक्रम के लिए तीन सौ प्रत्याशियों में से इस विश्वविद्यालय के छात्र नवनीत कुमार ने प्रथम तथा संजय उप्रेती ने सातवाँ स्थान प्राप्त किया। एक अन्य छात्र अनुराग शर्मा मर्चेंट नेवी में ट्रेनी नौटिकल ऑफीसर के रूप में चुना गया है।

पुरातत्त्व संग्रहालय

गुरुकुल का पुरातत्त्व संग्रहालय दर्शनीय है। सिंधु सभ्यता से लेकर उन्नीसवीं शती तक की विभिन्न पुरातन वस्तुएँ, प्रतिमाएँ, कलाकृतियाँ, पांडुलिपियाँ एवं मुद्राएँ यहाँ संकलित हैं। इस संग्रहालय के श्रद्धानंद कक्ष में स्वामी जी की पादुकाएँ, वस्त्र, कमंडल, दुर्लभ चित्र, पत्र तथा संदेश आदि सुरक्षित हैं। इस वर्ष छः हजार दर्शक यह संग्रहालय देखने आए। इस वर्ष केंद्रीय कक्ष के ऊपरी भाग में मृण्मूर्ति कक्ष, सिंधु सभ्यता वीथिका तथा केंद्रीय कक्ष में लघुचित्र दीर्घा बढ़ाई गई।

पुस्तकालय

विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में विभिन्न विषयों की लगभग डेढ़ लाख पुस्तकें हैं। शोधकार्य के लिए देश-विदेश के विद्यार्थी पुस्तकालय में आते हैं। संग्रहीत वैदिक साहित्य, संस्कृत साहित्य, धर्म, दर्शन, संस्कृति, इतिहास, आर्यसमाज, समाजशास्त्र तथा हस्तलेखों से संबंधित सात हजार पाँच सौ प्रविष्टियों की वृहद् सूची प्रकाशित की गई है। पुस्तकालय में इस वर्ष दो शक्तिशाली कंप्यूटर टर्मिनल लगाए गए। पहले एक सौ अड़तालीस पत्र-पत्रिकाएँ पाठकों के लिए मँगाई जा रही थीं, इस

वर्ष इनकी संख्या बढ़कर चार सौ तैंतीस हो गई है।

इस वर्ष विश्वविद्यालय के छियालीस प्रौढ़ शिक्षा केंद्रों में से तेईस केंद्र पुरुषों के तथा तेईस केंद्र महिलाओं के थे। इन केंद्रों का संचालन हरिजन बस्तियों, अल्पसंख्यक समुदायों के क्षेत्रों, पिछड़े वर्ग के इलाकों तथा निर्बल-दलित बस्तियों में किया गया। छात्रों के मार्गदर्शन के लिए 'काउंसिलिंग सेल' की स्थापना की गई।

श्रद्धानंद सप्ताह के अवसर पर अनेक खेल-कूद प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। राष्ट्रीय सेवा योजना के डॉ. दिनेश भट्ट ने समन्वयक डॉ. जयदेव वेदालंकार के निरीक्षण में दस दिवसीय शिविर हरिपुर ग्राम में लगाया। जनसाक्षरता अभियान, सड़क निर्माण, वृक्षारोपण तथा गाँव के निवासियों का स्वास्थ्य परीक्षण इस शिविर की विशेषता रही। 'वनोषधियों से स्वास्थ्य लाभ' विषय पर आयुर्वेद महाविद्यालय गुरुकुल के विद्वान् डॉ. विनोद उपाध्याय ने ग्रामवासियों को जानकारी दी। विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय छात्र सेना का प्रशिक्षण शिविर रायपुर में आयोजित किया गया।

विज्ञान महाविद्यालय में भौतिकविज्ञान, रसायन, गणित, जंतुविज्ञान, वनस्पति विज्ञान, माइक्रो बॉयलोजी में अध्ययन-अध्यापन तथा शोध कार्य चल रहा है। पिछले वर्ष विज्ञान महाविद्यालय के जो प्रोफेसर अन्य देशों के विश्वविद्यालयों में गए उनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

1. डॉ. एस.एल. सिंह—गणित विभाग—फ्रांस
2. डॉ. रजनीशदत्त कौशिक—रसायन विभाग—कनाड़ा और फ्रांस
3. डॉ. बी.डी. जोशी—जीवविज्ञान विभाग—फिनलैंड और फ्रांस
4. डॉ. पुरुषोत्तम कौशिक—वनस्पतिविज्ञान विभाग—इंग्लैंड

विज्ञान महाविद्यालय के विभिन्न विभागों में अनेक शोध योजनाओं पर भी कार्य चल रहा है।

गणित विभाग 'जरनल ऑफ नेचुरल एंड फिजिकल साइंस' शोध पत्रिका प्रकाशित कर रहा है। इसके विनिमय से विदेशों से बारह हजार रुपए की विदेशी मुद्रा खर्च की सात पत्रिकाएँ विश्वविद्यालय को प्राप्त हुईं।

विश्वविद्यालय की अन्य शोध पत्रिकाओं 'आर्यभट्ट' के संपादक डॉ. विजय शंकर, 'वैदिक पाथ' के संपादक डॉ. राधेलाल वार्ष्णेय, 'प्रह्लाद' के संपादक डॉ. विष्णुदत्त राकेश, 'गुरुकुल पत्रिका' के संपादक डॉ. जयदेव वेदालंकार, 'हिमालयन जरनल ऑफ एनवायरनमेंट एंड ज्यूलोजी' के संपादक डॉ. बी.डी. जोशी तथा 'प्राकृतिक एवं भौतिकीय विज्ञान पत्रिका' के संपादक डॉ. एस.एल. सिंह को मैं विशेष रूप से धन्यवाद देता हूँ।

विज्ञान महाविद्यालय के छात्रों ने राष्ट्रीय सेवा योजना, क्रीड़ा प्रतियोगिताओं

तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी भाग लिया। श्रद्धानंद बलिदान दिवस पर आयोजित कार्टून प्रतियोगिता तथा सांस्कृतिक संध्या आकर्षण के केंद्र बने रहे।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली वर्तमान परिस्थितियों में नितांत उपयोगी है। चरित्र निर्माण, राष्ट्रीय अखंडता, एकता, धार्मिक सद्भाव, सहिष्णुता, समाज सेवा, सांस्कृतिक गौरव, सामाजिक न्याय, समानता, आत्मानुशासन तथा मानवजाति की सेवा इसका लक्ष्य है। मैं चाहता हूँ कि नव-दीक्षित स्नातक स्वामी श्रद्धानंद जी के कार्य को आगे बढ़ाएँ तथा चरित्र सत्याचरण और आत्मानुशासन की शक्ति लेकर जीवन की चुनौतियाँ स्वीकार करें। मैं परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि आपको सदैव सफलता मिले।

प्रभु से प्रार्थना है—

'काले वर्षतु पर्जन्यः पृथिवी शस्यशालिनी।
देशोऽयं क्षोभरहितः सज्जनाः सन्तु निर्भयाः।।'

1991–गुरुकुल एक शिक्षास्थली ही नहीं, राष्ट्रीय स्मारक भी

❑ श्री सुभाष विद्यालंकार

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का यह परम सौभाग्य है कि आज विश्वविद्यालय के इक्यानवेवें दीक्षांत समारोह के शुभ अवसर पर भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री चंद्रशेखर जी हमारे मध्य विराजमान हैं। मैं इस दीक्षांत समारोह में उपस्थित सभी विद्वतवृंद तथा समस्त कुलवासियों की ओर से आपका हार्दिक स्वागत करता हूँ और साथ ही अनुरोध करता हूँ कि यदि आपके उचित आतिथ्य में हमारी ओर से कोई त्रुटि रह गई हो तो उस पर इस विश्वविद्यालय के सीमित एवं अल्प साधनों को ध्यान में रखते हुए ध्यान न देने की कृपा करें।

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानंद जी महाराज ने आज से नब्बे वर्ष पूर्व हरिद्वार में पुण्यतोया भगीरथी के तट पर हिमालय की उपत्यका के घने वन में जिस गुरुकुल की स्थापना की थी, उस पुण्यभूमि को आज फिर एक बार गंगा की बाढ़ के कारण गंभीर खतरा पैदा हो गया है। सन् 1924 की विनाशकारी बाढ़ से आज तक हुए भूमि के कटान के कारण पुण्यभूमि का अधिकांश गंगा के गर्भ में समा चुका है। किंतु जिस भवन में महात्मा गांधी, उनके सुपुत्र, दक्षिण अफ्रीका के फोनिक्स आश्रमवासी तथा ब्रिटिश प्रधानमंत्री श्री रैम्जे मैक्डानल्ड, वायसराय चेम्सफोर्ड और लार्ड मैस्टन जैसे महानुभाव ठहरे थे, उस राष्ट्रीय एवं ऐतिहासिक महत्त्व के भवन को भी आगामी बाढ़ में नष्ट हो जाने का वास्तविक खतरा पैदा हो गया। यदि हमने इस राष्ट्रीय स्मारक को बचाने के लिए तत्काल प्रयत्न नहीं किए तो भविष्य की पीढ़ी हमें कभी क्षमा नहीं करेगी।

गुरुकुल के सीमित साधनों से तथा ब्रह्मचारियों के श्रमदान से इस भूमि को बचाने के प्रयत्न किए गए हैं, किंतु सरकारी सहयोग एवं सहायता के अभाव में हमारे प्रयत्न अधूरे सिद्ध हो रहे हैं। ब्रिटिश सरकार ने गुरुकुल कांगड़ी को हर संभव सहायता देने की अनेक कोशिश की थी, किंतु राष्ट्रीय आत्मसम्मान के प्रतीक

स्वामी श्रद्धानंद ने ब्रिटिश शासकों की कोई सहायता कभी स्वीकार नहीं की। आज स्थिति पूरी तरह विपरीत है। माननीय प्रधानमंत्री जी और माननीय मुख्यमंत्री जी के आदेशों के बावजूद इस दिशा में कोई प्रगति नहीं हो पा रही है।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली संसार की सबसे प्राचीन शिक्षा पद्धति है। भारत की इस गुरुकुल शिक्षा पद्धति का पुनरुद्धार करने के लिए स्वामी जी ने गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की थी। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के मुख्य उद्देश्य हैं : सभी ब्रह्मचारियों को अमीर-गरीब के भेदभाव के बिना समान खान-पान, समान रहन-सहन और शिक्षा के समान अवसर प्रदान करना, सादा और तपस्यामय जीवन व्यतीत करना, चरित्र निर्माण, गुरु-शिष्य के बीच घनिष्ठ एवं निरंतर संपर्क, संयम और स्वाध्याय।

गुरुकुल में इन उद्देश्यों को पूरा करने के अतिरिक्त वैदिक वाङ्मय और संस्कृत के साथ-साथ आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की उच्चतम शिक्षा हिंदी माध्यम से देने का भी क्रम पिछले नब्बे वर्षों से निरंतर चला आ रहा है।

इन दिनों गुरुकुल में निम्नलिखित कार्यक्रम पूरे करने के लिए प्रयत्न किए गए हैं–

1. वैदिक साहित्य, भाषाविज्ञान, संस्कृत, पाली एवं प्राकृत के अध्ययन-अध्यापन एवं अनुसंधान केंद्र की स्थापना।

2. योगशास्त्र के अध्ययन एवं अनुसंधान केंद्र की स्थापना।

3. इस विश्वविद्यालय के द्वितीय परिसर कन्या गुरुकुल, देहरादून में मानविकी के आधुनिक विषयों में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम प्रारम्भ करना।

4. भारतीय विद्याओं, प्राचीन भारतीय इतिहास और संस्कृति संस्थान की स्थापना।

5. हिमालय के पर्यावरण पर विशेष ध्यान देते हुए पर्यावरण के क्षेत्र में अनुसंधान तथा गंगाजल को प्रदूषित न होने देने के उपायों का अध्ययन।

6. विश्वविद्यालय के निकटवर्ती क्षेत्रों में ग्राम विकास की सुविधाएँ जुटाना तथा ग्रामवासियों को ऊर्जा के नए स्रोतों से परिचित कराना।

उपरोक्त कार्यों के अतिरिक्त हरिद्वार तथा निकटवर्ती क्षेत्रों के निवासियों की अनेक वर्षों से माँग है कि गुरुकुल को उनकी बालिकाओं की उच्च शिक्षा का प्रबंध भी करना चाहिए। गुरुकुल को यह माँग पूरी करने में कोई हिचक नहीं है, लेकिन सरकार द्वारा मान्यता एवं सहायता न देने के कारण यह योजना आगे नहीं बढ़ पाई है।

इस अवसर पर मैं माननीय प्रधानमंत्री जी और माननीय मुख्यमंत्री जी से यह भी निवेदन करना चाहूँगा कि वे गुरुकुल के आयुर्वेद महाविद्यालय और कृषि महाविद्यालय के भवन हमें सौंपने के आदेश संबद्ध अधिकारियों को देने की कृपा करें। उत्तर प्रदेश के महामहिम राज्यपाल महोदय कुलवासियों को इस संबंध में

आश्वासन भी दे चुके हैं। अतः गुरुकुल के ये भवन हमें सौंपने में और अधिक विलंब उचित प्रतीत नहीं होता।

मुझे आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि माननीय प्रधानमंत्री जी और माननीय मुख्यमंत्री जी की उपस्थिति का लाभ न केवल विश्वविद्यालय की उपरोक्त योजनाओं को गति देने में और स्वामी श्रद्धानंद जी की तपस्थली एवं राष्ट्रीय स्मारक की रक्षा करने में ही मिलेगा, अपितु हरिद्वार के निवासियों की कन्या महाविद्यालय की माँग पूरी करने में भी दोनों महानुभावों का सक्रिय एवं उल्लेखनीय सहयोग मिलेगा, ताकि अगले शिक्षा सत्र से गुरुकुल कन्याओं के विद्याध्ययन का प्रबंध कर सके और श्रद्धानंद जी की तपस्थली में गंगापार ब्रह्मचारियों के अध्ययन एवं निवास की सुविधा फिर से प्रारंभ करने के अतिरिक्त ग्राम विकास के कार्यक्रम को गति प्राप्त हो सके।

मैं एक बार पुनः माननीय प्रधानमंत्री जी और मुख्यमंत्री जी को कुलवासियों की ओर से हार्दिक धन्यवाद देता हूँ कि उन्होंने अपने अमूल्य समय में से समय निकालकर यहाँ पधारने की कृपा की और हम कुलवासियों को अपनी उपस्थिति से कृतार्थ किया।

1993–दायित्व बोध

❑ श्री रामप्रसाद वेदालंकार

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के बानवेवें दीक्षांत समारोह में आप सबका हार्दिक स्वागत करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। हमारा यह सौभाग्य है कि आज इस दीक्षांत समारोह में भारत सरकार के गृह राज्यमंत्री श्री पायलट जी हमारे मध्य विद्यमान हैं। मैं इस सभागार में उपस्थित समस्त कुलवासियों की ओर से आपका हार्दिक स्वागत करता हूँ, और प्रार्थना करता हूँ कि यदि हमारे आतिथ्य में कोई त्रुटि रह जाए तो उस ओर ध्यान न देंगे।

आर्य बंधुओ, आज दीक्षांत समारोह के इस अवसर पर विश्वविद्यालय की विकास यात्रा का छोटा सा चित्र प्रस्तुत करना भी आवश्यक है। वित्तीय कठिनाइयों से गुजरता हुआ भी यह विश्वविद्यालय निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर है। विश्वविद्यालय के विविध विभाग अपनी योजनाएँ लेकर आगे बढ़ रहे हैं, किंतु अर्थाभाव से प्रगति की गति कुछ धीमी है।

विश्वविद्यालय में वैदिक साहित्य, संस्कृत साहित्य, भारतीय दर्शन, प्राचीन भारतीय इतिहास, हिंदी, अंग्रेजी, मनोविज्ञान जैसे विषयों के उच्च अध्ययन एवं अनुसंधान कार्य के साथ अब कंप्यूटर, वनस्पतिविज्ञान, जंतुविज्ञान, माइक्रो बॉयलोजी, भौतिकी, रसायन और गणित जैसे आधुनिक विषयों में भी उच्चस्तरीय अनुसंधान कार्य चल रहा है। विभिन्न डिप्लोमा पाठ्यक्रमों के साथ-साथ, योग में स्नातकोत्तर अध्ययन तथा पत्रकारिता प्रशिक्षण हमारी एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। राष्ट्रीय सेवा योजना, प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों तथा शिविरों द्वारा गुरुकुल के ब्रह्मचारी देश की मिट्टी के साथ जुड़ने का सतत प्रयत्न करते हैं।

विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों की प्रगति का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है–

वैदिक साहित्य

वेद विभागाध्यक्ष प्रो. रामप्रसाद वेदालंकार की 'वैदिक पुष्पांजलि' आदि चार पुस्तकें

इस वर्ष प्रकाशित हुईं। डॉ. मनुदेव 'बंधु' ने दर्शन विभाग में हुए सेमिनार में वैदिक कर्म मीमांसा विषय पर शोध पत्र वाचन किया। छात्रों को सस्वर वेदमंत्र सिखलाने के लिए कर्नाटक से श्री कृष्णभट्ट को बुलाया गया है जो छात्रों को सस्वर मंत्रपाठ सिखा रहे हैं। वैदिक प्रयोगशाला एवं संग्रहालय में छात्रों को कर्मकांड की व्यावहारिक शिक्षा दी जाती है। प्रो. रामप्रसाद वेदालंकार, डॉ. भारतभूषण, डॉ. मनुदेव बंधु आदि के निर्देशन में कई छात्र शोधकार्यरत हैं।

संस्कृत साहित्य

यह विभाग शोधकार्य में प्रशंसनीय कार्य कर रहा है। लगभग चौवीस शोधछात्र पी-एच.डी. हेतु शोधकार्य कर रहे हैं। इस वर्ष चार छात्रों ने शोधप्रबंध प्रस्तुत किए हैं तथा आठ छात्रों का नवीन पंजीकरण किया गया है। विभाग ने 23 सितंबर को डॉ. रामनाथ वेदालंकार के मुख्यातिथ्य में संस्कृत दिवस समारोह उल्लासपूर्वक मनाया। प्रो. वेदप्रकाश शास्त्री तथा डॉ. महावीर शास्त्री ने मुरादाबाद में आयोजित वैदिक संगोष्ठी में 'वैदिक शासन व्यवस्था' विषय पर तथा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के दर्शन विभाग द्वारा आयोजित शोध संगोष्ठी में 'कर्म सिद्धांत और व्यक्ति स्वातंत्र्य' विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किए। इस वर्ष डॉ. महावीर अग्रवाल की पुस्तक 'वाल्मीकि रामायण में रस विमर्श' प्रकाशित हुई।

अंग्रेजी विभाग

डॉ. नारायण शर्मा ने मेरठ विश्वविद्यालय से डी.लिट्. की उपाधि प्राप्त की। आपके संपादकत्व में 'वैदिक पाथ' अंग्रेजी पत्रिका प्रकाशित हो रही है। डॉ. शर्मा का एक शोध लेख मेरठ विश्वविद्यालय के 'कंपेरेटिव जर्नल' में कैनेडियन लिटरेचर पर प्रकाशित हुआ।

डॉ. एस.के. शर्मा ने बड़ौदा विश्वविद्यालय में एक माह की कार्यशाला में भाग लिया, जो यू.जी.सी. एवं एसोसिएशन ऑफ कैनेडियन स्टडीज के सहयोग से संपन्न हुई। आपका एक शोधलेख मेरठ विश्वविद्यालय की कैनेडियन साहित्य पर प्रकाशित शोधपत्रिका में छपा। 26 अप्रैल, 1993 को मेरठ विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यशाला में भाग लिया तथा आपका एक शोधलेख 'वैदिक पाथ' में प्रकाशित हुआ।

डॉ. नारायण शर्मा, श्री एस.एस. भगत, डॉ. श्रवणकुमार शर्मा एवं डॉ. अंबुज शर्मा के निर्देशन में लगभग बीस छात्र पी-एच.डी. हेतु शोध कार्यरत हैं।

हिंदी विभाग

हिंदी विभाग में इस सत्र में जो विशिष्ट व्याख्यान हुए उनमें नवभारत टाइम्स के प्रधान संपादक डॉ. विद्यानिवास मिश्र, श्रीकृष्णचंद्र शर्मा 'भिक्खु', श्री राजेंद्र यादव आदि प्रमुख हैं। केंद्रीय हिंदी निर्देशालय, नई दिल्ली से अहिंदी-भाषी राज्यों के छात्रों का एक दल अध्ययन यात्रा पर आया। इसी अवधि में डॉ. विष्णुदत्त राकेश की 'श्रुतिपर्णा' तथा 'देवरात' नामक पुस्तकें प्रकाशित हुईं। डॉ. ज्ञानचंद रावल, डॉ. भगवानदेव पांडेय तथा श्री कमलकांत बुधकर ने जोधपुर विश्वविद्यालय में पुनर्वीक्षण पाठ्यक्रम में भाग लिया। डॉ. संतराम वैश्य की एक पुस्तक 'सूर की सांस्कृतिक चेतना और उनका युगबोध' प्रकाशित हुई।

मनोविज्ञान विभाग

विभाग में सभी शिक्षकों के निर्देशन में शोधकार्य हो रहा है। इस वर्ष श्री. ओ.पी. मिश्र के निर्देशन में जिन्होंने कार्य किया, ऐसे तीन छात्रों को पी-एच.डी. की उपाधि से अलंकृत किया जा रहा है। प्रो. सतीश धमीजा की अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। डॉ. एस.के. श्रीवास्तव एक रिसर्च प्रोजेक्ट पर यू.जी.सी. के वित्तीय अनुदान से कार्य कर रहे हैं।

दर्शन विभाग

यह विभाग पी-एच.डी. हेतु शोधकार्य के साथ-साथ समय-समय पर उच्चस्तर की शोध संगोष्ठियाँ आयोजित करता है। इस वर्ष भी 24 से 26 मार्च तक प्रो. जयदेव वेदालंकार के संयोजकत्व में 'कर्म सिद्धांत और व्यक्ति स्वातंत्र्य' विषय पर संगोष्ठी संपन्न हुई जिसमें अनेक विश्वविद्यालयों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

जंतुविज्ञान विभाग

प्रो. बी.डी. जोशी द्वारा भारत सरकार के पर्यावरण एवं वन मंत्रालय द्वारा स्वीकृत योजना 'इकोबॉयोलोजी ऑफ भगीरथी रिवर' सफलतापूर्वक पूर्ण की गई। डॉ. ए.के. चोपड़ा के निर्देशन में भी एक परियोजना चल रही है। इस विभाग द्वारा नियमित रूप से प्रकाशित की जाने वाली पत्रिका अंतर्राष्ट्रीय ख्याति की ओर अग्रसर है। डॉ. बी.डी. जोशी की एक पुस्तक 'वैदिक फिलासफी ऑफ इको मैनेजमेंट' शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रही है। इस वर्ष इस विभाग के प्राध्यापकों के बाईस शोध पत्र प्रकाशित हुए हैं। प्रो. जोशी की पर्यावरण एवं अन्य वैज्ञानिक विषयों पर रेडियो वार्ताएँ प्रसारित हुई हैं। उनके निर्देशन में एक शोध-छात्रा को पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त हो चुकी है तथा छः शोधकार्य कर रहे हैं। डॉ. ए.के. चोपड़ा ने एशिया स्तर की गोष्ठी में 'परजीवियों' पर अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया।

रसायन विभाग

मुझे यह कहते हुए हर्ष हो रहा है कि इस वर्ष रसायन विभाग में भी स्नातकोत्तर कक्षाओं के साथ पी-एच.डी. हेतु अनुसंधान कार्य प्रारंभ हो गया है। इस वर्ष तीन शोधछात्रों का पंजीकरण हुआ है। इस विभाग की यह विशेषता है कि इसमें प्राचीन रसायनशास्त्र को भी पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है। डॉ. इंद्रायण के अनेक कार्यक्रम आकाशवाणी नजीबाबाद से प्रसारित हुए हैं। डॉ. आर.डी. कौशिक ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एक माह का रिफ्रेशर कोर्स किया है। डॉ. रणधीर सिंह ने सरे विश्वविद्यालय, इंग्लैंड में इंटरनेशनल सिंपोजियम में अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया।

भौतिकी विभाग

इस विभाग में भी शोधकार्य प्रारंभ हो चुका है। अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित की जाने वाली प्रतियोगी परीक्षाओं में इस विभाग के छात्रों ने उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है।

वनस्पति विज्ञान विभाग

इस विभाग के प्रो. डी.के. माहेश्वरी तथा डॉ. पुरुषोत्तम कौशिक के शोधलेख अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। प्रो. माहेश्वरी के निर्देशन में तीन छात्रों को भोपाल विश्वविद्यालय से पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त हुई है। एक शोध परियोजना भी यू.जी.सी. के अनुदान से चल रही है। विभाग में शोधकार्य भी भलीभाँति चल रहा है।

कंप्यूटर विभाग

यू.जी.सी. द्वारा प्रदत्त अनुदान से इस विश्वविद्यालय में कंप्यूटर केंद्र की स्थापना की गई। 1988 में कंप्यूटर अणु प्रयोग में स्नातकोत्तर डिप्लोमा प्रारंभ हुआ। इस विभाग के अध्यक्ष डॉ. विनोद कुमार के शोधलेख पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। फरवरी 1992 में 'निरुक्त पर कंप्यूटर के अनुप्रयोग' श्री दिनेश विश्नोई के संयोजकत्व में एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। जुलाई 1992 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के कंप्यूटर सलाहकार प्रो. एस.आर. ठाकरे ने 'भारत में कंप्यूटर विकास' पर व्याख्यान दिया। यह विभाग शीघ्र ही विश्वविद्यालय के शिक्षकों के लिए एक अल्पावधि प्रशिक्षण पाठ्यक्रम प्रारंभ करने जा रहा है।

पुस्तकालय

इस विश्वविद्यालय का पुस्तकालय समस्त भारत के शोधार्थियों की ज्ञान-पिपासा को शांत करता है। इस समय इसमें एक लाख दस हजार से भी अधिक ग्रंथों का संकलन है, जिनमें पंद्रह हजार पुस्तकें दुर्लभ एवं अप्राप्य हैं। पुस्तकालय में राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर की दो सौ बीस पत्रिकाएँ मँगाई गईं जिनमें अभी एक लाख रुपए व्यय हुआ है। उत्तर प्रदेश सरकार के सहयोग से बारह लाख रुपए की लागत से संदर्भ पुस्तकालय का निर्माण पूर्ण हो चुका है। शीघ्र ही यह भवन लोक निर्माण विभाग द्वारा विश्वविद्यालय को हस्तांतरित कर दिया जाएगा।

इनके अतिरिक्त क्रीड़ा विभाग ने इस वर्ष एक अंतर्विश्वविद्यालयीय प्रतियोगिता भारोत्तोलन एवं शरीर सौष्ठव में आयोजित की जो श्री एस.के. डागर के परिश्रम से पूर्ण सफल रही। योग विभाग तथा प्रौढ़ शिक्षा विभाग भी विश्वविद्यालय के विकास में संलग्न हैं।

इस विश्वविद्यालय का पुरातत्त्व संग्रहालय भी दर्शनीय है जिसमें सिंधु सभ्यता से लेकर उन्नीसवीं शती तक की विभिन्न पुरातत्त्व वस्तुएँ, प्रतिमाएँ, कलाकृतियाँ, पांडुलिपियाँ एवं मुद्राएँ संकलित हैं।

इस संग्रहालय के श्रद्धानंद कक्ष में स्वमाी श्रद्धानंद जी की पादुकाएँ, वस्त्र, कमंडल तथा दुर्लभ चित्र सुरक्षित हैं।

प्रिय ब्रह्मचारियो !

जिन शाश्वत जीवनमूल्यों की रक्षा के लिए, राष्ट्रीय एकता, अखंडता, चरित्र निर्माण, धार्मिक सद्भाव की स्थापना के लिए गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली प्रारंभ हुई, आज उसके समक्ष अनेक चुनौतियाँ हैं, किंतु मुझे पूर्ण विश्वास है कि अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानंद की इस पुण्यभूमि में शिक्षा प्राप्त नवदीक्षित स्नातक अवश्य ही जीवन की परीक्षा में उत्तीर्ण होंगे। मैं आप सबकी सफलता के लिए प्रभु से प्रार्थना करता हूँ।

सज्जनो, हमारा यह सौभाग्य है कि हमारे मध्य में केंद्रीय गृह राज्यमंत्री (आंतरिक सुरक्षा) माननीय श्री राजेश पायलट दीक्षांत भाषण देने के लिए पुण्यभूमि में पधारे हैं। उनका जीवन राजनीति के साथ-साथ समाज सेवा के लिए समर्पित है। एक ओजस्वी वक्ता, सुयोग्य प्रशासक, मनीषी शिक्षाशास्त्री तथा कुशल राजनीतिज्ञ के रूप में भारतीय राजनीतिक गगन में आपकी एक अलग छवि है। राष्ट्र की ज्वलंत समस्याएँ, चाहे वह कश्मीर की हो, पंजाब की हो, या अन्य किसी की हो, आप उसको सुलझाने में अपनी पूर्ण शक्ति लगा देते हैं। विभिन्न भाषाओं में जो कुशलता आपको प्राप्त है, उससे श्रोता मुग्ध हो उठते हैं। भारत का प्राण

किसान आपकी ओर आशा और स्नेह से निहार रहा है। आज.हम समस्त कुलवासी ऐसे मनीषी को अपने बीच पाकर धन्य हैं। गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली के प्रति आपका अनुराग आज आपको हमारे मध्य में उपस्थित कर सका है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपके सहयोग से विश्वविद्यालय की भावी योजनाएँ पूर्ण हो सकेंगी।

अंत में, मैं यहाँ उपस्थित सभी महानुभावों का स्वागत करते हुए प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि

'काले वर्षतु पर्जन्यः पृथिवी शस्यशालिनी।
देशोऽयं क्षोभरहितः सज्जनाः सन्तु निर्भयाः।।'

1994–हम बढ़ चले हैं

(वर्धामहे वयम्)

❑ डॉ. धर्मपाल

अद्य गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालयस्य त्रिनवतितमे दीक्षान्तसमारोहावसरे भवतां समेषाम् अभिनन्दनं कुर्वन महतीं प्रसन्नताम् अनुभवामि। अद्य अस्माकम् अस्ति सौभाग्योदयः यत् अस्मिन् दीक्षान्तसमारोहे उपस्थितानां समेषाम् अभिनन्दनं कुर्वन् प्रार्थये यत् यदि आतिथ्यक्रमे काचित् त्रुटिः जायेत नूनं खलु सा क्षम्या।

हे नवस्नातकाः ! अमरहुतात्मनः स्वामिश्रद्धानन्देन अस्य गुरुकुलस्य स्थापना भगवत्याः भागीरथ्याः पवित्रे तटे त्रिनवतिवर्षेभ्यः प्राक्कृता। अस्माद् गुरुकुलात् विद्यारससिक्ताः स्नातकाः ये उपाधिवन्तः समभवन् तेषु लब्धकीर्तयः पण्डित इन्द्र विद्यावाचस्पति, आचार्य रामदेव स्वामी, समर्पणानन्द, आचार्य अभयदेव, आचार्य प्रियव्रत, डॉ. सत्यकेतु, पण्डित चन्द्र गुप्ताविद्यालङ्कार, डॉ. रामनाथ वेदालङ्कार प्रभृतयः अद्यापि गुरुकुलस्य कीर्तिविष्वक् प्रसारयन्ति। अस्माकम् अयम् अस्त्येव विश्वासः नव्याः स्नातकाः अस्य विश्वविद्यालयस्य परम्पराम् अग्रतः प्रसारयिष्यन्ति। समेषां स्नातकानां जीवनम् उत्तरोत्तरं बहुविधं विकासम् अवाप्स्यति।

उपस्थिताः आर्यबान्धवाः ! अद्य दीक्षान्त समारोहे विश्वविद्यालयस्य किञ्चिदपि संक्षिप्तं विकास-यात्रायाः चित्रं चित्रयितव्यम्। यद्यपि अर्थ वाधा उन्नतिं न तथा प्रवर्धयन्ति, तथापि सर्व सङ्कटकुलम् अपाकुर्वन् गुरुकुलम् उत्तरोत्तरं वर्धत एव।

सम्प्रति अस्मिन् विश्वविद्यालये वैदिकसाहित्ये, संस्कृतसाहित्ये, दर्शनशास्त्रे भारतीयेतिहासे, हिन्दीसाहित्ये, आङ्ग्लसाहित्ये च विभागाः यथा स्वकार्यरताः सन्ति तथैव विज्ञान महाविद्यालये वनस्पतिविज्ञान, जन्तुविज्ञान, रसायन, माइक्रो बॉयलोजी, कम्प्यूटर, गणित, भौतिकी विभागेषु उच्चश्रेण्याः पाठ्यक्रमः प्रसरति। विश्वविद्यालयस्य विभिन्नविभागानां संक्षिप्तं विवरणं दिग्रूपेण प्रस्तूयते।

वैदिकसाहित्यम्–वेदविभागाध्यक्षस्य प्रो. रामप्रसाद वेदालङ्कारस्य अनेकाः कृतयः वेदविषये प्रकाशिताः सन्ति। वेदविभागे वैदिकप्रयोगशाला प्रवर्तते। अस्मिन्

विभागे विश्वविद्यालयस्य अनुदान-सहायता एकावैदिक वाङ्मय निर्वचन कोषनाम्नी बृहद्शोधयोजना डॉ. रूपकिशोरस्य निर्देशकत्वे प्रचलति। वेदविभागे डॉ. भारतभूषणः, डॉ. मनुदेव बन्धुः, डॉ. रूपकिशोरः, डॉ. दिनेशचन्द्रश्च अध्यापने शोधकर्मणि च निरताः सन्ति।

संस्कृतसाहित्यम्–संस्कृतविभागः विभागाध्यक्षाणां प्रो. वेदप्रकाश शास्त्रिणामाध्यक्षे नितरां शोध कर्मणि संस्कृतभाषायाः सर्वविधप्रचारे-प्रसारे च संलग्नः वर्तते। सम्प्रति विंशतितमाः शोधछात्राः शोधकार्यरताः। अस्मिन्नेव समारोहे नवछात्राः शोधोपाधिना अलङ्क्रियन्ते। अस्य विभागस्य उपाध्यायाः पूनानगरे सम्पन्ने अखिलभारतीय प्राच्यविद्यासमारोहे भागं गृहीतवन्तः तत्र डॉ. महावीरेण स्वशोधपत्रं प्रस्तुतम्। अस्मिन् विभागे प्रोन्नतियोजनायां रीडरपदे नियुक्तस्य डॉ. रामप्रकाशस्य, डॉ. सोमदेवस्य, डॉ. ब्रह्मदेवस्य च सान्निध्यम् अवाप्य छात्राः विद्यां लभन्ते। अस्य विभागस्य प्रो. वेदप्रकाश शास्त्रिणः अनेकेषु विश्वविद्यालयेषु विषयविशेषज्ञरूपेण तैस्तैः विश्वविद्यालयैः सादरमामन्त्रिताः।

दर्शनविभागः –दर्शनविभागे सम्प्रति चत्वारः प्राध्यापकाः सन्ति। अस्य विभागस्य आचार्याः डॉ. जयदेव वेदालङ्काराः प्राच्यविद्यासङ्कायस्य अध्यक्षाः सन्ति। कुलसचिवपदभारमपि वहन्ति। डॉ. विजयपालशास्त्री, डॉ. त्रिलोकचन्द्रः, डॉ. उमरावसिंहः विष्टश्च स्व-स्व निर्देशने शोधकार्यं कारयन्ति। डॉ. जयदेव वेदालङ्कारस्य निर्देशकत्वे प्राच्यविद्यासङ्कायान्तर्गतमेकं राष्ट्रियविद्वत्सम्मेलनम् अभूत्।

प्राचीनभारतीयेतिहासविभागः –विभागाध्यक्षस्य डॉ. श्यामनारायणस्य निर्देशकत्वे बहवः शोधछात्राः शोधकार्यं कुर्वन्ति। अस्मिन् वर्षे डॉ. कश्मीर सिंहः रीडरपदेऽभिषिक्तः। डॉ. राकेश शर्मा अस्मिन् विभागे चारुतया स्वकार्यं साधयति।

योगविभागः –योगविभागे प्रथमे क्रमे योग प्रमाण-पत्रस्य कार्यम् आरब्धम्। अस्मिन् विभागे स्नातकोत्तरश्रेण्यां योगपाठ्यक्रमः समारब्धः। डॉ. ईश्वर भारद्वाजः अस्य विभागस्य सम्प्रति अध्यक्षपदभारं वोढुमर्हति।

हिन्दीसाहित्यम्–हिन्दीविभागे सम्प्रति डॉ. संतराम वैश्यः अध्यक्षस्य कार्यं करोति। अस्मिन् विभागे डॉ. विष्णुदत्त राकेशः आचार्यपदभार वहन् मानविकीसङ्कायस्य अध्यक्षपदम् अपि अलङ्करोति। अस्मिन् विभागे डॉ. भगवान्देवपाण्डेय, डॉ. ज्ञानचन्द रावल उभावपि प्रोन्नतियोजनायां रीडरपदे नियुक्तौ। डॉ. कमलकान्त बुधकरः पत्रकारितायां स्वरुचिं वितनुते। अस्मिन् विभागे चेकगणराज्यस्य भारते राजदूतः श्रीमान् डॉ. ओदोलेन स्मेकलः भाषणम् अभाषत। डॉ. विष्णुदत्तः राकेशः मध्य प्रदेश-साहित्यपरिषदा एकादशसहस्ररूप्यकैः सम्मानितः।

अङ्ग्रेजीविभागः –अस्मिन् विभागे प्रायशः सर्वेषाम् अध्यापकानां निर्देशकत्वे शोधकार्यं प्रभवति। विभागाध्यक्षस्य डॉ. नारायण शर्मणः निर्देशकत्वे राष्ट्रीयं सम्मेलनम् आङ्ग्लभाषायां समभवत्। अस्मिन् विभागे सुप्रसिद्धस्य समाजशास्त्रविदः–डॉ.

एस. सैलेसस्य व्याख्यानमभूत्। अस्मिन् विभागे प्रो. सदाशिव भगत, डॉ. श्रवणकुमार शर्मा, डॉ. अम्बुजशर्मा, डॉ. कृष्णावतार अग्रवालादयः कार्यरताः सन्ति।

मनोविज्ञानविभागः –अस्मिन् विभागे प्रो. ओ.पी. मिश्रमहोदयस्य अध्यक्षतायां पाठ्यक्रमसमितिः शोधसमितिश्च पूर्णतां गता। अस्मिन् विभागे डॉ. सतीशचन्द्र धमीजा, डॉ. एस.के. श्रीवास्तव, डॉ. चन्द्रपाल खोखर प्रभृतयः कार्यरताः सन्ति। अस्मिन् विभागे समेपाम् उपाध्यायानां निर्देशकत्वे बहवः शोध छात्राः शोधकार्यनिरताः।

वनस्पतिविज्ञानविभागः –अस्मिन् विभागे स्नातकोत्तर शिक्षणकार्येण सह शोधकार्यमपि प्रवर्तते। पूर्ववत् विभागस्य अध्यापकैः अन्तर्राष्ट्रीय शोधपत्रिकासु स्वशोध लेखाः प्रेपिताः। विभागाध्यक्षः डॉ जी.के. माहेश्वरी प्रोफेसर पदभाक् जापानदेशेन सादरम् आमन्त्रितः। अस्मिन् विभागे डॉ. पुरुषोत्तम कौशिकः प्रोन्नतियोजनायां रीडर पदं प्राप्तवान्। अस्मिन विभागे डॉ. गङ्गा प्रसाद गुप्ता डॉ. नवनीतश्च कार्यरतौ स्तः। विभागे डॉ. स्वर्णजितसिंहेण स्वव्याख्यानेन छात्राः विबोधिताः। विभागे समये-समये विभिन्नाः शोधयोजनाः निर्मीयन्ते।

जन्तुविज्ञानविभागः –विभागेऽस्मिन् स्नातकोत्तर शिक्षाक्रमे चारुतया कार्य प्रसरति। विभागाध्यक्षाः डॉ. बी.डी. जोशी महोदयाः विभागस्य समचिताम् उन्नतिम् कुर्वन्ति। विभागे समये-समये राष्ट्रिय-संगोष्ठीनाम् आयोजन क्रियते। अस्य विभागस्य विभिन्नेषु क्रिया कलापेषु महती भूमिका दृश्यते, शोधकार्यमपि तीव्रगत्या अस्मिन् विभागे प्रसरति। डॉ. तिलकराज सेठ, डॉ. अशोक कुमार चोपड़ा, डॉ. दिनेश भट्ट, डॉ. देवराज खन्ना प्रभृतयः कार्यरताः सन्ति।

गणितविभागः –विभागाध्यक्षाः प्रो. विजयपाल सिंहः सन्ति। विभागेऽस्मिन् डॉ. श्यामलाल सिन्हाः प्रोफेसर पदं वहन्तः विज्ञानसङ्कायस्य अध्यक्षपदमपि अलङ्कुर्वन्ति। अस्मिन् विभागे शोधकार्य प्रसरति। डॉ. वीरेन्द्र अरोड़ा, डॉ. विजयेन्द्र कुमार शर्मा, डॉ. महीपालसिंहः, डॉ. गुलाटी प्रभृतयः कार्यरताः सन्ति।

भौतिकविज्ञानविभागः –अस्मिन्विभागे डॉ. हरिश्चन्द्र ग्रोवरः अध्यक्षस्य कार्यं करोति। डॉ. बी.पी. शुक्ल, डॉ. राकेश कुमार, डॉ. पी.पी. पाठक, डॉ. यशपालादयः विभागे अध्यापनकार्ये संलग्नाः सन्ति। अस्मिन् विभागे वेदानुपजीव्य वैदिक भौतिकी विषयोऽपि स्नातकोत्तर कक्षासु अध्याप्यते। अस्य विश्वविद्यालयस्य भौतिकविज्ञान क्षेत्रे इयमभिनवा उपलब्धिः।

कम्प्यूटरविज्ञानविभागः –विभागेऽस्मिन् डॉ. विनोदकुमारशर्मा अध्यक्षपदभारं वहन्ति। अस्मिन्नेव वर्षे कम्प्यूटरविभागे एम.सी.ए. पाठ्यक्रमः नवीने क्रमे विश्वविद्यालय अनुदान आयोगस्य सहाय्येन प्रचलति। विभागे डॉ. दिनेश, अचल गोयल, सुनीलकुमार, कर्मजीत भाटिया प्रभृतयः कार्यरताः सन्ति। कम्प्यूटरविभागे वारद्वयं पाक्षिकं प्रशिक्षणं समभवत्। शोधछात्राणामपि पञ्जीकरणमस्मिन्नेव वर्षे सञ्जातम्। अभिनवप्रयोगशालायाः निर्मितिः प्रारब्धा।

पुरातत्त्वसंग्रहालयः –पुरातत्त्वसंग्रहालये संगृहीतानां पाण्डुलिपीनां परिरक्षणाय प्रकाशनाय च केन्द्रीय विकास मानव संसाधन मन्त्रालयेन अनुदानं दत्तम्। संग्राहलये नैकाः प्राचीनाः प्रतिमाः मुद्राश्च सन्ति। अस्यि संग्रहालयस्य दर्शकाः अस्मिन् वर्षे सप्तसहस्रसंख्यकाः गुरुकुलमुपयाताः।

पुस्तकालयः –अस्य विश्वविद्यालयस्य पुस्तकालयः अतीव रुचिरः, समृद्ध आकर्षकश्च अस्ति। पुस्तकालये संस्कृत साहित्यस्य, वैदिक साहित्यस्य, दर्शन साहित्यस्य च दुर्लभाः ग्रन्थाः लक्षसंख्यामपि अतिक्रामन्ति। अस्मिन् वर्षे विभिन्नानां विषयानां लक्षद्वयेन ग्रन्थाः क्रीताः। प्रायशः पुस्तकालयम् उपेत्य पाठकाः भवन्ति लाभ भाजः। अस्मिन् पुस्तकालये मेधाविछात्राणां कृते सौविध्येन पुस्तकानि दीयन्ते। आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पतीनां 'वेद का राष्ट्रिय गीत' ग्रन्थस्य प्रकाशनं पुनरपि पुस्तकालयेन कृतम्। छात्राणां सुविधां हृदि निधाय प्रतियोगिता-परीक्षाम् उत्तरितुं विभिन्नाः सज्जाकोष्ठाः निर्मिताः।

विश्वविद्यालयस्य कार्यालये प्रथमावसरे सहायक कुलसचिव पदस्य सृजनंजातं तत्र कर्मचारिणः प्रोन्नतियोजनायाम् उन्नीताः। कार्यालयस्य पूर्वस्यां दिशि नवीन भवनस्य निर्मितिः जाता।

प्रियाः स्नातकाः !

येषां शाश्वतजीवनमूल्यानां रक्षणाय, राष्ट्रीय एकतायाः, अखण्डतायाः, चरित्रतायाः, धार्मिकसद्भावस्य च परिरक्षणाय गुरुकुलीय शिक्षापद्धतिरुद्भाविता संजीविता च तान्येव जीवनमूल्यानि भवतां जीवने स्थिर्ति विधाय प्रतिपदं उन्नतिं दास्यन्ति। यद्यपि नात्र संशयो विद्यते यत् वर्तमान काले जटिलाः समस्याः प्रादुर्भवन्ति परं भवतां आत्मविश्वासो गुरुजनानामाशीर्वादेन सह निर्भयं जीवनं उन्नेष्यति। युष्माकं जीवनं ससुख कर्तुं परमात्मानं प्रार्थये।

विश्वविद्यालयस्य सर्वाङ्गीणविकासे अधिकारिणां, शिक्षकानां, कर्मचारिणां, ब्रह्मचारिणां, अभिभावकानां च सहयोग एव प्रशंस्यते। कुलाधिपति प्रोफेसर शेरसिंह महोदयानां, श्रीमतां महावीरसिंह परिद्रष्टा महोदयानां निर्देशने विश्वविद्यालयः प्रगतिपथमारूढः।

हे सज्जनाः !

नूनमद्य अस्माकं सौभाग्योदयो यत् अस्माकं मध्ये केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालयस्य मंत्रिणः श्रीमन्तः अर्जुनसिंह महोदयाः दीक्षान्त भाषणाय सम्प्राप्ताः शोभन्ते। एषां समग्रं जीवनं राष्ट्राय समर्पितं विद्यते। राजनीति क्षेत्रे भवतां कर्मपद्धतिः वृक्षच्छायेव समेषां परितापहर्त्री विद्यते भवता गुरुकुलमुपेत्य गुरुकुलीयशिक्षांप्रति निजानुरागः प्रकटितः। मध्ये गुरुकुलं भवन्तमालोक्य सर्वेऽपि

कुलवासिनोवयं धन्याः। भवतां निरुपमेयेन साहाय्येन विश्वविद्यालयस्य विश्वम् परिवृद्धिः प्रतिष्ठा च प्रवर्ततूस्यते।

अन्तेचाहं उपस्थितानां समेषां महानुभावानां 'धन्यवादं व्याहरन् परमेश्वरं अभ्यर्थये–

'काले वर्षतु पर्जन्यः पृथिवी शस्यशालिनी।
देशोऽयं क्षोभरहितः सज्जनाः सन्तु निर्भयाः।।'

1995–लक्ष्य निश्चित है, हमें दिशाबोध है

(निश्चितम् लक्ष्यम् दिग्बोधश्च)

❑ डॉ. धर्मपाल

पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः।
पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा।। (यजुर्वेद, 19/39)

श्रद्धेयाः संन्यासिनः, सम्मान्याः लोकसभाध्यक्षाः श्री शिवराजपाटिलमहोदयाः, परिद्रष्टृपदभाजः श्रीमहावीरसिंहमहोदयाः, कुलाधिपतयः श्रीसूर्यदेवमहाभागाः, सार्वदेशिकार्य-प्रतिनिधिसभाप्रधानपदभाजः श्रीरामचन्द्रवन्देमातरम् महाभागाः, मञ्चस्थाः विद्वांसः, नवस्नातकाः, ब्रह्मचारिणः, विश्वविद्यालयस्य सहयोगिनो नराः, नार्यश्च।

अद्य गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालयस्य चतुर्नवतितमे दीक्षान्तसमारोहक्रमे समागतानां महानुभावानां स्वागतं व्याहरन् अमन्दमानन्दमनुभवामि। सहृदयानां मान्यानामातिथ्यक्रमे यदि जायेत क्वचित् काचित् त्रटिस्तर्हि नूनं सा मर्षणीया।

हे प्रिय स्नातकाः ! देवानामीप्सिततमं गुरुकुलमिदममरहुतात्मना पुण्यश्लोकेन स्वामिश्रद्धानन्देन चतुर्नवतिवर्षेभ्यः प्राग् भगवत्याः भागीरथ्याः पवित्रे तटे स्थापितम्। एतस्माद् गुरुकुलाद् विद्यापारङ्गता देशप्रेमरससिक्ताः ये स्नातका उपाधिवन्तः समभवन् तेषु प्रतिष्ठावन्तो लब्धकीर्तयः पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति, आचार्य रामदेव, स्वामिसमर्पणानंद, पं. अभयदेव, आचार्य प्रियव्रत, डॉ. सत्यकेतु, पं. चन्द्रगुप्त, डॉ. रामनाथ वेदालङ्कार, स्वामिधर्मानन्द प्रभृतयः सम्प्रत्यपि गुरुकुलस्य कीर्तिं सर्वासु दिक्षु प्रसारयन्ति। अस्माकं प्रत्ययोऽस्ति द्रढीयान् यन्नवाः स्नातका इत उपाधिं गृहीत्वा विश्वविद्यालयस्य यशोगाथां गायं गायं स्वकर्मसु दक्षतां प्रकटयन्तः प्रतिष्ठामवाप्स्यन्ति।

हे आर्यबान्धवाः ! अस्मिन् दीक्षान्तसमारोहावसरे विश्वविद्यालयस्य संक्षिप्तं प्रगतिवृत्तं भवतु नाम भवतां कर्णगतमिति विमृश्य समासेनोदीर्यते। यद्यपि अर्थबाधया समुन्नतिः प्रबाध्यते तथापि गुरुकुलस्य प्रोन्नतिर्न हीयते। साम्प्रतममुष्मिन् विश्वविद्यालये चत्वारः संकायाः प्रवर्धमानास्सन्ति। ते प्राच्यविद्या, मानविकी, विज्ञान, जीवविज्ञानसङ्कायाः सन्ति। एकैकस्य सङ्कायस्य विभागानां विवरणं प्रस्तूयते।

प्राच्यविद्या सङ्कायः

वेदविभागः –वेदविभागः डॉ. मनुदेव बन्धुमहोदयस्य अध्यक्षतायामुन्नतिपथमारोहति। अस्मिन् विभागे प्रोफेसरपदभाग् रामप्रसाद वेदालङ्कारो विराजते। अयमेव आचार्यपदमुपकुलपतिपदञ्चालङ्करोति। वेदविभागे वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, वेदाङ्गादीनां सर्वाङ्गीणा शिक्षा दीयते। कर्मकाण्डपरम्परां द्रढयितुं डॉ. मनुदेव बन्धुमहोदयस्य निदेशकत्वे वैदिक प्रयोगशालाऽपि प्रवर्तते। अस्मिन्नेव विभागे विश्वविद्यालयस्यानुदान-सहायतया वैदिकवाङ्मय-निर्वचनकोषनाम्न्यां बृहत् शोधयोजनायां डॉ. रूपकिशोर, डॉ. अशोककुमारौ कार्यं कुरुतः। अस्मिन्नेव विभागे एकवर्षीयो वैदिक कर्मकाण्ड प्रमाणपत्रपाठ्यक्रमोऽपि प्रचलति। अत्र डॉ. दिनेशचन्द्रः अध्यापने शोधकर्मणि च निरतोऽस्ति। डॉ. मनुदेवस्य निर्देशने द्वौ छात्रौ पी-एच.डी. उपाधिभ्यां विभूषितौ। वेदविभागेन वेदमन्त्रोच्चारण प्रतियोगिताऽपि समायोजिता।

संस्कृतविभागः –संस्कृतविभागे प्रो. वेदप्रकाशशास्त्री अध्यक्षपदमलङ्करोति। अयमेव सम्प्रति प्राच्यविद्यासङ्कायस्य अध्यक्षपदभारं वहति। अस्मिन् विभागे डॉ. सोमदेव, डॉ. रामप्रकाशौ रीडरपदभाजौ स्तः। प्रवक्ता चास्ति डॉ. ब्रह्मदेवः। अस्मिन् विभागे पञ्चविंशतिः शोधछात्राः शोधकर्मरताः। अस्मिन्नेव विभागे संस्कृतदिवससमारोहः सम्मानितः। अस्य विभागस्य प्रो. वेदप्रकाशशास्त्रिणा सह अन्ये सहयोगिनः अखिलभारतीय प्राच्यविद्यासम्मेलने भागं ग्रहीतुं गताः। प्रो. वेदप्रकाशशास्त्रिणः निदेशकत्वे त्रिदिवसीया राष्ट्रिया वैदिकसंगोष्ठी समायोजिता। प्रो. वेदप्रकाशशास्त्रिणः अनेकेषु विश्वविद्यालयेषु विषयविशेषज्ञरूपेण तैस्तैर्विश्वविद्यालयैः सादरमान्त्रिताः।

दर्शनविभागः –दर्शनविभागः डॉ. विजयपालशास्त्रिणोऽध्यक्षतायां प्रगतिमान् वर्तते। अस्यैव विभागस्य प्रोफेसरपदभाग् डॉ. जयदेववेदालङ्कारः सम्प्रति विश्वविद्यालयस्य कुलसचिवपदमलङ्करोति अस्मिन्विभागे डॉ. त्रिलोकचन्द्र, डॉ. उमरावसिंहविष्टौ कार्यं कुरुतः। अत्र प्राच्य-पाश्चात्यदर्शनशास्त्रे शोधकार्यं प्रचलति।

प्राचीनभारतीयेतिहासविभागः –विभागाध्यक्षः डॉ. कश्मीरसिंहः चारुतया कार्यं निभालयति। विभागे प्रोफेसरपदभाग् डॉ. श्यामनारायणसिंहोऽस्ति। डॉ. राकेशशर्मा प्रवक्तृपदे कार्यं करोति। इतिहासविभागान्तर्गतः पुरातत्त्वसंग्रहालयः डॉ. कश्मीरसिंहस्य निदेशकत्वे चारुतयोन्नतिं करोति।

योगविभागः –डॉ. ईश्वरभारद्वाजस्याध्यक्ष्येऽयं विभागः प्रचलति। अस्मिन् विभागे स्नातकोत्तरश्रेण्यां पाठ्यक्रमः समारब्धः। सम्प्रति युगानुरूपं अस्य विभागस्य महती ख्यातिः प्रवर्धते। समये-समये ईश्वरभारद्वाजस्य आकाशवाणीतः वार्त्ताः प्रसरन्ति। अयं सम्मेलनेष्वपि भागं गृह्णाति।

श्रद्धानन्दशोध संस्थानम्–अस्माकं विश्वविद्यालये अभिनवं श्रद्धानन्दशोध संस्थानं संस्थापितम्। अत्र डॉ. भारतभूषणः अध्यक्षपदभारं वहति। डॉ. महावीरस्तत्रैव

रीडरपदभागस्ति। आशासे भविष्यति काले बहुलतया शोधकार्यं प्रचलिष्यति।

मानविकी सङ्कायः

हिन्दीविभागः –हिन्दीविभागे डॉ. सन्तरामोऽध्यक्षपदमलङ्करोति। अस्मिन् विभागे डॉ. विष्णुदत्तराकेश आचार्यपदभारं वहन् मानविकी सङ्कायस्याध्यक्षपदमपि सनाथीकरोति। अस्मिन् विभागे डॉ. भगवान्देव पाण्डेय, डॉ. ज्ञानचन्द्र रावलौ रीडरपदभाजौ। डॉ. कमलकान्त बुधकरः पत्रकारितां स्वरुचिं तनुते। डॉ. भगवान्देव पाण्डेयः अस्मिन्नेव वर्षे डी.लिट्. उपाधिना आत्मानं घोषयति।

आङ्लभाषाविभागः –डॉ. नारायणशर्मणः आध्यक्ष्येऽयं विभागः प्रचलति। अस्मिन् विभागे समेषां प्राध्यापकानां निर्देशकत्वे शोधकार्यं प्रचलति। अस्मिन् विभागे प्रो. सदाशिव भगत, डॉ. श्रवणकुमार शर्मा, डॉ. अम्बुजशर्मा, डॉ. कृष्णावतारादयः कार्यनिरताः सन्ति। डॉ. अम्बुजशर्माः शिष्टपरिषद् सदस्योऽस्ति।

मनोविज्ञानविभागः –प्रो. ओम्प्रकाशमिश्रस्य अध्यक्षतायामयं विभागः कार्यं करोति। अस्मिन् विभागे ''इकोलोजिकल पर्सपेक्टिव एण्ड विहेवियर'' विषये एकं राष्ट्रियं विद्वत्सम्मेलनमभूत्। अत्र शताधिकैर्विद्वद्भिः भागो गृहीतः। अस्मिन्नेव विभागे अस्मिन् वर्षे 'पर्सनल मैनेजमेण्ट एण्ड इण्डस्ट्रियल रिलेशन्स' विषये अभिनवः पाठ्यक्रमः समारब्धः। सम्प्रति पञ्चविंशतिः छात्राः अध्ययनरताः सन्ति। अस्मिन् विभागे डॉ. सतीशचन्द्र धमीजा, डॉ. एस.के. श्रीवास्तव, डॉ. चन्द्रपाल खोखर प्रभृतयः कार्यरताः सन्ति।

प्रौढशिक्षाविभागः –अस्मिन् विभागे डॉ. रामदत्त शर्मा अध्यक्षपदभारं वहति। अयं विभागः साक्षरतावर्धनाय नित्यशः कार्यं करोति। मध्ये-मध्ये प्रतियोगिता अपि समायोजयति। डॉ. जसवीरसिंह मलिकः सहायकरूपेण कार्यं करोति।

विज्ञान सङ्कायः

गणितविभागः –सम्प्रतिविभागाध्यक्षपदे प्रो. विजयपालसिंहो राजते। विभागेऽस्मिन् डॉ. श्यामलालसिंहः प्रोफेसरपदं वहन् विज्ञानसङ्कायस्य अध्यक्षपदभारमपि वहति। प्रो. श्यामलालसिंहेन अस्मिन् वर्षे बहुषु स्थानेषु विद्वत्सम्मेलनेषु भागो गृहीतः। अस्मिन् विभागे डॉ. वीरेन्द्र अरोड़ा, डॉ. विजयेन्द्र कुमार शर्मा, डॉ. महीपालसिंह, डॉ. गुलाटी प्रभृतयः कार्यं कुर्वन्ति।

भौतिकविज्ञानविभागः –डॉ. हरिश्चन्द्रग्रोवरः अध्यक्षपदमधितिष्ठति सम्प्रति अस्मिन्विभागे राष्ट्रियस्नातकभौतिकीपरीक्षा समायोजिता। शिलाङ्गवासिना डॉ. पी.एन. राममहोदयेन विभागे विशिष्टं व्याख्यानं दत्तम्। अस्मिन्विभागे डॉ. वाई.सिंह महोदयेन विद्वानतिथिरूपेण कार्यमकारि। डॉ. बी.पी. शुक्ल, डॉ. राजेन्द्र कुमार, डॉ. पी.पी. पाठक, डॉ. यशपालादयो विभागे कार्यव्यापृतास्सन्ति। विभागेऽभिनवा प्रयोगशाला

निर्मीयते।

रसायनविज्ञानविभागः –डॉ. कौशलकुमारो विभागाध्यक्षपदे विराजते। अस्मिन्विभागे नवीना प्रयोगशाला विनिर्मिता। अस्मिन् विभागे स्नातकोत्तर प्रमाणपत्रपाठ्यक्रमः प्रचलति। अनेन पाठ्यक्रमेण विभागस्य महती ख्यातिः प्रथिता। अस्य विभागस्य छात्राः शीघ्रमेव जीविकां लभन्ते। डॉ. ए.के. इन्द्रायणस्य शोधपत्रं 'एशियन जरनल ऑफ कैमिस्ट्री' पत्रिकायां प्रकाशितम्। अस्यैव विदुषः आकाशवाणीतः वार्त्ताः समये-समये प्रसरन्ति। डॉ. राजनीशदत्त कौशिकस्य निर्देशने त्रिभिश्छात्रैः लघुशोधप्रबन्धाः प्रस्तुताः। डॉ. श्रीकृष्णस्य निर्देशकत्वे छात्राः शोधकार्यं कुर्वन्ति। अस्मिन् विभागे प्रतिवर्षं प्रो. ओम्प्रकाश सिन्हा बलिदानदिवसः समायोज्यते। डॉ. इन्द्रायणस्य "फण्डामेण्टल्स इन कैमिस्ट्री" नामको ग्रन्थः प्रकाशनतामेति। गर्वस्यविषयोऽयमिन्द्रायणस्य नाम "इण्डियन सोलिडेरिटी काउन्सिल" पुरस्काराय प्रस्तावितम्।

कम्प्यूटर विज्ञानविभागः –विगतसप्तवर्षेभ्यः कम्प्यूटर विज्ञानविभागः कार्यं करोति। अस्यविभागस्याध्यक्षपदं डॉ. विनोदकुमारः अलङ्करोति। अत्र कर्मजीतभाटिया, सुनीलकुमार, दुर्गेशकुमारादयः प्रवक्तारः सन्ति। वेदव्रतद्विजेन्द्रपन्तौ तकनीकीसाहयकौ स्तः। अस्मिन् वर्षे विभागे नवीनपाठ्क्रमस्य समावेशः कृतः। विभागीयप्राध्यापकानां शोधलेखाः प्रकाशनाय प्रेषिताः। डॉ. विनोदकुमारः विभिन्नेषु शोधसम्मेलनेषु च भागं गृह्णाति। अस्मिन् वर्षे अलङ्कारसामान्यपाठ्यक्रमे कम्प्यूटरविषयस्य प्रावधानं कृतम्।

जीवविज्ञान सङ्कायः

वनस्पतिविज्ञानविभागः –डॉ. पुरुषोत्तमकौशिकः अध्यक्षपदमलङ्करोति। अस्मिन् विभागे डॉ. डी.के. माहेश्वरी प्रोफेसर पदभारं वहन् जीवविज्ञान सङ्कायस्याध्यक्षपदमपि अलङ्करोति। अस्मिन् विभागे डॉ. गङ्गाप्रसादगुप्त, डॉ. नवनीतौ कार्यनिरतौ स्तः। विभागेऽस्मिन् समये-समये विदुषां भाषणानि समायोज्यन्ते। शोधयोजनाप्यत्र प्रचलति। प्रो. डी.के. माहेश्वरी भारतस्यानेकैः विश्वविद्यालयैः विशिष्टभाषणाय आमन्त्रितस्तथैव जर्मनविश्वविद्यालयेनापि समाहूतः। प्रो. माहेश्वरी निर्देशने द्वाभ्यां छात्राभ्यां शोधकार्यं कृतम्।

जन्तुविज्ञानविभागः –सम्प्रति विभागे डॉ. ए.के. चोपड़ा अध्यक्षपदमलङ्करोति। प्रोफेसरपदभाग् डॉ. बी.डी. जोशी महोदयः विभागस्य समुचितामुन्नतिं करोति। अस्य विभागस्य विभिन्नेषु कार्यक्रमेषु महतीभूमिका दरीदृश्यते। अत्र शोधकार्यं सम्यक् प्रसरति। विभागे डॉ. तिलकराजसेठ, डॉ. दिनेशभट्ट, डॉ. देवराज खन्ना प्रभृतयः सन्ति कर्मासक्ताः। विभागे नियमानुसारं शोधपत्रिका प्रकाश्यते। विभागेऽस्मिन् प्राध्यापकानां बृहच्छोधयोजनाः प्रचलन्ति। अस्मिन् विभागे सद्भावना निबन्धप्रतियोगिता समायोजिता। राष्ट्रियसेवायोजना कार्यक्रमं डॉ. ए.के. चोपड़ा, डॉ. देवराजखन्नामहोदयौ चारुतया प्रचालयतः।

पुस्तकालयविभागः –गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालयस्य पुस्तकालयः देश-देशान्तरेभ्यः समागतानां शोधकर्तॄणामुत्कर्षस्य केन्द्रमस्ति। प्राच्यविद्यासम्बन्धिनः दुर्लभाः ग्रन्थाः अत्र सहजतया प्राप्यन्ते। अस्मिन् पुस्तकालये वैदिक साहित्य, संस्कृत साहित्य, दर्शनशास्त्रादीनां हस्तलिखिताः ग्रन्थाः द्रष्टुं शक्यन्ते। अत्र भारतवर्षस्य सर्वासां भाषाणां पत्रिकाः समागच्छन्ति। पुस्तकालये निर्धनमेधाविछात्राणां कृते जीविकाव्यवस्थापि प्रचलति। भूतपूर्वकुलपतेराचार्यप्रियव्रतस्य नाम्ना त्रिसहस्राधिकाः ग्रन्थाः पुस्तकालये उपहारीकृताः परिवार जनैः। डॉ. जगदीशविद्यालङ्कारस्य आध्यक्ष्ये पुस्तकालयः दिने-दिने उन्नतिपथमधिरोहति। अस्मिन् वर्षे श्रीसत्यदेव विद्यालङ्कारलिखितः 'स्वामिश्रद्धानन्दाख्यो' ग्रन्थः पुनरपि प्रकाश्यते।

पुरातत्त्वसंग्रहालयः –पुरातत्त्वसंग्रहालये संगृहीतानां पाण्डुलिपीनां परिरक्षणाय प्रकाशनाय च केन्द्रीय मानव संसाधन विकासमन्त्रालयेन अनुदानं दत्तम्। संग्रहालये नैकाः प्राचीनाः मुद्राश्च सन्ति। परसहस्राः जनाः संग्रहालयं द्रष्टुं गुरुकुलमुपागताः। पाण्डुलिपिग्रन्थानां परिरक्षणाय संरक्षरणयन्त्रमपि संग्रहालये विद्यते।

कम्प्यूटरकेन्द्रम्–अस्माकं विश्वविद्यालये कम्प्यूटरकेन्द्रं प्रचलति। कम्प्यूटर-केन्द्राध्यक्षः श्री दिनेशविश्नोई अस्ति। श्री अचलगोयलः प्रणालीविश्लेषकपदे कार्यं करोति। श्री मनोजकुमार, श्री महेन्द्रअसवाल, श्री अरुणकुमार, श्री शशिकान्त, श्री राजेन्द्रादयः केन्द्राभ्युदये साहाय्यं कुर्वन्ति। अस्मिन् वर्षे कम्प्यूटरकेन्द्रस्य विस्तारोऽपि जातः। कम्प्यूटर उपकरणानि अस्मिन् वर्षे बहूनि क्रीतानि।

विश्वविद्यालयस्य बहुधा विस्तारं कर्तुं भवननिर्माणे रुचिविशेषः प्रादुर्भवति। मुख्यकार्यालयस्य पूर्वस्यां दिशि नूतनं भवनं निर्मितम्। अस्मिन्नेव वर्षे मानविकी सङ्कायस्य भवनस्य निर्मितिर्जाता। शिक्षाविस्तारं कर्तुं महिलाछात्राणां कृते पृथक् रूपेण महिलाविद्यालयः प्रचलति।

प्रियस्नातकाः ! येषां शाश्वतजीवनमूल्यानां रक्षणाय, राष्ट्रियैकतायाः, अखण्डतायाः, चरित्रस्य, धार्मिकसद्भावस्य च परिरक्षणाय गुरुकुलीयशिक्षापद्धतिरुद्भाविता सञ्जीविता च। तानि जीवनमूल्यानि भवतां जीवने स्थितिं विधाय प्रतिपदमुन्नतिं प्रदास्यन्ति। यद्यपि नात्र संशयो विद्यते यद् वर्त्तमाने काले जटिलाः समस्याः प्रादुर्भवन्ति। परं भवतामात्मविश्वासो गुरुजनानामाशीर्वादेन सह निश्चितं जीवनमुन्नेष्यति। युष्माकं जीवनं समुखं कर्त्तुं परेशं महेशं प्रार्थये।

विश्वविद्यालयस्य सर्वाङ्गीणविकासे अधिकारिणां, शिक्षाकानां, कर्मचारिणां, ब्रह्मचारिणां अभिभावकानाञ्च सहयोग एव प्रशस्यते। कुलाधिपतिश्रीसूर्यदेवमहोदयानां, श्रीमहावीरसिंह परिद्रष्टृमहोदयानां निर्देशनेऽसौ विश्वविद्यालयः प्रगतिपथमारोहति।

हे महाजनाः सज्जनाः !

नूनमद्यास्माकं सौभाग्योदयो जातो यदस्माकं मध्ये भारतस्य लोकसभाध्यक्षाः

श्रीमन्तः शिवराजपाटिल महोदयाः दीक्षान्तभाषणाय शोभन्ते। एषां सम्पूर्णं जीवनं राष्ट्राय समर्पितं विद्यते। राजनीतिक्षेत्रे भवतां कार्यपद्धतिः वृक्षच्छायेव समेषां परितापहर्त्री विद्यते। भवता गुरुकुलमुपेत्य गुरुकुलीयशिक्षां प्रति निजानुरागः प्रकटितः। गुरुकुलमध्ये भवन्तमालोक्य सर्वेऽपि कुलवासिनो वयं धन्याः। भवताम् अपरिमितेन साहाय्येन विश्वविद्यालयस्य परिवृद्धिः प्रतिष्ठा च प्रवर्त्स्येते।

अन्ते चाहं समुपस्थितानां सर्वेषां महानुभावानां धन्यवादं व्याहरन् सकलजगज्जेगीयमानं विश्वनाथमभ्यर्थये–

'काले वर्षतु पर्जन्यः पृथिवी शस्यशालिनी।
देशोऽयं क्षोभरहितः सज्जनाः सन्तु निर्भयाः।।'

1996–समय आ गया है, हम अपनी दिशा निश्चित करें

(कालोऽयं समागतः दिशं विनिश्चेतुम्)

❑ डॉ. धर्मपाल

उपहवरे गिरीणां संगमे च नदीनाह् धिया विप्रोऽजायत।

(यजुर्वेद, 26/15)

श्रध्देयाः संन्यासिनः, मान्याः कुलाधिपतयः श्रीसूर्यदेव महाभागाः, सम्मान्याः परिद्रष्टारो न्याय मूर्त्तयः श्री महावीर सिंह महोदयाः दीक्षान्त भाषणाय मुख्यातिथिरुपेण समुपस्थिताः साहित्य पयोनिधि प्रस्यूत सुधास्वादसरसस्वान्ताः चेक गणराज्यस्य राजदूतपदमलङ्कुर्वाणाः महामहिम डॉ. ओदोलेन स्मेकल महोदयाः, सार्वदेशिकार्य प्रतिनिधि सभा प्रधान पदभाजः श्री रामचन्द्र वन्देमातरम् महाभागाः, मञ्चस्थाः, विद्वांसः, शिक्षाशास्त्रिणः, आर्यनेतारो, नवस्नातकाः, शिष्ट-कार्यपरिषदोः सदस्याः, विश्वविद्यालयस्य पंचनवतितमेदीक्षान्तसमारोहावसरे समागतानां मान्यानां महानुभावानां स्वागतं व्याहरन् अमन्दमानन्दमनुभवामि। समुपस्थितानां तत्र भवतां दर्शनेन काऽप्यनिर्वचनीयः हर्षप्रकर्षः समुदेति नश्चेतसि।

हे प्रियस्नातकाः। अस्याः विशंशताब्द्याः प्रथमे वर्षे पुण्यश्लोकेन स्वामि श्रद्धानन्देन मन्दाकिन्याः पवित्रे तटे गुरुकुलमिदं संस्थापितम्। एतस्मिन् गुरुकुले विद्यापारदृश्वान, वेदमनीषिणः, काव्यकोविदाः, वाग्मिनः, लेखकाः, देशप्रेमसिक्ताः, नेतारः, अनेके स्नातकाः उपाधिवन्तः समभवन्, तेषु लब्धकीर्त्तिभिः पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति, आचार्य अभयदेव, स्वामी समर्पणानन्द, आचार्य सत्यव्रत, डॉ. सत्यकेतु, आचार्य प्रियव्रत, पं. चन्द्रगुप्त, डॉ. रामनाथ वेदालङ्कार, स्वामी धर्मानन्द प्रभृतिभिः गुरुकुलस्य कीर्ति सर्वासु दिक्षु प्रसारिता। अस्माकं प्रत्ययोऽस्ति द्रढीयान् यन्नवाः स्नातका इत उपाधिं गृहीत्वां विश्वविद्यालयस्य यशोगाथां गायं गायं स्वकर्मसु दक्षतां प्रकटयन्तः प्रतिष्ठाम् आप्स्यन्ति।

हे आर्यबान्धवाः। अस्य विश्वविद्यालयस्य प्रगतियात्रायाः संक्षिप्तं प्रगतिवृत्तं भवतां श्रवणगोचरतां यातु इत्येव विमृश्य दीक्षान्तसमारोहावसरेसमासेनोदीर्यते। यद्यपि

अर्थाभावेन अन्येश्च प्रत्यवायैः समुन्नतिः किञ्चित् प्रबाध्यते तथापि भवतां स्नेहेन न हीयते।

साम्प्रतममुष्मिन् विश्वविद्यालये चत्वारः सङ्काया सन्ति। एकश्च कन्या गुरुकुल महाविद्यालयः बालिकानाम् उच्चशिक्षायै प्रयतमानोऽस्ति। देहरादून नगरे विश्वविद्यालयस्य अन्यस्मिन् परिसरे महिलाशिक्षा व्यवस्था प्रचलति। प्रवर्त्तमानानां विभागानां विवरणं समासतो प्रस्तूयते।

प्राच्यविद्या सङ्कायः

वेदविभागः –वैदिकज्ञानविज्ञानान्वेषणे दीक्षितोऽयं विभागो वैदिक ज्ञान प्रसारे सदासन्नद्धोवर्त्तते-अस्मिन् विभागे इदानीं डॉ. मनुदेवबन्धोरध्यक्षत्वे डॉ. रूपकिशोर शास्त्री, डॉ. दिनेशचन्द्रः, डॉ. सत्यदेवनिगमालङ्कारश्च अध्यापननिरताः सन्ति।

जनवरी मासे आचार्य रामप्रसाद वेदालङ्कार महोदयोऽनेकवर्षेभ्यः सर्ववेद्य वेदविद्या प्रदानेन प्रशासन पाटवेन च विश्वविद्यालयस्य सेवां कृत्वा सेवानिवृत्तः।

सत्रेऽस्मिन् डॉ. ओम्प्रकाश पाण्डेय महोदयस्य, डॉ. अभेदानन्द भट्टाचार्य महोदयस्य च विशिष्टं व्याख्यानमभवत्।

डॉ. मनुदेवबन्धुः डॉ. दिनेशचन्द्रश्च कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालये समायोजित वैदिक संगोष्ठ्यां शोधपत्रे पठितवन्तौ। अन्ये चापि प्राध्यापकाः वैदिक सम्मेलनेषु भागं गृहीतवन्तः।

डॉ. रूपकिशोर शास्त्री वैदिकवाङ्मयनिर्वचन कोष निर्माणे संलग्नः डॉ. दिनेशचन्द्रः, वैदिक उपमाकोश इत्याख्यां शोधयोजनां विश्वविद्यालयानुदानाय प्रेपितवान्। अनेके छात्रा इदानीं शोधकार्यरताः।

संस्कृतविभागः –विभागोऽयं संस्कृत साहित्य सन्निहित विविधज्ञानविज्ञान प्रसारे सततमग्रगो वर्त्तते संस्कृत साहित्य विभागे शिक्षां प्राप्य अत्रत्याः स्नातका विभिन्नेषुविश्वविद्यालयेषु ससम्मानं कार्यरताः सन्ति।

विभागे प्रो. वेदप्रकाश शास्त्रिणः प्रोफेसरपदे डॉ. महावीरः, डॉ. सोमदेव शतांशुः, डॉ. रामप्रकाश शर्मा रीडरपदे प्रतिष्ठिताः सन्ति। सम्प्रति चक्रानुसारं, डॉ. सोमदेवः अध्यक्षपद भारं वहति।

अस्मिन् शिक्षासत्रे स्नातकोत्तर कक्षासु भारतस्य सप्तराज्यानां नेपाल देशस्य च छात्राः ज्ञानमर्जयन्ति।

भारत सर्वकारस्य संस्कृत शिक्षापरामर्शकपदम् अलङ्कृतचरस्य डॉ. रामकृष्ण शर्मणो विशिष्टं व्याख्यानम् समायोजितम्। अस्य विभागस्य तत्त्वावधाने महर्षिस्वामिदयानन्द जन्मोत्सवः समायोजितः।

अस्मिन् वर्षे संस्कृत विभागीयाः छात्राः विविधविश्वविद्यालयैरायोजित विभिन्न प्रतियोगितासु पुरस्कृताः।

प्रो. वेदप्रकाश शास्त्री महोदयोऽद्यत्वे प्राच्यविद्यासङ्कायाध्यक्षत्वेन सह विश्वविद्यालस्य आचार्योपकुलपतिपदमावहति। नैकान् विश्वविद्यालयान् विशेषज्ञत्वेन च भवान् गतवान्।

अस्मिन् सत्रे डॉ. महावीर शास्त्रिणः निर्देशकत्वे चत्वार छात्राः पी-एच.डी. उपाधिमधिगच्छन्ति, सप्त छात्राः शोधकार्यरताः सन्ति। एते कानपुर विश्वविद्यालयेन संस्कृत पाठ्यक्रम समितौ विषय विशेषज्ञत्वेन सादरं निमन्त्रिताः। अस्य विश्वविद्यालयस्य शिक्षापटले स्नातक प्रतिनिधि-रूपेण चयनिताः।

डॉ. सोमदेव शतांशुः स्वामिसमर्पणानन्द वैदिक शोधसंस्थानेन समायोजित शोधगोष्ठीपु शोधपत्रं प्रस्तुतवान्। इदानीं डॉ० शतांशोः निर्देशने त्रयश्छात्राः शोधकार्यरताः सन्ति।

डॉ. रामप्रकाश शर्मणो निर्देशकत्वेऽप्यनेके छात्राः शोधकार्यं कुर्वन्ति। डॉ. ब्रह्मदेवः कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालये समायोजित शोध संगोष्ठ्यां शोधपत्रं प्रस्तुतवान्।

श्रद्धानन्द वैदिक शोध संस्थानम्—अस्य संस्थानस्य निर्देशकपदं डॉ. भारतभूषण विद्यालङ्कारोऽलङ्करोति। अस्मिन् वर्षे संस्थानेन वैदिकपर्यावरणविषयकं पुस्तक प्रकाशितम्। 'स्वामी श्रद्धानन्द समग्र मूल्यांकन' इत्याख्यं पुस्तकञ्चापि नूनमचिरमेष्यति दृग्गोचरताम्।

इदंसंस्थानम् पुरातत्त्वसंग्रहालयस्य सहयोगेन पुरातत्त्व सम्बन्धिनी मेकां शोधयोजनां प्रेषितवान्। वैदिक वनस्पतीनां सूक्ष्मजैविकं चिकित्साशास्त्रीयमध्ययनम् इत्याख्या शोधयोजना चापि प्रेषिता।

दर्शनविभागः —इदानीम् अस्मिन् विभागे त्रयोऽध्यापकाः कार्यरताः। डॉ. त्रिलोक चन्द्र विभागाध्यक्षः प्रवाचकपदं, डॉ. विजयपाल शास्त्री प्रवाचकपद, डॉ. यू.एस. बिष्टश्च प्रवक्तृपदमलङ्करोति। डॉ. जयदेव वेदालङ्कारश्च कुलसचिवपदभारं वहन्नपि विभागे विद्याप्रदानरतः।

अस्मिन् वर्षे दर्शन विभागः 'इण्डियन फिलोसफिकल कांग्रेस' इत्याख्यसंगठनस्य सप्ततितमम् अधिवेशनं सगौरवं समायोजितवान्। अस्मिन् भारतवर्षस्य शतत्रयदार्शनिकाः संगताः। डॉ. विष्टः अस्य स्थानीय सचिवत्वेन कार्यमकरोत्।

डॉ. त्रिलोकचन्द्रेन 'ब्रह्मचर्य का वैज्ञानिक स्वरूप' इत्याख्यं पुस्तकं प्रकाशितम्। डॉ. विजयपाल शास्त्रिणो निर्देशकत्वे द्वौ छात्रौ पी-एच.डी. उपाधिम् अलभताम्।

डॉ. विष्टलिखिते 1. द कान्सेप्ट ऑफ लैंग्वेज 2. द जैना थ्योरी ऑफ रिअलिटी एण्ड नालेज इत्याख्ये पुस्तके प्रकाशिते। अनेकानिशोधपत्राणि च प्रकाशितानि।

योगविभागः —डॉ. ईश्वर भारद्वाजस्य सन्निर्देशने योग विभागोऽनुदिनमग्रेसरति। विभागेऽस्मिन् एकवर्षीयः डिप्लोमा पाठ्यक्रमः, स्नातकस्नातकोत्तर कक्षासु च योगाध्यापनम्ः प्रचरति। डॉ. भारद्वाजोऽस्मिन् सत्रे अनेकेषु विश्वविद्यालयेषु विषय विशेषज्ञत्वेन्न आहूतः। भवतां योगस्वास्थ्यविषयिणी वार्त्ता आकाशवाण्या प्रसारिता।

चत्वारश छात्राः इदानीं शोधरताः।

इतिहासविभागः –अस्मिन् विभागे डॉ. श्यामनारायणसिंहः प्रोफेसरपदे डॉ. कश्मीर सिंहो रीडर पदे डॉ. राकेश कुमार, वरिष्ठ प्रवक्तृपदे अध्यापनरताः। समेषां प्राध्यापकानां निर्देशने छात्रैः शोधकार्यणि क्रियन्ते। अस्मिन् सत्रे डॉ. राकेश शर्मणः 'प्राचीन भारते धार्मिक सहिष्णुता' इत्याख्या लघ्वी शोधपरियोजना विश्वविद्यालये स्वीकृता। सम्प्रति प्रो. वेदप्रकाश शास्त्री विभागाध्यक्षीय कार्यं निर्वहति।

पुरातत्त्वसंग्रहालयः –अस्मिन् सत्रे पुरातत्त्वसंग्रहालये आद्य ऐतिहासिक संस्कृतिकक्षः सन्नियोजितः। अत्र हि सिन्धुसभ्यतायाः, गैरिकरागमृद् भाण्डताम्रनिधिसभ्यतायाः चित्रितधूसरमृद् भाण्डसभ्यतायाश्च अवशेषाः प्रदर्शनपटले चित्रिताः।

श्री शिवराज पाटिल, मदनलाल खुराना, राजेन्द्र गुप्तादयो नेतारः संग्रहालयम् अमुम् प्रेक्ष्य प्राशसन्। संग्रहालयस्य विकासार्थ (क्यूरेटर) डॉ. सूर्यकान्त श्रीवास्तवेनैका शोधयोजना सर्वकारम्प्रति प्रेपिता।

मानविकी सङ्कायः

मनोविज्ञानविभागः –अस्मिन् विभागे चत्वारः प्राध्यापकाः वर्त्तन्ते। तत्र च डॉ. ओ.पी. मिश्र, प्रोफेसरपदभाग् डॉ. एस.सी. धमीजा, अध्यक्षपदमावहति डॉ. एस.के. श्रीवास्तव, डॉ. चन्द्रप्रकाश खोखर महोदयौ प्रवक्तपदभाजौ।

विभागेन विगतशिक्षासत्रे प्रारब्धः पी.एम.आई.आर.पी.जी. डिप्लोमा इति पाठ्यक्रमः साफल्येन द्वितीयवर्षे प्रचरति। अस्य पाठ्यक्रमस्य द्वितीयवर्षीयाश्छात्राः शैक्षणिकयात्रायै 'गोआ' नगरीं प्रतिगताः। मनोविज्ञान विषयस्य छात्रेभ्य एका संगणक प्रयोगशालापि कार्यव्यापृता।

सर्वेऽपि विभागीय प्राध्यापकाः शोधकर्मणि संलग्नाः सन्ति। इदानीमस्मिन् विभागे विंशतिप्रायाः छात्राः शोधकार्ये व्यापृताः।

परामर्श कार्य नियुक्ति विभागः –विश्वविद्यालयेऽस्मिन् वर्षे Counceling and Replacement Dept. परामर्श एवं कार्य नियुक्ति विभागोऽपि संस्थापितः। छात्रेभ्यो व्यावसायिक परामर्श प्रदानं कार्यनियुक्तिश्चास्य प्रयोजनम्। डॉ. ओम्प्रकाश मिश्रोऽस्य विभागस्य निर्देशको वर्तते।

हिन्दीविभागः –साम्प्रतं हिन्दी विभागे पञ्चप्राध्यापकाः कार्यरताः डॉ. विष्णुदत्त राकेश प्रोफेसरपदं, डॉ. ज्ञानचन्द रावलोऽध्यक्षपदं, रीडर पदंच, डॉ. सन्तराम वैश्व, डॉ. भगवान् देवाश्च रीडरपदमलङ्कुर्वन्ति। डॉ. कमलकान्त बुधकरः प्रवक्तृपदे कार्यरतः।

अस्मिन् शिक्षासत्रे विविध विश्वविद्यालयेभ्योऽनेके विद्वांसः व्याख्यानादि शैक्षणिक-कार्यार्थमायाताः ते हि डॉ. हरमहेन्द्रसिंह बेरी, डॉ. महेन्द्रकुमार, डॉ. महेन्द्रनाथादयः।

हिन्दी विभागे हिन्दी पत्रकारिता–स्नातकोत्तर डिप्लोमापाठ्यक्रमः प्रचरति डॉ.

कमलकान्त बुधकरस्य नेतृत्वे पत्रकार छात्राः प्रशिक्षण यात्रायै दिल्ली, इन्दौर, भोपाल नगरीगताः। तत्र च विशिष्ट पत्रकारैः सह सम्भाषणं विचारविनिमयञ्च अकुर्वन्।

डॉ. विष्णुदत्त राकेशस्य निर्देशनेऽनेके छात्राः शोधरताः। एतस्मात् शिक्षासत्रात् डॉ. ज्ञानचन्द रावलो विभागस्य अध्यक्षपदं निर्वहति। डॉ. सन्तराम वैश्योऽनेकेषु शोधसंगोष्ठीषु भागं गृहीतवान्। डॉ. भगवानूदेव पाण्डेयो वैज्ञानिक एवं तकनीकी इत्याख्यसंस्थानेन आयोजितायां कार्यशालायां सम्मिलितः। डॉ. बुधकरोऽपि विविधासु गोष्ठीषु भागं गृहीतवान्। असौ अम्बालास्थ प्रभुप्रेमी संघेन 'ज्ञानभारती' पुरस्कृत्या सभाजितः।

अङ्ग्रेजीविभागः–विभागेऽस्मिन् डॉ. नारायण शर्मणोऽध्यक्षत्वे, डॉ. सदाशिव भगत, डॉ. श्रवण कुमार शर्मा, डॉ. अम्बुज शर्मा, डॉ. कृष्ण अवतार अग्रवाल इत्येते प्राध्यापकाः अध्यापनरताः।

विभागेन स्नातककक्षासु व्यवसायात्मकं आङ्ग्लशिक्षणम् वैकल्पिकपत्रत्वेन सञ्चाल्यते। एतत्प्रशिक्षणाय डॉ. श्रवण कुमार शर्मा हैदरबादस्थं सी.आई.एल. संस्थानं फैकेल्टी एनरिचमेण्ट-योजनायां कैनेडा देशमपि गतवान्। डॉ. श्रवण कुमारेण 'एलियनेशन इन दी पोएट्री ऑफ मैथ्यू आर्नलड' इत्याख्यं शोधपत्रं प्रकाशितम्। अपरेषाम् प्राध्यापकानां निर्देशनेऽनेके शोधछात्राः शोधकर्मणि संलग्नाः। डॉ. अग्रवाल महोदयस्य एकं शोधपत्रं प्रकाशितम्। डॉ. नारायण शर्मणोऽनेके शोधलेखाः प्रकाशिताः। विविधविश्वविद्यालयैर्भवान् विशेषज्ञत्वेनामन्त्रितः।

प्रौढ़ सततशिक्षा प्रसारविभागश्चः –अस्मिन् विभागे डॉ. आर.डी. शर्मा, डॉ. जसवीर सिंह मलिकौ कार्यरतौ। डॉ. शर्मा अस्य विभागस्य अध्यक्षो वर्त्तते। एतेन विभागेन भारतीय प्रौढ शिक्षासंघस्य सहयोगेन केन्द्रिय क्षेत्रीय प्रौढशिक्षाधिवेशनम् आयोजितम्। 'जनसंख्या एवं पर्यावरण', 'जनसंख्या एवं स्वास्थ्य' इति पुस्तकद्वयं विभागेन प्रकाशितम्। निकटस्थयग्राम्यक्षेत्रेषु साक्षरता व्यावसायिक प्रशिक्षणकार्यक्रमाः सञ्चालिताः।

विज्ञान सङ्कायः

गणितविभागः –डॉ. वीरेन्द्र अरोड़ा महोदयः गणित विभागस्य अध्यक्षपदभारं वहति। विभागेऽस्मिन् डॉ. एस.एल. सिंहः प्रोफेसर पदभारं वहन् विज्ञान संकायस्य अध्यक्ष पदमपि अलङ्करोति। अनेन विभागेन वर्षेऽस्मिन् 'Vedic geomotry and its Relevance to Science and Technology' विषयमधिकृत्य राष्ट्रीय संगोष्ठी समायोजिता। अस्यां संगोष्ठ्यां बहुभिः विद्वद्भिः शोधपत्राणि पठितानि। विभागे राजस्थान विश्वविद्यालयस्य प्रो. एम.सी. गुप्ता महोदयस्य, दैनिक जीवने गणितस्य प्रयोगः' विषये अतीव लोकप्रियं व्याख्यानमभूत्। प्रो. एस.एल. सिंह महोदयः स्लावाकियां, पोलैण्ड देशेषु गत्वा वैदिक ज्यामिति विषये पाण्डित्य पूर्णानि शोधपत्राणि

अपठत्। एते अनेकाभिः संस्थाभिः समये-समये सादरम् अभिनन्दिताः। डॉ. अरोड़ा महोदयस्य शोधपत्राणि अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकासु प्रकाशितानि अभवन्। अस्मिन्नेव विभागे कार्यरताः डॉ. विजयेन्द्र कुमार शर्मा, डॉ. महीपाल, डॉ. गुलाटी, प्रभृतयः नैकेषु विश्वविद्यालयेषु समायोजित शोध संगोष्ठिषु शोधपत्राणि प्रस्तुवन्ति। डॉ. रमेशचन्द्र, श्री विवेक गोयल, श्री राकेश कुमार गुप्ता आदि शिक्षकाः स्वकर्मणि निरताः सन्ति।

रसायनविज्ञानविभागः —विभागेऽस्मिन् अधीयानानां छात्राणां संख्या प्रतिवर्षम् एधमाना वर्तते। डॉ. आर.डी. कौशिकः सम्प्रति अध्यक्षपदे प्रतिष्ठितोऽस्ति। विभागे प्रवर्त्तमानः स्नातकोत्तरीयः पाठ्यक्रमः व्यवसायोन्मुखी अर्वाचीनश्चास्ति, एतस्मात् कारणात् ये छात्रा अत्राध्ययननिरताः ते राष्ट्रीयस्तरेषु प्रतिष्ठानेषु प्रतिष्ठिताः भवन्ति।

रसायनशास्त्रे डॉ. आर.के. पालीवाल, डॉ. ए.के. इन्द्रायण, डॉ. कौशल कुमार, डॉ. आर.डी. कौशिक तथा डॉ. श्रीकृष्ण महोदयानां निर्देशने स्नातकोत्तर कक्षायाः छात्राः लघुशोध प्रबन्धान् प्रस्तुतवन्तः। डॉ. इन्द्रायण महोदयस्य निर्देशने एकेन छात्रेण पी-एच.डी. उपाध्यर्थं शोधप्रबन्धः लिखितः। अनेन महानुभावेन आकाशवाण्याः कार्यक्रमस्यैकस्य संयोजनं व्यधायि। डॉ. कौशल कुमारस्य एकं शोधपत्रं जापान देशीय शोधपत्रिकायां प्रकाशितमभवत्।

भौतिकीविभागः —सम्प्रति डॉ. राजेन्द्रकुमारस्य अध्यक्षत्वे विभागोऽयं प्रगतिपथमारोहति विभागेऽस्मिन् श्री हरिश्चन्द्र ग्रोवर, डॉ. बुद्धिप्रकाश शुक्लः, डॉ. राजेन्द्र कुमारश्च त्रयोऽपि रीडरपदभाजः सन्ति। डॉ. पी.पी. पाठकः वरिष्ठ प्रवक्तृपदे प्रतिष्ठितो वर्तते। अस्मिन् वर्षे पञ्च छात्राणां शोध विषयाः पी-एच.डी. उपाध्यर्थं स्वीकृताः। भौतिकी विभागे स्नातकोत्तर कक्षायां 'वैदिक भौतिकी' पाठ्यक्रमो विशिष्टरूपेण प्रचरति।

डॉ. बी.पी. शुक्ल महोदयस्य, डॉ. पी.पी. पाठकस्य च शोधपत्राणि शोध संगोष्ठीसु स्वीकृतानि।

कम्प्यूटरविभागः —आधुनिक काले संगणक विज्ञानस्य महत्त्वं सर्वैरेव स्वीक्रियते। प्राच्यविद्यासंरक्षणपरायणेऽस्मिन् विश्वविद्यालये दश वर्षेभ्यः संगणक विज्ञानमपि उच्चस्तरेण अध्याप्यते। एम.सी.ए. नामा सुविख्यातः पाठ्यक्रमोऽस्य विश्वविद्यालयस्य गौरवं प्रख्यापयाति। डॉ. विनोदकुमार शर्मणः आध्यक्ष्ये विभागः नितरामुन्नतिपथमारोहति। विभागेऽस्मिन् श्री कर्मजीत भाटिया, श्री सुनीलकुमारश्च द्वावपि स्थायी प्राध्यापक रुपेण कार्यं कुरुतः। अन्ये पञ्च अस्थायी प्राध्यापका अपि अहर्निश सेवमानाः तिष्ठन्ति। विभागेन सुदूर शिक्षान्तर्गत स्नातकस्तरीय कम्प्यूटर पाठ्यक्रमः प्रारब्धः यः जनैः भृशं प्रशंसितः।

श्री एम.पी. सिंहस्य, पी.के. यादवस्य च सहलेखने डॉ. विनोद शर्मणा बहूनि शोधपत्राणि विलिख्य नैकासु विख्यातासु पत्रिकासु संप्रेषितानि शोध संगोष्ठीषु च प्रस्तुतानि। डॉ. शर्मा हैदराबाद नगरे 'कम्प्यूटर सोसायटी ऑफ इण्डिया' संस्थया

नवम्बर मासे आयोजिते सम्मेलने तथा च कोयम्बटूर नगरे 'सिस्टम सोसायटी ऑफ इण्डिया' प्रतिष्ठानेन समायोजिते सम्मेलने ससम्मानं शोधपत्राणि प्रास्तौत्। डॉ. शर्मणः निर्देशने श्री प्रदीप कुमारेण शोधप्रबन्धः प्रस्तुतः। अन्यौ द्वौ छात्रौ शोधकर्मनिरतौ स्तः। अनेन विभागेन समये-समये डॉ. सुधीर कैकर, नई दिल्ली; डॉ. आर.के. गुप्ता, रुड़की; डॉ. एस.पी. शर्मा, रुड़की; डॉ. आर.सी. जोशी, रुड़की; डॉ. आशीष सिन्हा, वनस्थली विद्यापीठ; डॉ. एस.पी. सिंह, मैमोरियल वि.वि. कनाडा; प्रभृतयः लब्धकीर्त्तयः विद्वांसः व्याख्यानाय सादरं निमन्त्रिताः। विभागीय पुस्तकालयः श्री सुनीलकुमारस्य निर्देशने दिने-दिने प्रतनुते। अस्मिन् विभागे संगणक विषयस्य विविधानि एक सहस्रमितानि पुस्तकानि अध्येतृणां लाभाय वर्तन्ते। एवं विभागोऽयम् अस्य विश्वविद्यालयस्य कीर्तिं विस्तारयति।

कम्प्यूटर केन्द्रम्–विश्वविद्यालयानुदान आयोगसहाय्येन अत्र कम्प्यूटर केन्द्रमपि स्थापितमस्ति। श्री दिनेशकुमार विश्नोई महोदयस्य अध्यक्षतायां, श्री मनोजकुमार, श्री महेन्द्र असवाल, श्री शशिकान्त, श्री राजेन्द्र ऋषि शर्मा, श्री राजीव गुप्ता, श्री पवनीशादीनां सहाय्येन केन्द्रं प्रगतिपथमारोहति। अस्मिन् केन्द्रे बहूनि आधुनिकोपकरणानि अस्य गौरवं वर्धयन्ति। श्री दिनेश महोदयः शोधपत्रं जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालयस्य पत्रिकायां प्रकाशनार्थं प्रेपितवान्। श्री महेन्द्र सिंहेन गणितविभागे शोधपत्रं पठितम्। श्री मनोज कुमारेण पुस्तकालयस्य कम्प्यूटरीकरणं क्रियते। आगामिनि सत्रे विश्वविद्यालयीय सदस्यानां कृते कम्प्यूटर प्रशिक्षणस्य योजना निर्मिता।

जीवविज्ञान सङ्कायः

वनस्पतिविज्ञानविभागः –डॉ. पुरुषोत्तम कौशिकः अध्यक्षपदमलङ्करोति। अस्मिन् विभागे डॉ. डी.के. माहेश्वरी प्रोफेसर पदभारं वहन् जीवविज्ञान सङ्कायस्याध्यक्ष पदमप्यलङ्करोति। अस्मिन् विभागे डॉ. गङ्गाप्रसाद गुप्तः, डॉ. नवनीतश्च अध्यापन कर्मणि निरतौ स्तः। प्रो. माहेश्वरी महोदया जर्मनीस्थ उल्म विश्वविद्यालयेन एकस्मै मासाय विजिटिंग प्रोफेसर रुपेण सादरं निमन्त्रिताः। भारत सर्वकारेण चापि अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक विनिमय कार्यक्रमे जर्मनीदेशं प्रति गन्तुम् एते चयनिताः। अस्मिन्नेव सत्रे माहेश्वरी महोदयाः न्यूयार्क एकेडेमी ऑफ साइंसेज संस्थायाः सदस्यत्वेन नामिताः। नेपालस्य त्रिभुन विश्वविद्यालये भवद्भिः व्याख्यानं प्रदत्तम्। विभागाध्यक्षः डॉ. कौशिक महोदयोऽपि अनेकेषु देशेषु सादरं निमन्त्र्यते। डॉ. कौशिकस्य वैज्ञानिक कार्यक्रमः दूरदर्शने प्रसारितोऽभूत्। कौशिक महोदयः बहुभिः संस्थानैः शोध-संगोष्ठिषु सादरं निमन्त्रितः भारतस्य अनेकेषु विश्वविद्यालयेषु, पुनश्चर्या पाठ्यक्रमेषु च एतेषां वैदुष्यपूर्णानि व्याखनानि आयोज्यन्ते। विभागस्थाः सर्वेऽपि उपाध्याया उच्चशोधकर्मणिनिरताः सन्ति। डॉ. कौशिकः तथा च डॉ. माहेश्वरी उभावपि विभिन्नेपु विश्वविद्यालयेषु विषयविशेषज्ञत्वेन सादरं मानितौ।

जन्तुविज्ञान, पर्यावरणविज्ञानविभागश्च—गौरवास्पदमिदं यत् विश्वविद्यालयानुदान आयोगेन विभागेऽस्मिन् पर्यावरण विज्ञान तथा च कम्प्यूटर एप्लीकेशन पाठ्यक्रम सञ्चालनाय चत्वारिंशल्लक्षपरिमितम् अनुदानं स्वीकृतम्। इमं पाठ्यक्रममुन्नेतुं प्रो. बी.डी. जोशी, डॉ. ए.के. चोपड़ा महोदयौ अहर्निशं प्रयतमानौ दृश्येते। पर्यावरण विज्ञानस्थ छात्राणां लाभाय अस्मिन् वर्षे अनेकेभ्यः विश्वविद्यालयेभ्यः विषय पारंगताः विद्वांसः विभागेन सादरं निमन्त्रिताः। अस्य विशिष्टस्य पाठ्यक्रमस्य सञ्चालनाय विश्वविद्यालयेन डॉ. दिनेश भट्टः रीडर पदे, डॉ. पी.सी. जोशी च प्राध्यापके पदे नियुक्तौ।

अक्तूबर मासे 'इन्डियन एकेडमी ऑफ इनवायरनमेंटल साइंसेस' संस्थायाः सहयोगेन विभागोऽयं ''पर्यावरण परिवर्तनस्य जैविक विविधतायां प्रभावः'' विषये राष्ट्रीयसम्मेलनम् आयोजितवान्। अस्यां संगोष्ठयां पंचविंशति वैज्ञानिकाः संप्राप्ताः। जम्मूविश्वविद्यालयस्य कुलपतिः प्रो. मल्होत्रा विशिष्टातिथिपदं समलङ्करोत्। अनेन विभागेन नव वर्षेभ्यः 'Himalayan Journal of Environment & Zoology' नाम्नो पत्रिका नियमेन प्रकाश्यते या खलु शिक्षा जगति भृशं प्रशंस्यते।

अस्य विभागस्य प्रोफेसर पदे प्रतिष्ठितस्य डॉ. बी.डी. जोशी महोदयस्य निर्देशने सन्त्यनेके छात्राः शोधरताः। डॉ. जोशी विविधेषु विश्वविद्यालयेषु विषयविशेषज्ञत्वेन सादरं निमन्त्रितः। असौ बहवीनां संस्थानां मानद सदस्यरूपेणापि कार्यं करोति।

विभागाध्यक्षस्य डॉ. ए.के. चोपड़ा महोदयस्य शोधपत्राणि विशिष्ट पत्रिकासु, शोध संगोष्ठीसु च स्वीकृतानि। एषां निर्देशनेऽपि शोधकार्यं प्रचलति। रीडर पदभाजः डॉ. टी.आर. सेठ महोदयाः विभागीयं कार्यं साधु सम्पादयन्ति। डॉ. दिनेश भट्टेन शोधपत्राणि शोध गोष्ठीषु प्रस्तुतानि। अस्य 'Sociobiology of Some Avain Species' शोध परियोजना वि.वि. अनुदान आयोगेन स्वीकृता। प्राध्यापक पदे नियुक्तः डॉ. डी.आर. खन्ना राष्ट्रीय सेवा योजनायाः कार्यं साधु सम्पादयति।

पुस्तकालयः —अस्माकम् पुस्तकालयो देशस्य शोधछात्रेभ्यस्तीर्थभूतो वर्त्तते। दुर्लभप्राच्यविद्याग्रन्थरत्नैः सुभूषितोऽयं पुस्तकागारः देशस्य श्रेष्ठो न्यासः। अत्र लक्षाधिकग्रन्थरत्नानि राजन्ते।

विश्वविद्यालयस्य श्रद्धानन्दप्रकाशन केन्द्रेण प्रतिवर्षं ग्रन्थाः प्रकाश्यन्ते। अस्मिन् वर्षे आचार्य रामदेवरचितग्रन्थः 'भारतवर्ष का इतिहास' प्रकाशितः। अस्मिन् आवैदिककालात् बौद्धकालान्तिकं भारतीयैतिहयं सर्वथा नवीनदृष्ट्या आलेखितम् पुस्तकालये प्रतियोगिपरीक्षार्थिभ्य पृथक् पुस्तकसंग्रहो विद्यते। अस्मिन् वर्षे पुस्तकालयावलोकनार्थं लोकसभाध्यक्षः शिवराजपाटिलः, पूर्व मुख्यमन्त्रि श्री मदनलालखुरानाप्रमुखाः पुरुषाः समायाताः।

शारीरिक शिक्षाविभागः —छात्राणां शारीरिक, मानसिक वृद्ध्यर्थं विश्वविद्यालये शारीरिक शिक्षा विभागः, डॉ. राजकुमार सिंह डागर महोदयस्य निर्देशने प्रशंसनीयं

कार्यं करोति। सत्रेऽस्मिन् विभागः उत्तर क्षेत्रीय अन्तर्विश्वविद्यालयीन वालीबॉल प्रतियोगितायाः संयोजनमकरोत्। अस्याम् प्रतियोगितायां षड्विंशति विश्वविद्यालयानां दलानि भागं गृहीतवन्तः। टैक्सप्लास इण्डिया प्रा.लि. प्रतिष्ठानस्य कार्यकारी निदेशकाः श्रीमन्तः जे.सी. जैन महोदयाः ध्वजोत्तोलनमकार्षुः। बी.एच.ई.एल. प्रतिष्ठानस्य कार्यकारी निदेशकाः मान्याः महेन्द्रकुमार मित्तल महोदयाः विजेतृभ्यः पुरस्कारमददुः।

अस्मिन्नेव वर्षे एका अन्या 'अन्तर्विश्वविद्यालय पावर लिफ्टिंग प्रतियोगिता' पुरुषाणां कृते समायोजिता। अस्यां सप्तविंशति विश्वविद्यालयानां छात्राः स्वं बलं प्रदर्शयामासुः। जनपदस्य आरक्षी अधीक्षकाः श्रीमन्तोऽशोककुमार महोदयाः उद्घाटनमकुर्वन्। मान्याः कुलाधिपतयोऽपि प्रतियोगितायामस्यां समागत्य छात्रोत्साहवर्धनमकार्षुः।

शारीरिक शिक्षा विभागस्य निदेशकः डॉ. डागर महोदयोऽखिल भारतीय विश्वविद्यालयसंघेन अखिल भारतीयान्तर्विश्वविद्यालय भारोत्तोलन तथा च शरीर सौष्ठव प्रतियोगितायाः पर्यवेक्षक पदेन सम्मानितः। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालयस्य छात्राः विभिन्नासु प्रतियोगितासु भागं गृहीत्वा विजयं लभन्ते। डॉ. डागर महोदयः आन्ध्रप्रदेशे वारंगलस्य ककाटिया विश्वविद्यालयेऽखिल भारतीय अन्तर्विश्वविद्यालय भारोत्तोलन, तथा च शरीर सौष्ठव प्रतियोगितायां विशिष्टातिथिरूपेण सादरं निमन्त्रितः सम्मानितश्च।

कन्या गुरुकुल महाविद्यालयः –विदन्त्येव भवन्तो भवन्तः श्रीमन्तः यद् युगप्रवर्त्तकः महर्षि दयानन्दः अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्दश्च न केवलं भारतवर्षे अपितु निखिलेऽपि विश्वे वैदिकशिक्षाप्रचाराय कृतसंकल्पा आसन्। नारी शिक्षा समुन्नत्यै एते महात्मान यानि प्रयत्नान्यकुर्वन् तानि सदैव अमराणि स्थास्यन्ति। स्वामी श्रद्धानन्दस्य स्त्री शिक्षा विषयकं संकल्पं पूरयितुं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालयेन महिला महाविद्यालयस्य पृथक् स्थापना कृता। कुलाधिपति महोदयानां करकमलैरस्मिन्नेव वर्षे नूतनस्य भवनस्य शिलान्यासोऽभूत्। तत्र द्रुतगत्या भवननिर्माण कार्यं प्रचलति। मन्ये आगामिनि वर्षे बालिकानाम् अध्ययनाध्यापन कार्यं तत्रैव प्रचलिष्यति। अस्मिन् महाविद्यालये प्राच्यविद्या, मानविकी, विज्ञान सङ्कायेषु संस्कृत, दर्शन, इतिहास, हिन्दी, अङ्ग्रेजी, मनोविज्ञान, सूक्ष्मजीवविज्ञान, गणित, रसायनशास्त्र, पर्यावरणविज्ञान विषयाणां स्नातकोत्तरीयमध्यापनकार्यं प्रचलति। अस्य महाविद्यालयस्य प्रभारीपदं डॉ. सूनृता विद्यालङ्कृता महोदया वहति। अस्या निर्देशने छात्राणां संख्या प्रतिवर्षमेधमाना अस्ति।

फरवरी मासे महाविद्यालये सांस्कृतिक-समारोहः श्रीमतां कुलाधिपति महोदयानामध्यक्षतायामभूत्। दिल्ली विधानसभायाः सदस्याः मान्याः राजेन्द्र गुप्ता महोदयाः मुख्यातिथिपदमलङ्कृतवन्तः। स्नातकोत्तर कक्षासु अध्ययनरताभिः बालिकाभिः

संस्कृत, हिन्दी, आङ्गलभाषासु प्रस्तुतानि विविधानि रमणीयानि सांस्कृतिक कार्यक्रमाणि समुपस्थितैः दर्शकैः भृशं प्रशंसितानि।

कन्या गुरुकुल महाविद्यालयः, देहरादूनम्–मान्याः अतिथयः। यथा हरिद्वार नगरे, विश्वविद्यालयेऽस्मिन् विविधाः विषयाः पाठ्यन्ते तथैव देहरादून नगरे विश्वविद्यालयस्य द्वितीये परिसरे बालिकानाम् गुरुकुल महाविद्यालये स्नातक, स्नातकोत्तर कक्षासु प्राचीनार्वाचीन विपयाणामध्ययनं प्रचलति। कम्प्यूटर विषये एम.सी.ए. पाठ्यक्रमोऽपि प्रवर्तते अस्य देशस्य बालिकाः ज्ञानदीक्षिताः भूत्वा धरणिमिमां ज्ञानालोकेनालोकितां कुर्यु रित्येव मनसि निधाय स्वनामधन्येनाचार्य रामदेवेन वृक्षोऽयं देहरादून नगरे समारोपितः। मान्या दमयन्ती महोदया सुदीर्घकालं संस्थायाः संचालनमकरोत्। सम्प्रति श्रीमती भगवती गुप्ता महाविद्यालयस्यास्य प्राचार्यपदमनावहति। अस्मिन् पावनपरिसरे पुत्रिभिः प्रतिदिनं सायं प्रातः ब्रह्मयज्ञः, देवयज्ञश्च क्रीयते। वर्षेऽस्मिन् छात्रावास भवनं निर्मितम्। यज्ञशालायाः निर्माणमपि सम्पन्नम्।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालये न केवलमलङ्कार स्नातका अपितु विज्ञान स्नातका अपि वैदिक धर्म-दर्शन दीक्षिता भवेयुरिति विमृश्य विज्ञान कक्षासु धर्म-दर्शन संस्कृतिविषयः पाठ्यक्रमेऽनिवार्यत्वेन निर्धारितो वर्तते। कस्यापि संस्थानस्य विस्ताराय भवनानां महत्यावश्यकता भवति। अस्मिन्नेव वर्षे मानविकी सङ्कायस्याथ च सूक्ष्मविज्ञान भवनस्य निर्मितिर्जाता। अत्रभवननिर्माण कार्यमविरतं प्रचलत्येव।

हे आर्यबान्धवाः ! यथैव विश्वविद्यालये तथैव गुरुकुल विभागे वेद, दर्शन, साहित्यादि विषयैः सहाधुनिक कम्प्यूटर विज्ञानमप्यध्याप्यते। ब्रह्मचारिणां स्वास्थ्यलाभाय निःशुल्कं दुग्धं प्रदीयते। समये-समये आर्य समाजोत्सवाः सोत्साहं समायोज्यन्ते। यज्ञधूमेन मन्त्राणां सुमधुरेण ध्वनिना च वातावरणं सर्वदा सात्त्विकं भवति। अस्मिन् वर्षे सुविशाले क्षेत्रे वृक्षारोपणं कृत्वैकमुद्यानमपि निर्मितम्।

दिसम्बर मासस्य त्रिविंशतितमे दिवसेऽमर हुतात्मानां श्रद्धानन्दस्वामिनां स्मृतौ सुविशालः कार्यक्रमः समायोजितः। अनेके मूर्धाभिषिक्ता आर्यनेतारोऽस्मिन् श्रद्धांजलिसमारोहे समायाताः। ब्रह्मचारिणां, शिक्षकाणामार्य नेतृणां, नर-नारीणां च सुविशालां शोभायात्रां दर्शं-दर्शं हरिद्वारस्थाः जना आनन्दपयोनिधौ निमग्नाः।

प्रियस्नातकाः ! येषां शाश्वतजीवनमूल्यानां रक्षणाय, राष्ट्रियैकतायाः, अखण्डतायाः, चरित्रस्य, धार्मिकसद्भावस्य च परिरक्षणाय गुरुकुलीयशिक्षापद्धतिरुद्भाविता सञ्जीविता च, तानि जीवनमूल्यानि भवतां जीवने स्थितिं विधाय प्रतिपदमुन्नतिं प्रदास्यन्ति। यद्यपि नात्र संशयो विद्यते यद् वर्त्तमाने काले जटिलाः समस्याः प्रादुर्भवन्ति। पर भवतामात्मविश्वासो गुरुजनानामाशीर्वादेन सह निश्चितं जीवनमुन्नेष्यति। युष्माकं जीवनं ससुखं कर्तुं परेशं महेशं प्रार्थये।

विश्वविद्यालयस्य सर्वाङ्गीणविकासेऽधिकारिणां, शिक्षकानां, कर्मचारिणां ब्रह्मचारिणामभिभावकानाञ्च सहयोग एव प्रशस्यते। कुलाधिपति श्रीसूर्यदेवमहोदयानां,

श्री महावीरसिंह परिद्रष्टृमहोदयानां निर्देशनेऽसौ विश्वविद्यालयः प्रगतिपथमारोहति।

हे गुरुकुल परम्परानुरागिणः ! नूनमद्यास्माकं सौभाग्योदयो जातो यदस्माकं मध्ये चेकगणराजस्य राजदूतपदमलङ्कुर्वाणाः, श्रीमन्तः ओदोलेन स्मेकल महोदयाः दीक्षान्तभाषणाय शोभन्ते। एषां सम्पूर्णजीवनं मानवीय मूल्याणां रक्षणाय समर्पितं विद्यते। भवता गुरुकुलमुपेत्य गुरुकुलीयशिक्षां प्रति निजानुरागः प्रकटितः। गुरुकुलमध्ये भवन्तमालोक्य सर्वेऽपि कुलवासिनो वयं धन्याः। भवताम् अपरिमितेन साहाय्येन विश्वविद्यालयस्य परिवृद्धिः प्रतिष्ठा च प्रवत्स्येंते।

अन्ते चाहं समुपस्थितानां सर्वेषां महानुभावानां धन्यवादं व्याहरन् सकलजगज्जेगीयमानं विश्वनाथमभ्यर्थये–

'आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः'

1997--प्राचीन एवं अर्वाचीन विषयों का समन्वय

(प्राचीनार्वाचीनयोः विषययोः समन्वयः)

❑ डॉ. धर्मपालः

अद्य गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालयस्य सप्तनवतितमे दीक्षान्तसमारोहे समागतानां सभ्यानां महानुभावानां हार्दिकं स्वागतमभिनन्दनं च व्याहरन्तो वयम् अमन्दमानन्दमनुभवामः।

विश्वविद्यालयोऽयं प्रतिदिनं प्रगतिपथमारोहति गुरुकुलस्य प्राचीनपरम्परानुसारं प्रत्यहं प्रातःकाले विश्वविद्यालये आचार्य वेदप्रकाशशास्त्रिणां निर्देशने यज्ञः प्रसरति। प्रगतेः संक्षिप्तं वृत्तं भवतां कर्णगोचरी भवतु इति विमृश्य समासेनोदीर्यते। साम्प्रतमस्मिन् विश्वविद्यालये पञ्च सङ्कायाः प्रवर्धमानास्सन्ति। ते च प्राच्यविद्या, मानविकी, विज्ञान, जीवविज्ञान, प्रबन्धन सङ्काय रूपेणविद्यादीपप्रज्वालने सततं क्रियाशीलाः सन्ति। एकैकस्य सङ्कायस्य विभागानां विवरणं प्रस्तूयते।

प्राच्यविद्या सङ्कायः

अस्मिन् सङ्काये वैदिक साहित्य, संस्कृत साहित्य, दर्शन, प्राचीनभारतीयेतिहास, योग विभागाः सन्ति एकञ्च श्रद्धानन्दशोधसंस्थानम् वर्तते। साम्प्रतं प्रो. एस.एन. सिंह महोदयाः सङ्कायाध्यक्षपदे कार्यरताः सन्ति।

वेदविभागः –अस्मिन् विभागे डॉ. मनुदेवोबन्धुः, डॉ. रूपकिशोरः शास्त्री, डॉ. दिनेशचन्द्रः, डॉ. सत्यदेवः–एते चत्वार उपाध्यायाः सन्ति। डॉ. मनुदेवः अध्यक्षपदभारं वहति। वेद विभागे देहली विश्वविद्यालये रीडर पदभाजां डॉ. महावीर मीमांसकानामथ च डॉ. सत्यव्रत राजेश महोदयानां व्याख्यानानि आयोजितानि। डॉ. रूपकिशोरः, डॉ. दिनेशचन्द्रः, डॉ. सत्यदेवः त्रयोऽपि देहल्यां पुनश्चर्या पाठ्यक्रमे भागं गृहीतवन्तः डॉ. रूपकिशोरः बंगलौरनगरे समायोजिते विश्वसंस्कृतसम्मेलने भागं गृहीतवान्। वैदिकप्रयोगशालायाः कार्यं डॉ. मनुदेवः, डॉ. सत्यदेवश्च सम्पादयतः। डॉ. दिनेशचन्द्रः, डॉ. सत्यदेवश्च उभावपि अखिल भारतीय संस्कृत सम्मेलने शोधपत्रे अपठताम्।

संस्कृतसाहित्यविभागः –विभागोऽयं संस्कृतसाहित्येविद्यमानस्य ज्ञानविज्ञानस्य

प्रचारे-प्रसारे च संलग्नः विश्वविद्यालयस्य गौरवं प्रख्यापयति। साम्प्रमस्मिन् विभागे प्रो. वेदप्रकाशशास्त्रिणः प्रोफेसर पदे प्रतिष्ठिताः सन्ति, एते आचार्योपकुलपतिपदस्य गौरवप्रख्यापने सफलाः सन्ति। एतेषां निर्देशने अधुनापर्यन्तं विंशति छात्राः पी-एच.डी. उपाधिवन्तोऽभवन्। देशस्य विभिन्नेषु विश्वविद्यालयेषु विशेषज्ञरूपेण शास्त्रिणः सादरं निमन्त्र्यन्ते। देहली संस्कृत अकादम्याः समायोजिते त्रिदिवसीय संस्कृतसम्मेलने प्रो. वेदप्रकाशशास्त्रिणः शोधपत्रवाचनमकार्षुः।

रीडर पदे कार्यरतस्य डॉ. महावीरस्य निर्देशने त्रयोदश छात्राः शोधोपाधिं प्राप्तवन्तः। अस्मिन् समारोहे तिस्रः छात्राः उपाधिं लभन्ते। एते कानपुर विश्वविद्यालये शोधपाठ्यक्रम समित्योः विषयविशेषज्ञत्वेन सादरं निमन्त्रिताः। एते दशम विश्वसंस्कृतसम्मेलने, बंगलौर नगरे, अथ च अखिलभारतीय संस्कृतसम्मेलने देहली नगरे शोधपत्रे प्रस्तुतवन्तः। प्रो. वेदप्रकाशशास्त्रिणः तथा च डॉ. महावीरस्य निर्देशने अनेके छात्राः शोधकार्यनिरताः सन्ति। रीडरपदे कार्यरताः डॉ. सोमदेव शतांशु महोदयाः सम्प्रति अध्यक्षपदभारं वहन्ति। एतेषां निर्देशने अनेके छात्राः शोधकार्यं कुर्वन्ति। महानुभावोऽयं शोधसम्मेलनेषु शोधपत्र वाचनमकरोत्। रीडरपदभाजः। डॉ. रामप्रकाश शर्मणः निर्देशे अनेकैः छात्रैः पी-एच.डी. उपाधयः प्राप्ताः, साम्प्रतमपि कार्यरताः सन्ति। डॉ. ब्रह्मदेवः पुनश्चर्या पाठ्यक्रमे भागं गृहीतवान्। विभागेन समायोजिते संस्कृतदिवसोत्सवे दिल्ली संस्कृत अकादम्याः सचिवपदे प्रतिष्ठिताः डॉ. श्रीकृष्ण सेमवाल महोदयाः मुख्यातिथयः आसन्। अनेनैव विभागेन अखिल भारतीय त्रिभाषा-भाषण प्रतियोगिता आयोजिता। पूज्याः ऋषि केशवानन्द महाभागाः मुख्यातिथिपदमलञ्चक्रुः। डॉ. महावीरस्य निर्देशने शोधकार्यरताभ्यां विनयकुमार विद्यालङ्कार, बृहस्पतिमिश्राभ्यां विश्वविद्यालयानुदानायोगस्य शोधछात्रवृत्तिः प्राप्यते। विभागेन पद्मश्रीविभूषितानां स्वनामधन्यानां प्रो. वी. वेंकटाचल महोदयानां व्याख्यानमपि आयोजितम्।

दर्शन विभागः –विभागे डॉ. जयदेव वेदालङ्कार महोदयाः प्रोफेसर पदेविराजन्ते। डॉ. त्रिलोकचन्द्रमहोदयाः रीडरपदे सन्तः अध्यक्षपदभारमपि वहन्ति। डॉ. विजयपाल शास्त्रिणः रीडरपदे, डॉ. यू.एस.बिष्ट महोदयः वरिष्ठ प्राध्यापक पदे, डॉ. सोहनपाल आर्यश्च प्राध्यापक पदे कार्यरताः सन्ति। डॉ. जयदेव वेदालङ्काराणां संयोजकत्वे फरवरी मासे एका त्रिदिवसीया राष्ट्रिय संगोष्ठी 'व्याप्तिस्वरूपं तद्ग्रहोपायाश्च' इति विषयमधिकृत्य संपन्ना। अस्यां संगमिन्यां देशस्य प्रतिष्ठिताः डॉ. प्रह्लादाचार्य, प्रो. पी.के. मुखोपाध्याय, डॉ. एस.आर. भट्ट, डॉ. के.सी. दास प्रभृतयः दार्शनिकाः समुपस्थिताः। डॉ. अशोक बोहरा महोदयाः मुख्यातिथ्यः आसन्। विभागे अनेके छात्राः अनुसन्धानकार्ये संलग्नाः सन्ति। डॉ. विजयपालशास्त्रिणः काशी हिन्दू विश्वविद्यालये डॉ. यू.एस. बिष्ट विश्वदर्शनसम्मेलने, डॉ. त्रिलोकचन्द्रश्च शान्तिनिकेतने शोधपत्राणि प्रस्तुतवन्तः।

प्राचीनभारतीयेतिहासविभागः –कुलसचिव पदे, प्राच्यविद्यासङ्कायाध्यक्षपदे च

प्रतिष्ठिताः डॉ. श्यामनारायणसिंह महोदयाः इतिहास विभागस्य अध्यक्षपदभारमावहन्ति। एतेषां निर्देशने शोधकार्यसमाप्य अस्मिन्नेव विभागे प्राध्यापकपदे कार्यरतः देवेन्द्रकुमार गुप्ता शोधोपाधिं प्राप्नोति। अस्य विभागस्य वरिष्ठ प्राध्यापक पदे स्थितस्य डॉ. राकेश शर्मणः निर्देशने एन.सी.सी. कार्यं प्रचलति। एका लघुशोधपरियोजना प्रगतिपथाधिरूढा वर्तते। अस्मिन् सत्रे इतिहासमर्मज्ञाः कुरुक्षेत्रविश्वविद्यालयस्य पूर्वसङ्कायाध्यक्षाः प्रो. उदयवीरसिंह महोदयाः अतिथि–आचार्य पदमलङ्कुर्वन्ति। प्रो. एस.एन. सिंह, डॉ. कश्मीरसिंह, डॉ. राकेश शर्मणश्च निर्देशने बहवो छात्राः शोधकार्यं कुर्वन्ति। डॉ. प्रभातकुमार, डॉ. देवेन्द्रकुमार गुप्ता उभावपि वर्षेऽस्मिन् विभागे प्रवक्तृ पदे नियुक्तौ।

योगविभागः –डॉ. ईश्वर भारद्वाजस्य आध्यक्ष्ये विभागः प्रगतिं करोति। निखिलेऽपि भारते गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालयेनैव योगविषये स्नातकोत्तरोपाधिः प्रदीयते। डॉ. भारद्वाजस्य निर्देशने चत्वारः छात्राः शोधकार्यं कुर्वन्ति। विभागे डॉ. महावीर मीमांसकानां स्वामीरामदेवस्य च योगविषये विशिष्टानि व्याख्यानानि आयोजितानि अस्य विभागस्य छात्राः अन्तर्विश्वविद्यालय–योगप्रतियोगितासु विजयवन्तो भवन्ति। डॉ. भारद्वाजस्य योगवार्त्ताः आकाशवाण्याः प्रसारिताः। एते दिल्लीस्थ केन्द्रीय योग संस्थाने पुनश्चर्यापाठ्यक्रमे भागं गृहीतवन्तः। विश्वविद्यालयानुदान आयोगस्य योगप्रोन्नतियोजनायां श्री योगेश्वरदत्तः श्री सुरक्षितश्च कार्यरतौ स्तः।

श्रद्धानन्दशोध संस्थानम्ः –डॉ. भारतभूषण विद्यालङ्कार महोदयानां निर्देशने संस्थानमिदं शोध ग्रन्थानां प्रकाशनं करोति। डॉ. भारतभूषणमहोदयैः एका बृहद् शोधपरियोजना विश्वविद्यालयानुदान आयोगं प्रति प्रेषिता। प्रो. रणजीतसिंह महोदय प्रणीतस्य स्वामिश्रद्धानन्दचरिताख्यस्य ग्रन्थस्य तथा च आचार्य रामदेव विरचितस्य 'भारतवर्ष का इतिहास' ग्रन्थस्य प्रकाशनं शोधसंस्थानेन कृतम्।

शारीरिक शिक्षाविभागः –छात्राणां शारीरिक, मानसिक वृद्ध्यर्थं विश्वविद्यालये शारीरिक शिक्षा विभागः डॉ. रामकुमारसिंह डागर महोदयस्य निर्देशने प्रशंसनीयं कार्यं करोति। अत्रत्याः छात्राः अनेकासु राष्ट्रिय प्रतियोगितासु भागं गृहीतवन्तः। कबड्डी, बॉक्सिंग, योगक्रीडा प्रतियोगितासु गुरुकुलस्य छात्राः विजयमलभन्त। क्रीडाविभागाध्यक्षाः डॉ. डागर महोदयाः गुरुनानकदेव विश्वविद्यालये, विविधासु प्रतियोगितासु च विश्वविद्यालयानुदानायोगेन पर्यवेक्षकरूपेण प्रेषिताः।

आगामिनि सत्रे विभागेऽस्मिन् त्रिवर्षीय बी.पी.एड. पाठ्यक्रमः प्रारभ्यते।

मानविकी सङ्कायः

मानविकी सङ्काये हिन्दी, अङ्ग्रेजी, मनोविज्ञान, प्रौढ-शिक्षा चत्वारो विभागाः वर्तन्ते। डॉ. नारायण शर्माणोऽस्य सङ्कायाध्यक्षपदे प्रतिष्ठिताः सन्ति।

हिन्दीविभागः –डॉ. विष्णुदत्त राकेशः प्रोफेसर पदे, डॉ. ज्ञानचन्द रावलः विभागाध्यक्षपदे, डॉ. सन्तरामवैश्यः, डॉ. भगवानूदेव पाण्डेय महोदयौ रीडरपदे कार्यरताः

सन्ति। श्री कमलकान्त बुधकरश्च प्राध्यापकरूपे हिन्दी पत्रकारितायाः संवर्धने बद्धादरो वर्तते। विश्वविद्यालयेऽद्यावधि विविधेषु दीक्षान्त समारोहेषु मनीषिभिः प्रदत्तानां दीक्षान्त भाषणानां सम्पादनं श्रीमद्भिः डॉ. विष्णुदत्त राकेश महोदयैः 'दीक्षालोक' नाम्ना कृतं यस्येदानीं लोकार्पणं क्रियते। एतेषां निर्देशने बहुभिः छात्रैः शोधोपाधयः प्राप्ताः। डॉ. सन्तराम, डॉ. ज्ञानचन्द, डॉ. भगवान्देव महोदयानां निर्देशने अनेके छात्राः शोधकार्यरताः सन्ति। डॉ. सन्तराम वैश्येन कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालये समायोजिते हिन्दी पुनश्चर्या पाठ्यक्रमे व्याख्यानं प्रदत्तम्। अमृतसरस्थ गुरुनानकदेव विश्वविद्यालयस्य हिन्दीविभागे, चित्रकूटधाम्नि राष्ट्रीय रामायण मेलावसरे च विचाराः प्रस्तुताः।

आङ्ग्लभाषाविभागः —सम्प्रति विभागे पञ्च उपाध्यायाः विराजन्ते। प्रोफेसरपदभाजां डॉ. नारायण शर्मणां निर्देशकत्वे एको छात्रः पी-एच.डी. उपाधिं स्वीकरोति। एते इलाहाबाद, मेरठ, कुमायूं आदि विश्वविद्यालयेषु विषयविशेषज्ञत्वेन सादरं निमन्त्रिताः। अरविन्द साहित्यमधिकृत्य भवद्भिः प्रशंसनीयं कार्यं क्रियते।

विभागाध्यक्षाः श्री सदाशिव भगत महोदयाः विभागस्य स्थापनाकालत एव सेवारताः सन्ति। एषां प्रयासेन भाषा प्रयोगशालयाः स्थापना संजाता। श्री भगत महोदयस्य निर्देशने अनेके छात्राः पी-एच.डी. उपाधिवन्तः समभवन्।

डॉ. श्रवणकुमार शर्मणः निर्देशने एकेन छात्रेण शोधोपाधिः प्राप्यते डॉ. शर्मा जम्मू विश्वविद्यालये शोधसंगोष्ठ्यां शोधपत्रं प्रस्तुतवान्। डॉ. अम्बुज शर्मणः निर्देशने त्रयो छात्राः शोधकार्यं कुर्वन्ति। डॉ. कृष्णावतार अग्रवालस्य निर्देशने द्वौ छात्रौ अनुसन्धानकार्ये पञ्जीकृतौ स्तः। सम्प्रति डॉ. अग्रवाल 'शेक्सपीयर इन माडर्न टाइम्स' विषये शोधकार्यरतोऽस्ति। असौ प्रयागविश्वविद्यालये तथा च हैदराबाद नगरे पुनश्चर्या पाठ्यक्रमे भागं गृहीतवान्।

मनोविज्ञानविभागः —विभागेऽस्मिन् पञ्च उपाध्यायाः अध्यापनकर्मणि, शोध निर्देशने च कृतसंकल्पाः सन्ति। प्रो. ओ.पी. मिश्राणां निर्देशने 10 छात्राः शोधोपाधिं प्राप्तवन्तः। विभागाध्यक्षानां श्री एस.सी. धमीजा महोदयानां निर्देशने एकः छात्रः अस्मिन् समारोहे पी-एच.डी. उपाधिना अलङ्क्रियते। एतेषां शोधपत्रमेकं तन्मय भट्टाचार्यस्य सहलेखने आस्ट्रेलियास्थ अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेसे स्वीकृतम्। धमीजा महोदयस्य त्रीणि पुस्तकानि मनोविज्ञानविषये प्रकाशितानि सन्ति। विभागे रीडरपदभाजा डॉ. एस.के. श्रीवास्तवेन द्वयोः शोधपरियोजनयोः कार्यं क्रियते। द्वाभ्यां छात्राभ्यां शोधोपाधिः प्राप्ता।

अनेन विभागेन एका त्रिदिवसीया अन्तर्राष्ट्रीय शोधसंगोष्ठी बृहद्रूपेणायोजिता। न केवलं भारतदेशीयाः अपितु विदेशीयाः मनोविज्ञानविद्वांसः समायाताः प्रो. पेस्टोंजी, प्रो. कलियप्पन, प्रो. एम.सी. जोशी, प्रो. ए.के. सेन प्रभृतयः विद्वत्तल्लजाः सम्मेलनमिदं सनाथितवन्तः। डॉ. एस.के. श्रीवास्तवः संयोजकस्य गुरुतरं दायित्वम् उवाह। सर्वेषां वैज्ञानिकसत्राणां सञ्चालनं श्री एस.सी. धमीजा महोदयैः कृतम्। प्रवक्तृपदे कार्यरतस्य

डॉ. सी.पी. खोखरस्य निर्देशने छात्राः शोधकार्यं कुर्वन्ति।

प्रौढ शिक्षाविभागः –विभागेऽस्मिन् डॉ. आर.डी. शर्मा अध्यक्षपदभारं वहति। डॉ. जसवीर सिंह मलिकः सहायकरूपेण कार्यं करोति। जने-जने साक्षरतायाः प्रचाराय-प्रसाराय विभागोऽयं कृतसंकल्पो वर्तते।

अस्मिन् वर्षे इण्डियन सोसाइटी फॉर कम्यूनिटी एजूकेशन संस्थायाः सहाय्येन सप्तम राष्ट्रीय सम्मेलनमत्र समायोजितम्। विभागेन सतत शिक्षान्तर्गतानि पञ्च व्यावसायिक प्रशिक्षणानि समायोजितानि।

मानविकी सङ्काये स्नातक कक्षासु समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, गणित, कम्प्यूटर, विज्ञान विषया अपि पाठ्यन्ते।

विज्ञान सङ्कायः

गणितसांख्यिकीविभागः –डॉ. वीरेन्द्र अरोडा महोदयो गणितसांख्यिकी विभागस्य विज्ञानसङ्कायस्य च अध्यक्षपदम् अलङ्करोति। अधुना डॉ. एस.एल.सिंह महोदयः आमन्त्रित आचार्यरूपेण दारूलसलाम विश्वविद्यालये अध्यापयति। डॉ. अरोड़ामहोदयः 'इंण्टरनेशनल बायोग्राफिकल सेन्टर' अनुष्ठानेन पञ्चनवतिषण्णवतिवर्षस्य कृते वर्षस्य अन्तर्राष्ट्रिय पुरुषत्वेन सम्मानितः।

विभागे सत्रेऽस्मिन् बी.एस-सी. कक्षासु सांख्यिकी विषयः पृथक् विषयत्वेन पाठ्यक्रमे समायोजितः। डॉ. अरोड़ा, डॉ. महीपालसिंह, डॉ. हरवंसलाल गुलाटी, एभिः प्राध्यापकैः सङ्गणकविभागेन समयोजितायां कार्यशालायां भागो गृहीतः। डॉ. विजयेन्द्रकुमार शर्मा शोधकार्येषु संलग्नः

रसायनविज्ञानविभागः –डॉ. आर.डी. कौशिकः सम्प्रति अध्यक्षपदे प्रतिष्ठितोऽस्ति। डॉ. आर.डी. कौशिकः, डॉ. इन्द्रायण महोदययोः निर्देशने छात्राभ्यां पी-एच.डी. उपाधिः प्राप्तः। एतौ प्राध्यापकौ एकैकस्यां शोधपरियोजनायामपि संलग्नौ स्तः। डॉ. आर.डी. सिंह महोदयेन एका शोधपरियोजना पूर्ति नीता। अस्य विभागस्य अनेके शोधलेखाः अन्ताराष्ट्रियशोधपत्रिकासु प्रकाशिताः।

विभागीय उपाध्यायानां निर्देशने अनेके छात्राः शोधनिरताः वर्तन्ते। अस्य विभागस्य छात्राः गोआ विश्वविद्यालयं डोनापोलास्थानस्थं ओशनोग्राफी इन्स्टीट्यूट (समुद्रविज्ञानसंस्थानं) प्रति यात्रार्थं गताः।

भौतिकीविभागः –अद्यत्वे डॉ. राजेन्द्रकुमार महोदयस्य आध्यक्ष्ये विभागोऽयं प्रगतिपथमारोहति। विभागेऽस्मिन् श्री हरीशचन्द्र ग्रोवर, डॉ. बुद्धप्रकाश शुक्लः, डॉ. राजेन्द्रकुमार एते महानुभावाः रीडरपदे कार्यरताः। डॉ. पी.पी. पाठको वरिष्ठ प्रवक्तृपदे प्रतिष्ठितः। अस्मिन् विभागे अष्टौ छात्राः गवेषणाकार्यं कुर्वन्ति।

डॉ. पाठकमहोदयस्य एकः शोधलेखोऽन्ताराष्ट्रियशोधपत्रे प्रकाशनार्थं स्वीकृतः। विभागे सी.एस.आर. संस्थानस्य पूर्वनिर्देशकस्य डॉ. एस.के. जोशी महोदयस्य

विशिष्टव्याख्यानं समायोजितम्।

कम्प्यूटरविभागः –अस्मिन् विश्वविद्यालये कम्प्यूटर विषयस्य उच्चस्तरीयमध्ययनं गवेषणाकार्यं डॉ. विनोदकुमार शर्मणोऽध्यक्षत्वे सुचारुतया प्रचरति। डॉ. विनोदकुमार शर्मणः, डॉ. कर्मजीत भाटिया, श्री सुनीलकुमार, श्रीदेवव्रत, श्री द्विजेन्द्रपन्त–एषां महानुभावानाञ्च अनेके शोधलेखाः राष्ट्रियान्ताराष्ट्रियपत्रिकासु प्राकाश्यं गताः। डॉ. शर्मणो निर्देशने एकश्छात्रः पी-एच.डी. उपाधिम् प्राप्तवान्। डॉ. शर्मा रानीदुर्गावती विश्वविद्यालये अनेकानि व्याख्यानानि प्रदत्तवान्।

अस्मिन् विभागे वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोगः अस्य संस्थानस्य सहयोगेन डॉ. विनोदशर्मणः संयोजकत्वे 'कम्प्यूटर की हिन्दी तकनीकी शब्दावली का विकास एवं अनुप्रयोग' इत्यस्मिन् विषये एका पञ्चदिवसीया शोधगोष्ठी समायोजिता। अस्यां पञ्च पञ्चाशत् विद्वांसः सम्मिलिताः।

अस्मिन् विभागे रुड़की विश्वविद्यालयस्य डॉ. पी.एस. अग्रवाल, डॉ. एस.पी. शर्मा, डॉ. के.के. श्रीवास्तव महाभागानां महर्षि दयानन्दविश्वविद्यालयस्य पूर्वकुलपतेः ओ.पी. चौधरी महोदयस्य, उपकुलपतेः डॉ. एल.एन. दहियामहोदयस्य गढ़वाल विश्वविद्यालयस्य डॉ. आर.के. शर्मणश्च व्याख्यानानि समायोजितानि।

अस्मिन् वर्षे विभागीयपुस्तकालयस्य प्रयोगशालायाश्च विस्तारो विकासश्च विहितः।

कम्प्यूटरकेन्द्रम्–विश्वविद्यालये सुसमृद्धं कम्प्यूटरकेन्द्रमपि वर्तते। डॉ. विनोदकुमारशर्मणोऽध्यक्षे श्री अचलगोयल, श्री महेन्द्रसिंह असवाल, श्री मनोजकुमार, श्री शशिकान्त शर्मा इमे महानुभावाः कार्यरताः।

मुख्यकार्यालयस्य सुव्यवस्थार्थं पृथक्त्वेन एकः कम्प्यूटर अनुभागः संस्थापितः। अस्य विभागस्य प्राध्यापकैः सहयोगिभिश्च अनेके लेखाः विविधसम्मेलनेषु प्रस्तुताः।

जीवविज्ञानसङ्कायः

वनस्पतिविज्ञानविभागः –अस्मिन् सत्रे डॉ. आर.सी. दूबे विभागे रीडरपदे नियुक्तः। जर्मनवास्तव्यस्य प्रोफेसर काये महोदयस्य विभागे विशिष्टं व्याख्यानमायोजितम्। बॉयोटैक्नोलोजी इत्यस्मिन् विषये एका राष्ट्रिया संगोष्ठी समायोजिता। एकोनविंशतितमा इण्डियन बोटेनिकल सोसाइटी इत्याख्या गोष्ठी चापि समायोजिता। अस्मिन् विभागे विविधविषयेषु पञ्चविंशतिलक्षात्मिकाः तिसृः शोधयोजनाः लक्ष्यप्राप्त्युन्मुखाः सन्ति।

विभागीय प्राध्यापकानामनेके लेखाः राष्ट्रियान्ताराष्ट्रियपत्रिकासु प्रकाशिताः। डॉ. पुरुषोत्तमकौशिक, डॉ. आर.सी. दूबे महोदयानाम् एकैकां पुस्तक प्रकाशितम्। समेऽपि प्राध्यापकाः राष्ट्रियसंगोष्ठीषु शोधपत्राणि प्रस्तुतवन्तः विभागाध्यक्षस्य प्रो. माहेश्वरी महोदयस्य नाम विश्वविद्यालयानुदानायोगेन रूसदेशस्य यात्रार्थं प्रस्तावितम्।

जन्तुविज्ञान-पर्यावरणविज्ञानविभागः –एतद्विभागीयाः प्राध्यापकाः विभागं

विश्वविद्यालयञ्चोन्नेतुं सदा यत्नवन्तो वर्त्तन्ते। प्रो. बी. डी. जोशी महोदयः तिसृःशोधयोजनाः, डॉ. दिनेशभट्ट, डॉ. पी.सी. जोशी महाभागश्च एकैकां शोधयोजनां सुपरिचालयन्ति। विभागस्य प्राध्यापकैः 'Himalayan Journal of Environment and Zoology' नाम्नी शोधपत्रिका प्रकाशिताः। अस्य विभागस्य त्रयस्त्रिंशत् शोधलेखाः प्रकाशिताः। विविधशोधगोष्ठीषु चास्य विभागस्य प्राध्यापकाः भागं गृहीतवन्तः।

अस्मिन् विभागे अनेकेषां भारतीयवैदेशिक विदुषाम् व्याख्यानानि समायोजितानि।

सप्त छात्रा अत्र शोधकार्यं कुर्वन्ति, चत्वारश्छात्राः पी-एच.डी. उपाधिम् अधिगतवन्तः। विभागस्य अनेके प्राध्यापकाः नैकाः अन्ताराष्ट्रिय पत्रिकाः सम्पादयन्ति। बी.डी. जोशी, डॉ. डी.आर. खन्ना--प्राध्यापकाभ्यां राष्ट्रियसेवायोजनायाः कार्यक्रमाः प्रचाल्यन्ते।

प्रबन्धन सङ्कायः

विश्वविद्यालयोऽयमनुदिनं प्रबन्धनशिक्षाक्षेत्रे अग्रेसरति। डॉ. एस.सी. धमीजा सङ्कायस्य अध्यक्षो वर्त्तते।

अस्मिन् सङ्कायेऽस्मिन् सत्रे एम.बी.ए. पाठ्यक्रमः प्रारब्धः। डॉ. वी.के. सिंह, डॉ. वी.के. साहनी प्रवक्तृपदे नियुक्तौ। अस्मिन् सत्रे भिवानीस्थ प्रोफेसर एस.के. शर्मा दिल्लीवास्तव्य श्री संजय सेठी प्रभृतीनां विदुषां प्रबन्धविषयकं विशिष्टम् व्याख्यानम् आयोजितम्। छात्राणां व्यावहारिकज्ञानार्थं हरिद्वार, ऋषिकेश, दिल्ली, मुम्बई, मैसूर, बंगलौर प्रभृति नगरेषु स्थितानि अनेकानि व्यापारिकौद्योगिकप्रतिष्ठानानि प्रदर्शितानि। विभागे विविधाः प्रतियोगिताः, परिचर्याः, वादविवादाः, व्यापारिकक्रीडाश्च आयोजिताः।

पुस्तकालयः —अस्माकम् पुस्तकलायः दुर्लभप्राच्यविद्याग्रन्थानां पावनं कोषागारम्। अस्मिन् पुस्तकालये विविध विषयाणाम् एकलक्ष पंचविंशति परिमितानि पुस्तकानि शोभन्ते। विश्वविद्यालयस्य श्रद्धानन्दप्रकाशन केन्द्रेण प्रतिवर्षं ग्रन्थाः प्रकाश्यन्ते। अस्मिन् वर्षे 'दीक्षालोकः' प्रकाश्यते।

अस्मिन् वर्षे पुस्तकालयावलोकनार्थं श्रीसाहिबसिंह वर्मा, मुख्यमन्त्रि, दिल्ली सर्वकारः तथा च स्मेकल ओदोलेन, राजदूतः, चैक गणराज्यस्य प्रभृतस्यः नेतारो विद्वांसश्च समायाताः।

पुरातत्त्व संग्रहालयः —विभागोऽयं सततमुन्नतिशीलः। प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थानां वीथिरेका निर्मिता। पाण्डुलिपीनां संरक्षण योजनायां 65 पाण्डुलिपीनां परिरक्षणं विहितम्। विश्वविद्यालयानुदान आयोग सहाय्येन संग्रहालय भवने चतुर्णां कक्षाणां निर्माणं संजातम्।

श्री साहिबसिंह वर्मा, मुख्यमन्त्रि दिल्ली सर्वकारः, डॉ. के.पी. नौटियाल, कुलपतिः, गढ़वाल विश्वविद्यालयः, डॉ. महेन्द्र सोढ़ा, कुलपतिचरः, लखनऊ विश्वविद्यालय तथा चान्येअनेके महानुभावाः संग्रहालयम् अमुं प्रेक्ष्य प्राशंसन्।

समुपस्थिताः अतिथयः !

नारीशिक्षामुन्नेतुं विश्वविद्यालयेनानेन देहरादून नगरे सुदीर्घकालात् कन्या गुरुकुलं सञ्चाल्यते, तत्र संस्कृत, वेद, हिन्दी, आङ्लभाषा, संगीत, इतिहासादि विषयैः सह कम्प्यूटर विषयस्यापि उच्चशिक्षा प्रदीयते।

हरिद्वार नगरे बालिकानामुच्चशिक्षाप्राप्तयेन काचित् समुचिता व्यवस्था आसीत्। अस्माभिरभावोऽयमपाकर्तुं कन्या गुरुकुलमहाविद्यालयः प्रारब्धः। बालिकाः प्रबन्धविषये एम.बी.ए. उपाधि प्राप्तये अध्ययनरताः सन्ति। श्री सुरेखा राणा, सुश्री बिन्दु अरोड़ा प्रवक्तृपदे नियुक्ते। डॉ. सुनृता महोदयायाः निर्देशने महाविद्यालयोऽयं सततमुन्नतिपथमारोहति। तत्रसुयोग्याः, कर्मशीलाः प्राध्यापिकाः मनसा अध्यापयन्ति। कन्यागुरुकुलमहाविद्यालयस्य वार्षिकोत्सवे प्राध्यापिकानां मार्गदर्शने सांस्कृतिककार्यक्रमाः छात्राभिः प्रदर्शिताः। आसां कृते सुविशालस्य भवनस्य निर्माणं क्रियते।

प्रेयांसः स्नातकाः !

स्वामिश्रद्धानन्देन येषां शाश्वतजीवनमूल्यानां परिरक्षणाय, राष्ट्रियैकतायाः, अखण्डतायाः, चरित्रस्य, धार्मिकसद्भावस्य च विकासाय गुरुकुलशिक्षापद्धतिरियं समुद्भाविता, तानि जीवनमूल्यानि, ते च आदर्शाः भवतां जीवने स्थितिं विधाय प्रतिपदमुन्नतिं साफल्यञ्च प्रदास्यन्ति। यद्यपि वर्तमान समाजे विषमाः समस्याः प्रादुर्भवन्ति, परं गुरुजनानामाशीर्वादेन सह भवतामात्मविश्वासो निश्चितं जीवनमुन्नेष्यति। युष्माकं सर्वेषां कल्याणाय, सर्वविधमाङ्गल्याय च परेशं प्रार्थये।

विश्वविद्यालयस्य सर्वाङ्गीणविकासे अधिकारिणां, शिक्षकानां, कर्मचारिणां, ब्रह्मचारिणाम् अभिभावकानाञ्च सहयोग एव प्रशस्यते। कुलाधिपति श्रीसूर्यदेव महोदयानां, परिद्रष्टा श्री महावीरसिंह महोदयानां च निर्देशनेऽसौ विश्वविद्यालयः प्रगतिपथमारोहति।

हे महाजनाः सज्जनाः !

सौभाग्यमिदमस्माकं यद् साहित्यकोविदाः अन्तर्राष्ट्रीय संबंध संस्थाने भारतीय भाषा विभागस्य अध्यक्षाः डॉ. आलेग जी उल्त्सिफेरो व महोदयाः दीक्षान्त भाषणायात्र विराजन्ते। भवता गुरुकुलमुपेत्य गुरुकुलीय शिक्षां प्रति निजानुरागः प्रकटितः। गुरुकुलमध्ये भवन्तमालोक्य सर्वेऽपि कुलवासिनो वयं धन्याः। भवतामाशीर्वचोभिः विश्वविद्यालयः नूनं प्रतिष्ठां प्राप्स्यतीति विश्वसिः।

अन्ते चाहं समुपस्थितानां सर्वेषां महानुभावानां धन्यवादान् व्याहरन् सकल जगज्जेगीयमानं परमेशमभ्यर्थये—

भद्रं भद्रं न आभर इषमूर्जं शतक्रतो।

1998–विकास का खुला दस्तावेज

(परिस्फुटं विकास परिदृश्यम्)

❑ डॉ. धर्मपालः

ओं यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते।
तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा।।

(यजुर्वेद, 32/14)

परमपूज्याः संन्यासिनः, मुख्यातिथयः श्री प्रो. सुमतीन्द्र नाडिग महोदयाः, कुलाधिपतिपदम् अलङ्कुर्वाणाः मान्याः श्री सूर्यदेव महाभागाः, सम्मान्याः आर्य्यनेतारः, मञ्चस्थाः विद्वांसः, विश्वविद्यालये विद्यादानरताः उपाध्यायाः, नवस्नातकाः, अस्मिन् दीक्षान्त समारोहे समागताः समुपस्थिताः शिष्टपरिषदः, कार्यपरिषदः, शिक्षापटलस्य, आर्यविद्या सभायाश्च सम्मान्याः सदस्याः, सुदूरस्थानेभ्यः अमुम् दीक्षान्त समारोहं द्रष्टुं समायाताः भ्रातरो भागिन्यश्च !

अद्य शुभदिवसे गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालयस्य अष्टनवतितमे दीक्षान्त समारोहे समागतानां सभ्यानां महानुभावानां हार्द स्वागतम् अभिनन्दनञ्च व्याहरन्तो वयम् अमन्दम् आनन्दम् अनुभवामः।

अयं विश्वविद्यालयः प्रत्यहं भगवतोऽनुकम्पया प्रगतिपथम् आरोहति। गुरुकुलस्य प्राचीन परम्परानुसारम् प्रतिदिनं प्रातःकाले विश्वविद्यालये आचार्य वेदप्रकाशशास्त्रिणां निर्देशने यज्ञः प्रसरति। प्रगतेः संक्षिप्तं वृत्तं भवतां कर्णगोचरीभवतु इति विमृश्य समासेनैव उदीर्यते। साम्प्रतम् अस्मिन् विश्वविद्यालये षट्सङ्कायाः प्रवर्धमानाः सन्ति। ते च प्राच्यविद्या, मानविकी, विज्ञान, जीवविज्ञान, प्रौद्योगिकी, प्रबन्धन सङ्काय रूपेण विद्यादीप प्रज्वालने सततं क्रियाशीलाः सन्ति। अपरौ द्वौ हरिद्वार, देहरादून नगरस्थौ कन्या महाविद्यालयौ अपि प्रचलतः। एकैकस्य सङ्कायस्य महाविद्यालयस्य च विभागानां विवरणं प्रस्तूयते।

प्राच्यविद्यासङ्कायः

अस्मिन् सङ्काये वेद, संस्कृत, दर्शन, इतिहास, योग, शारीरिक शिक्षाविभागाः सन्ति।

एकञ्च श्रद्धानन्द शोधसंस्थानमपि वर्तते। साम्प्रतं प्रो. श्यामनारायण सिंह महाभागाः सङ्कायाध्यक्ष पदे कार्यरताः सन्ति।

वेदविभागः –डॉ. मनुदेव बन्धुमहाभागस्य अध्यक्षतायाम् अयं विभागः सततं प्रगतिपथमनुसरति। अस्मिन् विभागे डॉ. रूपकिशोर शास्त्री, डॉ. दिनेशचन्द्र शास्त्री, डॉ. सत्यदेव निगमालङ्कारः –एते चत्वारः उपाध्यायाः सन्ति। प्राच्यविद्यासङ्कायस्य तत्त्वावधाने समायोजितायां 'प्राचीन भारते धर्मो राजनीतिश्च' इत्यस्मिन् विषये राष्ट्रिय संगोष्ठ्यां सर्वे प्राध्यापकाः भागं गृहीतवन्तः। डॉ. मनुदेवबन्धु, डॉ. दिनेशचन्द्र शास्त्रिणौ अस्यां संगोष्ठ्याम् शोधपत्रेऽपि अपठताम्। डॉ. मनुदेवेन आचार्य वेदप्रकाश शास्त्रि महोदयस्य निर्देशने 'छान्दोग्योपनिषद्'–नामके ग्रन्थे पी-एच.डी. उपाधिरधिगतः। डॉ. रुपकिशोर शास्त्रिणः बृहद् शोधपरियोजना पूर्त्तिमगात्। उ.प्र. संस्कृत संस्थाने सदस्य रूपे रूपकिशोरो राजते।

डॉ. दिनेशचन्द्रशास्त्रिणः 'वैदिक उपमा कोश' नामिका बृहद् शोधपरियोजना विश्वविद्यालय अनुदान आयोगेन स्वीकृता। डॉ. दिनेशचन्द्रः गुरुकुल विश्वविद्यालयस्य 'गुरुकुल पत्रिकाया' उपसम्पादकत्वमपि भजते।

पंजाब प्रान्तस्य फाजिल्का नगरान्तर्गत डी.ए.वी. शिक्षण संस्थानस्य स्वर्ण जयन्ती समारोहे विभागीयाः सर्वे प्राध्यापकाः भागं गृहीतवन्तः। वेदविभागे शोध कार्यमपि प्रचलति।

संस्कृतविभागः –साम्प्रतम् अस्मिन् विभागे प्रो. वेदप्रकाश शास्त्रिणः प्रोफेसर पदे प्रतिष्ठिताः सन्ति। एते आचार्य उपकुलपति पदस्य गौरव प्रख्यापने सफलाः सन्ति। एते साम्प्रतं मानविकी सङ्कायस्य अध्यक्ष भारमपि वहन्ति। पंजाब प्रान्तस्य डी.ए.वी. शिक्षणसंस्थान फाज़िल्कानगरस्य स्वर्ण जयन्ती समारोहे विशिष्टातिथित्वेन भागम् गृहीतवन्तः। एभिः महानुभावैः नैकेषु विश्वविद्यालयेषु संस्कृत संस्थानेषु च विशिष्टानि व्याख्यानानि दत्तानि प्रतिष्ठितानि कार्याणि च सम्पादितानि।

अस्मिन् विभागे रीडर पदे डॉ. महावीर, डॉ. सोमदेव, डॉ. रामप्रकाश महाभागाः राराजन्ते। प्रवक्तृपदे डॉ. ब्रह्मदेवः सुशोभते। इदानीं विभागस्य अध्यक्षतां डॉ. रामप्रकाश शर्माणः कुर्वन्ति। डॉ. रामप्रकाशः विधिन्याय-सम्बन्धिग्रन्थानाम् संस्कृतानुवादं करोति। डॉ. महावीरेण प्राच्यविद्यासङ्कायस्य तत्त्वावधाने समायोजितायाः राष्ट्रिय संगोष्ठ्याः साफल्येन संयोजकत्वं वोढम्। अनेन उ.प्र. संस्कृत संस्थान द्वारा गुरुकुल विश्वविद्यालयस्य प्रांगणे प्रायोजित सम्मेलनस्य संयोजनमपि कृतम्। डॉ. सोमदेवः प्रभात आश्रमे मेरठ मण्डले आयोजितायाम् शोध संगोष्ठ्यां भागं गृहीतवान्। डॉ. ब्रह्मदेवो अपि 'प्राचीन भारते धर्मो राजनीतिश्च' इत्यस्याः संगोष्ठ्याः कृते एकं शोधपत्रम् अलिखत्।

दर्शनविभागः –विभागे डॉ. जयदेव वेदालङ्कार महाभागाः प्रोफेसर पदे विराजन्ते। डॉ. त्रिलोकचन्द्रः अध्यक्ष पदभारं वहति। डॉ. विजयपाल, डॉ. उमराव सिंह

बिष्ट, डॉ. सोहनपालाः अन्ये उपाध्यायाः कार्यरताः सन्ति। डॉ. जयदेवस्य 'भारतीय दर्शन में प्रमाण' नामकं पुस्तकं मुद्रितम्। डॉ. बिष्टः 'इण्डियन फिलोसिफिकल कांग्रेस' नामिकायाः संस्थायाः कोषाध्यक्ष पदे निर्वाचितः।

विभागस्य सर्वे प्राध्यापकाः यथारुचि स्वविषयानुरूपे शोधकार्ये निरताः सन्ति।

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्वविभागः —कुलसचिव पदे प्राच्यविद्या सङ्कायाध्यक्षपदे च प्रतिष्ठिताः डॉ. श्यामनारायण सिंह महोदयाः अस्य विभागस्य अध्यक्षपदभारमावहन्ति। अस्मिन् विभागे डॉ. काश्मीर सिंह, डॉ. राकेश शर्मा, डॉ. प्रभात कुमार, डॉ. देवेन्द्र कुमाराः कार्यरताः सन्ति। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालयस्य प्राक्तनाचार्याः सङ्कायाध्यक्षाश्च डॉ. उदयवीर सिंह महाभागाः अस्मिन् विभागे अतिथि आचार्य 'विजिटिंग प्रोफेसर' पदमलङ्कुर्वन्ति। डॉ. राकेशः एकस्याम् लघु शोध प्रायोजनायाम् कार्य करोति राष्ट्रिय छात्र सेनायाश्च सञ्चालनपि करोति। डॉ. देवेन्द्रः एन.एस.एस. कार्यम् निभालयति। डॉ. प्रभातकुमारः स्वतन्त्रता ज्योतिम् स्वामि श्रद्धानन्द बलिदान दिवसावसरे गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालयस्य कुलाधिपतये श्री सूर्यदेव महाभागाय दिल्ली नगर्यां समर्पितवान्।

प्रो. एस.एन. सिंह, डॉ. काश्मीर सिंह, डॉ. राकेश शर्मणाम् निर्देशने बहवः छात्राः शोध कार्यं कुर्वन्ति। अस्मिन् सत्रे प्रो. एस.एन. सिंह महाभागानां निर्देशने शोध कार्यं समाप्य अस्मिन्नेव विभागे कार्यरतः अनिल कुमारः शोधोपाधिं प्राप्नोति। शोधसमित्यां अस्मिन् सत्रे चत्वारो विषया अपि अनुसन्धानार्थं स्वीकृताः सन्ति। विभागस्य छात्रैः दिल्ली, मथुरा, आगरा प्रभृतीनां स्थानानामपि शैक्षणिकं भ्रमणं कृतम्। विभागीय प्राध्यापकाः डॉ. प्रभात कुमार, डॉ. देवेन्द्र कुमार गुप्ता एवं संग्रहालय सहायकः श्री अनिल कुमारः हिमाचल प्रदेशे भारतीय सर्वेक्षण विभागस्य उत्खनन कार्ये पुरातत्त्व सम्बन्धि प्रशिक्षणाय भागं गृहीतवन्तः।

पुरातत्त्व संग्रहालयः —प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभागस्यैव अयम् अंगभूतो विभागः। अस्य निदेशकाः इतिहासमर्मज्ञाः प्रो. एस.एन.सिन्हाः सन्ति। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग सहाय्येन संग्रहालय भवने निर्मितेषु चतुर्षुकक्षेषु अध्यापनकार्यम् प्रारब्धम्। मानवसंसाधनविकास मंत्रालयेन अस्मिन् सत्रे विभिन्नाभ्यः परियोजनाभ्यः पञ्चाशीतिसहस्राणां (85000) रूप्यकाणाम् आर्थिक साहाय्यस्य स्वीकृतिर्मिलिता।

श्री पुरुषोत्तम सिंहः काशी हिन्दू विश्वविद्यालयः, प्रो. रामनाथ मिश्रः ग्वालियरः, प्रो. विजयबहादुर रावः गोरखपुर विश्वविद्यालयः, डॉ. धर्मपाल सिंहः सांसद, बुलन्दशहरः, डॉ. दयानन्द मिश्र मानवसंसाधनविकास मंत्रालयः, प्रो. हीरोनाका कुझिको, किन्की विश्वविद्यालय, जापान, प्रो. भूदेव शर्मा यू.एस.ए., प्रो. जौहरीलाल निदेशकः ONGC तथा चान्येऽनेके महानुभावाः संग्रहालयम् अमुम् प्रेक्ष्य प्राशंसन्।

योगविभागः —डॉ. ईश्वर भारद्वाजस्य आध्यक्ष्ये विभागः प्रगतिं करोति। अस्मिन्

विभागे डॉ. सुरेन्द्र कुमार, योगेश्वरदत्त, सुरक्षित गोस्वामिनः कार्यनिरताः सन्ति। विभागीय छात्रेण जितेन्द्र कुमारेण अखिल भारतीय अन्तर्विश्वविद्यालय योगप्रतियोगितायां स्वर्णपदकं लब्धम्। ब्रह्मचारी आदित्यमहाभागस्य योगविषये विशिष्टं व्याख्यानम् जातम्। डॉ. ईश्वरभारद्वाजेन अनेकत्र योगविषयमधिकृत्य विशिष्टानि व्याख्यानानि प्राणिदत्तानि। आकाशवाणीतः समये-समये परिचर्चा अपि जाताः। कुम्भ महापर्वावसरे विभागेन 'योग प्रशिक्षण चिकित्सा शिविर एवं प्रदर्शनी' अपि आयोजिता।

श्रद्धानन्द शोधसंस्थानम्–डॉ. भारतभूषण विद्यालङ्कारस्य निदेशने संस्थानम् इदं शोधग्रन्थानां प्रकाशनं करोति। एकं बहुमूल्यं 'पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति– कृतित्व के आयाम' नामकं पुस्तकम् संस्थानेन प्रकाशितम्। अस्मिन् वर्षे संस्थाने शोधकार्यम् (पी-एच.डी.) आरब्धम्। 'गुरुकुल पत्रिकायाः' प्रकाशनमपि इदं संस्थानं करोति। वेदविषयकम्, आर्यसमाज विषयकं, श्रद्धानन्द विषयकं च कार्यं संस्थानमनुसन्दधाति।

शारीरिक शिक्षाविभागः –छात्राणां शारीरिकी मानसिकी योग्यताविवृद्ध्यर्थम् शिविद्यालये शारीरिक शिक्षा विभागः डॉ. रामकुमार सिंह, डागर महोदयस्य आध्यक्ष्ये प्रशंसनीयं कार्यं करोति। अत्रत्याः छात्राः अनेकासु कबड्डी, बॉक्सिंग, योगक्रीडादि राष्ट्रिय प्रतियोगितासु भागं गृहीतवन्तः, विजयं चालभन्त। छात्रः जितेन्द्र कुमारः, सर्वश्रेष्ठ शारीरिक प्रदर्शन हेतोः अस्मिन् दीक्षान्त समारोहे मया(कुलपतिना) पञ्चशतरुप्यकैः ब्लेजरवस्त्रेण च पुरस्क्रियते।

मानविकी सङ्कायः

मानविकी सङ्काये हिन्दी, अङ्ग्रेजी, मनोविज्ञान, प्रौढ़ शिक्षाश्चत्वारो विभागाः चलन्ति। आचार्य वेदप्रकाश शास्त्रिणः सङ्कायाध्यक्षपदे प्रतिष्ठिाः सन्ति।

हिन्दीविभागः –डॉ. विष्णुदत्त राकेशः प्रोफेसर पदे, डॉ. भगवान्देव पाण्डेयः विभागाध्यक्षपदे, डॉ. सन्तराम वैश्यः, डॉ. ज्ञानचन्द्र रावलश्च रीडरपदे कार्यरतौ स्तः। श्री कमलकान्त बुधकरः प्रवक्तृपदम् अलङ्करोति। अस्मिन् वर्षे डॉ. भवानीलाल भारतीयः (जोधपुर), डॉ. ओम्प्रकाश सिंहल (दिल्ली), प्रो. चन्द्रशेखर त्रिवेदी (हरिद्वार), डॉ. सर्वजित राय (काशी), डॉ. श्यामसुन्दर शुक्ल (वाराणसी), डॉ. केशव प्रथम वीर (पुणे), डॉ. नरेश मिश्र (रोहतक), डॉ. हरिमोहन (गढ़वाल) प्रभृतयो महानुभावाः विभागे दत्तव्याख्यानाः कृतकार्याश्च जाताः। सन्त कबीरस्य षटशततमजयन्त्यवसरे एका त्रिदिवसीयाः परिचंर्चा मई मासे (1998) आयोजयिष्यते विभागः।

अङ्ग्रेजीविभागः –विभागाध्यक्षः श्री सदाशिव भगत महोदयः विभागस्य स्थापनाकालत एव सेवारतोऽस्ति। अस्मिन् विभागे डॉ. श्रवणकुमार शर्मा, डॉ. अम्बुज शर्मा, डॉ. कृष्णावतार अग्रवाल महाभागाः कार्यरताः सन्ति। अस्मिन्नेव सत्रे प्रोफेसर पदभाक् श्री डॉ. नारायण शर्मा सेवा निवृत्तो जातः। विभागे अस्मिन् वर्षे व्यावहारिक आङ्लभाषा पाठ्यक्रमः (Vocational English) प्रारब्धः। विभागस्य सर्वे प्राध्यापकाः

विभिन्न स्थानेषु गत्वा शैक्षणिकं कार्यम् सम्पादितवन्तः।

मनोविज्ञानविभागः –साम्प्रतम् विभागे प्रो. ओमप्रकाश मिश्र महाभागाः ज्येयांसः गरीयांसः प्राचीनतमाश्च सन्ति। डॉ. एस.के. श्रीवास्तवः विभागाध्यक्षपदम् अलङ्करोति। अनेन विश्वविद्यालयेषु नैकानि विशिष्टानि व्याख्यानानि दत्तानि। साम्प्रतम् छात्रावासस्यापि अध्यक्षत्वं वहति।

डॉ. सी.पी. खोखर, श्री लाल नरसिंह नारायण, श्री विपिन कुमार महोदयाः प्रवक्तृपदे कार्यं कुर्वन्ति। एते सर्वे विश्वविद्यालयस्य विभिन्नेष्वपि कार्यक्रमेषु सहभागित्वं निर्वहन्ति। प्रो. सागर शर्मा (शिमला) विशिष्ट व्याख्यानार्थमत्र आगतः।

प्रौढशिक्षाविभागः –अस्मिन् विभागे डॉ. रामदत्त शर्मा अध्यक्ष पदभारं वहति। डॉ. जसवीर मलिकः परियोजना अधिकारी रूपेण कार्यं करोति। जने-जने साक्षरतायाः प्रचाराय–प्रसाराय विभागोऽयं कृतसंकल्पो वर्तते। अस्मिन् वर्षे अखिल भारतीयं प्रौढ शिक्षा सम्मेलनं समायोजितम्। देशस्य विभिन्न भागेभ्यः समागत्य प्रतिनिधयः शिक्षाया बहुव्यापकत्वम् उपयोगित्वञ्च वर्णितवन्तः।

विभागीय कार्यकर्त्तारः ग्रामे-ग्रामे, नगरे-नगरे गत्वा प्रौढान् पाठयन्ति प्रोत्साहयन्ति च।

विज्ञान सङ्कायः

डॉ. श्यामलाल सिंह विज्ञान सङ्कायस्य अध्यक्षपद भारम् वहति। विज्ञान सङ्कायस्य सर्वे छात्रा अनिवार्यरूपेण वेदम् पठन्ति। अयं पाठ्यक्रमः 'धर्म दर्शन संस्कृति' नाम्ना चलति।

गणितसांख्यिकीविभागः –साम्प्रतं विजयेन्द्र कुमार शर्मा अध्यक्ष पदभारं वहति। विभागे डॉ. वीरेन्द्र अरोड़ा, डॉ. महीपाल सिंह, डॉ. प्रभाकर प्रधान महाभागाः सत्यनिष्ठया विभागस्य कल्याणाय कृतसंकल्पाः सन्ति। श्री ओमप्रकाश, डॉ. देवेन्द्रदत्त शर्मा, श्री विवेक गोयल, श्री सुरेशपाल प्रभृतयः तदर्थप्रवक्तृपदे कार्यं कुर्वते। डॉ. श्यामलाल सिंहः 'आर्यभट्ट' शोधपत्रिकायाः सम्पादकोऽस्ति। विभागीय प्राध्यापकाः नैकेषु सम्मेलनेषु भागं गृहीतवन्तः।

रसायनविज्ञानविभागः –डॉ. रणधीर सिंहः सम्प्रति अध्यक्ष पदम् अधितिष्ठति। विभागे डॉ. रामकुमार पालीवाल, डॉ. इन्द्रायण, डॉ. कौशल कुमार, डॉ. रजनीशदत्त कौशिक, डॉ. श्रीकृष्णमहाभागाः कार्यरताः सन्ति। भारतमातुः स्वतन्त्रतायाः स्वर्णजयन्ती वर्षावसरे डॉ. इन्द्रायणस्य निर्देशने नैके कार्यक्रमाः समायोजिताः। विभागीयोपाध्यायानां निर्देशने अनेके छात्राः शोधकर्मणि निरताः सन्ति। डॉ. कौशिकः विश्वविद्यालयस्य कार्यपरिषदे निर्वाचितः। डॉ. कौशल कुमारेण छात्रकल्याणपरिषदः निर्वाचनं शान्तिपूर्वकं सम्पादितम्।

भौतिकीविभागः –अद्यत्वे डॉ. राजेन्द्र कुमार महोदयस्याध्यक्षे विभागोऽयं

प्रगतिपथम् आरोहति। साम्प्रतं विभागे श्री हरीशचन्द्र ग्रोवर, डॉ. पी.पी. पाठकौ कार्यरतौ विद्येते। डॉ. बुद्धप्रकाश शुक्लः स्वकीयं समग्रं कार्यकालं समाप्य सेवानिवृत्तिं गतः। अतः असौ धन्यवादार्हः कृतज्ञश्चाहम्। विभागीयाः सर्वे प्राध्यापकाः विभागस्योन्नत्यै यथाशक्ति कार्यमकुर्वन्। डॉ. राजेन्द्र कुमारः वार्षिक परीक्षायां साफल्येन सञ्चालनमपि करोति। डॉ. राजेन्द्र कुमारस्य एका बृहद् शोध परियोजना 'C.S.I.R.' नाम्नी संस्थतः आर्थिकानुदान प्रदानार्थं स्वीकृता। एम.एस-सी. भौतिक्यां विषय विशेषज्ञतायै एको नवीनः पाठ्यक्रमोऽपि प्रारब्धः।

प्रौद्योगिकी सङ्कायः

प्रौद्योगिकी सङ्कायस्य स्थापना अस्मिन्नेव वर्षे जाता। साम्प्रतं डॉ. विनोद कुमार शर्मा सङ्कायाध्यक्षस्य कार्यभारं वहति। वर्तमानेऽस्मिन् सङ्काये कम्प्यूटर विज्ञान विभागः कम्प्यूटर केन्द्रञ्च सञ्चलतः।

कम्प्यूटरविभागः –डॉ. विनोद कुमार शर्मणोऽध्क्षतायां विभागः सुचारुतया प्रचलति। साम्प्रतं विभागे डॉ. कर्मजीत भाटिया, श्री सुनील कुमार, श्री वेदव्रत, श्री द्विजेन्द्र पन्त महानुभावाः कार्यरताः सन्ति। विभागे लक्षाधिकानां रूप्यकाणां कम्प्यूटर यन्त्राणि क्रीतानि। विभागे एका हिन्दी भाषा विषयमधिकृत्य शोधगोष्ठी अपि आयोजिता। भविष्यति काले अति उच्च शिक्षायाः अनुसंधानस्य च केन्द्रं भविता अयं विभागः।

कम्प्यूटर केन्द्रम्–विश्वविद्यालये सुसमृद्धं कम्प्यूटर केन्द्रम् अपि कार्यरतं विद्यते। डॉ. विनोद कुमारस्य आध्यक्ष्ये श्री अचल गोयल, श्री महेन्द्र सिंह, श्री मनोज कुमार, श्री शशिकान्त महानुभावाः कार्यरताः सन्ति। मुख्य कार्यालयस्य सुव्यवस्थार्थं पृथक्त्वेन एकः कम्प्यूटर अनुभागः संस्थापितः। विभागीयाः कर्मचारिणः दत्तावधानाः विविध कार्यक्रमेष्वपि भागं गृह्णन्ति।

जीवविज्ञान सङ्कायः

साम्प्रतं जीवविज्ञानसङ्कायस्य अध्यक्षपदे डॉ. बी.डी. जोशी महाभागो विराजते। अस्य पुरुषोर्थेन सङ्कायः समुन्नति पथम् अनुसरति। अस्मिन् सङ्काये वनस्पति विज्ञान, जन्तुविज्ञान, पर्यावरणविज्ञान, सूक्ष्मवनस्पतिविज्ञान, सूक्ष्मजन्तुविज्ञान विभागाः सन्ति।

जन्तुविज्ञान-पर्यावरणविज्ञान विभागः –अस्मिन् विभागे डॉ. बी.डी. जोशी, डॉ. टी.आर. सेठ, डॉ. ए.के. चोपड़ा, डॉ. दिनेश भट्ट, डॉ. देवराज खन्ना, डॉ. प्रकाश चन्द्र जोशी महाभागाः कार्यरताः सन्ति। विभागे एका राष्ट्रिया पर्यावरण विषयिकी शोध संगोष्ठी फरवरी मासे आयोजिता। अस्या उद्घाटनम् प्रो. आर.आर. दासः (उपकुलपतिः, जीवाजी वि.वि., ग्वालियरः) अकरोत्। डॉ. प्रणवपण्ड्या महाभागः (अधिष्ठाता शान्तिकुञ्जं, हरिद्वारम्) सारगर्भितं, प्रेरणादायकं, चरित्रोन्नायकं च

व्याख्यानं प्रादात्। विभागस्य प्राध्यापकैः 'Himalayan Journal of Environment and Zoology' नाम्नी शोधपत्रिका साफल्येन प्रकाशिता। विभागे भारतीय वैदेशिक विदुषां व्याख्यानानि समायोजितानि। विभागीय प्राध्यापकानां संरक्षणे राष्ट्रिय सेवा योजनायाः कार्यक्रमाः प्रचालिताः।

वनस्पतिविज्ञानविभागः –साम्प्रतं डॉ. डी.के. माहेश्वरी महाभागस्य अध्यक्षतायां विभागः सञ्चलति। अयं छात्रकल्याण परिषदश्चापि अध्यक्षतां करोति। विभागे डॉ. पुरुषोत्तम कौशिक, डॉ. आर.सी. दूबे, डॉ. जी.पी. गुप्त, डॉ. नवनीत प्रभृतयो महानुभावाः अध्यापन्ति अनुसन्धानकार्यं कुर्वन्ति कारयन्ति च।

विभागे सूक्ष्मवनस्पतिविषयिण्यः विद्याः पाठ्यन्ते। विभागीयाः प्राध्यापकाः विश्वविद्यालयस्य विभिन्नेषु कार्यक्रमेष्वपि भागं गृहीतवन्तः। हर्षस्यायं विषयो यत् प्रो. डी.के. माहेश्वरी महोदयेन एका वृहच्छोधपरियोजना समधिगता।

प्रबन्धन सङ्कायः

विश्वविद्यालयोऽयं प्रबन्धनशिक्षाक्षेत्रे प्रतिदिनम् अग्रेसरति। डॉ. एस.सी. धमीजा सङ्काय प्रमुखो विभागाध्यक्षश्च वर्तते। साम्प्रतम् सङ्काये डॉ. वी.के. सिंह, डॉ. वी.के. साहनी, श्री एस.पी. सिंह, श्री अनुराग, श्री मदान, श्री भगत प्रभृतयः महानुभावा अध्यापनकर्मणि निरताः सन्ति। एकं नवीनं भवनमपि निर्मितम्। एका प्रबन्धन गोष्ठी (INFAM.97) अपि समायोजिता। प्रो. पूर्णिमा अग्रवाल, प्रो. आर. रघुवंशी, प्रो. पी.के. जैन, श्री आलोक शर्मा, श्री सुधांशु शर्मा, श्री रवीश धमीजा प्रभृतीनां विद्वत्तल्लजानां प्रबन्धनविषयेषु विशिष्टानि व्याख्यानानि जातानि। विभागीयाः प्राध्यापकाः भारतस्य विभिन्नेषु शिक्षासंस्थानेषु गत्वा विश्वविद्यालयस्य यशोगाथां प्राचीचरन्।

कन्या गुरुकुल महाविद्यालयः, हरिद्वारम्–नूतनोऽयं महाविद्यालयः डॉ. सूनृता विद्यालङ्कार महोदयायाः प्रभारीत्वे दिनानुदिनं प्रवर्धते। साम्प्रतं महाविद्यालये हिन्दी, अङ्ग्रेजी, संस्कृत, इतिहास, मनोविज्ञान, रसायन, पर्यावरण, सूक्ष्मजीवविज्ञान, भौतिकी, गणित एवं सांख्यिकी विभागाः सन्ति। येषु छात्राः आगत्य स्वज्ञान पिपासाम् शमयन्ति। महाविद्यालये एको नूतनः पुस्तकालयोऽपि संस्थापितः। महाविद्यालयस्य कृते भवनानि निर्मापितानि निर्मापयिष्यन्ते च।

पुस्तकालयः –साम्प्रतं डॉ. जगदीश विद्यालङ्कारस्य अध्यक्षतायां पुस्तकालयः स्वकीयां समृद्धिं सन्धारयति। डॉ. गुलजार सिंह चौहानः सहायक पुस्तकालयाध्यक्षपदे कार्यं विदधाति। अयं पुस्तकालय दुर्लभः प्राच्य विद्याग्रन्थानां पावन कोषागारो वर्तते। इदानीम् विविध विषयाणां लक्षाधिकानि पुस्तकानि राराजन्ते। विश्वविद्यालयस्य श्रद्धानन्द प्रकाशन केन्द्रेन प्रतिवर्षं नूतन ग्रन्थाः प्रकाश्यन्ते। पुस्तकालयलाभार्थिनां संख्या सहस्राधिका जाता।

स्वतन्त्रतायाः स्वर्ण जयन्ती समारोहावसरे स्वनामधन्य स्वातन्त्र्य सेनानी

स्वामिश्रद्धानन्दमहाभागस्य क्रान्तिकारी लेखटीप्पण्यादिषु आधारितम् एकम् अभिनवं ग्रन्थम् प्रकाशितम्। अस्य ग्रन्थस्य सम्पादकौ डॉ. विष्णुदत्त राकेश, डॉ. जगदीश विद्यालङ्कारौ स्तः।

अयं पुस्तकालयः भारतवर्षस्य विश्वस्य च अनेकेषाम् विदुषां नेतृणां चरणरजोभिः पूतः। येषु श्री सतीशचन्द्रगुप्त (दिल्ली), श्री नरेशचन्द्र चतुर्वेदी (सांसद), प्रो. जे.पी. गुप्त (दिल्ली), प्रो. ओम्प्रकाश-सिंहल (चीन), डॉ. उलत्सिफेरोव, डॉ. स्मेकल (रूस), श्री साहिबसिंह वर्मा (मुख्यमन्त्रि, दिल्ली) प्रभृतयो महानुभावाः प्रमुखाः सन्ति!

समुपस्थिताः अतिथयः !

नारीशिक्षामुन्नेतुं विश्वविद्यालयेनानेन देहरादून नगरे सुदीर्घकालात् कन्या गुरुकुलं सञ्चाल्यते। तत्र संस्कृत, वेद, हिन्दी, अङ्लभाषा, संगीत, इतिहासादि विषयैः सह कम्प्यूटर विषयस्यापि उच्चशिक्षा प्रदीयते।

प्रेयांसः स्नातकाः !

स्वामिश्रद्धानन्देन येषां शाश्वतजीवनमूल्यानां परिरक्षणाय, राष्ट्रियैकतायाः, अखण्डतायाः, चरित्रस्य, धार्मिकसद्भावस्य च विकासाय गुरुकुलशिक्षापद्धतिरियं समुद्भाविता, तानि जीवनमूल्यानि, ते च आदर्शाः भवतां जीवने स्थितिं विधाय प्रतिपदमुन्नतिं साफल्यञ्च प्रदास्यन्ति। यद्यपि वर्तमान समाजे विषमाः समस्याः प्रादुर्भवन्ति, परं गुरुजनानामाशीर्वादेन सह भवतामात्मविश्वासो निश्चितं जीवनमुन्नेष्यति। युष्माकं सर्वेषां कल्याणाय, सर्वविधमाङ्गल्याय च परेशं प्रार्थये।

विश्वविद्यालयस्य सर्वाङ्गीणविकासे अधिकारिणां, शिक्षकानां, कर्मचारिणां, ब्रह्मचारिणाम् अभिभावकानाञ्च सहयोग एवं प्रशस्यते। कुलाधिपति श्री सूर्यदेव महोदयानां निर्देशने ऽसौ विश्वविद्यालयः प्रगतिपथमारोहति।

हे महाजनाः सज्जनाः !

सौभाग्यमिदमस्माकं यद् दीक्षान्त भाषणायात्र आङ्लभाषासाहित्य कोविदाः, राष्ट्रिय पुस्तक न्यास प्रमुखाः डॉ. सुमतीन्द्र राघवेन्द्र नाडिग महोदयाः विराजन्ते। भवता गुरुकुलमुपेत्य गुरुकुलीय शिक्षां प्रति निजानुरागः प्रकटितः। गुरुकुलमध्ये भवन्तमालोक्य सर्वेऽपि कुलवासिनो वयं धन्याः। भवतामाशीर्वचोभिः विश्वविद्यालयः नूनं प्रतिष्ठां प्राप्स्यतीति विश्वसिमः।

अन्ते चाहं समुपस्थितानां सर्वेषां महानुभावानां धन्यवादान् व्यवहरन् सकल जगज्जेगीयमानं परमेशमभ्यर्थये–

भद्रं भद्रं न आभर इषमूर्जं शतक्रतो।

अध्याय-3

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का गौरवशाली प्रकाशन

❑ डॉ. भवानीलाल भारतीय

गुरुकुल कांगड़ी अपने स्थापनाकाल से ही पुरातन वैदिक साहित्य, संस्कृति तथा समाज व्यवस्था के पुनरुद्धार में अपना सराहयनीय योगदान देता रहा है। इसके संस्थापक स्वामी श्रद्धानंद ने आरंभ से ही गुरुकुल को भारतीय शिक्षा पद्धति में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने वाली एक कार्यशाला का रूप दिया था। तब से लेकर आज तक अपने जीवन के छियान्बे वर्षों में गुरुकुल कांगड़ी ने उच्चकोटि के ग्रंथों के लेखन और प्रकाशन के द्वारा साहित्य के क्षेत्र में युगांतकारी मानदंड स्थापित किया है। वर्षों तक 'स्वाध्याय मंजरी' शीर्षक ग्रंथमाला के अंतर्गत धर्म, दर्शन संस्कृति, मनोविज्ञान जैसे विषयों पर जो ग्रंथ छापे वे आज भी स्वाध्यायशील पाठकों की स्मृति में यथावत् हैं!

विगत कुछ वर्षों से यहाँ शोध तथा प्रकाशन कार्य को गति देने के लिए स्वामी श्रद्धानंद अनुसंधान प्रकाशन केंद्र की स्थापना की गई है। इस प्रकाशन संस्था के द्वारा जो महत्त्वपूर्ण ग्रंथ विगत वर्षों में छपे हैं, उनका संक्षिप्त विवरण यहाँ दिया जा रहा है।

1. आचार्य रामदेव कृत भारतवर्ष का इतिहास (दो खंड)

गुरुकुल कांगड़ी ने अपने स्थापना काल से ही विभिन्न विषयों पर कुछ उत्कृष्ट ग्रंथ लिखवाने और छपवाने की योजना बनाई थी। इसी के अंतर्गत धर्म, संस्कृति और भारतीय इतिहास के अप्रतिम विद्वान् आचार्य रामदेव ने दो खंडों में भारतवर्ष का जो इतिहास लिखा, वह विशुद्ध भारतीय दृष्टिकोण को अभिव्यक्त करता था। वैदिक और आर्ष पूर्व तथा प्रागूबौद्ध काल तक का भारतीय इतिहास इन दो खंडों में समाविष्ट किया गया है। इस इतिहास की एक अन्य विशेषता यह है कि इसमें देश के तत्कालीन सांस्कृतिक वैभव का भी सम्यक् आकलन किया गया है। शासन पद्धति, युद्ध प्रबंध, न्याय व्यवस्था, अर्थनीति, धार्मिक दशा आदि जीवन से जुड़े अनेक विषयों को विवेचित करने का कारण यह इतिहास हमारे ऐतिह्य वाङ्मय की एक अमूल्य निधि

बन गया है। इसका पुनः प्रकाशन श्रेयस्कर तथा यशस्कर है।

2. स्वामी श्रद्धानंद (जीवनी)

स्वामी श्रद्धानंद के यों तो अनेक छोटे-बड़े जीवनचरित लिखे गए हैं, किंतु इनमें सर्वाधिक प्रामाणिक, विशद तथा विवेचन प्रधान जीवनी प्रसिद्ध पत्रकार पं. सत्यदेव विद्यालंकार द्वारा 1933 में लिखी गई थी। इसका एक ही संस्करण आज से पैंसठ वर्ष पूर्व प्रकाशित हुआ था। प्रख्यात विद्वान् तथा समर्थ लेखक डॉ. विष्णुदत्त राकेश के सुयोग्य संपादन में इस ऐतिहासिक जीवन चरित का एक सुसज्जित सुंदर संस्करण उक्त केंद्र से 1995 में प्रकाशित किया गया है। ग्रंथ लेखक स्व. सत्यदेव विद्यालंकार स्वामी श्रद्धानंद के प्रत्यक्ष शिष्य थे जिन्होंने इस महान् तेजस्वी राष्ट्र नेता तथा शिक्षाशास्त्री के चरणों में बैठकर अध्ययन किया था। जीवनचरित किसी कथानायक के जीवन की घटनाओं का स्थूल विवरण ही नहीं होता, अपितु घटनाओं के परिप्रेक्ष्य में नायक के चरित्र और व्यक्तित्व का लेखा-जोखा प्रस्तुत करना ही उसका अभीष्ट होता है। प्रस्तुत जीवनचरित इस कसौटी पर खरा उतरा है और इसे पढ़कर स्वामी श्रद्धानंद के विराट्, तेजस्वी तथा प्रखर व्यक्तित्व की एक जीवंत झाँकी पाठक को प्राप्त होती है।

3. दीक्षालोक (गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में प्रदत्त दीक्षांत भाषणों एवं सारस्वत व्याख्यानों का संग्रह, संपादक–डॉ. विष्णुदत्त राकेश, सह-संपादक–डॉ. जगदीश विद्यालंकार

गुरुकुल कांगड़ी का अतीत तो शानदार रहा ही है उसके दीक्षांत समारोहों की भी एक गौरवशाली परंपरा रही है। वे दीक्षांत समारोह गुरुकुल के वार्षिकोत्सवों के अवसर पर होते थे और वर्षों तक इन समारोहों का तीर्थयात्रा का-सा महत्त्व रहा। देश-विदेश के प्रमुख व्यक्ति, राजनेता, धार्मिक पुरुष, साहित्यकार तथा सार्वजनिक क्षेत्र के महापुरुष दीक्षांत भाषण देने के लिए आमंत्रित किए जाते थे। दीक्षालोक के सुयोग्य संपादक डॉ. राकेश एवं डॉ. जगदीश विद्यालंकार ने अत्यंत परिश्रम, अध्यवसाय तथा अनुसंधान के साथ वर्षों पुराने इन दीक्षांत संबोधनों का संग्रह एवं संपादन कर साहित्य के क्षेत्र में एक नया प्रतिमान स्थापित किया है। शायद ही किसी अन्य विश्वविद्यालय ने अपने साठ-सत्तर वर्ष पुराने दीक्षांत संबोधनों का ऐसा सांपादिक रूप प्रकाशित किया हो। ये दीक्षांत भाषण कितने महत्त्वपूर्ण रहे होंगे इसका अनुमान तो दीक्षांत वक्तव्य प्रस्तुत करने वालों की इस नामावली से ही लगाया जा सकता है। ये महापुरुष थे–महात्मा गांधी, महामना मालवीय, इतिहासकार चिंतामणि विनायक वैद्य, साधु टी.एल. वास्वानी, आचार्य नरेंद्रदेव, महान विद्वान् विधु शेखर भट्टाचार्य, डॉ. गोकुलचंद नारंग, महाकवि रवींद्र नाथ, शिक्षाशास्त्री अमरनाथ

झा। राजनीतिज्ञों में पं. गोविंदवल्लभ पंत, श्यामा प्रसाद मुखर्जी, डॉ. राजेंद्र प्रसाद, डॉ. राधाकृष्णन, मोरारजी देसाई आदि।

दीक्षालोक के द्वितीय खंड में कुछ विशिष्ट व्याख्यानों को दिया गया है जो समय-समय पर इस संस्था के अध्यापक तथा छात्र समुदाय के सम्मुख दिए गए थे। कुछ व्याख्यान आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानंद की निर्वाण शताब्दी पर आयोजित किए गए थे। इनमें विशिष्ट विद्वानों को पृथक् विषय पर सांगोपांग विवेचनापूर्वक अपने विचार रखने के लिए आहूत किया गया था। ये व्याख्यान 1984 में तो छपे ही, इस संग्रह में भी उनका समावेश कर लिया गया है। ऐसे व्याख्यान हैं–'आर्यसमाज : उपलब्धियाँ', 'सीमाएँ तथा अपेक्षाएँ' (भवानी लाल भारतीय) 'दयानंद और हिंदी पत्रकारिता' (स्व. क्षेमचंद्र सुमन), 'दयानंद और प्रेमचंद' (मदन गोपाल), 'भारतीय नवजागरण और स्वामी श्रद्धानंद' (विष्णु प्रभाकर)। इस प्रकार छः सौ से अधिक पृष्ठों में समाप्त दीक्षालोक साहित्य की एक स्थायी संपदा बन गया है।

4. स्वामी श्रद्धानंद (समग्र मूल्यांकन, लेखक–डॉ. रणजीत सिंह)

स्वामी श्रद्धानंद के एक पुराने जीवनचरित की चर्चा हमने ऊपर की है। पं. रामगोपाल विद्यालंकार, डॉ. भवानी लाल भारतीय तथा आस्ट्रेलिया के विद्वान्, डॉ. जे.टी.एफ. जार्डन्स, ने भी स्वामीजी के विशद जीवनचरित लिखे हैं। इस समीक्षा के लेखक ने तो समग्र श्रद्धानंद ग्रंथावली का ग्यारह खंडों में संपादन ही किया है। तथापि मैं विश्वासपूर्वक कह सकता हूँ कि डॉ. रणजीत सिंह द्वारा लिखित यह जीवनी अनेक दृष्टियों से अपूर्व है। जीवनी का कलेवर अधिक बड़ा नहीं है। (पृष्ठ संख्या दो सौ सोलह) किंतु घटनाओं का विश्लेषण, व्यक्तित्व निरूपण तथा कथानायक के समग्र प्रभाव के आकलन की दृष्टि से यह ग्रंथ को इस रूप में प्रस्तुत करने के कारण बधाई के पात्र हैं। भाषा, शैली तथा विश्लेषण सभी बिंदुओं का सफल निर्वाह इसमें हुआ है।

5. इंद्र विद्यावाचस्पति–कृतित्व के आयाम–ले. प्रो. कुशलदेव शंकरदेव कापसे (संपादक–प्रो. भारतभूषण)

प्रो. कुशलदेव मेरे अभिन्न मित्र हैं। वे वर्षों से एकनिष्ठ होकर प्रो. इंद्रजी के व्यक्तित्व और लेखन पर शोध कार्य कर रहे थे। अंततः उनका यह शोध प्रबंध औरंगाबाद विश्वविद्यालय से स्वीकार किया गया और शोधकर्ता को पी-एच.डी. की उपाधि प्रदान की गई। आलोच्य ग्रंथ प्रो. कापसे के वर्षों के परिश्रम तथा लगन का फल है। इंद्र जी का व्यक्तित्व तो बहु-आयामी था, उनका लेखन भी विशाल, विशद तथा साहित्य के नाना रूपों को समाविष्ट किए था। इंद्र जी शिक्षाशास्त्री,

राजनेता, कुशल पत्रकार, आर्यसमाज के उपदेशक, संगठक तथा नेता थे तो साहित्य के क्षेत्र में उन्होंने इतिहास, जीवनचरित, उपन्यास, नाटक, निबंध, शास्त्र व्याख्या, अनुवाद आदि से संबंधित उच्चकोटि के ग्रंथ लिखे थे। इस सारी सामग्री का विवेचन और मूल्यांकन प्रो. कापसे ने अपनी प्रांजल शैली में किया है। आलोच्य ग्रंथ की एक अन्य विशेषता यह है कि इंद्र जी के अनेक लेख, निबंध, ग्रंथ आदि प्रायः अनुपलब्ध हो गए हैं। शोधकर्ता ने ऐसी दुर्लभ सामग्री को भी भूरिशः परिश्रम के द्वारा प्राप्त किया तथा उसकी विवेचना की है। इंद्र विद्यावाचस्पति जैसे समर्थ पत्रकार, लेखक और समाजसेवी के बहुरंगी कृतित्व का यह परिशीलन निश्चय ही हिंदी के समालोचना साहित्य को महत्त्वपूर्ण देन है।

6. श्रुतिपर्णा–(वेदमंत्रों का काव्यांतरण–डॉ. विष्णुदत्त राकेश कृत)

आदि काव्य वेदों के स्फूर्तिदायक, उद्‌बोधन देने वाले तथा जीवन को उन्नत बनाने की प्रेरणा देने वाले कतिपय चुने हुए मंत्रों का भावपल्लवनपूर्वक काव्यानुवाद कर डॉ. राकेश ने वैदिक साहित्य का एक मनोज्ञ तथा सर्वग्राह्य रूप प्रस्तुत किया है। भावप्रवण शैली में किया गया यह काव्यांतरण पाठकों को मंत्रों के कथ्य का साक्षात्कार तो कराता ही है, उसे काव्यानंद से सराबोर करने की सामर्थ्य भी रखता है। इस दृष्टि से वेदप्रेमी पाठकों के लिए यह एक उपहार है।

यह अतिरिक्त प्रसन्नता की बात है कि उपर्युक्त साहित्य का प्रकाशन गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के वर्तमान सुयोग्य कुलपति डॉ. धर्मपाल जी के मार्गदर्शन तथा संरक्षण में हुआ है। निश्चय ही इन ग्रंथों को सुचारु रूप से पाठक समुदाय के समक्ष लाने में जहाँ कुलपति जी का वरदहस्त प्रभावी रहा है वहाँ संपादकगण (डॉ. राकेश, डॉ. भारतभूषण एवं डॉ. जगदीश विद्यालंकार) का श्रम तथा साधना तो इन ग्रंथों में पदे-पदे लक्षित होती ही है।

खंड-3

दीक्षा की वेदी से

आप स्वामी श्रद्धानंद के पुत्र हो जो निर्भीक संन्यासी थे

❑ डॉ. ओलेग उलत्सिफेरोव

कुलाधिपति महोदय, परिद्रष्टा महोदय, कुलपति जी, आचार्यगण, अंतेवासियो, देवियो तथा सज्जनो !

अमरहुतात्मा वीतराग संन्यासी स्वामी श्रद्धानंद जी द्वारा संस्थापित राष्ट्रीय शिक्षण संस्था गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के इस पवित्र प्रांगण में उपस्थित होकर मुझे परम प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। यह संस्था विद्या और तप की स्थली रही है। स्वामी श्रद्धानंद जी के तप ने और ब्रह्मचारियों की देशभक्ति ने महात्मा गांधी जी को इस तपःस्थली की ओर आकृष्ट करके उनके मन में आशा और विश्वास का भाव उत्पन्न किया था। यह वही पावन भूमि है, जहाँ हमारे देश के सर्वमान्य नेताओं ने समय-समय पर पदार्पण करके स्वयं को गौरवान्वित किया था। स्वामी श्रद्धानंद जी के संरक्षण में जो आचार्यगण अपने अंतेवासियों को राष्ट्रभक्ति के गीत सुनाया करते थे, वे स्वयं उसी उत्तरीय वस्त्र को धारण करते थे, जिसका ताना और बाना देशभक्ति, स्वाधीनता, स्वावलंबन, सच्चरित्रता, निश्छलता तथा निर्भीकता के धागों से बुना जाता था। यह वही संस्था है जिसके ब्रह्मचारी गंगा तट पर बैठकर गंगा की उठती हुई तरंगों में देशभक्ति के गीतों की तान को खोजा करते थे। इस संस्था के इतिहास को पढ़कर जैसा विदित होता है कि यहाँ शिक्षा का उद्देश्य केवल जीविकोपार्जन के लिए न होकर मानव के सर्वांगीण विकास के लिए था। शिक्षा वही है जो मानव को सही जीवन का दर्शन देकर उसे उन्नति की ओर अग्रसर करे। नैतिक आदर्श, मानव मूल्य, सद्भाव, राष्ट्रीयता, विश्वबंधुत्व, हठ और दुराग्रह का परित्याग सिखाने वाली विद्या ही शिक्षा का रूप है।

उपस्थित सज्जनो !

मुझे बताया गया था कि गुरुकुल कांगड़ी जिन आदर्शों को सामने रखकर खोला गया था, वे वैदिक आदर्श हैं जिनमें संकीर्णता का लेश भी नहीं है। वहाँ

न सांप्रदायिकता है, न संकीर्णता है, न कोई वाद पनपा है, न स्वार्थपरता है, न निरंकुशता है, वहाँ तो केवल सच्ची मानवता है, परमार्थ की भावना है, विश्वबंधुत्व का उद्घोष है तथा समूचे विश्व को मित्र दृष्टि से देखने का आदर्श है। वेदों में मानव को उन्नत होने के लिए भौतिक एवं आत्मिक, दोनों ही संपत्तियों से भरपूर होने का उपदेश है। इसलिए शिक्षा का उद्देश्य मानव की आंतरिक तथा बाह्य शक्तियों का विकास करना है। आज मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में प्राचीन एवं नवीन विषयों के अध्ययन-अध्यापन की समुचित व्यवस्था है। भारतीय संस्कृति के परिचायक एवं पोषक प्राच्यविद्या सङ्काय में वेद, संस्कृत, दर्शन, योग, प्राचीन भारतीय इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग कार्य कर रहे हैं। मानविकी सङ्काय में हिंदी, अंग्रेजी, मनोविज्ञान, अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र आदि नवीन विषयों के अध्यापन की व्यवस्था है। इसी प्रकार विज्ञान के क्षेत्र में उन्नति करने के लिए विज्ञान सङ्काय तथा जीव विज्ञान सङ्काय में गणित शास्त्र, रसायनशास्त्र, भौतिकी तथा कम्प्यूटर विज्ञान, जन्तुविज्ञान, पर्यावरण विज्ञान, वनस्पतिविज्ञान, सूक्ष्मजीवविज्ञान की व्यवस्था है। आधुनिक आवश्यकता का अनुभव करते हुए यहाँ प्रबंधन सङ्काय की व्यवस्था भी हो चुकी है। महिला शिक्षा को उन्नत करने के लिए यहाँ प्राचीन एवं नवीन तथा विज्ञान विषयों के अध्यापन की व्यवस्था कर दी गई है। यह जानकर मुझे हर्ष हो रहा है कि यहाँ विज्ञान के छात्रों के लिए धर्म, दर्शन एवं संस्कृति की शिक्षा भी अनिवार्य रूप से दी जाती है।

आदरणीय सज्जनो !

यह जानकर मुझे प्रसन्नता है कि गुरुकुल कांगड़ी के स्नातकों ने यहाँ से शिक्षा प्राप्त करके विद्यास्नातक तथा व्रतस्नातक के रूप में दीक्षित होकर देश-विदेश में जाकर जो कार्य किया है, वह प्रशंसनीय है। अपने हृदय में विश्वबंधुत्व का भाव सँजोकर कार्य करने वाले स्नातकों ने विदेशों में भी शिक्षा, धर्म, राजनीति तथा व्यवसाय के क्षेत्र में विशिष्ट मानदंड स्थापित किए हैं। पं. अमीचंद विद्यालंकार ने फिजी में जाकर अनेक शिक्षण संस्थानों की स्थापना की। वे वहाँ संसद के सदस्य भी बने। आचार्य रामदेव, पं. सत्यव्रत सिद्धांतालंकार, पं. बुद्धदेव विद्यालंकार, पं. मदनमोहन, श्री विद्यासागर विद्यालंकार, पं. सत्यपाल सिद्धांतालंकार, पं. ईश्वर दत्त विद्यालंकार, श्री सत्यदेव भारद्वाज वेदालंकार, श्री धर्मेंद्रनाथ वेदालंकार, श्री देवनाथ विद्यालंकार, श्री रणधीर वेदालंकार, श्री अमृतपाल वेदालंकार, पं. श्यामसुंदर स्नातक ने बर्मा, अफ्रीका, कीनिया, युगांडा, टांगानीका, सिंगापुर, मलाया, यूरोप में जाकर वैदिक सिद्धांतों एवं हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार किया। मोजांबिक में पं. रविशंकर सिद्धांतालंकार, पं. सुमंतराय विद्यालंकार, पं. मतिमान

विद्यालंकार ने तथा रोडेशिया में पं. हरिदेव वेदालंकार ने अध्यापन कार्य किया। दक्षिण अफ्रीका में सुधीर कुमार विद्यालंकार, श्री अरुण कुमार विद्यालंकार, श्री हरिशंकर आयुर्वेदालंकार, पं. नरदेव वेदालंकार ने सराहनीय कार्य किया। इस समय भी अनेक स्नातक अमेरिका और यूरोप के देशों में गुरुकुल का नाम उज्ज्वल कर रहे हैं। अपने देश में रहते हुए जिन्होंने संपूर्ण जीवन देशहित, वेद प्रचार तथा अनुपम ग्रंथों के लेखन में समर्पित कर दिया उनमें पं. अमरनाथ विद्यालंकार, आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति, प्रो. विश्वनाथ विद्यालंकार, पं. क्षितीश वेदालंकार आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

समाचार पत्रों से मुझे ज्ञात हुआ है कि इस वर्ष गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय स्तर के सात सम्मेलनों का आयोजन किया गया है जिनमें विश्वविद्यालय को पर्याप्त प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है। प्रौढ़ शिक्षा में, सूक्ष्मजीवविज्ञान में, दर्शनशास्त्र में तथा विश्वविद्यालय प्रशासक संघ के संरक्षण में यहाँ होने वाले सम्मेलनों में बाहर से पधारे हुए विद्वान् प्रभावित हुए, जिनमें मैं भी हूँ।

सभी ने अनुभव किया कि यह एक राष्ट्रीय शिक्षण संस्था है जिसका भारत के विश्वविद्यालयों में देश की भाषा, रक्षा, पारस्परिक संबंध तथा देशप्रेम की दिशा में विशेष स्थान है।

उपस्थित सज्जनो !

भारतवर्ष ने जिसकी तपस्या, विद्वता, सहृदयता, अनुरागिता विश्वजनीनता तथा संभावना के बल पर विश्व गुरु के पद को प्राप्त किया थां वे इस देश के महर्षि, मुनि, योगी और आचार्य ही थे। यहाँ का आचार्य अपने हृदय में ब्रह्मचारी के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखकर ब्रह्मचारी को अपने गर्भ में धारण करता था, जिस प्रकार माता के गर्भ में स्थित शिशु माता की आँखों से देखता है उसके कानों से सुनता है, उसकी रसना से खाता है, उसके चिंतन से सोचता है, उसी प्रकार आचार्य के द्वारा निर्देशित होकर उसका अंतेवासी आचार्य की आज्ञानुसार सुनता है, पढ़ता है, देखता है, क्रीड़ा करता है, सोता है, जागता है और जीवन का विकास करता है। आचार्य अपने छात्र को इस प्रकार बनाता है कि वह विद्या के क्षेत्र में, राष्ट्रीयता के क्षेत्र में, सामाजिकता के क्षेत्र में व्यवसाय के क्षेत्र में, ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में, देशांतर के संबंधों के क्षेत्र में, लेखन कला में, वाक्कला में पूर्ण निष्णात होकर अपनी रुचि के अनुसार कर्तव्य का पालन करता हुआ प्रगति पथ पर अग्रसर होता है। देश के अभ्युत्थान में आचार्य की भूमिका बलवत्तर होती है क्योंकि आचार्य केवल किताबी ज्ञान से ही छात्र को विकसित नहीं करता वह तो आचार एवं सदाचार की शिक्षा देकर छात्र का निर्माण करता है।

सज्जनो !

आप अवश्य जानते हैं कि महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने अपने अमर ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' में मानव शिक्षा के उन मूलभूत सिद्धांतों की ओर संकेत किया है जो शिक्षा जगत् के प्राण भूत हैं। अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानंद जी ने अपने गुरुवर महर्षि दयानंद के अनुसार ही देश में गुरुकुल पद्धति का पुनरुद्धार करके महान् कार्य किया। आज आपका देश शिक्षण की दिशा में पुरुषों एवं महिलाओं के लिए समान रूप से सभी साधन जुटाने में लगा है, नारी शिक्षा की अनिवार्यता के विषय में महर्षि दयानंद स्मरणीय हैं। स्वामी जी ने अछूतोद्धार, नारी शिक्षा, स्वराज्य की भावना को जगाकर पाखंडों का खंडन करके संपूर्ण मानवजाति को उन्नति करने के अधिकार की बात कही है। आज आपके देश में अनेक विश्वविद्यालयों में शिक्षण कार्य चल रहा है, चिकित्सा के क्षेत्र में तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी शिक्षण संस्थानों की कमी नहीं है, तथापि अभी और आवश्यकता का अनुभव हो रहा है। आज अच्छे-से-अच्छे इंजीनियर तैयार हो रहे हैं, डॉक्टर प्रतिवर्ष शिक्षित होकर कार्य में लगे हैं, तकनीकी विद्या के पारंगत विद्वान् आज उपलब्ध हो रहे हैं, परंतु भारत और संसार के सभी देशों का एक पक्ष अभी निर्बल हो रहा है, वह है नैतिकता का पक्ष। इसका एक मात्र कारण मैं समझता हूँ कि अध्यापकों ने शिक्षा को अधिकतर किताबी ज्ञान तक सीमित कर लिया है, जबकि शिक्षा का संबंध मानवीय शुद्ध व्यवहार के साथ जुड़ा हुआ है। आज पारस्परिक सौहार्द की भावना, स्वाध्याय की प्रवृत्ति, स्वावलंबन की भावना, पुरुषार्थ की तत्परता, दूसरे के संकट को दूर करने की भावना तथा एक साथ चलने की प्रवृत्ति का प्रायः ह्रास होता जा रहा है। आज का मानव, लगता है, केवल स्वयं में केंद्रित होकर ही विकास का स्वप्न साकार करना चाहता है। वह अपनी उन्नति को उन्नति मानता है, अपने सुख को बढ़ाने में ही उसकी शक्ति का अपचय होता है। उसका अपने पड़ोसी के प्रति, अपने समाज के प्रति, दीनों और अनाथों के प्रति, जो साक्षर नहीं हैं उनके प्रति, जो मार्ग से भटक गए हैं उनके प्रति तथा जो निर्धनता के कारण वस्त्र तथा भोजन भी यथोचित प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं उनके प्रति क्या नैतिक दायित्व हैं इस विषय में उसका चिंतन शून्य है उसकी वाणी मौन है तथा पैरों की गति अवरुद्ध है।

मैं रूस देश से आया हूँ जो वर्ष में सात महीने हिमाच्छादित होता है जिसके कारण हमारे छात्रों के सामने कम प्रलोभन है। रूस में पाँच सौ से अधिक विश्वविद्यालय हैं जिनमें बीस लाख से अधिक विद्यार्थी हैं। मैं भाषा का अध्यापक हूँ, हिंदी भाषा का।

मानव के जीवन में भाषा का अनुपम महत्त्व है। भाषा न होती तो हम

एक-दूसरे को कैसे समझ सकते ? आज की दुनिया में हजारों भाषाएँ हैं और प्रत्येक भाषा में भिन्न-भिन्न जातियों की स्नेह और सुख की आशा, मैत्री और शांति की इच्छा, बच्चों और बड़ों से प्यार का स्वर गूँजता है। इन भाषाओं में ताल्स्ताय के 'युद्ध और शांति' की पुकार झनझनाती है, दोस्ताएस्की का 'गरीबों का रूस' कराहता है, पुश्किन की मधुर कविताएँ अमर प्रेम के गीत गाती हैं। इनमें प्रेमचंद की निर्मला का करुण जीवन रुदन करता है, अश्क के पंजाब की हँसमुखता तथा जिंदादिली चहचहाती है, जयशंकर प्रसाद की मधुलिका की देशभक्ति और आत्मबलिदान चिल्लाता है, वृंदावनलाल वर्मा की 'झाँसी की रानी' की 'हर हर महादेव' का गगनभेदी नाद गरजता है।

मेरे लिए यह बड़ी गौरव की बात है कि रूस देश में भी अनेक हिंदी प्रेमी हैं। अभी तक ये लोग हिंदी में उपन्यास या कहानियाँ नहीं लिखते, किंतु वे दूसरे क्षेत्रों में हिंदी की सेवा करते हैं। सर्वप्रथम यह हिंदी भाषा तथा इसके साहित्य का प्रचार है। हिंदी से रूसी में प्रायः सब प्रसिद्ध हिंदी लेखकों की कृतियों का अनुवाद किया गया है जिनमें प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, राहुल सांकृत्यायन, सुमित्रानंदन पंत, निराला, अज्ञेय, उपेंद्रनाथ अश्क, कृशन चंदर, यशपाल, वृंदावनलाल वर्मा, अमृतलाल नागर, जैनेंद्र कुमार और रांगेय राघव के नाम विशेषकर उल्लेखनीय हैं। इस बात का श्रीगणेश श्री बारान्निकोव द्वारा अनूदित 'रामायण' ने किया था।

अनुवाद के अतिरिक्त हमारे यहाँ हिंदी का अध्ययन-अध्यापन का काम किया जा रहा है। केवल मास्को में पाँच ऐसे संस्थान हैं जिनमें हिंदी पढ़ाई जाती है। इनमें शोधकार्य भी हो रहा है। हमारे हिंदीवेत्ताओं ने केवल हिंदी में ही इस भाषा के पाँच व्याकरण लिखे हैं जिनमें श्री दीम्शित्स द्वारा रचित सात सौ पृष्ठों वाला 'हिंदी व्याकरण' विशेष रूप से उल्लेखनीय है। कोशकार्य में भी काफी बड़ा काम हो रहा है। हिंदी-रूसी और रूसी-हिंदी बारह शब्दकोशों का संकलन हुआ है जिनमें दो खंडों का हिंदी-रूसी शब्दकोश विशेषकर उल्लेखनीय हैं। इनमें दो खंडों वाला रूसी हिंदी शब्दकोश भी संकलित किया है। पर रूस देश में हुए परिवर्तन के कारण उसका प्रकाशन लंबी दराज में रखा गया है।

हिंदी को पढ़ाने के लिए हमने नौ पाठ्यपुस्तकों को लिखा है। एक के लिए तीन रूसी विद्वानों को उन्नीस सौ उनहत्तर में इंडो-सोवियत मैत्री का नेहरू पुरस्कार दिया गया था। मगर हम पुरस्कारों के लिए काम नहीं करते। हिन्दी भाषा हम हिंदीवेत्ताओं की जिंदगी हो गई है। यह हमारा भाग्य है और भारत इसका विधाता है।

एक अन्य बात है जिसका आज उल्लेख करना अत्यावश्यक है। पचास वर्ष हुए इसी 13 अप्रैल को हमारे दोनों देशों के बीच राजनयिक संबंध स्थापित हुए थे। अब हम इन संबंधों की स्वर्ण जयंती मना रहे हैं। आशा है कि हम ऐसी अनेक

जयंतियाँ आने वाले दशकों में मनाएँगे।

प्रिय नव स्नातको !

आज आप लोग गुरुकुल के पवित्र प्रांगण में विद्या निष्णात होकर दीक्षित हो रहे हैं। ये सारा देश आप लोगों से कुछ विशेष अपेक्षा करता हुआ आपकी ओर निहार रहा है। आपके जीवन को इस देश की परंपरा ने पाला है, आपकी शिक्षा में गौतम, कपिल, कणाद, जैमिनी के जीवन दर्शन का समावेश है, राष्ट्रीयता की भावना के गीतों को आपने जीवन में उतारा है। आप उस अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानंद के पुत्र हो जो निर्भीक संन्यासी थे, आपने उस महर्षि दयानंद का जीवन चरित्र पढ़ा है, जो युगों-युगों में एक अद्‌भुत क्रांति के अग्रदूत थे। प्रकृति के उस सुरम्यवातावरण में आपकी शिक्षा हुई है जहाँ प्रातःकाल वेद मंत्रों की ऋचाओं का गान होता है। जहाँ प्रतिदिन यज्ञ की सुगंध वातावरण को मोहक बनाती है। आपको वे विचार दिए गए हैं जिनमें विनय, नम्रता, शालीनता, गुरुभक्ति, सच्चरित्रा, उदारता और देशप्रेम का निवास रहता है।

आज भारत के सामने अनेक चुनौतियाँ हैं। आप नव स्नातकों को इन चुनौतियों का सामना करना है। आपके सामने अनेक प्रकार की बाधाएँ आएँगी, अनेक प्रलोभन आपको दिए जाएँगे, समय-समय पर अनेक यातनाएँ भी आपको दी जा सकती हैं, किंतु आपको सबका सामना करते हुए अपने कर्तव्य पथ पर अडिग रहना है। हमारा आशीर्वाद-शुभकामनाएँ आपके साथ हैं। आपका मार्ग प्रशस्त हो, आपकी विद्या बलवती हो, आपका भविष्य उज्ज्वल हो, देश के विभिन्न प्रकार के तामस को दूर करने में आपकी विद्या प्रकाशस्तंभ का कार्य करे। अंत में मैं समस्त कुलवासियों के प्रति अपनी सद्‌भावना व्यक्त करता हूँ।

ओ३म् शांतिः शांतिः शांतिः

(13 अप्रैल, 1997)

भारत पर विश्वास रखें

❑ डॉ. सुमतींद्र नाडिग

श्रीयुत कुलाधिपति जी, कुलपति जी, कुलवासियो तथा नव स्नातको !

गंगा के पावन तट पर पूज्य स्वामी श्रद्धानंदजी महाराज द्वारा संस्थापित गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के अट्ठानवे वार्षिकोत्सव एवं दीक्षांत समारोह के इस अवसर पर आपके सामने दो शब्द कहते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है।

आप अपने अध्ययन की महत्त्वपूर्ण अवस्था में पहुँच चुके हैं। आपने योग्यता प्राप्त कर ली है। अब स्वयं अपने आप आगामी अध्ययन करने के लिए आप सक्षम बन चुके हैं। जो कुछ अब तक आपने सीखा है, वह अध्ययन का केवल एक अंश था।

आचार्यात् पादमादत्ते पादं शिष्यः स्वमेधया
पादं सब्रह्मचारिभ्यः पादं कालक्रमेण च।

जो कुछ आपने अब तक सीखा है उसका एक-चौथाई अंश अपने अध्यापकों से सीखा, एक-चौथाई अपनी बुद्धिमत्ता का प्रयोग करके अपने आप सीखा तथा एक-चौथाई अपने संगी-साथियों से सीखा। बाकी बचा एक-चौथाई भाग आप समय के साथ सीखेंगे। जो कुछ आप समय के साथ सीखेंगे, वही आपकी शिक्षा का सबसे प्रमुख और श्रेष्ठ अंश होगा।

आइए, मैं आपको अध्ययन के कुछ भेद (मर्म) बताता हूँ। यह मत सोचिए कि आप उन्हें जानते हैं, क्योंकि आप उन्हें केवल अभ्यास के द्वारा जानेंगे। सर्वप्रथम, मैं चाहूँगा कि आप 'योगी' बनें। मैं 'राजयोग' या 'हठयोग' की सलाह नहीं देने जा रहा हूँ। मैं जिस योग की सलाह देने जा रहा हूँ, वह सबसे व्यावहारिक है, सबसे यथार्थ है, सबसे फलदायी है, लेकिन साथ ही सब योगों से कठिन है–अर्थात् 'कर्मयोग'।

श्रीकृष्ण कहते हैं–'योगः कर्मसु कौशलम्।' कौशल दक्षता है, शिल्पकारिता है, पूर्णता है, और वह सब है जो प्रत्येक को खुशहाल बनाता है।

कर्म में कौशल प्राप्त करने के लिए योग जरूरी है। कर्म वह कोई भी कार्य है, जो आप करते हैं अब चाहे आप लिपिक बनें या अधिकारी, अध्यापक बनें

या मैनेजर। यदि आप अपना कार्य उचित तरीके और लगन के साथ करते हैं तो आप योगी हैं। लेकिन किसी भी कार्य को उचित ढंग से करना तभी संभव है जब आपमें एकाग्रता हो। हमारा मन निष्क्रिय कभी नहीं रहता। वह एक चीज से दूसरी चीज, एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण करता रहता है। वह हमेशा भटकता रहता है। बारहवीं सदी में कर्नाटक के संतकवि वासवन्ना ने कहा है—'मन बंदर की भाँति एक डाली से दूसरी डाली पर कूदता रहता है।'

यदि आपमें कौशल है तो कार्य करते हुए आपका मन भी आपके कार्य में लीन होगा। और अब आप श्रेष्ठ अथवा सर्वश्रेष्ठ कार्य करते हैं तो आपको 'आनंद' की अनुभूति होती है। यदि आप अपना कार्य उत्तम ढंग से करते हैं तो इससे दूसरों को खुशी होगी, और वे आपकी प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकेंगे। यद्यपि गीता का संदेश है कि कर्म करते रहिए और फल की इच्छा मत कीजिए। लेकिन विश्वास रखिए, उत्तम कर्म का पुरस्कार आपको अवश्य मिलेगा।

लेकिन हाँ, कर्म का फल मिलने में देरी हो सकती है। अतः धैर्य रखें। इस संदर्भ में मैं आपको एक और परामर्श देना चाहूँगा कि आप सादा जीवन व्यतीत करें। सादे जीवन का अर्थ है कि आपके पास रहने की जगह होनी चाहिए, भोजन होना चाहिए, नींद होनी चाहिए और साथी होना चाहिए। रहने की जगह जरूरी नहीं कि महल हो। भोजन का अर्थ पाँच सितारा होटलों में मिलने वाला गरिष्ठ भोजन नहीं है। और नींद का अर्थ कदापि वह नहीं है जिसका आनंद फ्रांस या इटली से आयातित गद्दों पर लिया जाए।

समय को आपके लिए कुछ करने का समय दीजिए। जब तक समय आपके लिए कुछ करने के लिए आए, तब तक कर्म के लिए हमेशा तत्पर रहिए। और निश्चय ही, बुरा समय आपके पास कभी नहीं आएगा।

एक अन्य भेद अथवा रहस्य के बारे में मैं आपके साथ बात करना चाहूँगा। वह भेद उस शत्रु के बारे में है, जो आपके भीतर रहता है। उस शत्रु को आप स्वयं ही अपने से दूर रख सकते हैं। और वह शत्रु है—'आलस्य'।

आलस्यो हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः।
नास्त्युद्यम समो बंधुः यं कृत्वा नावसीदति।।

आलस्य नामक यह शत्रु राक्षस है, जो आपके पास कई रूपों में आता है। वह आपके पास नींद, थकान, मित्रों, प्रलोभन और बहानेबाजी के नाना रूपों में आता है। वह आपसे झूठ बोलने को कहेगा, वह आपसे काम में देरी करने को कहेगा, या फिर काम से बिलकुल ही जी चुराने को कहेगा। इस शत्रु से हमेशा सावधान रहिए।

अब मैं आपको एक और मंत्र बताता हूँ। भाषा वह शक्तिशाली हथियार है जिससे आप पूरे संसार पर विजय पा सकते हैं। आपको किसी भी भाषा के

अधिक-से-अधिक शब्दों को जानने की कोशिश करनी चाहिए। 'शब्द' को जानने का मतलब यह जानना है कि शब्द का प्रयोग कैसे होता है, उसके वाच्यार्थ और सूच्यार्थ क्या हैं, तथा उसकी व्युत्पत्ति कैसे हुई। आपको शब्द का उच्चारण इस प्रकार करना चाहिए कि आपके मस्तिष्क का अर्थ और वह शब्द दोनों सुननेवाले को साक्षात् दिखाई देने लगें।

बहुत पहले मैंने एक बच्ची को 'रोशनी' शब्द को दोहराते हुए सुना। वह बार-बार 'रोशनी-रोशनी-रोशनी' कह रही थी, और एक अवस्था ऐसी आई कि शब्द स्वयं रोशनी बन गया। मैं शब्द की चमक को देख सकता था। किसी भी चीज को स्मरण करने की दक्षता आप भी अर्जित कर सकते हैं, ताकि वह चीज सुनने वाले के बिलकुल सामने प्रत्यक्ष हो जाए। यह अँधेरे में रखी किसी चीज पर रोशनी डालने के समान है। इस योग्यता को 'काव्य मीमांसा' में 'उद्दीपन' कहा जाता है। आप सबको ऐसी जादुई शक्ति प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए।

अब मैं आपसे शिक्षण माध्यम के बारे में कुछ कहना चाहता हूँ। मैं आपको बधाई देता हूँ कि आप स्वामी श्रद्धानंदजी के सपने का एक भाग बने, जो मातृभाषा को शिक्षण माध्यम बनाना चाहते थे। भारत में स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद भी हमने बच्चों को अंग्रेजी के माध्यम से शिक्षा देने की गलत शिक्षानीति को जारी रखा। हमने डॉक्टरों, इंजीनियरों और वैज्ञानिकों को प्रशिक्षित करने के लिए करोंड़ों रुपए खर्च कर दिए। और ये विकसित मस्तिष्क अमेरिका, इंग्लैंड, कनाडा तथा दूसरे देशों में नौकरी करने चले गए। शिक्षा में लगाए हमारे पैसे का लाभ दूसरें देशों ने उठाया। यह राष्ट्रीय हानि है। यदि हमने बच्चों को उनकी मातृभाषा में शिक्षित करने में इस धन को लगाया होता तो हमारे देश में ऐसे डॉक्टर और इंजीनियर बनते जो ग्रामीण भारत में काम करने को तैयार हों। लेकिन इसकी बजाय हमने अपने बच्चों को अंग्रेजी में शिक्षा दी और उन्हें अमेरिका या इंग्लैंड जाकर खूब पैसा कमाने के सपने दिखाए। मैं कहना चाहता हूँ कि जो विदेशों में गए, उनमें से अधिकांश के पास आज पैसा तो खूब है, लेकिन खुशी नहीं है, क्योंकि अब उनके बच्चे भारत लौटना नहीं चाहते। उनके बच्चे न भारतीय रहे हैं और न ही अमेरिकन या कनाडियन बन पाए हैं। क्या आप उस तरह का 'त्रिशंकु-जीवन' चाहते हैं ?

अंग्रेजी के माध्यम से शिक्षण का एक और खतरा है। सभी शिक्षित व्यक्ति तो विदेश नहीं जा सकेंगे। चूँकि अंग्रेजी भारतीय भाषा नहीं है, इसलिए यह हमें हमारी ही संस्कृति से बेगाना कर देती है। इस प्रकार भी हम 'त्रिशंकुओं' की संख्या ही बढ़ा रहे हैं। मातृभाषा के साथ हमारा जीवन इतने अधिक भावात्मक रूप से जुड़ा होता है कि हमारी अभिव्यक्ति जितनी सशक्त मातृभाषा में होती है, उतनी अंग्रेजी में हो ही नहीं सकती। मातृभाषा बाह्य संसार के साथ ही आंतरिक संसार को भी समझने में हमारी सहायता करती है। यह न केवल हमें अपनी भावनाओं

को जानने में मदद करती है, बल्कि अपने आपको जानने-समझने में भी सहायक सिद्ध होती है। यह हमारी संस्कृति है, हमारा जीवन है, हमारी माँ है।

दूसरी ओर, अंग्रेजी भारत में बनने वाले विभिन्न व्यंजनों का नाम तक नहीं बता सकती। और हमारे संबंध ? हमारे सभी संबंधों को अभिव्यक्त करने में भी अंग्रेजी असमर्थ है। अंग्रेजी हमें आम बनाती है, विशिष्ट नहीं। इसीलिए अंग्रेजी में लिखने वाला कोई भी भारतीय लेखक उतना ऊँचा नहीं हो पाया, जितने कि भारतीय भाषाओं में लिखने वाले लेखक ऊँचे और विशिष्ट हो पाए हैं। अंग्रेजी में लिखने वाला कोई भी भारतीय लेखक आज टैगोर, तकापि शिवशंकर पिल्ले, प्रेमचंद, अज्ञेय, बेंद्रे, मौणी, शिवराम कारंत, सच्चिदानंद राउतराय (आदि) नहीं बन पाया।

अंग्रेजी शिक्षा ने हमें भारी नुकसान पहुँचाया है। फिर भी हम अंग्रेजी माध्यम वाले स्कूलों के प्रति अपना आकर्षण कम नहीं कर पाए हैं। स्वामी श्रद्धानंद जी, गांधी जी और टैगोर जैसे महापुरुषों ने पश्चिमी जीवन की पद्धति के पर्याय के बारे में सोचा था, लेकिन भारत में आज भी पश्चिमी सोच का बोलबाला है। यदि हमें स्वयं को बचाना है, तो तुरंत पूरे भारत में शिक्षण का माध्यम मातृभाषाओं को बना देना चाहिए। हमारी भाषाएँ इस चुनौती का सामना करने में पूर्णतः सक्षम हैं। इसलिए मैं अत्यधिक प्रसन्न हूँ कि आपने अपनी शिक्षा हिंदी के माध्यम से ग्रहण की।

अंग्रेजी से घृणा मत करें। जिस प्रकार विभिन्न भाषाओं के शब्दों को लेकर अंग्रेजी समृद्ध हुई है, उसे जानने की कोशिश करें। अंग्रेजी को पुस्तकालीय भाषा बना रहने दें। हमें पुस्तकालीय भाषाओं के रूप में चीनी, जापानी, रूसी, अरबी, फ्रांसीसी, जर्मन आदि भाषाओं को भी अपनाना चाहिए। उनके लिए हमारे शिक्षण का माध्यम बनना जरूरी नहीं है। उसी प्रकार अंग्रेजी के लिए भी नहीं।

मैं हमेशा सकारात्मक रूप से सोचता रहा हूँ। अतः मेरा अनुरोध है कि आप भी सकारात्मक रूप से सोचिए। अपने पर विश्वास रखिए। ऐसा कुछ है जिसे दूसरों की अपेक्षा आप ही श्रेष्ठ ढंग से सम्पन्न कर सकते हैं। उस अनोखी प्रतिभा और उसके द्वारा दूसरों को दिए जा सकने वाले लाभों को जानने की कोशिश करें। हमारे इस संसार में अधिकांश लोग कुछ लेना ही चाहते हैं, और वे इस बात को जानने की कोशिश नहीं करते कि वे दूसरों को क्या दे सकते हैं। उन लोगों की तरफ मत देखिए जिनसे आप सहायता ले सकते हैं, बल्कि उन लोगों की तरफ देखिए जिनकी आप सहायता कर सकते हैं। अपने आपको कभी बेल की तरह कमजोर न समझें। कमजोर लोगों को दूसरों के सहारे की आवश्यकता होती है। बेल को भी पेड़ का सहारा लेना पड़ता है। लेकिन यदि आप अपने भीतर शक्ति का संचार करें तो आप सहारा खोजने की बजाय दूसरों का सहारा बनेंगे। अगर आप पेड़ की तरह हैं तो दूसरे लोग बेलों की तरह आपका सहारा पाने के लिए आपके पास आएँगे।

दूसरों की सहायता करने के लिए किसी का धनी होना जरूरी नहीं हैं। स्वामी

श्रद्धानंद जी भले ही रुपयों से धनी व्यक्ति नहीं थे, लेकिन वे सपनों के संसार के धनाढ्य व्यक्ति थे। अपने एक सपने में (मेरे कुछ असिद्ध स्वप्न) उन्होंने एक गुरुकुल को देखा। वे शिक्षा का प्रचार-प्रसार ग्रामीणों में करना चाहते थे। उन्होंने कृषि संबंधी सङ्काय के बारे में सोचा जहाँ छात्र कृषि के सभी पहलुओं की जानकारी प्राप्त कर सकें। उन्होंने आयुर्वेद और वाणिज्य के सङ्कायों के बारे में भी विचार किया। वे किताबी ज्ञान की अपेक्षा व्यावहारिक अनुभव को महत्त्व देते थे। वे चाहते थे कि छात्र परिश्रम का अर्थ समझें। जो परिश्रम से प्यार करता है; वह कभी जीवन की सुविधाओं में अपना समय नष्ट नहीं करता। उन्होंने गुरुकुल के लिए निजी संपत्ति कोठी, प्रेस, स्वत्व एवं परिवार अर्पित कर दिया।

जो भी व्यक्ति परिश्रम करता है, वह निश्चित रूप से समाज के कल्याणार्थ कार्य करता है। जो दूसरों का सहारा बनना चाहता है, वह समय नष्ट करने की सोच भी नहीं सकता। उसे अपना जीवन सार्थक लगता है, क्योंकि अनेक लोग उससे मदद माँगने के लिए आते हैं। आप दूसरों की मदद तभी कर सकते हैं, अगर आप उन्हें प्यार करते हों या स्वयं को उनसे जुड़ा हुआ अनुभव करते हों। जब आप दूसरों से प्यार करते हैं और उनकी मदद करते हैं तो आप महसूस करेंगे कि वे लोग भी आपसे प्यार करते हैं। तब आपको अनुभव होगा कि आपने बहुत कुछ पा लिया है। आपमें कुछ लेने की अपेक्षा कुछ देने की क्षमता अधिक होनी चाहिए।

आप पूछ सकते हैं कि एक निर्धन व्यक्ति क्या दे सकता है ? मैं बताता हूँ। वह आपके होंठों पर एक सुंदर मुसकान ला सकता है ? यदि आप उदासी के अथाह सागर में डूबे हुए हैं, तो वह आपमें आनंद का संचार कर सकता है। यदि आप किसी वाहन आदि से टकरा जाएँ तो वह आपको उठने में सहायता कर सकता है, या आपको अस्पताल ले जा सकता है। किसी घर में चोर को घुसता देखकर वह लोगों को सचेत कर सकता है। संक्षेप में, ऐसी अनेक चीजें हैं, जो वह कर सकता है। इसलिए यह मत सोचिए कि आपके पास दूसरों को देने के लिए कुछ नहीं है। अपने भीतर खोजकर देखिए कि आप कितना कुछ दे सकते हैं। आप आश्चर्यचकित रह जाएँगे।

जो कुछ दूसरे कहें, उसे तत्काल स्वीकार न करें। उस सब पर विचार करें। सत्य के परिप्रेक्ष्य में उनके कथन को नकारने के लिए प्रमाण अथवा तर्क तलाश करने की कोशिश करें। जब आप इन्हें तलाश करने में असफल हो जाएँ तो जो कुछ वे कहते हैं, उसे स्वीकार कर लें—कम-से-कम तब तक के लिए, जब तक उनके कथन की पूर्ण सत्यता अथवा असत्यता को जानने का आपमें अनुभव न आ जाए।

ज्ञान अर्जित कीजिए। सर्वव्यापी ज्ञान। सितारों, ग्रहों तथा अन्य खगोलीय पिंडों के बारे में केवल पढ़ना काफी नहीं है। आकाश में देखिए। यात्राएँ कीजिए।

पशु-पक्षी व वनस्पति जगत् पर ध्यान दीजिए। हर चीज को देखने-जानने के प्रति जिज्ञासु बनिए। छोटी-से-छोटी चीज में भी जानने के लिए बहुत कुछ होता है—अब चाहे वह कीटाणु हो अथवा जीवाणु। यह संसार एक रहस्य है, तथा इसमें पाई जाने वाली प्रत्येक वस्तु भी उतनी ही रहस्यमय है। इस रहस्य के बारे में चिंतन करना सीखिए। अनुभव कीजिए। किसी भी चीज को समझने के लिए उसका अनुभव करना ही एकमात्र रास्ता है।

भारत एक महान् देश है। संसार के किसी भी और देश में इतनी भिन्नता देखने को नहीं मिलती, जितनी कि इस देश में है। इतने वेद-पुराण, इतना समृद्ध लोकसाहित्य, इतने देवी-देवता, इतने रीति-रिवाज और तीज-त्योहार, इतने प्रकार का भोजन, इतनी अधिक भाषाएँ, इतने भाँति-भाँति के लोग, इतने भिन्न प्रकार का प्राकृतिक सौंदर्य। क्या आप इस देश को एक निर्धन देश कहना चाहेंगे ? क्या आपको इस देश में रहते हुए शर्म आती है ? क्या आप समझते हैं कि किसी भी भारतीय को अमेरिका या इंग्लैंड या कनाडा में नौकरी मिलना एक महान् उपलब्धि है ? मैं स्वयं अमेरिका में फिलेडेल्फिया स्थित टैंपल यूनीवर्सिटी में अंग्रेजी में पी-एच.डी. कर रहा था। तीन वर्ष पूरे होते-होते मैं वहाँ रहते हुए इतना अधिक अमेरिकन बन गया था कि मुझे अपनी भारतीय पहचान खो जाने का डर लगने लगा। अगर मैं तीन महीने और वहाँ रहता तो मेरी पी-एच.डी. पूरी हो जाती और मुझे वहाँ पक्की नौकरी मिल जाती। अमेरिकी डालर मुझे वहीं रहने के लिए ललचा रहे थे, लेकिन पी-एच.डी. पूरी करने से पहले ही मैंने निर्णय लिया और भारत लौट आया। मुझे मालूम था कि लौटने पर मुझे कर्नाटक में प्राध्यापक की नौकरी नहीं मिलेगी। गुजारे के लिए मेरे पास न धन था और न जायदाद। मैं अपनी मातृभाषा का कवि रहना चाहता था। अतः मैंनें कोई भी काम करने का निर्णय किया। मैंने सोचा कि किराने की दुकान या प्रिंटिंग प्रेस शुरू की जाए। और यदि यह संभव न हो पाए तो मुझे पटरी पर बैठकर पकौड़े या समोसे बेचने में भी संकोच नहीं था। तभी कुछ दोस्तों ने मुझे बंगलौर में पुस्तकों की दुकान खोलने के लिए प्रेरित किया। और मैं एक पुस्तक-विक्रेता बन गया।

यह सब मैं इसलिए बता रहा हूँ क्योंकि मैं चाहता हूँ कि आप आत्मनिर्भर बनें। सरकारी नौकरी पाने को महान् उपलब्धि मत समझें। ध्यान से नलसाजी, बिजली का काम सीखें। किसान की तरह जीवन बिताने के विषय में भी आप सोच सकते हैं। या फिर सीधे गाँव में जाकर समाज कल्याण संबंधी कार्य कीजिए। किसी-न-किसी प्रकार के स्वरोजगार के द्वारा आप निस्संदेह जीवन यापन कर सकते हैं।

स्नातक बनने जा रहे प्रिय छात्रो ! यदि भारत शक्तिहीन होगा तो कोई भी देश उसकी परवाह नहीं करेगा। सत्ताईस वर्ष पहले जब मैं अमेरिका में था तो किसी भी समाचारपत्र ने भारत के संबंध में कभी कोई समाचार प्रकाशित नहीं

किया। लेकिन जब भारत ने बम का परीक्षण किया तो एकाएक भारत समाचारपत्रों की सुर्खियों में था। मुझे यह देखकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई कि भारत एक शक्तिशाली देश है। मैं यह नहीं कहता कि हमारे पास परमाणु बमों और हाइड्रोजन बमों का एक बड़ा भंडार होना चाहिए। लेकिन हमारे पास क्षमता अवश्य होनी चाहिए। कुछ ही समय पहले की बात है, जब अमेरिका ने भारत को सुपर कंप्यूटर बेचने से इनकार कर दिया। लेकिन उसके दस-पंद्रह दिन बाद ही यह समाचार प्रकाशित हुआ कि हमारे वैज्ञानिकों ने स्वयं एक सुपर कंप्यूटर विकसित कर लिया है। अब बमों का परीक्षण अनुरूपण प्रक्रिया द्वारा किया जा सकता है। अब वास्तव में अपने सामने बम का विफोट करने की आवश्यकता नहीं है। इससे क्या प्रकट होता है ? इससे स्पष्टतः सिद्ध होता है कि ज्ञान शक्ति है। भारत में इतनी प्रतिभाएँ हैं कि हमें किसी से भी डरने की आवश्यकता नहीं है। भारत पर विश्वास रखें। अपने पर विश्वास रखें। इस बात का पता लगाएँ कि आपमें से प्रत्येक में कितनी ऊर्जा है। आपके पास शारीरिक ऊर्जा है, मानसिक ऊर्जा है, आध्यात्मिक ऊर्जा है, दैवी ऊर्जा है।

अतः इस ऊर्जा के अन्वेषक बनें।
ईश्वर आपके साथ है।

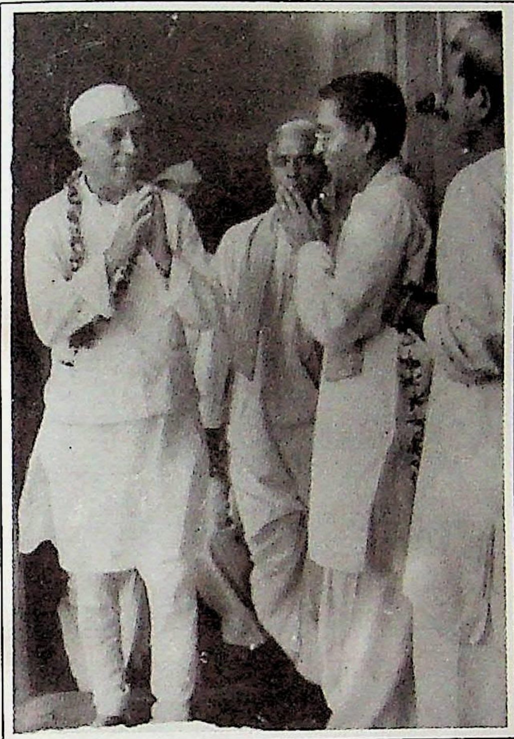
(18 अप्रैल, 1998)





परिशिष्ट

गुरुकुल में राष्ट्रीय विभूतियाँ



पुरातत्त्व संग्रहालय के उद्‌घाटन अवसर पर पं. जवाहरलाल नेहरू, आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति, हरिदत्त वेदालंकार, डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल



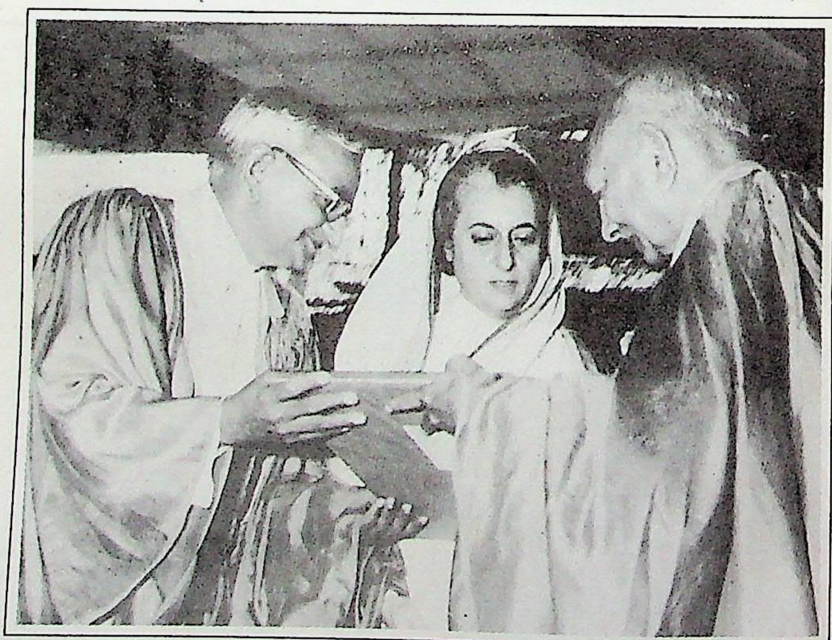
डॉ. राधाकृष्णन संग्रहालय में एक सिक्के को देखते हुए



डॉ. राजेंद्रप्रसाद दीक्षांत के अवसर पर, साथ में बैठे हैं पं. इंद्र विद्यावाचस्पति



प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री गुरुकुल परिसर का अवलोकन करते हुए। वाएँ से श्रीमती चंद्रवती लखनपाल,संसद-सदस्य, पं. सत्यव्रत सिद्धांतालंकार (कुलपति), पं. प्रियव्रत वेदवाचस्पति (आचार्य एवं उपकुलपति) तथा डॉ. गंगाराम गर्ग (कुलसचिव)।



कुलपति श्री रघुवीर सिंह शास्त्री प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी को दीक्षांत समारोह में प्रशस्ति-पत्र देते हुए। साथ खड़े हैं कुलाधिपति प्रो. रामसिंह।

महामहिम राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह दीक्षांत भाषण करते हुए।

माननीय श्री चंद्रशेखर, प्रधानमंत्री, भारत सरकार को पूजोपाधि प्रदान करते हुए कुलपति श्री सुभाष विद्यालंकार। मध्य में खड़े हुए श्री प्रो. शेरसिंह, कुलाधिपति।

महाराष्ट्र में आए भीषण विनाशकारी भूकंप से त्रस्त जनता की सेवा के लिए गुरुकुल विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों, शिक्षकेतर कर्मचारियों, कुलवासियों तथा फार्मेसी के कर्मचारियों ने मुक्त-हस्त से प्रधानमंत्री राहत कोष में दान दिया।



चित्र में प्रधानमंत्री माननीय श्री नरसिंहराव को एक लाख एक सौ एक रुपए का चैक प्रदान करते हुए कुलपति डॉ. धर्मपाल आर्य उनके साथ खड़े हैं प्रो. जयदेव वेदालंकार, कुलसचिव; डॉ. राजकुमार रावत, फार्मेसी व्यवसायाध्यक्ष गुरुकुल फार्मेसी; डॉ. श्रवणकुमार शर्मा, अध्यक्ष अध्यापक संघ; हेमंत कुमार, महामंत्री, शिक्षकेतर कर्मचारी संघ तथा प्रधानमंत्री निवास के कर्मचारी।



गुरुकुल के वर्तमान पदाधिकारी—*बाएँ से दाएँ*—श्री सूर्यदेव, कुलाधिपति; डॉ. धर्मपाल, कुलपति; प्रो. वेद प्रकाश शास्त्री, उपकुलपति; श्यामनारायण सिंह, कुलसचिव।



गुरुकुल के दीक्षान्त भाषणों का संकलन : *दीक्षालोक का विमोचन बायें से*—श्री सूर्यदेव-कुलाधिपति, डॉ. ओलेग उल्सिफेरोव-रूसी विद्वान, डॉ. धर्मपाल-कुलपति, डॉ. विष्णुदत्त राकेश-निदेशक, श्रद्धानन्द प्रकाशन, श्री गंगाप्रसाद विमल-निदेशक केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, डॉ. जगदीश विद्यालंकार, पुस्तकालयाध्यक्ष

रूसी भाषाविद् डॉ. उलत्सिफेरोव को दीक्षांत समारोह में मानपत्रा भेंट करते हुए कुलपति डॉ. धर्मपाल एवं कुलाधिपति श्री सूर्यदेव।

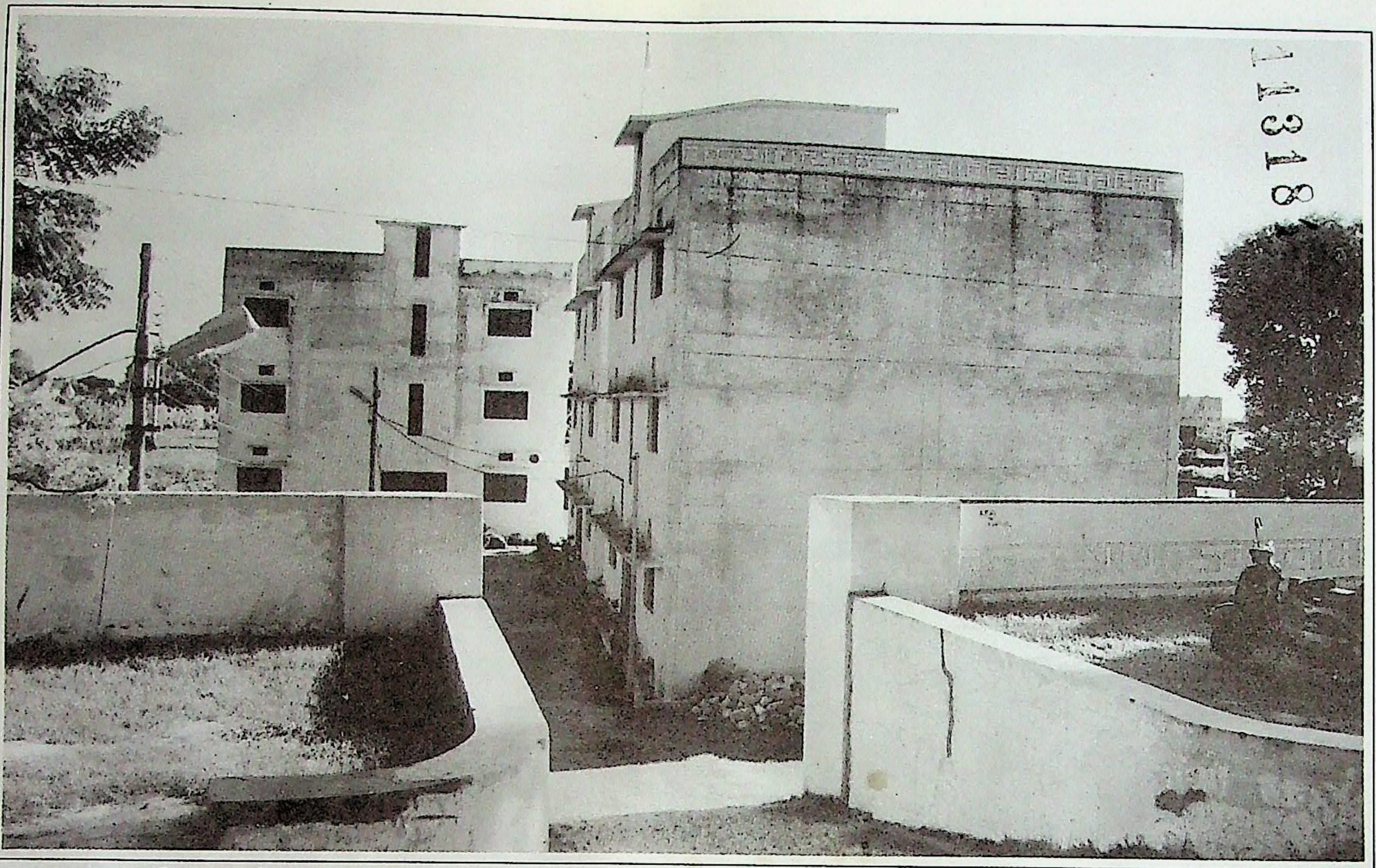


विश्वविद्यालय का पुरातत्त्व संग्रहालय

पुस्तकालय भवन



विज्ञान महाविद्यालय



कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, हरिद्वार

"जिन दिनों गुरुकुल की स्थापना हुई थी, उस समय देश में चहुँओर अंधकार छाया था। यह गुरुकुल देश के उन गिने-चुने शिक्षा-प्रतिष्ठानों में से एक था, जिन्होंने इस शिक्षण-संस्कृति की यज्ञाग्नि को प्रबुद्ध और सतेज रखा था। आज यह ज्योति और अधिक दीप्तिमान है। हम यह तो नहीं कह सकते कि इस ज्योति ने इस देश के समस्त क्षेत्रों से अंधकार को दूर भगा दिया है, परंतु इतना अवश्य हुआ है कि हम जन-समाज के मनों और हृदयों को आलोकित करने का यह शुभ कार्य अपने हाथ में लेने में समर्थ हुए हैं, शिक्षा तत्त्व के वे अनेक सिद्धांत जो आज अनेक शिक्षणालयों द्वारा स्वीकार किए जा रहे हैं, सबसे पहले इस गुरुकुल द्वारा प्रवर्तित किए गए थे।"

–डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

•

"गुरुकुल अपने विद्यार्थियों को किसी खास रुचि में नहीं डालता है। विश्वविद्यालय का भाव सदा उदार और उन्मुक्त होता है। विश्वविद्यालय के अध्यापक अपने विद्यार्थियों को इस बात का पूरा मौका देते हैं कि वे सब पक्षों के मत को सुनकर अपना स्वतंत्र मत निश्चित कर सकें। धार्मिक क्षेत्र में भी गुरुकुल का उदार भाव रहा है। यहाँ केवल वैदिक धर्म की ही शिक्षा नहीं दी जाती है, यहाँ विद्यार्थियों को विविध धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन कराया जाता है।"

–श्री आचार्य नरेंद्र देव

•

"गुरुकुल में भारतीय संस्कृति का वह अंश पूर्ण रूप से जीवित और चैतन्य है जो मिटना नहीं जानता और जो भारत की भारतीयता का सच्चा प्रमाण है। भारतीय नवोत्थान को आगे बढ़ाने के लिए इस गुरुकुल की स्थापना की गई थी। उस उद्देश्य को गुरुकुल आज भी प्रगति दे रहा है।"

–राष्ट्रकवि डॉ. रामधारी सिंह दिनकर



श्री स्वामी श्रद्धानन्द अनुसन्धान प्रकाशन केन्द्र के प्रकाशन

स्वामी श्रद्धानन्द	प. सत्यदेव विद्यालंकार	500.00
वेद का राष्ट्रीय गीत	वेदमार्तण्ड आचार्य आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति	200.00
श्रुतिपर्णा	डॉ. विष्णुदत्त राकेश	95.00
वैदिक साहित्य, संस्कृति और समाजदर्शन	डॉ. विष्णुदत्त राकेश	500.00
वेद और उसकी वैज्ञानिकता भारतीय मनीषा के परिप्रेक्ष्य में	आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति	300.00
शोध सारावली	सम्पादित	220.00
भारतवर्ष का इतिहास *(दो खंडों में)*	आचार्य रामदेव	350.00
Glimpses of Environmental Percepts	*Dr. B.D. Joshi*	50.00
Classical Writings on Vedic & Sanskrit Literature	*Dr. Suryakant Shrivastava* *Dr. Jagdish Vidyalankar*	800.00
दीक्षालोक	सम्पा. डॉ. विष्णुदत्त राकेश डॉ. जगदीश विद्यालंकार	500.00
स्वामी श्रद्धानन्द के सम्पादकीय लेख	सम्पा. डॉ. विष्णुदत्त राकेश डॉ. जगदीश विद्यालंकार	500.00
स्वामी श्रद्धानन्द *(समग्र मूल्यांकन)*	डॉ. रणजीत सिंह	300.00
पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति [illegible]त्व के आयाम	डॉ. कुशलदेव शंकरदेव कापसे	300.00